डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा का नाट्य साहित्य

लेखक
डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा

त्रिवेणी कला संगम, जयपुर

इन नाटकों का किसी भी रूप में उपयोग करने से पूर्व लेखक से पूर्वानुमति लेना आवश्यक है।

© लेखक
डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

मूल्य
सात सौ रुपये मात्र

संस्करण
2013

प्रकाशक
त्रिवेणी कला संगम
बी–177, नित्यानन्द नगर,
क्वीन्स रोड, जयपुर–21

आवरण सज्जा
डॉ. रमेशचन्द्र वर्मा (व्याख्याता चित्रकला)

लेजर टाईपसैटिंग
भूमि ग्राफिक्स

मुद्रक
शीतल ऑफसैट, जयपुर

प्राक्कथन

जीवन में कई घटनाएं अप्रत्याशित रूप से घटित होकर मनुष्य के जीवन–पथ को गति प्रदान करती हैं जो उसे लक्ष्य की उपलब्धि में सहायता प्रदान करती हैं। मनुष्य के जीवन में गति तभी सार्थक रूप ग्रहण करती है जब विषय मन के अनुकूल हो, अन्यथा तो ऐसी अप्रत्याशित घटनाएं भी उसके जीवन को गतिहीन बनाकर विषादपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं।

साहित्य का पठन–पाठन एवं सृजन , ये सभी मनुष्य मात्र के जीवन में गति उत्पन्न करते हैं। मुझे बाल्यकाल से ही साहित्य के प्रति अनुराग रहा है। जीवन में समय–समय पर परिस्थितियों ने विभिन्न प्रकार से करवट ली जिसके कारण कभी–कभी, कहीं न कहीं मेरे इस साहित्यानुराग को ठेस भी पहुँची, भावनाएं भी आहत हुई तथा बहुत कुछ अरूचिकर को भी आत्मसात् करना पड़ा। परन्तु परन्तु पठन–पाठन और सृजन की उत्कण्ठा मृतप्राय न हुई और एक बिन्दु विशेष पर जाकर दैवयोग से कर्म–पथ पर अप्रत्याशित रूचिकर मोड मिले जिनके कारण साहित्य–सर्जना बढ़ी, नाटकों के शौक ने रंगमंच से ऐसा गठबन्धन किया कि मैं बढ़ता ही चला गया और नाट्य संरचना, अभिनय तथा निर्देशन, इन सभी में मुझे आश्चर्यजनक सफलता मिली। मेरे कई नाटकों का दूरदर्शन से प्रसारण भी हुआ कुछेक को राज्य एवं राष्ट्र–स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत भी किया गया जिनसे प्रेरित होकर लेखनी ने नाट्य–क्षेत्र में उन अनुभवों, जीवन में भोगे हुए कष्टों, यातनाओं तथा व्यंग्य, उपहास आदि को कागज पर उकेरना प्रारम्भ किया जिससे पाठकों का मन स्वत: ही मेरे लेखन से जुडता चला गया।

इन्हीं सब घटितों के कारण नाट्यविधा पर पूर्व में प्रकाशित मेरी पुस्तकों की माँग एवं उनकी बाज़ार में उपलब्धहीनता ने मुझे नये नाटक लिखने एवं प्रकाशकों को उनके प्रकाशन हेतु अभिप्रेरित किया। मेरे सृजन पर विभिन्न विद्वानों द्वारा समीक्षाएं लिखी जा रही थीं जिसके लिये मुझे अपनी पुस्तकों की आवश्यकता महसूस हुई। इसी सन्दर्भ में मुझे इस बात की पीड़ा हुई कि मेरी नवीनतम

प्रकाशित पुस्तक 'कंस' की मुझे एक भी प्रति उपलब्ध न हो सकी अत: मुझे विवश होकर विद्वान समीक्षकों को इस पुस्तक की फोटोप्रतियां भिजवानी पडी।

इस पुस्तक के लिये मेरे सम्पूर्ण नाटकों का सम्पादन करके डॉ. नवनीत जी चौहान एवं डॉ. प्रमोद शर्मा जी ने जो सहयोग दिया जिसका ही परिणाम है कि यह पुस्तक आप तक पहुंच सकी है, अत: इसके लिये मैं सम्पादकद्वय का आभार व्यक्त करता हूं।

इस पुस्तक को मूर्त रूप प्रदान करने में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रेनूरानी शर्मा, कथक नृत्यगुरु श्रीमती आशा जोगलेकर, रंगकर्मी साथी श्री दिनेश ठाकुर, श्री जयंत सावरकर, श्री विजय कदम, श्री दिलीप भट्ट, डॉ. काजल शर्मा, श्रीमती पद्मश्री, इंजी. अभिषेक शर्मा आदि की अभिप्रेरणा मेरे लिये अविस्मरणीय है अत: मैं इन सभी कलाकारों का आभार व्यक्त करता हूं।

मेरा प्रथम नाटक 13 जनवरी 1997 को जयपुर दूरदर्शन से प्रसारित हुआ जिससे मुझे नाट्यलेखन हेतु प्रोत्साहन मिला अत: इस यज्ञाहूति में जयपुर दूरदर्शन के कार्यक्रम संयोजक श्री संजयदत्त माथुर से जो मुझे सहयोग एवं प्रेरणा मिली उसके लिये मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि पाठकगण, रंगमंच से जुड़े कलाकार एवं समीक्षक इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अपने सुझावों से अवगत कराकर मेरा मनोबल बढ़ायेंगे।

(डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा)
मानद सचिव, त्रिवेणी कला संगम
बी–177, नित्यानन्द नगर
क्वीन्स रोड, जयपुर–302021
दूरभाष : 0141–2352371

जयपुर
29 मार्च 2013

अनुक्रमणिका

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 9
मानवता की पुकार 23
दुश्मन दोस्त 46
कंस 55
बदले का अभिशाप 99
वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान 114
लडी : मैड़ की 152
कार्यवाहक हलवाई 200
आधुनिक यमलोक 221
मोती मैड़ के 273
मेरी लाडो पढ़ेगी 305
और मंज़िल मिल गई 318
मन चंगा तो कठौती में गंगा 341
महावत 349
देख जात के ठाठ 366
नामकरण 399
अफ़सर का कुत्ता 413
पेड़ हमारे मित्र 419

छोटा बेगारी 431
जैसे को तैसा 447
तुक्के का बादशाह 458
जंगल मित्र 473
आज का गुरुकुल 485

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। अगर समाज है तो साहित्य है। यदि समाज ही अपने अस्तित्व में नहीं है तो साहित्य के होने न होने का कोई औचित्य भी नहीं है। इसके विपरीत साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। कोई भी राष्ट्र तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक उस राष्ट्र का साहित्य उच्चाकोटि का न हो।

साहित्य और साहित्यकारों का अटूट सम्बन्ध है। साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। साहित्य का जन्म वहां होता है जहां आत्माभिव्यक्ति की तीव्र कामना होती है। इसलिए बिना किसी विवाद के कहा जा सकता है कि साहित्यकार की रचनाओं में मुख्य रूप से उसकी आत्मसत्ता व व्यक्तित्व का प्रभाव परिलक्षित रहता है। वैसे भी साहित्यकार अत्यधिक भावुक और संवेदनशील होता है। वह अपने परिवेश में होने वाली घटनाओं और क्रिया-कलापों से आम जनमानस की अपेक्षा अत्यधिक प्रभावित रहता है। एक समर्पित साहित्यकार वही होता है जो जनहित से जुड़कर कार्य करता है, आदमी की पीड़ा को अंतर्चेतना के धरातल पर स्पर्श करता है। उसके दर्द की अभिव्यक्ति तथा भावना को उभारने के लिए सीधा व सपाट रास्ता मुहैया करवाता है। इस दृष्टि से डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने प्रशंसनीय कार्य किया है, जो उन्हें विशिष्ट बना देता है। इनका समग्र साहित्य बड़ा ही प्रभावकारी एवं मार्मिक है। इन्होंने जिस यथार्थ को भोगा है, उसी सच्चाई को अपनी लेखनी के माध्यम से अपने साहित्य में उकेरा है।

जीवन परिचय—

जन्म—साहित्य के उत्कृष्ट साधक व कर्मयोगी साहित्यकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी का जन्म 19 जुलाई सन् 1957 को राजस्थान प्रान्त के

मैड़ ग्राम में हुआ। डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा जी को अपने जन्म के समय के सम्बन्ध में मतभेद है। आपको अपनी माता जी से केवल इतना ही पता चल पाया है कि जिस दिन आपका जन्म हुआ उस दिन बाणगंगा का मेला था और तिथि के हिसाब से यह मेला प्रतिवर्ष उतरते वैशाख की पूर्णिमा के दिन लगता है। जब आपने विद्यालय में प्रवेश लिया तो गुरुजी ने अपने हिसाब से कल्पना कर आपकी जन्म तिथि 19 जुलाई सन् 1957 लिख दी और तब से समस्त सरकारी प्रमाण पत्रों में यही तिथि आपकी जन्मतिथि मानी जाने लगी।

माता-पिता—कैलाशचन्द्र शर्मा जी के पिता श्री गणेश दास जी ग्राम मैड़ में स्थित श्री सियावरजी के मन्दिर में महन्त थे। वे जीवन-यापन के लिए कृषि कार्य भी किया करते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन भगवत्-भक्ति एवं जनसेवा में व्यतीत किया। उन्हें अपने जीवनकाल में अपने पुत्रों की ओर से कोई सुख न मिला। ऐसे समाजसेवी एवं परोपकारी व्यक्ति का 29 मार्च 1980 को निधन हो गया। कैलाशचन्द्र शर्मा जी की माता श्रीमती नारायणी देवी गृहकार्य में दक्ष एक विदुषी महिला थी। आप मातृ स्नेह से वंचित ही रहे क्योंकि आपकी माँ अधिकतर अपने पीहर टोडा (जयपुर) में ही रहा करती थी।

शिक्षा—कैलाशचन्द्र शर्मा जी की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम मैड़ में स्थित राजकीय श्रीराम प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय में हुई। आप प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे और अपनी कक्षा में अव्वल आते रहे। आठवीं की परीक्षा पास करने के उपरान्त आपने शाहपुरा (जयपुर) के राजकीय श्री कल्याण सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में जीव-विज्ञान विषय लेकर प्रथम श्रेणी से नौवीं कक्षा पास की। इसके उपरान्त आपने जयपुर के पोद्दार उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश लिया परन्तु दसवीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर नौकरी हेतु कलकत्ता चले गये। वहां पर आपका मन न लगा और नौकरी छोड़कर वापस जयपुर आ गए। तदुपरान्त स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में ऐच्छिक विषय हिन्दी लेकर द्वितीय श्रेणी से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आपने दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुर से प्रथम श्रेणी में हायर सेकैण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की । अपने पिता की प्रेरणा से वाणिज्य महाविद्यालय जयपुर से बी. कॉम. एवं तत्पश्चात राजस्थान विश्वविद्यालय से एम. कॉम. की परीक्षा पास की।

सन् 1982 में आपने पंजाब नैशलन बैंक में कार्य ग्रहण किया एवं नौकरी करते हुए एलएल. बी., सी. ए. आई. आई. बी., डिप्लोमा इन लेबर

ला एण्ड पर्सनल मैनेजमेंट, सर्टिफिकेट इन रूरल बैंकिंग, सर्टीफिकेट इन कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, एम. ए. (हिन्दी), पीएच. डी. तथा डी. लिट्. की उपाधियां प्राप्त की। आपने भातखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई तथा वृहद् गुजरात संगीत समिति अहमदाबाद की संगीत एवं नृत्य विशारद परीक्षाएं भी पास की।

विवाह और सन्तति—कैलाशचन्द्र शर्मा जी का विवाह 8 जून सन् 1982 को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के प्रो. डॉ. ईश्वर सिंह जी शर्मा की जयेष्ठ पुत्री रेनूरानी के साथ सम्पन्न हुआ। आपके एक पुत्री काजल और पुत्र अभिषेक है। दोनों ने कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग की परीक्षा पास की है तथा दोनों ही संगीत, नृत्य एवं नाटक के प्रतिभाशाली कलाकार हैं। आपकी पत्नी श्रीमति रेनू जी त्रिवेणी कला संगम जयपुर की संस्थापक सदस्य एवं वर्तमान में अध्यक्ष हैं जबकि काजल और अभिषेक इस संस्था के प्रथम विद्यार्थी रहे हैं।

संघर्षमय जीवन—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अपने छात्र जीवन को पूरा करने में जिस यातनामय संघर्ष को झेला, उसका स्वाद बहुत कड़वा है, फिर भी आपने किसी से याचना नहीं की। जब तक आपके पिता जी जीवित रहे तब तक उन्होंने आपकी शिक्षा के खर्चो की पूर्ति का पूरा-पूरा बन्दोबस्त किया। आपको यह भी पता था कि आपके पिता जी आपकी पढ़ाई के लिए आर्थिक साधन किन कठिनाइयों से जुटाते थे। उनकी इस तपस्या को आपने अपने पिता की जीवनी 'कर्मयोगी' लिखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अध्ययन के समय काफी बाधाएं झेली फिर भी इन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में आपने किसी से याचना नहीं की । आपके पिता जी ने अपने जीवनकाल में आपके अध्ययन में आने वाली हर बाधा को दूर करते हुए आपको आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया।

आजीविका—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अपनी एम. कॉम. की शिक्षा पूरी करने के पश्चात् जयपुर के एक प्राईवेट स्कूल में अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् आपने कुछ समय आडवाणी एण्ड सन्स जयपुर (एक्सपोर्ट कम्पनी) में लिपिक का कार्य किया तथा वर्ष 1980 में राजस्थान वित्त निगम जयपुर में अस्थाई लिपिक के रूप में लगभग एक वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् दी गंगानगर केन्द्रीय सरकारी बैंक के प्रधान कार्यालय में एक वर्ष तक लिपिक के रूप में अपनी सेवाएं देने के उपरान्त 14 अगस्त

1982 में पंजाब नैशनल बैंक में लिपिक के रूप में कार्यग्रहण किया । वर्तमान में आप इस बैंक में वरिष्ठ अंकेक्षक के रूप में कार्यरत हैं। आपको कृषि कार्य करने का भी शौक है। ग्राम मैड़ में स्थित अपनी कृषि भूमि पर आप दो स्थाई नौकरों की सहायता से कृषि कार्य करवाते हैं।

साहित्य सृजन (रचना संसार)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी ने अल्पायु में ही साहित्य सृजन करना प्रारम्भ कर दिया था। जब आप आठवीं कक्षा में पढ़ते थे तो विरोधी गुट के साथियों को चिढ़ाने के लिए तुकबन्दी किया करते थे, जो आपके वर्तमान लेखन का आधार बनी । आपने अपनी इस धरोहर को अपने काव्य-संग्रह 'तरुणाई' में यत्र-तत्र प्रस्तुत किया है। आपकी सर्वप्रथम कहानी 'चेहरे असली नकली' एवं कविता 'वस्तु-पात्र सम्बन्ध' वाणिज्य महाविद्यालय जयपुर की पत्रिका 'व्यावसायिका' में प्रकाशित हुई जिससे आपको प्रोत्साहन मिला और आप निरन्तर लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ते ही चले गये।

संगीत, नृत्य एवं नाटक—लेखन के साथ-साथ आपका व्यक्तित्व नाट्य एवं नृत्य विधा से भी जुड़ा रहा आपने जयपुर घराने के वरिष्ठ नृत्यगुरु स्व. श्री मांगीलाल जी पँवार से कत्थक नृत्य की प्रारम्भिक शिक्षा लेने के बाद श्री राजेन्द्र गंगानी, स्व. श्री तीरथ राम आजाद तथा श्रीमती आशा जोगलेकर जैसे महान् गुरुओं से समय-समय पर कत्थक नृत्य की बारीकियां सीखकर न केवल अपने अनेक शिष्य शिष्याओं को कत्थक नृत्य की शिक्षा प्रदान की अपितु जयपुर, जोधपुर, भरतपुर गाजियाबाद आदि अनेक स्थानों पर अपनी शिष्य-शिष्याओं के साथ विभिन्न मंचों पर प्रस्तुतीकरण भी दिया। उल्लेखनीय है कि आपकी शिष्या श्रीमती रीना शर्मा ने इन्दिरा कला संगीत विशविद्यालय, खैरागढ़ की वर्ष 2003 की विश्वविद्यालय की बी.डान्स की योग्यता सूची में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। नृत्य के क्षेत्र में आपके इस योगदान को कथक नृत्य गुरु श्रीमती आशा जोगलेकर एवं श्री राजेन्द्र गंगानी ने 'कर्मपथ' (डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा का बहुआयामी सृजन) पुस्तक हेतु प्रस्तुत अपने आलेखों में उजागर किया है।

आपने अब तक लगभग डेढ़ दर्जन नाटकों की रचना की, उनके मंचन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी तथा नाट्य निर्देशन जैसे महान् दायित्व का भी निर्वहन अत्यन्त कुशलता से किया। अपने इन सुरूचीपूर्ण कार्यों को गति प्रदान करने हेतु आपने अपनी पत्नी श्रीमती रेनूरानी के सहयोग से सन्

1995 में त्रिवेणी कला संगम, जयपुर की स्थापना की जहां पर अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं के केन्द्र व्यवस्थापक के रूप में संचालन करना एवं वर्ष 2001 में त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय, जयपुर की स्थापना कर उसमें इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की विद् डिप्लोमा एवं बी.डान्स तक की परीक्षाओं हेतु कत्थक नृत्य विषय का शिक्षण प्रदान कर परीक्षाओं का संचालन करना आपकी सांगीतिक अभिरूची का परिचायक है। 4 नवम्बर 1998 को आपके कुशल संयोजन में न्यू गेट से रवीन्द्र मंच, जयपुर तक एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विशाल संगीत रैली का आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश से लगभग सात सौ संगीत-विद्यार्थियों एवं संगीत प्रेमियों ने पद्मश्री विश्वमोहन भट्ट एवं संगीतज्ञ स्व. श्री नारयणराव पटवर्धन के नेतृत्व में सहभागिता की। आप अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई की संगीत एवं कत्थक नृत्य की विभिन्न परीक्षाओं के प्रायोगिक परीक्षक के रूप में भी संगीत एवं नृत्य जगत् को अपनी सेवाएं देते रहे हैं तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग में समय-समय पर एम.ए. कक्षाओं के विद्यार्थियों को अवैतनिक अतिथि संकाय के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं।

मान-सम्मान (सम्मान एवं पुरस्कार)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी बिना किसी प्रतिफल प्राप्त करने की आकांक्षा के निरंतर साहित्य, संगीत, नाट्य एवं नृत्यकर्म में सलंग्न रहे हैं। अपने सुरूचिपूर्ण कार्यों को मूर्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से आपने अपनी पत्नी श्रीमति रेनू रानी शर्मा के सहयोग से वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम की स्थापना की और उसकी छाया तले रंगमंच से जुड़कर अनेक नाटकों का प्रस्तुतीकरण किया, जिसके परिणामस्वरूप आपको राजस्थान कला केन्द्र भरतपुर द्वारा 'कलाश्री', अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा 'नाट्य कला सम्मान' तथा इण्डियन फार्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा ढूँढाड़ी बोली में किये गये शोधपरक कार्य एवं नाट्य क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों हेतु सम्मानित किया गया।

कार्यक्षेत्र (अभिरूचि)—कैलाशचन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है अर्थात् आपका लेखन एक विधा तक सीमित नहीं रहा। आप कहानीकार होने के साथ-साथ नाटककार, उपन्यासकार और कवि भी हैं। लेखन के साथ-साथ रंगमंच और संगीत में भी आपकी रूचि रही है। आप सक्रिय रूप से

रंगकर्म में संलग्न रहे हैं तथा कई नाटकों का निर्देशन एवं उनमें अभिनय किया है। संगीत के क्षेत्र में आपने वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम जयपुर एवं वर्ष 2001 में त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय जयपुर की स्थापना की। आप अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल मुम्बई की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं के केन्द्र व्यवस्थापक एवं मण्डल के 67वें दीक्षांत समारोह के संयोजक रहे हैं। आप मंडल की संगीत अलंकार तक की परीक्षाओं के क्रियात्मक परीक्षक एवं मंडल के आजीवन सदस्य हैं। आपने विभिन्न प्रांतों में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं बैठको में सहभागिता की है।

व्यक्तित्व—व्यक्तित्व से तात्पर्य है व्यक्ति का अपना वैशिष्ट्य या निजीपना। वस्तुत: व्यक्तित्व का निर्माण व्यक्ति विशेष के अनुभवों और परिवेशीय प्रभावों से होता है। दशरथ ओझा ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है-''व्यक्तित्व का अर्थ है मानसिक प्रक्रिया में अनुरूपता अथवा एकरूपता का निर्माण।''

मनुष्य की सबसे बड़ी पहेली उसका अपना व्यक्तित्व है।

रामबाबू गुप्त के अनुसार-''व्यक्तित्व पूर्णतया एक आदर्श है। यह आत्मज्ञान है।''

आइनैक के अनुसार-''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, वृद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा बहुत स्थाई और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निधारित करता है।''

व्यक्तित्व शब्द को अंग्रेजी में 'पर्सनेलिटी' कहा जाता है। पर्सनेलिटी शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'परसोना' से हुई है जिसका अर्थ है मुखौटा।

किसी भी व्यक्ति की तरह साहित्यकार का व्यक्तित्व भी द्विपक्षीय होता है-बाह्य और आन्तरिक पक्ष। बाह्य पक्ष में पहनावा, रंग-रूप, खान-पान आदि आते हैं, जबकि आन्तरिक पक्ष में स्वभाव, व्यवहार और साहित्यिक रचनाओं में प्रदत्त भावना और शैली को लिया जा सकता है। जीवित साहित्यकार के व्यक्तित्व का चित्र प्रस्तुत करना अत्यन्त जटिल कार्य होता है, क्योंकि परिस्थिति के अनुसार वह अपने अन्दर नये भाव और प्रभाव ग्रहण करता है। वह परिस्थितियों और भावों के अनुकूल ही रचना कार्य करता है। इस प्रकार

स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य का व्यक्तित्व गतिशील होता है।

कलम की शक्ति, विचारों और सिद्धांतों को अपना ध्येय मानकर सृजन एवं सेवा में कार्यरत कैलाशचन्द्र शर्मा जी एक ऐसे आलोक स्तम्भ हैं जो दूर-दूर तक लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

आकृति एवं वेशभूषा—कैलाशचन्द्र शर्मा जी साधारण-सी कद-काठी वाले व्यक्ति हैं। यद्यपि आपका जन्म एक साधारण कृषक परिवार में हुआ है अत: आपकी आकृति से आपके ग्रामीण होने का अनुमान सहज रूप से लगाया जा सकता है। आपकी वेशभूषा सामान्य है। नौकरी पर जाते हुए आप पैन्ट-शर्ट पहनते हैं। पहनावे में किसी भी प्रकार का दिखावा आपको पसन्द नही है। जब आप अपने गाँव जाते है तो सफेद धोती-कमीज, सिर पर लाल पगड़ी एवं पैरों में बाड़ीजोड़ी की जूतियाँ पहनना आपको रूचिकर लगता है। संगीत एवं नाटक के कार्यक्रमों में सहभागिता के अवसर पर आप कुर्ता-पाजामा पहनते हैं। आप सक्रिय रंगकर्मी एवं कत्थक नृत्य के प्रदर्शनकारी कलाकार हैं, अत: कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के समय आप पात्रानुसार वेशभूषा धारण करते हैं।

खान-पान—कैलाशचन्द्र शर्मा जी विशुद्ध रूप से शाकाहारी हैं। माँसाहार, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि से आपको सख्त घृणा है। सामान्यतया आप चाय नहीं पीया करते, परन्तु छाछ-राबड़ी, बाजरे की खिचड़ी, लहसुन की चटनी एवं दाल बाटी चूरमा आदि आपको बेहद पसंद हैं।

स्वभाव—कैलाशचन्द्र शर्मा जी स्वभाव से विनम्र शिष्ट और मृदुभाषी हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। प्रत्येक कार्य को आप बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। आपका जीवन अनुशासन के साँचे में ढ़ला है।

शालीनता—कैलाशचन्द्र शर्मा जी सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति हैं। जीवन में किसी भी प्रकार का दिखावा आपको पसन्द नहीं है तथा औपचारिकताओं से वे कोसों दूर हैं। आप अपनी बैंक की सेवा में भी एक सहज व्यक्ति के रूप में रहते हैं। आपको कभी भी पद का अभिमान नहीं रहा। यही कारण है कि जब आप प्रबन्धक के पद पर कार्यरत थे तो कई लोगों ने आपको अधिकारी की पदोन्नति के लिए तैयारी करने की सलाह दी।

स्वाभिमानी व्यक्तित्व—कैलाशचन्द्र शर्मा जी अपने पिता महन्त श्री गणेशदास जी महाराज की ही भांति स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। कठिन

से कठिन परिस्थितियों में भी आपने न तो अपने सिद्धांतों के विरुद्ध कोई कार्य किया और न ही अपनी परिस्थितियों को किसी के सामने उजागर किया। शायद इसी गुण ने आपको समान्य लोगों की पंक्ति से परे शीर्ष पर ले जाकर खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई। जब किसी कठिन परिस्थिति से निपटने में आप स्वयं को असहाय महसूस करते तो सब कुछ भगवान के भरोसे छोड़ दिया करते और तब निश्चय ही उस कठिनाई से आप आसानी से निजात पा लिया करते।

पुरुषार्थ एवं आशावाद—कैलाशचन्द्र शर्मा जी की सबसे बड़ी विशेषता उनका आशावादी होना है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आप आशा, विश्वास और पुरुषार्थ से परिपूर्ण रहते हैं, तभी तो आपका लेखनकार्य निरन्तर जारी है। हमने हालातों और परिस्थितियों की मार से टूट कर अनेक लेखकों को राह छोड़ते हुए देखा है या फिर गहरी निराशा और अवसाद के दौर से गुजरते हुए। परन्तु कैलाशचन्द्र शर्मा जी आशावादी हैं और आप में परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता है।

दृढ़ इच्छा शक्ति—कैलाशचन्द्र शर्मा जी दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न एक कर्मठ इन्सान हैं। जब आपके मन में किसी कार्य को करने की इच्छा उत्पन्न होती है तो आप तब तक चैन की साँस नहीं लेते जब तक कि उस कार्य की सिद्धि न हो जाए। इस मार्ग में आने वाली किसी भी प्रकार की कठिनाई से आप तनिक भी विचलित नहीं होते। आपका मत है कि डूबता हुआ व्यक्ति यदि डरकर जीने की उम्मीद खो बैठता है तो वह जरूर डूबेगा। पर ऐसे समय में किसी के जीने की इच्छा बलवती हो तो शायद वह बच सकता है। इस सम्बन्ध में आपके तरुणाई काव्य संग्रह की कविता 'पथ के राही' खरी उतरती प्रतीत होती है-

'जाग उठ इन्सान पल-पल बीतता जाता,
राह है सुनसान इस पर क्यों नहीं आता।
कर इसे आबाद क्यों तू सो रहा पगले,
धैर्य मन से धार राही राह पर चल दे। ....."[1]

प्रकृति प्रेमी—कैलाशचन्द्र शर्मा जी का जन्म एक ऐसे गाँव में हुआ जो प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित है। आपका निवास स्थान श्री सियावरजी

का मन्दिर बाणगंगा नदी के तट पर स्थित है,जहां पर खजूर, आम, जामुन आदि के हजारों पेड़ सैकड़ों वर्षों से स्थिर रूप से खड़े हैं। मोर, पपीहे, कोयल,चिड़ियाओं की चहचाहट एवं गाय, भैंस, बछड़ों के रंभाने का स्वर निरन्तर रूप से आपको आनन्दित करता रहा है, जो आपके दूंढाड़ी गीतों, कविताओं, कहानियों, नाटकों एवं उपन्यासों में देखा जा सकता है।

सृजन की प्रेरणा—डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा जी को साहित्य सृजन की प्रेरणा अपने जन्म स्थान के इस प्राकृतिक वातावरण एवं स्कूल के सहपाठियों से मिली जिसके परिणामस्वरूप आपने अपनी प्रारम्भिक कविताएं एवं कहानियाँ लिखी। जीवन में पग-पग पर आपको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो आपके लेखन के आधार बने। इस बात को आपनेअपने काव्य संग्रह 'तरुणाई' में अभिव्यक्त भी किया है।

वर्ष 1995 में त्रिवेणी कला संगम जयपुर द्वारा आयोजित बाल नाट्य प्रशिक्षण शिविरों हेतु अच्छे नाटकों की कमी ने आपको नाटक लिखने हेतु प्रेरित किया तथा वर्ष 2005 में भरतपुर की कत्थक नृत्य की उनकी शिष्या श्रीमती रीना शर्मा ने आपको ढूंढाड़ी गीत लिखने हेतु प्रेरित किया जिनका आगे चलकर आपने अपने नाटकों के मंचीय प्रस्तुतीकरण में समायोजन किया। आपने रीना शर्मा के घर पर अपना प्रथम गीत 'टरैं' लिखा तथा आगे चलकर उनकी शिष्या ज्योति कटारा के सहयोग एवं प्रेरणा से ढूँढाड़ी गीतों का सृजन एवं ध्वनि संयोजन किया जिसके परिणामस्वरूप फरवरी 2007 में आपके ध्वनि संयोजन में 'त्रिवेणी कैसेट-सी. डी.' जारी हुई।

कृतित्व

हिन्दी साहित्य के प्रबुद्ध साहित्यकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी की साहित्य यात्रा विभिन्न कृतियों, जैसे कहानी, नाटक, उपन्यास, काव्य,जीवनी जैसी विधाओं से होकर गुजरती है। इनकी सफलता और प्रसिद्धि लेखक के लेखन कर्म की सार्थकता को सिद्ध करती है तथा श्रेष्ठता को भी स्थापित करती है।

नाटक

कार्यवाहक हलवाई , नामकरण , अफ़सर का कुत्ता, मन चंगा तो कठौती में गंगा, लड़ी मैड़ की, तुक्के का बादशाह, पेड़ हमारे मित्र, छोटा बेगारी, जैसे को तैसा, जंगल मित्र, कंस , आधुनिक यमलोक, वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान, देख जात के ठाठ, मानवता की पुकार, मेरी लाडो पढ़ेगी, दुश्मन दोस्त, बदले

का अभिशाप, मोती मैड़ के, और मंज़िल मिल गई, महावत, आज का गुरुकुल ।

उपन्यास

अभिव्यक्ति, विरह का इन्द्रधनुष

कहानियाँ

'अबला की मंजिल' कहानी-संग्रह—अबला की मंज़िल, माधवी, साक्षात्कार, मौन समर्पण, चेहरे असली-नकली, नवजीवन, कर्ज़, दीपक की रोशनी, पैमाना, भटकती आत्मा, ताबीज़

'ओवरकोट' कहानी-संग्रह—ओवरकोट, रींछ भगवान, बोरे की लाश, खान दोस्त, भिखारिन माँ, बछड़े की अरदास , उपकार का बदला , सवारी का मोह, स्वाभिमान

जीवनी

कर्मयोगी

शोध प्रबन्ध

नरेश मेहता का गद्य साहित्य (पीएच. डी.)

हिन्दी मराठीनाटकों का रंग वैशिष्ट्य :समकालीन भारतीय संदर्भ(डी.लिट्.)

समीक्षा

मोहब्बत का सफरनामा (कवि श्री जगदीशचन्द्र पण्ड्या की गज़लों की पुस्तक)।

हादसों के संस्करण (मराठी रंगकर्मी एवं अभिनेता श्री विजय कदम की पुस्तक 'हलकं फुलकं')।

सम्पादन

वेबसाईट

1. www.maidtriveni.com 2. www.prithvipuratriveni.com

3. www.drsavitaarthub.com

स्मारिका— *त्रिवेणी कला संगम जयपुर, वर्ष 1995 एवं 1998 * पी.एन.बी. सन्देश (पंजाब नैशनल बैंक, जयपुर अँचल की गृह पत्रिका) *बैंक ज्योति

(बैंक ऑफ बडौदा के संयोजन में जयपुर बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की गृह पत्रिका)

अन्य ग्रन्थ

*आधुनिक परिदृश्य में मानव संसाधन विकास एवं प्रबन्धन (पुरस्कृत)
* भारतीय रंगमंच शास्त्र एवं आधुनिक रंगमंच

खण्डकाव्य

सन्तोषी माँ

लेख

देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं समाचार-पत्रों में साहित्य, संगीत, नाटक एवं लोक कला सम्बन्धी विषयों पर लेखों का प्रकाशन।

कविताएँ

काव्य संग्रह 'तरुणाई' एवं अन्य कविताओं सहित लगभग 60 कविताओं का सृजन।

गीत

130 ढूंढाड़ी गीतों का सृजन एवं ध्वनि संयोजन। 50 ढूंढाड़ी गीतों की विषयवस्तु एवं भावार्थ का अंग्रेजी अनुवाद।

कत्थक एवं लोकनृत्य प्रस्तुतीकरण

रवीन्द्र मंच जयपुर, यूथ हॉस्टल जोधपुर, वी.एन. भारतखण्डे संगीत महाविद्यालय गाजियाबाद आदि स्थानों पर एकल एवं युगल प्रस्तुतीकरण।

डायरी

वर्ष 1980 में बम्बई प्रवास के दौरान लिखित।

प्रदर्शनात्मक व्याख्यान

भारतीय संगीत, नाटक एवं लोक कला विषय पर आई. सी. सी. आर. नई दिल्ली हेतु प्रदर्शनात्मक व्याख्यान की वीडियो सी. डी. का निर्माण।

रंगमंच प्रस्तुतीकरण एवं निर्देशन

सक्रिय रूप से रंगकर्म में संलग्न। कई दर्जन नाटकों में अभिनय एवं उनका निर्देशन। सदैव नई टीम को लेकर सफल रहने वाले निर्देशक के रूप में जयपुर रंगमंच के ख्यात कलाकार।

दूरदर्शन प्रसारण

13 जनवरी 1997 को जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में आपके नाटक 'पेड़ हमारे मित्र' का प्रसारण।

श्री संजय दत्त माथुर के निर्देशन में 27 जुलाई 2008 को जयपुर दूरदर्शन के 'कल्याणी' धारावाहिक की आपकी जन्मभूमि गाँव मैड़ में की गयी रिकॉर्डिंग में आपका सराहनीय अभिनय जिसके प्रसारण को काफी सराहना मिली।

18 नवम्बर 2009 को श्री शैलेन्द्र उपाध्याय के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'मरूधरा' कार्यक्रम में आपके नवसृजित ढूँढाड़ी गीतों में ग्राम्य जीवन एवं दर्शन सम्बन्धी आपसे हुई प्रभावशाली वार्ता के 16 दिसम्बर 2009 को हुए प्रसारण को काफी सराहा गया।

डॉ. वासुदेव शर्मा के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में 'नाट्यकला का व्यक्तित्व निर्माण में योगदान' विषय प्रसारित किये गये साक्षात्कार का 20 फरवरी 2010 को प्रसारण।

5 फरवरी 2011 को डॉ. वासुदेव शर्मा एवं श्री राजकिशोर के निर्देशन में जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में 'मेरी लाड़ो पढ़ेगी' नाटक का प्रसारण।

ऑडियो कैसेट- सी. डी.

11 फरवरी 2007 को कैलाशचन्द्र शर्मा जी के निर्देशन-स्वर संयोजन में उनके द्वारा लिखित ढूँढाड़ी गीतों की 'त्रिवेणी कैसेट- सी. डी.' शृंखला का लोकार्पण 'जयपुर तमाशा' के मूर्धन्य कलाकार स्व. श्री गोपीकृष्ण भट्ट द्वारा किया गया।

शोधकार्य

आपके गीतों पर कला भारती अलवर के निदेशक श्री सुधीर माथुर द्वारा राजस्थान विश्वद्यालय के संगीत विभाग की पूर्व अध्यक्ष एवं ललितकला संकायाध्यक्ष प्रोफेसर मायारानी टाक के निर्देशन मे पीएच.डी. हेतु शोधकार्य

किया गया है। कुरुक्षेत्र विश्वद्यालय में आपके साहित्य पर एम.फिल. हेतु निम्नानुसार शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं :-

1. नाटककार कैलाशचन्द्र शर्मा
   शोधकर्ता : जोगेश, निर्देशक : डॉ. बाबूराम, वर्ष 2008
2. अभिव्यक्ति उपन्यास में स्त्री मनोविज्ञान
   शोधकर्त्री : कविता, निर्देशिका : डॉ. आशा अहलावत, वर्ष 2009
3. कहानीकार कैलाशचन्द्र शर्मा
   शोधकर्त्री : सुखविन्द्र, निर्देशिका : डॉ.(श्रीमती) नरेश जोशी, वर्ष 2009

एम.फिल. हेतु निम्नानुसार शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं :-

1.
2.
3.

इसके अतिरिक्त राँची विश्वद्यालय में आपके साहित्य पर निम्नानुसार पीएच.डी. हेतु शोधकार्य प्रगति में हैं-

1. डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा के काव्य में कला, संस्कृति एवं ग्राम्य जीवन
   शोधकर्ता : हरद्वारी लाल शर्मा, निर्देशिका : डॉ. यशोधरा राठौर
2. डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा के गद्य साहित्य का विवेचन
   शोधकर्ता : कुलदीप, निर्देशक : डॉ. रतन प्रकाश

निष्कर्ष

कैलाशचन्द्र शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। कहानी, नाटक, उपन्यास, कविताएँ, जीवनी आदि लिखकर अपनी विशिष्टता का परिचय दिया है। कैलाशचन्द्र शर्मा जी का समस्त जीवन संघर्षो में व्यतीत हुआ है, फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी और जीवन पथ पर आगे बढ़ते गये। इन्होंने देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में साहित्य,संगीत, नाटक व लोक कला सम्बन्धी विषयों पर लेख लिखे तथा साथ ही दूरदर्शन से भी

जुड़े रहे हैं। इनके द्वारा लिखित कई नाटकों का जयपुर दूरदर्शन से प्रसारण हुआ। लेखन के साथ-साथ रंगमंच प्रस्तुतीकरण, निर्देशन एवं संगीत में भी इनकी रूचि रही है। ये सक्रिय रूप से रंगकर्म में संलग्न रहे हैं। इन्होंने कई नाटकों का निर्देशन एवं उनमें अभिनय भी किया है। इन्होंने त्रिवेणी कला संगम एवं त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय, जयपुर की स्थापना की। विभिन्न प्रान्तों में आयोजित संगीत सम्मेलनों व बैठकों में इनकी सहभागिता रही है। वर्ष 2003 में हिन्दुस्तानी एकेडमी एवं नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया द्वारा इलाहाबाद में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'श्री नरेश मेहता का कथा साहित्य' तथा अगस्त 2012 में नाशिक में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'भूमण्डलीकरण तथा क्षेत्रीय भाषा अस्मिता संघर्ष' विषय पर किये गये आपके पत्रवाचन सराहनीय रहे।

इस प्रकार कैलाशचन्द्र शर्मा जी ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्होंने लेखन, मंचन, संगीत आदि सभी क्षेत्रों में अपना लोहा मनवाया है। एक व्यक्ति में इतना सब कुछ मिलना कठिन ही नहीं, अंसभव है।

(कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एम.फिल. लधु शोध प्रबन्ध : कहानीकार कैलाशचन्द्र शर्मा, से साभार)

मानवता की पुकार

पहला दृश्य

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट-नटी प्रकट होते हैं।)
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
उर हर्षाया मन मुस्काया दूर गगन के पँछी पाकर।
अन्तर का आमंत्रण पाकर निज जीवन संरक्षित समझा
अगणित बार विलोका इसको मन में संशय रहा न अब था
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
विश्व यात्रा के ये राही निद्रा की गोद में सोये
प्रथम बार ऐसा सुख पाकर स्वप्न श्रृंखला में वे डोले
स्वप्न श्रृंखला ..... में वे डोले
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर

धर्म मिला निरपेक्ष नहीं था जात पाँत का रूदन
सामुदायिकी छुआछूत का पाया कहीं न क्रन्दन।
मन्दिर देखे मस्जिद देखे चर्च मिली हर ओर
दिव्य विराट रूप भारत का पाकर हुए विभोर
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पंछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
मुल्ला-बाँग सुनी मन्दिर के घण्टे की टंकार,
सिक्खों के गुरुद्वारे देखो गिरिजाघर में आज।
सब धर्मों का हुआ समागम नहीं कोई अलगाव,
गले मिलें यह भाईचारा नयनों का शृंगार।
कैसी भी विपदा आ जाये सह लेंगे मिल साथ,
हाई - मानवता की यही पुका.....र
कम मानवता की यही पुकार
बहुत कम मानवता की यही पुकार
बहुत कम मानवता की यही पुकार

दूसरा दृश्य

(हिन्दुस्तान के एक शहर के भीड़भरे चौराहे का एक दृश्य। चौराहे पर जनजीवन अपने सामान्य रूप में प्रवाहित है। पास में ही बरगद के पेड़ के इर्द-गिर्द बने गोल गट्टे पर एक नट और नटी अभी-अभी खाना खा चुके हैं और बस्ती में तमाशा दिखाने के लिये प्रस्थान करने वाले हैं।)

नटी : (सामने शहर की ओर इशारा करते हुए प्रसन्नता से)- कैसा शान्त और मनोरम दृश्य है यहाँ का।

नट : हाँ, चारों ओर हरियाली ही हरियाली।

नटी : आसमान में विचरण करते पक्षियों की रंग बिरंगी कतारें।

नट : और इनका संगीतमय गान।

नटी : मन को कैसे लुभा रहे हैं।

नट : हाँ भाग्यवान, हिन्दुस्तान का हाल यही है। चारों ओर शान्ति ही शान्ति। देखो तो, लोग बाग आपस में कैसे हिलमिलकर रह रहे हैं।

चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली। भाईचारा, कौमी एकता और धर्मनिरपेक्षता (फिर आसमान में जाते हुए पक्षियों की ओर देखकर)- हां भाई, ये पंछी भी राजस्थान की इस रंगबिरंगी छटा से मंत्रमुग्ध हो अपने देश को वापस लौटते हुए भी यहीं पर रह जाने को लालायित हैं।

नटी : हाँ, और राजस्थान की मरूभूमि से प्रभावित होकर ही तो मैंने तुमसे ब्याह रचाया है। खुशी से झूम उठने को मन करता है राजस्थान की इस रंगबिरंगी छटा को देखकर।

नट : (नटी का हाथ पकड़कर आगे आते हुए) - तो आओ न फिर-

(पार्श्व गीत)

स्थाई धन्य-धन्य वीरों की भूमि भाईचारे की जो खान,
सदियों से हिलमिलकर रहते बड़ा अनोखा राजस्थान
बड़ा अनोखा राजस्थान बड़ा अनोखा राजस्थान

1 अमर सिंह राठौड़ देखो चाहे नरसेबाज पठान,
हाई - कौल किया पानी का पूरा.....
कौल किया पानी का पूरा
धन्य- धन्य यह राजस्थान
धन्य- धन्य यह राजस्थान

2 मरुधारा में हुआ हमीर कौल किया मिटकर भी पूरा,
कौल किया मिटकर भी पूरा

3 राखी भेजी रानी ने तो करी हुमायूं ने रक्षा तब
हिन्दू-मुस्लिम का सहयोग रहा बताता राजस्थान

वीरों की मरुभूमि देखो भाईचारे की है खान
भाईचारे की है खान भाईचारे की है खान + स्थाई

4 चौराहों पर प्याऊ लगती हिन्दू-मुस्लिम एक समान
दीवाली हो या फिर ईद गले मिलें हिन्दू-मुस्लिम
गले मिलें हिन्दू-मुस्लिम गले मिलें हिन्दू-मुस्लिम + स्थाई

5 मेले और हाट-बाज़ार बने एकता के आधार
नहीं यहां कोई हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख-ईसाई का अलगाव
आओ सब मिल नाचें-गायें जीवन का मिल लें आनन्द
जीवन का मिल लें आनन्द जीवन का मिल लें आनन्द

6 रहट करे चरमर चरमर यहाँ बैलों के घुँघरू बाजें
गैंती से महिलाएं देखो कैसे चट्टानें काटें
नई राह सब खोज रहे जहाँ अमन-चैन-संतोष मिले
पानी की धारा रेतीले धोरों में देखो फूटे
पँछी कलरव करते जाते चीं-चीं करते लहराते
वे भी कहते-कहते जाते
क्या कहते जाते हैं भाई ?
(लय सामान्य से द्रुत होती जाती है)
धन्य-धन्य यह राजस्थान धन्य-धन्य यह राजस्थान
धन्य-धन्य यह राजस्थान

नटी : (आनन्द विभोर होकर) - वह-वाह, मजा आ गया।

नट : हाँ भाई, कैसे आनन्द से जीवन जी रहे हैं हमारे यहाँ के नगरवासी।

नटी : सब लोग खुश हैं यहाँ पर।

नट : परन्तु कुछ लोगों को इनकी खुशियां, इनकी एकता, देश की अखण्डता, आपसी मेल-मिलाप और इन सबका आनन्द से जीवन बिताना शायद अच्छा नहीं लग रहा है।

नटी : (आश्चर्य से) - किन लोगों की बात कर रहे हैं जी आप ?

नट : आज युग-परिवर्तन हो रहा है।

नटी : युग परिवर्तन ?

नट : हाँ युग-परिचर्तन। लो सुनो तुम भी । (रेडियो से प्रसारण)
गाँव और ढाणियाँ बदली पगडण्डी अब नहीं रही,
पटरी के पहियों से देखो शहर बने मैट्रो भाई।
चीलगाडियाँ मँडराती है जाम लगा अड्डे पर,
देखो अब युग बदला है.. भाई भाई का दुश्मन।
दौलत के पलड़ों में कैसे हल्के रिश्ते-नाते,
नये ख़ून को राह दिखाते आतंकवादी संगठन
आतंकवादी संगठन आतंकवादी संगठन

नटी : (वर्तमान में लौटते हुए) - आतंकवादी संगठन ?

नट : हाँ, आतंकवादी संगठन और उससे जुड़े कुछ स्वार्थी लोग, जो अपने मामूली सं स्वार्थ के लिये सैंकडों बेगुनाह लोगों की जान ले लेने को तैयार है।

नटी : कैसी बातें कर रहे हो जी तुम ? मुझे तो यहाँ पर कोई आतंकवादी संगठन दिखलायी नहीं दे रहा है। (सामने देखती है)

नट : यहाँ पर नहीं, हमारे देश में नहीं। (सामने की ओर इशारा करते हुए)- वो सामने देखो, हमारे देश की सीमा के पार जँगल के गहरे खंदकों में क्या गड़बड़ घोटाला चल रहा है।

नटी : (एडियां ऊंची कर नट के बगल में खड़े होकर सामने देखते हुए) मैं भी देखूं तो।

तीसरा दृश्य

(आतंकवादी संगठन कार्यालय का दृश्य। देश की सीमा के पार घने जंगल के बीहड़ों के खंदे में अपराधी से दिखने वाले चार-पाँच युवक एवं एक महिला अपने दल के नेता की बात ध्यान से सुन रहे हैं। खंदे के बीचोंबीच एक विशाल गोल चट्टान स्थित है जिसके इर्द गिर्द पाँच-छह ऊबड़-खाबड़ पत्थर जगह-जगह पड़े हैं जिन पर ये लोग बैठे हैं। दिखने में ये सभी लोग अलग-अलग

धर्मों के प्रतीत होते हैं। इन सबसे अलग अधेड़ उम्र का एक विदेशी सा दिखने वाला व्यक्ति चट्टान के एक कोने में गम्भीर मुद्र में बैठा है। यह इस संगठन का चीफ लगता है जिसके सिर पर लम्बे-लम्बे बाल हैं। वह थोड़ी-थोड़ी देर में मुँह में दबे पान का पीक थूकता जाता है। वह अपनी बात की पुष्टि चाहने हेतु जैसे ही बन्दूक के बट को जमीन पर मारता है तब संगठन के सदस्य उसे सैल्यूट मारते हैं। पास में ही सुनसान जँगल है जहाँ से लगातार साँय-साँय की आवाज़ आ रही है। जब उस संगठन का चीफ कोई आदेश देता है या जब संगठन का कोई सदस्य अपने दाहिने पैर का बूट ज़मीन पर मारता है तो खंदे की कच्ची दीवारें लगातार काँपती सी प्रतीत होती हैं। नट-नटी मंच के एक कोने से खड़े-खड़े यह सब देख रहे हैं।)

चीफ : (दल के सदस्यों से ऊंची आवाज़ में)- हमारे लिये यह डूब मरने की बात है कि हमारी निरन्तर आतंकवादी कार्यवाहियों के बावजूद भी हिन्दुस्तानी लोग अपना जीवन शान्ति से बिता रहे हैं और आराम की नींद सो रहे हैं । प्रगति की भुजायें चारों ओर फैलकर असहायों, अबलाओं और दलितों को आश्रय प्रदान कर रही हैं। बच्चे और महिलाएं रात्रि में बेखौफ होकर गलियों और चौराहों पर आते-जाते हैं। वहां पर न घरों में ताले लगाये जाते हैं और न ही घरों की चौकसी के लिये सुरक्षा प्रहरी रखे जाते हैं। लानत है हमारी ताकत पर, हमारी व्यवस्थाओं पर और तुम जैसे अपाहिज सिपाहियों पर।

एक हिन्दू सदस्य : सर, मैं हिन्दू हूं परन्तु अपने संगठन के प्रति इतना वफादार हूं कि हर बार हिन्दुत्व को चोट पहुँचाने की कोशिश की है। मैं हमेशा इस प्रयास में रहता हूं कि हिन्दू धर्म के अनुयायी अपने धर्म-पथ से विचलित हो जायं जिससे हम अपने मंसूबों में आसानी से कमयाब हो सकें। मैं कभी नमकहराम नहीं हो सकता। आपक दिया ही खाता हूं, पीता हूं, और ये वस्त्र-परिधन, आपकी माया ही तो है सर। हिन्दू धर्म ने मुझे क्या दिया, अस्मिता,

संस्कृति और नैतिकता का ढोंगी उपदेश। पता नहीं क्या-क्या बकवास करते रहते हैं वे लोग। घास-फूस खाने वाले कहीं के।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट-नटी प्रकट होते हैं।)

नटी : (आश्चर्यमिश्रित क्रोध से)- देखो तो कैसी झूठी बातें कर रहा है यह हिन्दू धर्म के बारे में।

नट : हाँ, चन्द रूपयों के लिये रंग बदल लिया है इसने। साला गिरगिट कहीं का। (पत्थर फेंकता है।)

(फ्रीज। मंच पर आतंकवादी संगठन पुन: उभर आता है।)

मुसलमान सदस्य : सर, मैं एक सच्चा मुसलमान हूं , नमाजी मुसलमान सर। परन्तु हिन्दुस्तान में मुझे क्या मिला। केवल बातें ही बातें। बातें भी कैसी-कैसी- हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं, हमें एक दूसरे के धर्मों का आदर करना चाहिए। परन्तु क्या कोई धर्म-गुरु मुझ जैसे संस्कारवान मुसलमान के घर आया है, पानी पिया है हमारे यहां का। मुँह आगे तो एकता, अखण्डता और धर्मनिरपेक्षता की बातें करते हैं सब, और पीठ पीछे कहते हैं- तुर्क किसका सगा होता है। कोई-कोई तो यह कहते हुए भी सुना गया है कि मुसलमानों में से कइयों ने तो सत्ता हथियाने के लिये अपने ख़ून को ही दीवार में ज़िन्दा चिनवा दिया।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट-नटी प्रकट होते हैं।)

नट : देखो-देखो इस चापलूस व ढोंगी को , ऐतिहासिक तथ्यों को कैसे कौमी एकता के खिलाफ़ इस्तेमाल कर रहा है। कहता है, उसके घर आकर किसी धर्मगुरु ने पानी नहीं पीया । अरे यही तो है सच्ची धर्मनिरपेक्षता की असली पहचान। सब धर्मों को खुली छूट है अपने-अपने उसूलों पर चलने की ।

नटी : हाँ, यहाँ पर कोई किसी के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता।

नट : हाँ, सब धर्म एक-दूसरे का आदर करते हैं। और यह कहता है कि मैं सच्चा मुसलमान हूं। अरे यह भी नहीं सोचता कि इस्लाम ऐसी धर्म-विरोधी बातें करने की इजाजत नहीं देता।

नटी : इसने भी चन्द रुपयों के लिये अपना ईमान बेच दिया है। अभी बताती हूं इसे। (चप्पल दिखाती है।)

(फ्रीज। मंच पर आतंकवादी संगठन पुन: उभर आता है।)

सिक्ख सदस्य : सर, कहने को तो हिन्दू लोग भी कहते हैं कि सिक्ख धर्म सब जातियों से मिलकर बना है। परन्तु हमारे साथ भी भेदभाव करते हैं वे लोग। जब हम गुरुद्वारों में किये जाने वाले लंगर के लिये चन्दा मांगने जाते हैं तो हिन्दू लोग पीछे हट जाते हैं और मन्दिरों में होने वाले हवन और यज्ञ के लिये कैसे गेहूं की बोरियां और देशी घी के कनस्तर देते हैं दान में, हम सब देखते हैं।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट-नटी प्रकट होते हैं।)

नटी : अरे सरदार जी, तू भी गिरगिट बन गया ?

नट : ऐसे लगता है , मानो इसकी हरी पगड़ी का रंग अभी-अभी लाल हो जायेगा।

(फ्रीज। मंच पर आतंकवादी संगठन पुन: उभर आता है।)

ईसाई सदस्य : सर, हिन्दुस्तान में हमेशा शास्त्र की वही रटी रटायी बातें दोहराई जाती हैं कि वहां पर अल्पसंख्यकों को पनपने का मौका दिया जाता है। कहा जाता है कि मुसलमान एक से अधिक शादियां करके अपने परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़ा सकते हैं (मुस्लिम सदस्य की ओर देखते हुए)-असल में तो सस्ते कामगार ढूंढने की साज़िश है यह हिन्दुस्तानियों की। साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। (अन्य सदस्यों को लक्ष्य करके)- क्या कभी किसी हिन्दू को गिरिजाघरों में प्रार्थनाकरने के लिये जाते हुए देखा है ? परन्तु जब उन्हें अपनी नीतियों का प्रचार-प्रसार करना हो और विदेशों से विकास के नाम पर अनुदान लेना हो तो गिरिजाघरों में जाकर प्रार्थना करने का कैसा ढोंग रचते हैं, उसकी

वीडियो क्लिपिंग भिजवाते हैं बाहर। और जब हम दलितों की मदद करना चाहते हैं तो हम पर आरोप लगाते हैं कि हम दलितों को ईसाई धर्म अपनाने के लिये मजबूर कर रहे हैं।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट-नटी प्रकट होते हैं।)

नट : (नटी से)- अरे, यह तो आजकल के नेताओं को भी मात दे रहा है।

नटी : कौमी एकता के खिलाफ़ कैसा फिट फार्मूला ढूंढा है इसने तो। ऐसा लगता है कि आने वाले इलैक्शन में खड़ा होने वाला है।

नट : पर नकली पॉलिश चलेगी कितने दिन।

(फ्रीज। मंच पर आतंकवादी संगठन पुन: उभर आता है।)

चीफ : तो फिर हम क्यों नहीं अपने इरादों में कामयाब हो पा रहे हैं, क्यों नहीं तबाह कर देते हिन्दुस्तान की शान्ति, एकता और अखण्डता को, जबकि इस काम के लिये हमें विदेशों से इतना पैसा मिल रहा हैं कि यदि हमारी आने वाली सात पीढ़ियां भी खुले हाथों खर्च करें तो ख़त्म नहीं हो सकती यह दौलत (दोनों हाथों से नोट उछाल देता है।)

एक अन्य सदस्य : सर चाहे जो कुछ भी हो, परन्तु हिन्दुस्तानवासियों में आज भी आपसी भाईचारे, सहयोग और मानवता की भावना कूट-कूटकर भरी है। शायद इसीलिए आज वहाँ पर हमारे आतँकवादी हमले कामयाब नहीं हो सके हैं।

दूसरा सदस्य : सर, हिन्दुस्तान का वह मामूली सा रॉक सिटी, जो मुट्ठी भर लोगों का दडबा था, आज इसी कारण कौमी एकता एवं भाईचारे की मिसाल बनकर रह गया है।

तीसरा सदस्य: (सामने की ओर लक्ष्य करके)- देखिये तो, पुलिस वाले कैसे आराम से बैठे हैं। न कोई अपराध है और न ही चोरी, डकैती और हत्या का कोई मामला। जनजीवन साला कैसे आराम से चल रहा है।

चौथा सदस्य : और एक हम हैं कि रात-दिन खंदकों में धधक रहे हैं।

चीफ : और विदेशी संगठन को क्या जवाब देंगे ? टारगेट का क्या होगा ? पिछली मीटिंग में सुपरबॉस ने तगडी खिंचाई की थी। स्टेटमैंट के आधार पर रिव्यू किया गया था हमारी गतिविधियों का, और इस तिमाही में एक हजार हिन्दुस्तानियों को बम ब्लास्ट से उडाने का टारगेट दिया गया था हमें और वह भी मजहबी हमला साबित करके ताकि हमारे आका लोग हिन्दुस्तान में धर्म, जाति और सम्प्रदाय के नाम पर फूट डालने में कामयाब हो सकें। (फिर कुछ सोचते हुए)-

चीफ : नम्बर 2 !

नम्बर 2 : यस सर।

चीफ : इस क्वार्टर का टारगेट पूरा हो गया ?

नम्बर 2 : सर हम कोशिश कर रहे हैं।

चीफ : (क्रोध से उसे ठोकर मारते हुए)- स्साले, तू अभी कोशिश कर रहा है और हमारा बॉस हमारा सर कलम कर देगा।

एक सदस्य : (विनीत भाव से)- हमें थोड़ा वक्त दीजिये सर, हम आगे-पीछे के सारे टारगेट पूरे कर देंगे।

चीफ : कैसे ?

सदस्य : सर, अबकी बार हम हिन्दुस्तान में शान्ति के लिये विख्यात शहर रॉक सिटी पर बम ब्लास्ट करेंगे जहाँ आज तक कोई बड़ा आतंकी हमला नहीं हुआ है।

चीफ : यस यस, बहुत समय से रॉक सिटी मेरी आँखों में भी खटक रहा है, और वहां आबादी भी घनी है। उसी पर हमला करो अबकी बार। रैड सिटी के नाम से जाना जाता है यह शहर विश्व भर में। अबकी बार इसके लाल रंग को काला न कर दिया तो.....(चहक उठता है।)

सदस्य : सर, सुना है कि यह शहर दो हिस्सों में बँटा हुआ है। चार दीवारी के अन्दर के भग को रॉक सिटी, और बाहर के हिस्से को न्यू सिटी के नाम से जाना जाता है।

चीफ : ठीक सुना है तुमने। परन्तु हमें बम ब्लास्ट परकोटे के भीतर ही करना है। वहाँ पर हर बाज़ार के मुहाने पर बड़े-बड़े दरवाज़े लगाये गये थे राजा-महाराजाओं के समय में। यदि बाहर से दुश्मन आक्रमण कर देता था तो ये पाँचों दरवाज़े बन्द कर दिये जाते थे ताकि आक्रमणकारी शहर के अन्दर न घुस सकें। परन्तु तब के राजा- महाराजाओं को क्या पता था कि आने वाले समय में यह भी आ जायेगा। (हाथ में बम लेकर उसे गोल-गोल घुमाता है।)

महिला सदस्य : हाँ सर। (सब हँसते हैं।)

चीफ : (पलटकर गम्भीरता से)- जयन्ती।

जयन्ती : यस सर।

चीफ : तुम नं. 2 के साथ एक दर्जन बम लेकर रॉक सिटी जाओगी।

जयन्ती : यस सर।

चीफ : तुम सिटी के मीना बाज़ार, कटले, चूडी बाज़ार, इमरती बाज़ार, गोल चौपड़ और सरकारी औषधालय के आस-पास की दुकानों के आगे बम टंगे थैलों की साईकिलें खड़ी करके वहां से खिसक जाना।

जयन्ती : यस सर। और साईकिलें कहां से लेनी सर ?

चीफ : साईकिलें तुम रॉक सिटी के बाज़ारों से ही खरीदना। नं. 2 !

नं. 2 : यस सर।

चीफ : साईकिलें तुम और नम्बर चार खरीदना अलग- अलग दुकानों से और अलग-अलग ग्राहक बनकर।

नं. 2 : सर हमें हिन्दी के अलावा बँगला और उर्दू भी बोलना आता है। यह काम मैं और नं. चार आसानी से पूरा कर लेंगे।

चीफ : जयन्ती !

जयन्ती : यस सर।

चीफ : तुम अपने बैग में सूट, साड़ी आदि अलग-अलग ड्रेस रख लेना। एक-दो जगह बम रखने के बाद तुम अपना पहनावा बदल लेना जिससे लोगबाग तुम पर शक न कर सकें।

जयन्ती : यस सर।

चीफ : और देखो, ड्रैस चेंज करने के लिये तुम कोई होटल काम में मत लेना, वहाँ पर ऐंट्री होती है, सारी सूचनायें लिखनी पड़ती हैं समझी ?

जयन्ती : यस सर।

चीफ : तुम यह सब किसी रेस्टोरेंट में ही कर लेना।

जयन्ती : जी सर।

चीफ : (खुशी से शून्य में देखता हुआ)- अब देखता हूं कि राजा - महाराजाओं का नुस्खा कैसे काम करता है- बाहर से आक्रमण हो तो सारे दरवाज़े बन्द कर लेना। (फिर विशेष अन्दाज में) - नीम दरवाज़ा, बीजवाड दरवाज़ा, खिरणी दरवाज़ा, पथवारी दरवाज़ा, सेढ़ दरवाज़ा सभी को बन्द कर देना (हँसता है। फिर उसी प्रवाह में)- आक्रमणकारी अन्दर कैसे घुसेंगे, (ठहाका लगाता है)-जब टाईम बम लगी साईकिलों से विस्फोट होगा तो जनता मरेगी। घनी आबादी है शहर में। एक-एक हवेली में सौ-सौ आदमी रहते हैं। कटले जैसे खन्दे में एक हजार के लगभग दुकानें हैं। खचाखच भरे रहते हैं उनमें ग्राहक। शाम का समय, मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारे सब एक साथ हैं पुराने शहर में। वह दिन भी विशेष होगा। बहुत श्रद्धालु इकट्ठे होंगे उस दिन। पूजा-अर्चना, प्रार्थना, कीर्तन एवं खुदा की इबादत करते लोग झट से बम ब्लास्ट में ख़त्म हो जायेंगे।

भागेंगे भी कहाँ साले। आबादी इतनी घनी हो गई है कि पैदल व्यक्ति तक सड़क पार नहीं कर सकता (फिर उसी प्रवाह में

शून्य में देखता हुआ)- नाम होगा जातीय और साम्प्रदायिक हमलों का, और इस तरह हमारे मंसूबे आसानी से पूरे हो सकेंगे ।

(सब हँसते हैं। प्रकाश मन्द-मंद होते हुए बुझ जाता है।)

(तीसरा दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(रॉक सिटी के एक व्यस्ततम चौराहे का दृश्य। जनजीवन अपने सामान्य रूप में सड़कों पर खिसक रहा है। शाम के सात बजे का समय है। आज सरकारी दफ्तरों, स्कूलों आदि में अवकाश है अत: यहाँ पर सामान्य दिनों से कुछ अधिक ही भीड़भाड़ है। शुक्रवार का दिन होने से जहाँ एक ओर हजारों मुस्लिम नमाज पढ़ रहे हैं वहीं दूसरी ओर कोई धार्मिक अवसर होने के कारण मन्दिरों में भी दर्शनार्थियों की संख्या सामान्य दिनों से कुछ अधिक ही है। गोल चौपड़ की हरी-हरी घास में महिलाएं अपने बच्चों को टहला रही हैं। कुछ बच्चे पास में ही ठेले पर भेलपुरी खा रहे हैं तो कोई-कोई बच्चा आईसक्रीम की चुस्कियां लेता हुआ घास पर बैठे हुए एक आदमी को सरदार जी से कान का मैल निकलवाते हुए कौतुक से देख रहा है। मन्दिरों के सामने साईकिलें खड़ी हैं जबकि पास की मस्जिद में जब हजारों नमाजी खुदा की इबादत में एक साथ सिर झुकाकर सीधे होते हैं तो मन आनन्द से विभोर हो रॉक सिटी के लाल लाल कंगूरों पर फिसलने लगता है।)

(सहसा जोर का धमाका होता है।)

नटी : (भयभीत स्वर में)- हैं! यह कैसा धमाका है ?

नट : शायद सामने कोई बम फूटा है।

नटी : (ऐडियां ऊंची करके सामने की ओर देखते हुए) - हाँ, बम का धमाका ही है। पाण्डवपोल मन्दिर के सामने। चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा हो गया है। बच्चों, औरतों और राहगीरों की चीख-पुकार। बम के धमाके के साथ ही देखो साईकिलों के परखचे कैसे उड गये हैं। भगदड़ सी मच गई है और कुछ लोग पेड़ों की

ओट में फटी-फटी आँखों से सिमटकर सहमे-सहमे, डरे-डरे एक दूसरे से चिपटकर खड़े हो गये है।

(सिटी के दूसरे बाज़ार में फिर धमाका)

नट : (भयभीत होकर) - मोती चौक कटले के मुहाने पर हुआ है शायद बम विस्फोट। (फिर सामने की ओर देखते हुए) - कटले के खन्दे में धुआँ ही धुआँ भर गया है। भगदड़ में बाहर आते जन- शैलाब की चीख-पुकार। हे राम, क्या हो रहा है यह।

(शहर के एक अन्य बाज़ार में तीसरा धमाका)

नटी : यह तीसरा धमाका है। बड़ी मस्जिद के सामने बम फूटा है शायद। नमाजियों में भगदड़ सी मच गई है। सैंकड़ों मुसलमान भाई हताहत हो गये हैं।

नट : गोल चौपड़ पर भारी संख्या में लोग इकठ्ठे हो गये हैं।

नटी : कैसे डरे-डरे से सहमे-सहमे से खड़े हैं बेचारे।

नट : वो सामने रेडियो पर समाचार आ रहे हैं पहले सुन लें थोड़ा।

नटी : हाँ रुककर सुनते हैं।

यह राष्ट्रीय दूरदर्शन केन्द्र का स्पेशल बुलेटिन है। देश के मध्यक्षेत्रीय प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर रॉक सिटी पर आज पहली बार आतंककारियों ने सिलसिलेवार बम धमाके किये। पुराने शहर के भीड़-भाड वाले इलाके में आतंकवादियों ने आज शाम को 13 मिनट में छह जगहों पर आठ बम-विस्फोट किये जिसमें 65 लोगों की मौत हो गई और 230 से ज्यादा घायल हो गये। विस्फोटों के बाद पुराने शहर में भारी अफरा तफरी और दहशत का माहौल बन गया।

नट : अरे एकाएक इतना बड़ा हादसा हो गया हमारे शहर में!

नटी : चलो-चलो जल्दी चलो, इस संकट की घड़ी में हम भी उनकी सहायता करते हैं। (दोनों का प्रस्थान)

(चौथा दृश्य समाप्त)

पाँचवां दृश्य

(गोल चौपड का दृश्य। बम के धमाकों से पूरे शहर में दहशत फैल गई है। आस-पास धुआँ ही धुआँ हो गया है। लोगबाग मकानों और दुकानों से निकलकर चौराहों पर इकठ्ठे हो गये हैं।)

मुस्लिम बूढ़ा : (ऊंची आवाज़ में)- बम फट रहे हैं, सब लोग जल्दी-जल्दी बाहर खुले में आ जाओ।

हिन्दू बुजुर्ग : सब लोग धीरज रखो। पहले घायलों को संभालो और अपने- अपने लोगों को ढूंढने में समय मत खोओ। जल्दी-जल्दी अस्पताल ले चलो घायलों को।

चार-पाँच युवक : हम तैयार हैं।

एक नवयुवक : (घायल को अपने कंधे पर उठाते हुए) - चलो चलो जल्दी ले चलो इन्हें अस्पताल।

ठेले वाला : (घायल बच्चे को अपने ठेले पर बैठाते हुए) - आओ बेटा, पहले अस्पताल चलें। तुम्हारे माता-पिता वहीं मिलेंगे, सब ठीक है।

मुस्लिम महिला : (बूढ़े हिन्दू से)- बाबा हूं तो मुसलमान, पर मेरी इस सुराही से अपना कण्ठ गीला कर लो, जान बच जायेगी।

(बूढ़े के हामी करने पर वह महिला उसका कण्ठ गीला करके उसे सहारा देते हुए अस्पताल की ओर प्रस्थान करती है।)

एक सरदार : (ऊंची आवाज़ में) - बोले सो निहाल।

हिन्दू-मुस्लिम एक साथ : सत् श्री अकाल।

सरदार : (अपनी पगडी उतारकर उसमें से लीरें फाड-फाडकर घायलों का ख़ून पोंछते हुए)-

शीश कटा .... गुरुओं का था ..... इन्सानियत..... के लिये.....

हाई ये पगडी क्या फिर..... मंद्र – काम की जो न
हाई घाव का..... मंद्र– मरहम बने
हाई चल इधर..... मध्य –अब चल उधर
मंद्र चल इधर अब चल उधर
मंद्र जहाँ ख़ून है ..... बह रहा..... बह रहा जहाँ ख़ून देखो बह रहा

एक मौलाना : या खुदा। इन पर रहम करना । इन्हें ज़िन्दगी बख़्शना मेरे मौला। यह एक सच्चे मुसलमान की इबादत है।
(एक हिन्दू बच्चे को गोद में उठाकर अस्पताल ले जाता है।)

एक बुजुर्ग : (एक ठेले वाले से)– भैया, इन लाशों को अपने ठेले पर रखकर अस्पताल पहुँचा आओ। थोड़ी देर में इनके मिलने वाले इन्हें अन्तिम संस्कार के लिये ले जायेंगे।
(ठेले वाला लाशों को अपने ठेले पर लादकर चलने लगता है)

ठेले वाला : (स्वगत)– मैं क्यों इस झमेले में पड़ूं। कहीं आगे जाकर किसी विपदा में फँस गया तो! ऐसा करता हूं, इस आफत को यहीं छोड़कर भाग लेता हूं। (जाने लगता है। सहसा ठेले पर लदी लाशों में से आवाज़)–

आवाज़ : मैं जिन्दा हूं। मैं जिन्दा हूं भाई, मुझे छोडकर मत जाओ।

ठेले वाला : (रुककर स्वगत)– लगता है इन लाशों में कोई घायल व्यक्ति दबा पड़ा है। क्या करूं ! चलो भाग लेता हूं।
(रुककर स्वगत)– नहीं मुझे भागना नहीं चाहिये। यदि इसकी जगह मेरा अपना बेटा, भाई या परिवार का कोई अन्य सदस्य होता तो क्या उसे इस हालत में छोडकर चला जाता! मैं एक राजस्थानी हूं जहाँ के

लोगों ने दूसरे की जान बचाने के लिये अपने प्राणों की आहूति दी है। मैं एक इन्सान हूं और इन्सानियत के नाम पर कलंक नहीं लगने दूंगा।
(वापस लौटते हुए)– आया भाई।
(वह ठेले को अस्पताल की ओर ले भागता है।)
(चौराहे पर लगे खम्भे के टेलीविजन से समाचार–प्रसारण)
यह भरोसा चैनल का स्पेशल बुलेटिन है। अब हम आपके समक्ष रॉक सिटी में हुए बम ब्लास्ट की ताज़ा स्थिति प्रस्तुत कर रहे हैं–
आज शाम को रॉक सिटी में हुए बम ब्लास्ट के बारे में विभिन्न समाचार चैनलों द्वारा 13 मिनट में हुए 8 बम धमाकों में 25 लोगों की मृत्यु एवं 250 लोगों के घायल होने की जानकारी दी है जो सरासर ग़लत है। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार शहर में अलग–अलग स्थानों पर लगभग 15 बम फूटे हैं जिनमें 150 लोगों की मृत्यु एवं लगभग 500 लोगों के घायल होने का अनुमान लगाया जा रहा है। सरकारी सूचना के अनुसार यह हमला आतंकवादी संगठनों द्वारा करना बताया गया है, परन्तु वास्तव में यह हमला हमारे पडौसी दुश्मन देश द्वारा कराया गया है जिसके लिये हमारे देश के एक केन्द्रीय मंत्री द्वारा करोडों रूपयों की रिश्वत लिये जाने का अनुमान लगाया जा रहा है। इस बम विस्फोट के बाद सरकार द्वारा संकट की स्थिति से निपटने की कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई है जिससे जनता में सरकार के प्रति आक्रोश फूटने की प्रबल संभावना है। ख़बरें और भी हैं, देखते रहिए भरोसा चैनल का यह समाचार बुलेटिन।

(मंच पर नट–नटी का प्रवेश)

नटी : देखो तो कैसी झूठी ख़बरें दे रहा है यह चैनल। बढ़ा चढ़ाकर बता रहा है मृतकों और घायलों की संख्या।

नट : अरे यह तो बकवास चैनल है। ऐसी भडकाऊ ख़बरें देकर यह हमेशा ही सरकारी अधिकारियों से पैसे ऐंठने के चक्कर में रहता है।

नटी : कहता है संकट की इस घड़ी में सरकार ने कोई ठोस कार्यवाही नहीं की। झूठा कहीं का। देखो तो सरकारी नुमाइन्दे कैसे लगे हैं बेचारे।

(फ्रीज। मंच पर चौराहे का दृश्य उभर आता है।)

सरकारी घोषणा : भाइयों और बहनों, कृपया शान्ति और धैर्य बनाये रखें और इस संकट की स्थिति का सब मिलकर मुकाबला करें। सरकार पूरी तरह से आपके साथ है। यदि इस भीड में आपको कोई संदिग्ध व्यक्ति दिखे तो तुरन्त पुलिस को सूचना दें। आप लोग घायलों को सहारा देकर सामने खड़ी एम्बुलेंस और सरकारी गाडियों से तुरन्त अस्पताल पहुँचायें जहाँ पर उनका मुफ़्त इलाज़ किया जायेगा।

एक बुजुर्ग : भाइयों और बहनों, घबराना मत। सारा शहर एक है और संकट की इस घड़ी का हम सब मिलकर मुकाबला करेंगे।

मुस्लिम महिला : हम घर–घर जाकर खाना पकायेंगी।

हिन्दू महिला : हम असहाय बच्चों और घायलों की देखभाल करेंगी।

सरदार : और हम घायलों के परिवारों को हौसला देंगे।

चार–पाँच नवयुवक : हम घायलों को अपना ख़ून देंगे।

एक महिला : चाहे हमारे शरीर का कतरा–कतरा खून निकल जाय, पर हम इन घायलों को मरने नहीं देंगे। (सुबकती है।)

जनसमूह : आओ आओ चलें। हम सब एक हैं

(पाँचवां दृश्य समाप्त)

छठा दृश्य

(मंच पर नट–नटी का प्रवेश)

नटी : देखो तो कैसा कोहराम मचा हुआ है।

नट : हाँ, अस्पताल के बाहर कैसे भीड़ इकट्ठी हो गई है।

नटी : सबकी आँखों में आँसू हैं फिर भी घायलों को बचाने में लगे हुए हैं।

नट : घायल कोई भी हो, किसी भी जाति या समुदाय का हो, पर देखो हर आदमी लगा है उसकी सहायता करने में।

नटी : बुजुर्ग, बच्चे, महिलाएं सभी के सभी जुट गये हैं हताहतों को अस्पताल पहुँचाने।

नट : चलो हम भी चलते हैं।

नटी : हाँ–हाँ चलो।

(दोनों अस्पताल पहुँच जाते हैं।)

(अस्पताल का दृश्य। बम विस्फोट के घायलों को अस्पताल लाने का ताँता लगा हुआ है। अस्पताल के अन्दर के सभी बैड पूरे हो गये हैं परन्तु जनसहयोग एवं अस्पताल प्रशासन के सहयोग से अस्पताल के बरामदे एवं छतों पर भी बिस्तर लगाकर घायलों का उपचार किया जा रहा है। इस संकट की घड़ी में स्वयंसेवकों एवं समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से घायलों की हर संभव सहायता की जा रही है। घायलों को ख़ून देने हेतु विद्यार्थियों, युवाओं, स्त्री एवं पुरूषों में होड़ चल रही है वहीं डॉक्टर, नर्स और कम्पाउण्डर घर–बार जाना भूलकर घायलों के उपचार में लगे हुए हैं।)

डॉक्टर : (नम आँखों से जनसमूह को सम्बोधित करते हुए)– भाईयों, अस्पताल के वार्डों में जगह कम पड़ गई है इसलिए छतों पर और सामने दालान में बिस्तर लगा दिये गये हैं। घायलों को वहीं लिटा दीजिए हम तुरन्त उनका उपचार कर रहे हैं।

एक नागरिक : डॉक्टर साहब, नगरवासी अपने–अपने घरों से बिस्तर और दरियां ले आये हैं, और जरुरत पड़ी तो कमी नहीं है किसी बात की।

जनसमूह : हाँ ।

डॉक्टर : (चिन्ता भरे स्वर में) – अस्पताल के ब्लड बैंक में ख़ून ख़त्म होने वाला है अत: कुछ नौजवानों को ख़ून डोनेट करना होगा।

एक हिन्दू बुजुर्ग : डॉक्टर साहब, भले ही मेरे खून की अन्तिम बूँद तक निकाल लीजिए परन्तु इन बेगुनाहों को बचा लीजिए।

एक मुस्लिम महिला: डॉक्टर साहब, पहले मेरा ख़ून लीजिए परन्तु खुदा के इन नेक बन्दों को ज़िन्दगी बख़्शिए।

दो बच्चे : (आगे आकर)– डॉक्टर अँकल, हमारा ख़ून ले लीजिए परन्तु इन सबको बचा लीजिए।

दो नौजवान : डॉक्टर साहब, हम नौजवान हैं, चढ़ता ख़ून है हमारा। पहले आप हमारा ख़ून लीजिए।

(पास के बिस्तर पर लेट जाते हैं।)

समूह की आवाज़: डॉक्टर साहब, आप ख़ून की चिन्ता न करें। पूरा शहर उमड़ पड़ा है घायलों को ख़ून देने।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट–नटी प्रकट होते हैं।)

नटी : देखो तो, ख़ून देने वालों का कैसे ताँता लग गया है।

नट : ऐसी एकता कभी नहीं देखी।

नटी : आतंकवादियों ने सोचा होगा कि वे अपने मकसद में कामयाब हो गये।

नट : परन्तु सच्चे मायने में तो उनकी हार हुई है।

नटी : हाँ, वे सोचते होंगे कि बम–विस्फोटों से साम्प्रदायिक फूट पैदा कर देंगे परन्तु यहां तो उल्टा ही हो गया।

नट : हाँ, इस हालात में तो सब एक हो गये हैं और एक धर्म वाला किसी दूसरे धर्म वाले को बचाने के लिये अपना कतरा–कतरा ख़ून दान करने को बेताब है।

नटी : (प्रशंसात्मक लहजे में दर्शकों से)– देखो तो, कैसी होड मची है इन मददगारों में।

डॉक्टर : भाइयों, अब और ख़ून की जरुरत नहीं है, हमारे पास काफी ख़ून इकट्ठा हो गया है। अब आप लोग अपने–अपने घर जाकर थोड़ा विश्राम कर लें। यदि और ख़ून की जरुरत पड़ी तो हम आपको फिर बुला लेंगे। (फिर पास में ही खड़े एक बुजुर्ग से)– जाओ बाबा आप भी घर जाओ, रात होने वाली है।

बुजुर्ग : डाक्टर साहब, बूढा आदमी हूं, घर जाकर भी क्या करूंगा। रात भर जागकर इन घायलों की देखभाल करुंगा, इनमें से कोई मेरा भाई है, कोई बेटा होगा और कोई पोता। सब अपने ही तो हैं। (बैठ जाता है)

एक मुस्लिम महिला : ये लीजिए डाक्टर साहब, टिफिन भरकर खाना लायी हूं जो इन घायलों को जीने की ताकत देगा, इसके हर कौर में मेरी मजहबी दुआयें हैं जो इन्हें जीवन–दान देंगी।

एक हिन्दू : (दूध का डिब्बा देते हुए) – डाक्टर साहब, यह केसर पिस्ता मिला हुआ दूध है। मेरे बच्चों ने आज दूध नहीं पिया है– कहने लगे कि इसे घायलों को पिलाना जिससे वे जल्दी ठीक हो जायेंगे।

एक व्यापारी : डॉक्टर साहब, चन्द रुपयों की राशि का यह चैक हम व्यापारियों की ओर से घायलों के लिये है।

(फ्रीज। मंच के दूसरे कोने पर नट–नटी प्रकट होते हैं।)

नटी : देखो तो, कैसी एकता की मिसाल दी है इन नगरवासियों ने।

नट : सामने टी.वी. चलाया जा रहा है, चलकर समाचार सुनते हैं। (दोनों का प्रस्थान)

दूरदर्शन से समाचार प्रसारण

यह राष्ट्रीय दूरदर्शन केन्द्र का स्पेशल बुलेटिन है। अब हम आपको रॉक सिटी में हुए बम विस्फोटों की ताज़ा जानकारी दे रहे हैं –

आज शाम को रॉक सिटी में पहला बम विस्फोट करीब साढे सात बजे पाण्डव पोल मन्दिर के सामने हुआ, उसके बाद मोती चौक कटले के खन्दे में एवं उसके बाद बडी मस्जिद के सामने बम ब्लास्ट हुआ। इसके साथ ही पक्की प्याऊ के सामने, फूल बाजार के नुक्कड पर, गोल चौपड के बिसायतियों के मोहल्ले में एवं बीजवाड़ चौराहे वाले मन्दिर के सामने धमाके हुए। पुलिस के अनुसार ये ब्लास्ट मीडियम क्षमता के थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि पाण्डवपोल पार्किंग में विस्फोट से तीन वाहन कबाड में बदल गये और सात लोगों की मौत हो गई। रॉक सिटी के 14 थानों में अगले दिन सुबह नौ बजे से शाम छह बजे तक कर्फ्यू लगा दिया गया है। स्कूल, कॉलेज और सरकारी कार्यालय कल बन्द रहेंगे। महत्वपूर्ण सुराग लगने का सरकार का दावा, कल सुह 11 बजे कैबिनेट की मीटिंग। केन्द्रीय गृह मंत्री रॉक सिटी आये। प्रदेश में रेड अलर्ट, देश भर में कडी सुरक्षा। प्रदेश भर से चिकित्सा दल रॉक सिटी

पहुंचे, सरकार की ओर से मृतकों के आश्रितों को पाँच–पाँच लाख रुपये की सहायता। अस्पतालों के बाहर आँसुओं का सैलाब। पूरी रात नहीं सोया शहर, डॉक्टरों एवं मददगारों की आँखें छलक आईं, रक्तदान के लिए लोग उमड़े, डाक्टरों को मना करना पड़ा, इमरजेंसी वार्ड ख़ून में रंगे। इस दौरान कौमी एकता, आपसी भाईचारे और मानवता की पुकार एक साथ देखने को मिली और यह साबित हुआ है –

आतंकवाद के गाल पर कौमी एकता एवं भाईचारे का करारा तमाचा।

(पार्श्व से तडाक, तडाक, तडाक तमाचों का स्वर)

नाटक समाप्त

दुश्मन दोस्त

पहला दृश्य

(क़ैदखाने का दृश्य। यह हिन्दुस्तान की एक मशहूर जेल है जिसमें बड़े-बड़े अपराधी सज़ा काट रहे हैं। कुछ क़ैदी जेल की कोठरी के बाहर काम कर रहे हैं जिनके हाथों में हथकड़ियां नहीं लगी हुई हैं।

क़ैदखाने के चौक में लगभग बीस वर्ष का एक हिन्दू युवक हाथ में बन्दूक लिए हुए पहरा दे रहा है। तथा पास ही में एक मुसलमान क़ैदी फावड़े से खुदाई कर रहा है। पहरेदार सैनिक जागरुकता से चहलकदमी कर रहा है तथा मुसलमान क़ैदी भी बीच-बीच में फावड़ा चलाना रोककर अपने पसीने सुखाने के लिये सुस्ता रहा है।)

क़ैदी : (सैनिक की ओर मुखातिब होकर)—काफी देर से चहलकदमी कर रहे हो, नाम क्या है तुम्हारा?

सैनिक : (नाराज होते हुए)—मैं तुम जैसे क़ैदियों से बात नहीं करना चाहता।

क़ैदी : क्यों तुम्हारे हिन्दू धर्म में हम जैसे मुसलमानों से बात करने का रिवाज़ नहीं है?

सैनिक : मुसलमान और तुम? क्या इस्लाम जुर्म करने की इज़ाजत देता है? कभी नहीं।

क़ैदी : क्यों भाई मैं एक अपराधी और वह भी मुसलमान हूं इसलिए तुम मुझे अपना दुश्मन मानते हो? ठीक। परन्तु

क्या मैं वाकई अपराधी हूं इसे जानने की किसी ने कोशिश की? कोर्ट कचहरी आदि में पेश किये गये झूठे सबूतों के आधार पर जो ग़लत फ़ैसला सुना दिया गया वही हमारी तक़दीर बन गया। ठहरा दिया गया हमें अपराधी। और उन सबूतों के आधार पर सही अपराधियों को बरी कर दिया गया। वे लोग रहनुमा कहलाने लगे और ऐसे अपराधी बड़े-बड़े राजनेताओं से मिलकर शान्ति के लिए समझौते करने लगे। हाथों में हाथ थामे फोटो खिंचवाते हैं ऐसे लोग और उन्हें सार्वजनिक रूप से पुरस्कार दिये जाते हैं। लेकिन उनका क्या? वे बड़े लोग हैं और हम। हम तुम आपस में शत्रुता रखेंगे, क्यों?

सैनिक : (गुस्से से)—चुप बे बुढऊ। तू तेरे जैसे मुसलमानों के लिए कुछ भी बकवास कर परन्तु हिन्दुस्तान में ऐसा कुछ नहीं होता। (फिर उसकी ओर बन्दूक तानते हुए)—अब यदि तुमने देश के राजनेताओं के बारे में कुछ भी कहने की गुस्ताखी की तो...

क़ैदी : (उसकी बात काटते हुए)—तो क्या कर लोगे तुम। गोली मार दोगे मुझे? क्यों ऐसे अपराधी राजनेताओं की पैरवी कर रहा है। मिला है कभी उनसे। उनके काले कारनामों के बारे में जानता है ठीक से? केवल ख़बरों के आधार पर ही तुम जैसे सैनिकों को पता चलता है कि फलां फलां अमीर बन गये इस देश के नेता।

सैनिक : चुप कर मैं तुझसे बात नहीं करना चाहता।

क़ैदी : फिर भी बात कर मेरे दोस्त मुझसे। क्या इन्सानियत के नाते हम दोनों एक दूसरे से बात नहीं कर सकते? (फिर उसे गहराई से देखते हुए)—सच बता मेरे दोस्त, क्या तू मौन बर्दाश्त कर सकता है? मुझसे तो ये मौन बर्दाश्त नहीं होता। (फिर व्याकुलता से)—क्या तुम्हें कभी मुझसे बात करने की इच्छा नहीं होती। मुझे देखकर कभी तुझे किसी अपने की याद नहीं आती?

(क्षण भर के लिए सैनिक भावुक हो उठता है परन्तु दूसरे ही क्षण बन्दूक की पकड़ को मजबूत कर लेता है।)

क़ैदी : (हँसते हुए)—क्यों ड़र गया कि कहीं भावुकता के वार से मैं तुझे कमज़ोर नहीं कर दूं? परन्तु छल, कपट और पीछे से वार करना हमारी इस्लामी संस्कृति में भी नहीं है। (फिर सैनिक की ओर देखते हुए)—अरे गुस्सा क्यों कर रहा है। चाहे तू अपने मन के भावों को कितना ही छुपाने की कोशिश कर परन्तु तेरी आँखों में छलके आँसू साफ-साफ बता रहे हैं कि तुझे किसी की याद आ रही है। क्यों है ना? (सैनिक की चुप्पी)

क़ैदी : (उसी प्रवाह में)—चाहे तू मुझसे मत बोल पर मैंने तेरी आँखों के आईने में तेरे मन की पीड़ा को जान लिया है। (फिर खुश होते हुए)—आज थोड़ी देर के लिए ही सही पर आज मैंने तुझसे, मुझे अपना शत्रु समझने वाले से बात की है। मौन को तोड़ा है मैंने। आज मैं बड़ा खुश हूं और इस खुशी में मैं नाचूंगा गाऊंगा। (वह सैनिक की चुप्पी देखकर रुआंसा हो जाता है और चारों ओर मौन सन्नाटा छा जाता है।)

क़ैदी : (सैनिक से)—क्यों भाई तुझे यहाँ पर आये कितने दिन हो गये?

सैनिक : (चौंककर)—यही कोई नौ-दस महिने।

क़ैदी : (अट्टहास से)—इतने दिन में ही घबरा गया। और मैं नौ-दस साल से....

सैनिक : नहीं नहीं मैं घबराया नहीं।

क़ैदी : क्या उम्र होगी तेरी?

सैनिक : बीस।

क़ैदी : मासूम है अभी।

सैनिक : (गुस्से में)—ऐ...

क़ैदी : निकाह हो गया तेरा? (सैनिक चुप)

क़ैदी : घर में कौन-कौन हैं?

सैनिक : माँ और पत्नी।

क़ैदी : और अब्बा जी?

सैनिक : कौन पिताजी?

क़ैदी : हाँ।

सैनिक : (शून्य में देखते हुए)—सेना में थे। जब मैं दो साल का था तब हिन्दू-मुस्लिम दंगों में शहीद हो गये।

क़ैदी : ओफ। और निक़ाह हुए कितना समय हुआ?

सैनिक : अभी एक महिना भी पूरा नहीं हुआ।

क़ैदी : समझा। इसीलिए इतनी बेरूखी है।

सैनिक : शादी के बाद सिर्फ दो बार ही बात हो पायी उससे। एक बार सुहागरात के वक़्त और दूसरी बार तब जब उसके पीहर वाले दूसरे ही दिन उसे विदा कराने आये थे। हमारे यहाँ शादी के बाद दुल्हन को ससुराल में केवल एक ही दिन छोड़ने का रिवाज़ है। उसे कुछ दिन के लिए पीहर में रहना था परन्तु जब तक वह लौटकर आती उससे पहले ही आतंकवादियों का एक बड़ा गिरोह पकड़ा गया और मुझे तुरन्त ड्यूटी ज्वाईन करने का फौज़ी फरमान मिला। मेरी माँ जब मुझे विदा कर रही थी तब आँखों में कैसे डबडबा आयी थी उसकी विछोह-पीड़ा। हो भी क्यों न। पूरे कुनबे में मैं ही एक पुरुष बच रह पाया था। पिताजी, चाचा, चचेरे भाई सभी के सभी तो शहीद हो गये थे देश के लिए। सभी ने मेरी माँ को मना किया था मुझे फ़ौज में भेजने के लिए। परन्तु मेरी माँ भारतीय नारी है, उसने क्षत्रिय कुल के बलिदान को सम्मान देते हुए मुझे यहाँ भेज दिया।

क़ैदी : दोस्त, मेरे मन में कभी-कभी यह बात उठती है कि हम जैसे लोग अपनी धरती माँ की लाज बचाने के लिए अपनी माँ और बहू-बेटियों को यूं ही तड़पते हुए छोड़कर चले आते हैं और उन्हें दोहरी मार झेलनी पड़ती है-एक

अपनों से अलग होने की पीड़ा और दूसरे अपने ही समाज के गुण्डों से अपने स्त्रीत्व की रक्षा का नाकाम प्रयास।

सैनिक : (गुस्से से)—देख तू अपने आपसे मुझे मत मिला। तुम देशद्रोही हो और बात करते हो गुण्डों से स्त्री की रक्षा की। (रुक जाता है।)

क़ैदी : रुक क्यों गया बोल। अपने देश की असलियत नहीं सुनी जाती, क्यों? (फिर नरम स्वर में)—सच बड़ा कडुवा होता है दोस्त। कोई भी धर्म हो चाहे हिन्दुत्व या इस्लाम। कहानी सबकी एक जैसी ही है। माना कि सबके सब लोग ऐसे नहीं होते परन्तु कुछ गुनहगार ही तो पूरे मजहब और देश को बदनाम कर देते हैं। दोस्त ज़ुल्म की कोई जात नहीं होती। ये शातिर लोग अपने आपको सफेद खाल में छिपाकर मुझ जैसे बेगुनाह लोगों को गुनहगार साबित कर देते हैं। आज हर देश में ऐसे ही सफेदपोश भेडियों की जमात इकट्ठी हो गई है। बेटा, जब एक बेकसूरवार का इन्सान जागता है तो सच बाहर आ ही जाता है। तूने मेरी इन्सानियत को ललकारा तो उसे तो बाहर आना ही था न।

मैंने तुझे दोस्त कहा है और दोस्त कभी बेमुर्रवत नहीं होता, हमारे मुल्क में दोस्ती को बेवफ़ा नहीं माना जाता। सिर्फ हालात, हां हालात उस पर समय की चाशनी में ऐसा मुलम्मा चढ़ा देते हैं और लोगों को वैसा ही दिखलायी पड़ने लगता है, मेरे जैसा जो वास्तव में होता नहीं है। अब तुम बताओ दोस्त, ना तुमने मेरी जागीर लूटी और ना ही मैंने तुम्हारी। फिर भी मैं तुम्हारा गुनहगार हूं क्योंकि मेरी ही कौम के गुनहगार जत्थे ने अपना ज़ुर्म मुझ पर मढ़कर मुझे गुनहगार साबित कर दिया। वे हिन्दू नहीं थे बल्कि मेरे ही अपने थे । और तुझे भ्रम में रखकर धोखा दिया उन्होंने। इस भ्रम में कि मैं गुनहगार हूं और तुम एक गुनहगार की चौकसी करो उसके साथ एक दुश्मन जैसा बर्ताव करके।

चन्द लोगों के स्वार्थ की चक्की में फँसे दो इन्सान-एक दूसरे के दुश्मन। असली गुनहगार राजनेताओं को अपनी गद्दी जमाये रखने हेतु दौलत का ढ़ेर लगा देते हैं उनके सामने और ऐसे राजनेता जनाक्रोश फैलाकर अपनी नेतागिरी की दूकान चलाने हेतु बारूद का कारोबार करते हैं। बेवजह फँसे हैं हम जैसे दो इन्सान और पनप रहा है सोचा समझा आतंक।

सैनिक : सोचा समझा आतंक?

क़ैदी : हाँ दोस्त। कोई भी कौम जंग नहीं करना चाहती। अमन चैन और शान्ति हर इन्सान चाहता है परन्तु ये सब उन गुनहगारों की आँख में खटकते हैं। अब तुम ही बताओ कि क्या अल्लाह ऐसे गुमराह करने वाले लोगों का भला करेगा? कभी नहीं। तुमने मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया और ना ही मैंने तुम्हें। और तुम? तुम तो अपना फर्ज़ निभा रहे हो। (फिर उसे गहराई से देखते हुए आर्द्र स्वर में)—अरे तुम्हारे जैसा ही मेरा एक भाई था, असलम। ईमानदारी की सूखी रोटियां उसे रास नहीं आयी। वह मदरसों में चल रहे कौमी इन्कलाबी जत्थों में शामिल हो गया। दो-तीन बार मिलने आया था घर पर। कहता था कि बड़ा फौजी अफ़सर बन गया है। चार साल से उसका कोई पता नहीं चला। बाद में मालूम पड़ा कि वह देशद्रोहियों से जा मिला है। इस सदमे से अब्बाजान चल बसे और अम्मी बीमार है। तुम्हें देखता हूं तो असलम की याद..... (रोने लगता है)

सैनिक : मुझे माफ करना मैंनें तुम्हारे जख़्मों को कुरेद दिया।

क़ैदी : ए... मत दिखा मुझ पर दया। असलम के हाथ में भी तुम्हारी ही तरह बन्दूक थी। उन्होंने मेरे असलम को मार डाला। (रोने लगता है)

सैनिक : देखो तुमने अभी-अभी मुझे असलम कहा है।

क़ैदी : हाँ तुम उसके जैसे ही हो।

सैनिक : तो बताओ तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं?

क़ैदी : (आर्द्र स्वर में)—बीवी थी और एक बेटी है।

सैनिक : बीवी थी का मतलब?

क़ैदी : (जेब में से खत निकालकर उसे देते हुए)—लो पढ़ लो इसे सब पता चल जायेगा।

सैनिक : खत, किसका खत है?

क़ैदी : मेरी बेटी नसरीन का। चौथी जमात में पढ़ती है। लो पढ़ लो।

सैनिक : (पत्र लेता है परन्तु वापस उसे देते हुए)—उर्दू में है तुम ही पढकर सुना दो।

क़ैदी : (पत्र पढ़ता है)—अब्बा। अम्मी पिछले एक हफ्ते से लापता है। एक हफ्ता पहले रहमान अपने चार-पाँच साथियों के साथ एक बड़ी सी कार में आया था हमारे घर पर। उसने मुझे पचास रूपये का नोट दिया और मिठाई लेने भेज दिया। जब मैं वापस आयी तो उसने अम्मी की बाँह पकड़कर मुझसे कहा था कि अपनी मिठाई को तुम खा लेना हमें तो मिठाई मिल गई (क्रोध में)— रहमान स्साले... उस दिन के बाद अम्मी घर पर नहीं आयी। तीन दिन बाद मुझे रहमान दिखाई दिया तो मैंने उससे अम्मी के बारे में पूछा, वह हँसकर कहने लगा कि तू भी चलेगी अपनी अम्मी के पास? अब्बा, मुझे उन लोगों से बहुत डर लगता है। मैं और दादी अकेले हैं आप तुरन्त चले आओ।

सैनिक : बस करो। बस करो प्लीज।

क़ैदी : सच सुनने के लिये कलेजा पत्थर करना पड़ता है मेरे दोस्त। परन्तु मुझे तुम्हारी बीवी की चिन्ता है। छोटी उम्र-जवानी और समाज के सफेदपोश भेडियों से उसका सुरक्षित रह पाना।

सैनिक : नहीं। ऐसा नहीं है हमारे यहाँ। मुझे डराओ मत।

क़ैदी : मुझे क्या पड़ी तुम्हें डराने की। पर मैंने अपनों का ही कहर सहा है इसलिए तुम्हें आगाह किया। (फिर सामान्य होते हुए)—मेरी वजह से परेशान हो गया? जाने दे। असल में हम दोनों ही को रूहानी ताक़त अपने में जकड़ने लगी है। ऐसा तुम्हें नहीं लगता। इस झूठे गुनाह की नींव पर गढ़ी हुई हमारी दुश्मनी हमसे कोसों दूर होती जा रही है (फिर ऊंची आवाज़ में)—या अल्लाह क्यों तू दो फरिश्तों का इम्तिहान ले रहा है? मिटा दे इन दो पुतलों के मन से दुश्मनी का जज़्बा।

(पार्श्व से अजान की आवाज़)

सैनिक : (क़ैदी को पानी देते हुए)—गंगाजल है दोस्त। पानी समझकर इस्तेमाल कर ले। माँ ने दिया था आते वक़्त। हमारे धर्म में गंगाजल को बड़ा ही पवित्र माना जाता है। इससे मन शुद्ध और चित्त शान्त रहता है।

(क़ैदी नमाज पढ़ता है। नमाज़ खत्म होते ही क़ैदखाने में गोलियां चलने की आवाज़ होती है।)

जेलर : (ऊंची आवाज़ में)—सावधान। आतंकवादियों ने अपने बंदी साथियों को छुडाने के लिए जेल पर हमला बोल दिया है। उनसे मुकाबले के लिये तैयार हो जायं।

क़ैदी : (सैनिक से)—मेरे दोस्त, आज मुझे अपने धर्म का पालन करने की इजाजत दे दो।

सैनिक : क्या मतलब?

क़ैदी : इन आतंकवादियों से निपटने के लिये आज मुझे भी बन्दूक उठाने की इज़ाजत दे दो।

(आतंकवादी धुआंधार गोलियां चलाते हुए बन्द बैरक की ओर बढ़े जा रहे हैं। मुसलमान सैनिक और पहरेदार सैनिक उनका मुकाबला करते हैं। आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया जाता है परन्तु मुसलमान क़ैदी घायल हो जाता है।)

सैनिक : (घायल क़ैदी को अपनी गोद में लेते हुए जेलर से)—सर आज इसने अपनी जान पर खेलकर आतंकवादियों को पकड़वाया है।

जेलर : (घायल क़ैदी को गंगाजल पिलाते हुए)—आज तुमने देश-सेवा का काम करके यह साबित कर दिया है कि तुम गुनहगार नहीं हो सकते। हम सरकार से आपकी रिहाई की सिफ़रिश करेंगे।

क़ैदी : (सैनिक से)—असलम...

(दोनों गले मिलते हैं। उन पर गिरता हुआ प्रकाश मंद मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

कंस

नाटक के प्रमुख पात्र

1- उग्रसेन : मथुरा नगरी के राजा एवं कंस के पिता।

2- देवक : कंस के चाचा एवं देवकी के पिता।

3- कंस : उग्रसेन का ज्येष्ठ पुत्र एवं देवकी का हितैषी भाई।

4- देवकी : देवक की पुत्री एवं कंस की सबसे चहेती बहन।

5- देववर्धन : देवक का पुत्र।

6- राष्ट्रपाल : उग्रसेन का पुत्र।

7- शुरभू : उग्रसेन की पुत्री एवं देवकी की चहेती बहन।

8- वसुदेव जी : शूरसेन के पुत्र एवं देवकी के पति।

9- नन्द बाबा : वसुदेव जी के मित्र।

10- तृणावर्त : कंस का निजी सेवक।

11- बकासुर, भौमासुर आदि : कंस के सहयोगी।

12- अन्य पात्र : सिपाही, द्वारपाल आदि।

अपनी बात

(प्रथम् संस्करण)

कंस का नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क में कृष्ण के दुष्ट मामा की ऐसी छवि उभरकर प्रकट होती है मानो इस पृथ्वी की वह सबसे दुष्टात्मा रही हो। उसके स्मरण मात्र से व्यक्ति विशेष के मन में घृणा के भाव उजागर हो जाते हैं। श्रीमद्भागवत् महापुराण के दशम् स्कन्ध में श्रीकृष्ण के जीवन चरित का वर्णन

किया गया है, जिसमें अन्य बातें के साथ-साथ इस बात के भी स्पष्ट संकेत-प्रमाण हैं कि कंस के हृदय में अपने भाई-बहिनों के प्रति अपार स्नेह था।

मैंने अपनी इस कृति में कंस के जीवन से सम्बन्धित उन अनछुए पहलुओं पर प्रकाश ड़ालने का प्रयास किया है जो अभी तक हमारे धार्मिक ग्रन्थों से लगभग अछूते ही रहे हैं। कंस के जीवन सम्बन्धित उन अनछुए पहलुओं को जानने से पूर्व यहां पर कंस के परिवार एवं उसके जीवन का संक्षिप्त वर्णन करना समीचीन समझते हुए नाटक के प्रारम्भ में मैंने ऐसा किया है।

कंस के मन में विनय, विचार, उदारता आदि गुण विद्यमान थे, परन्तु जब वह अपने साथियों के बीच में जाता तो उसके ये गुण लुप्त हो जाते थे। यह कंस का दोष नहीं था अपितु उसके उन सहायकों का दोष था जो अपनी बुरी संगत से उसकी मति को भ्रमित कर देते थे।

कंस अपने भाई-बहिनों से अपार स्नेह रखता था। देवकी उसकी चचेरी बहिन थी जो उसे सबसे अधिक प्रिय थी। जब कंस के चाचा देवक ने उससे देवकी के लिए योग्य वर की सलाह मांगी तो कंस ने ही देवक को देवकी का विवाह वसुदेव जी से करने की सलाह दी थी। चूंकि देवक भी इस बात को भली-भाँति जानते थे कि कंस देवकी को बहुत चाहता है, अत: उसी की अनुशंषा पर उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह वसुदेव जी से करने का निर्णय किया था।

कंस अपनी बहिन देवकी को बहुत अधिक चाहता था, यह इस बात से सिद्ध हो जाता है कि देवकी को विवाह में दिये जाने वाले दहेज आदि की व्यवस्थाओं में उसने व्यक्तिगत रूचि लेते हुए देवक का साथ दिया था। और जब देवकी की विदाई का समय आया तो उसने स्वेच्छा से वर-वधू के रथ के सारथी के रूप में कार्य करते हुए हर्षित एवं प्रफुल्लित मन से अपनी बहिन को ससुराल पहुंचाने के लिए चल दिया। यहां तक उसके मन में देवकी के प्रति प्रगाढ़ स्नेह-भाव था, परन्तु मार्ग में आकाशवाणी होने के पश्चात् उसके मन में देवकी की आठवीं सन्तान से अपनी मृत्यु का भय उजागर हुआ और इसी कारण उसने देवकी की चोटी पकड़कर उसे रथ से उतारकर घसीटा तथा मारना भी चाहा। यह कोई असामान्य बात नहीं थी और इसे कंस की दुष्टता कहने की अपेक्षा पररिस्थितियों का प्रभाव कहना अधिक उपयुक्त होता।

जब कंस को अपने दिये हुए वचन के पश्चात् वसुदेव जी देवकी के गर्भ

से उत्पन्न अपने प्रथम पुत्र कीर्तिमान को कंस को सुपुर्द कर देना चाहते हैं तो उसके मन में शायद वात्सल्य-भाव उजागर हुआ उसने उस नन्हे शिशु को वसुदेव जी को वापस कर दिया। परन्तु तभी एकाएक उसके समक्ष नारद मुनि प्रकट हो गये और उन्होंने कंस को इस बात का बोध कराया कि ब्रह्माजी के आदेशानुसार दैत्यों का वध करने हेतु देवताओं ने बृजमण्ड़ल में जन्म लिया है, और भगवान विष्णु स्वयं देवकी के गर्भ में जन्म लेकर उसका वध करेंगे, तो कंस पुन: मति-भ्रमित हो जाता है और वह देवकी-वसुदेव को हथकड़ी- बेड़ियों में जकड़कर क़ैदखाने में ड़ाल देता है। यहां पर पुन: यह दृष्टव्य है कि कंस के मन में देवकी के प्रति तो इस समय तक भी स्नेह-भाव ही था, परन्तु नारद मुनि की विद्या के प्रभाव से जब उसे पुन: अपने जीवन की असुरक्षा का भय प्रतीत हुआ तो उसका स्वभाव बदल गया और उसने ऐसा किया।

यहां पर एक सामान्य सी परन्तु जन-प्रचलित उक्ति मेरे मस्तिष्क में बार-बार कौंध रही है कि 'बुराई से घृणा करनी चाहिए बुरे आदमी से नहीं'। अत: यदि इस काल में भी देवताओं द्वारा कंस की बुराइयों के निवारणार्थ कोई उपाय किया गया होता या उसे प्रभावी मार्गदर्शन दिया गया होता तो शायद कंस उनका सहयोगी बन सकता था। इस सम्बन्ध में हमारे धार्मिक ग्रन्थों में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि कंस का जन्म ही राक्षस द्रुमलिक द्वारा कंस की माता पवनरेखा के साथ अनैतिक रीति से किये गये संसर्ग के परिणामस्वरूप हुआ था। कंस अपने पूर्व जन्म में भी कालनेमि राक्षस था अत: उसके द्वारा इस जन्म में भी बुरे कार्य किया जाना अवश्यम्भावी था और इसी कारण देवताओं के हाथों उसका वध निश्चित था। परन्तु एक सामान्य जन के मस्तिष्क में यह प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है कि क्या इतने जन्मों में भी सर्वगुण सम्पन्न एवं विभिन्न सिद्धियों के अधिष्ठाता-देवता एक राक्षस की बुरी प्रवृत्तियों को नियन्त्रित-परिवर्तित न कर पाये! तो फिर देवता एवं राक्षसें का यह अन्तर कैसा ?

मैंने यह नाटक लिखने से पूर्व हमारे प्रमुख धार्मिक ग्रन्थ- ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण तथा सन्दर्भित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सहित अन्य उपलब्ध ग्रन्थों का भी अध्ययन किया है, और देश के प्रमुख भागवत कथावाचकों से भी विचार-विमर्श किया है। इस सम्बन्ध में कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत राजस्थान की प्रमुख संस्था- 'त्रिवेणी कला संगम, जयपुर' द्वारा 2 नवम्बर 2003, गोपाष्टमी के दिन वृन्दावन में आयोजित एक संगोष्ठी में इस नाटक की पाण्डुलिपि

का वाचन भी हुआ तथा इस सम्बन्ध में श्रीमद्भागवत महापुराण के परम्परा वाचक वृन्दावन निवासी विद्वान, आचार्य डॉ. पुनीत गोस्वामी जी महाराज द्वारा लिखित में दी गई समीक्षा ने भी मुझे इस नाटक को प्रकाशित कराकर महान् योद्धा कंस के जीवन के सच्चरित्र को जनसामान्य के सम्मुख प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित किया। कंस के समक्ष नारदमुनि के प्रस्तुत होने का खण्ड़ मैंने आचार्य महाराज की समीक्षा के पश्चात ही नाटक में जोड़ा है।

इस नाटक के लेखन हेतु प्रेरित करने में मेरी धर्मपत्नी श्रीमति रेनूरानी शर्मा की मुख्य भूमिका रही है। नाटक की पाठकीय समीक्षास्वरूप बीच-बीच में 'त्रिवेणी कला संगम, जयपुर' के विद्यार्थी- काजल एवं अभिषेक शर्मा तथा मेरे गुरु आदरणीय डॉ. प्रेमप्रकाश भट्ट द्वारा जो योगदान दिया गया है उसके लिए मैं इन सभी का आभारी हूं। इस रचना के मूल में मेरे पिताश्री द्वारा मेरी बाल्यावस्था में मुझे सुनाये गये पौराणिक कथाओं के अनेक आख्यान हैं जो मेरे इस लेखन का आधार बने हैं।

यदि मेरे इस लेखन कार्य से महान योद्धा कंस के जीवन के अप्रकट पक्षों का जरा भी समर्थ परिचय जनसामान्य के समक्ष उजागर हो सका तो मैं अपने उपक्रम को सार्थक समझूंगा।

(डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा)

प्रथम दृश्य

(मंच पर एक नट एवं उसके पीछे पीछे एक बालक तथा बालिका जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये बस्ती में तमाशा दिखाकर आ रहे हैं। आगे आगे नट है जो हुक्का पीते हुए मस्तानी चाल में चल रहा है। उसके पीछे एक लड़की जिसका नाम कजरी है, भाले,बर्छी और तीर-कमान लिए चल रही है जिसके साथ एक बालक रस्सियां, ढ़ोलक और कुछ सामान लिए बोझिल कदमों से चला जा रहा है।)

कजरी : (जमूरे से हांफते हुए)- अरे राम राम! मर गये आज तो।

जमूरा : हाँ कजरी। हम लोग तो बोझ से दबे जा रहे हैं और ये उस्ताद मजे से हुक्का गुड़गुड़ाते चले जा रहे हैं।

कजरी : अरे धीरे बोल, उस्ताद सुन लेंगे।

जमूरा : अरे उस्ताद सुनेंगे नहीं....तो हमें सुस्ताने कैसे देंगे।

कजरी : (कुछ सोचते हुए)- चल ऐसा करते है उस्ताद के मस्का लगाते हैं थोड़ा।

दोनों : (एक साथ)- उस्ताद उस्ताद।

(उस्ताद अपनी धुन में मस्त है कोई उत्तर नहीं देता।)

दोनों : (पुन: एक साथ)- उस्ताद जी!

उस्ताद : (पीछे मुड़कर मुँह बनाते हुए)- क्या है?

जमूरा : (सामान ज़मीन पर पटकते हुए)- उस्ताद तम्बाकू कैसी लग रही है?

उस्ताद : (खुश होता हुआ एवं ललचायी निगाहों से हुक्के की ओर देखता हुआ)- मजा आ गया जमूरे इस बार तो।

कजरी : (कजरी सामान जमीन पर पटकते हुए)- उस्ताद! पता नहीं ये जमूरा आज कल कहां से बहुत अच्छी तम्बाकू बनाना सीखकर आया है। (फिर चापलूसी के अन्दाज में)- आप कहें तो बना दें आपके लिए?

जमूरा : हां उस्ताद (हुक्केकी तरफ इशारा करते हुए)- इसमें तो कोई दम रहा ही नहीं है।

उस्ताद : (खुश होता हुआ)- अच्छा, अच्छा। भई पता नहीं ऐसा अवसर कब मिलेगा (सामने की ओर इशारा करते हुए)- ये ऊंची ऊची हरी भरी फूलों की घाटियां।

कजरी : ये चहकते हुए पँछी।

जमूरा : वो झरनों की सतरंगी फुहारें और जलधारा का संगीतमय मधुर स्वर।

(जमूरा तम्बाकू मसलकर हुक्केमें जमाता है)

उस्ताद : और वो देखो सामने ऐतहासिक खंडहर जो इतिहास के पन्नों को अपने में संजाए हुए हैं।

दोनों : कैसे खण्डहर हैं उस्ताद वे?

कजरी : अबे मैं पूछ रही हूं। तू क्यों साला बीच में टांग अड़ा रिया है।

जमूरा : (आस्तीन ऊंची करते हुए)- मैं पूछ रहा हूं उस्ताद से। और

देख, मुझसे अड़ा-अड़ी मत किया कर, नहीं तो....

(दोनों एक दूसरे को मारने लगते हैं। जब उस्ताद बीच-बचाव करने आते हैं तो हुक्के की तम्बाकू बिखर जाती है। जमूरा व कजरी दोनों सहमकर खड़े हो जाते हैं।)

संगीत

उस्ताद : अरे फूटे करम उस्ताद के....अर भरी चिलम ढुळ जा...य... 8

जमूरा व कजरी : (नाचते हैं)- तिगदा दिगदिग थै ---------- 8

उस्ताद : समझाने के फेर में....खुद गच्चा खा जाए ---------- 4

जमूरा व कजरी : क्या कच्चा खा जाए, हा हा हा हा ---------- 4

तिगदा दिगदिग थै ---------- 8

(16 मात्रा के दो आवर्तन)

उस्ताद : (सम के आने पर)- अरे.....चुप्प।

दोनों : क्यों उस्ताद?

उस्ताद : अबे पहले तो दोनों लड़ रहे थे और अब दोनों ताल में ताल मिला रहे हो।

दोनों : (कान पकड़कर)- माफ करो उस्ताद। हम पहले वाली बात पर भी ताल में ताल मिलाते हैं।

उस्ताद : क्या मतलब?

कजरी : उस्ताद यह कह रहा कि बता दीजिए न वे किस प्रकार के खण्डहर हैं?

उस्ताद : बता दूं?

दोनों : हां बता दो उस्ताद।

उस्ताद : लड़ोगे तो नहीं।

दोनों : नहीं उस्ताद।

उस्ताद : हां तो सुनो। ऐसी बात बताऊंगा जो तुमने आज तक न सुनी होगी।

गाना

उस्ताद : चैतन्य महाप्रभु के समय, नवद्वीप नामक स्थान पर ----(4)

कजरी : नवद्वीप नामक स्थान पर? ---- (4)

जमूरा : नवद्वीप नामक स्थान पर? ---- (4)

उस्ताद : (खण्डहरों की ओर इशारा करते हुए)- चाँदकाजी था हुआ, देखो वहां उस स्थान पर -- (4)

कजरी : चाँदकाजी क्या हुआ कुछ समझ में आया नहीं -----(4)

जमूरा : (उसके चपत लगाते हुए)- पूरी सुने बिन बात क्या, क्या समझ में आता कहीं -----(4)

दोनों नाचते हैं : तिगदा दिगदिग थै.....(16)....एक आवर्तन

उस्ताद : चाँदकाजी शहर काजी, था सुनो उस काल में
उकसा रहे थे दुष्ट ब्राह्मण, वहाँ उसे हर काम में----- (8)
एक दिन चैतन्य महाप्रभु, का कीर्तन हो रहा था,
श्रीवास जी के धाम पर, संगीत का जमघट लगा ---- (8)
चाँदकाजी ब्राह्मणों के, साथ में वहाँ आ गया,
साज-बाज सब तोड़कर, विध्वंस का ताण्ड़व रचा---- (8)
नगर संकीर्तन निकला, अगले दिन भगवान ने
चार भुजाधारी हुए सब, विजयी वे बलवान थे ----- (8)

उस्ताद नाचते हैं : तिगदा दिगदिग थै ------ (एक आवर्तन)

जमूरा : वाह उस्ताद वाह। इस कहानी में तो बहुत मजा आ रहा है।

कजरी : उस्ताद, क्या चाँदकाजी इतना दुष्ट था कि भगवान के संकीर्तन में बाधा ड़ाली।

उस्ताद : हां रे! चाँदकाजी शहर काजी था और उसके नगर में जगन्नाथ और माधव नाम के दो डाकू एवं लुटेरे थे तथा जगाई और मघाई के नाम से जाने जाते थे। (फिर उनकी ओर देखते हुए)- जानते हो, ये दोनों पूर्व जन्म में कौन थे?

दोनों : नहीं। (फिर चापलूसी के अन्दाज में)- तुम बताओ न उस्ताद।

उस्ताद : मैं बताऊं

दोनों : हां उस्ताद।

जमूरा : उस्ताद आपकी हर बात का हम विश्वास करेंगे।

उस्ताद : तो सुनो। (दोनों पास आ जाते हैं) जगाई और मधाई अपने पूर्व जन्म में रावण और कुम्भकरण नाम के प्रसिद्ध राक्षस थे।

दोनों : (आश्चर्य से)- हे .....

उस्ताद : हां भाई। और सुनो। चाँदकाजी जन्मस्थान के हिसाब से .....

जमूरा : (बीच में बात काटते हुए)- उस्ताद हमने सब तरह के हिसाब के बारे में सुना, पर ये जन्मस्थान के रिश्ते का हिसाब पहली बार सुना आज।

कजरी : हां उस्ताद। (फिर हाथ नचाते हुए)- ये कौन सा हिसाब हुआ?

उस्ताद : अरे भाई एक स्थान पर जन्म लेने वाले व्यक्ति इस हिसाब में आते हैं।

जमूरा : कैसे?

उस्ताद : अरे भाई-(नासमझी का अभिनय करते हुए दोनों हाथों से सिर को खुजाते हुए) कैसे समझाऊं अब तुम्हें।

कजरी : नहीं उस्ताद समझाना तो पडेगा ही।

उस्ताद : (कुछ सोचते हुए)- बताओ तुम्हारी माँ कहां पैदा हुई?

कजरी : (दूर इशारा करते हुए)- छोटी डूँगरी गाँव में

उस्ताद : और मैं कहां पैदा हुआ ?

जमूरा : तुम भी छोटी डूँगरी गाँव में उस्ताद।

उस्ताद : तो इस हिसाब से मेरा तुम्हारा क्या रिश्ता हुआ?

कजरी : तुम मेरे मामा हुए न उस्ताद।

उस्ताद : तो भाई यही जन्मस्थान का रिश्ता हुआ।

जमूरा : (उछलते हुए)- हे.....समझ आ गया।

कजरी : (उसे डांटते हुए)- अरे चुप्प। (फिर उस्ताद से) हां तो उस्ताद आप क्या बता रहे थे चाँदकाजी के रिश्ते का हिसाब।

उस्ताद : भाई मैं बता रहा था कि चाँदकाजी जन्मस्थान के रिश्ते के हिसाब से चैतन्य महाप्रभु के मामा होते थे।

जमूरा : क्या..... ? मामा और दुष्टता।

कजरी : (खीझ के साथ)- अरे कंस ने भी तो मामा होकर ही कृष्ण के साथ दुष्टता की थी।

जमूरा : और कृष्ण के माता-पिता को यातनाएं भी दी थी।

उस्ताद : अरे वाह भाई वाह। तुम तो अन्तर्यामी निकले।

कजरी : कैसे?

उस्ताद : भई चाँदकाजी अपने पूर्व जन्म मे कंस ही था।

कजरी : कंस था..... ?

जमूरा : क्या वाकई.... ?

उस्ताद : हां भाई। और चैतन्य महाप्रभु स्वयं राधाकृष्ण थे। (फिर उनको आदेश देते हुए)- चलो भाई अब बहुत देर हो गई।

जमूरा : नहीं उस्ताद।

कजरी : कहानी अच्छी लग रही है उस्ताद, आगे सुनाओ। राधाकृष्ण का नाम लेते ही गुदगुदी होने लगती है हमारे तो।

जमूरा : देखो उस्ताद सुना दो। नहीं तो.....

उस्ताद : नहीं तो क्या, क्या कर लोगे नहीं तो तुम लोग मेरा।

जमूरा : हम नारे लगायेंगे। (नारे लगाते है)- उस्ताद!

कजरी : हाय हाय

उस्ताद : (उन्हें रोकने का इशारा करते हुए)- अरे मेरे उस्तादो बस करो (फिर कुछ सोचते हुए)- ऐसा करते हैं, हम तुम्हें एक नाटक दिखाते हैं। जिसमें यह सब बताया जाएगा।

जमूरा : लेकिन उस्ताद उसमें कंस भी हो

कजरी : देवकी भी हो।

उस्ताद : भाई यह तो प्रभु की ही इच्छा है कि वे तुम्हें क्या दिखाना चाहते हैं (शून्य में ताकत है। जमूरा व कजरी उस्ताद की निगाहों के सहारे शून्य में कुछ तलाशने का प्रयास करते हैं।)

(फ्रीज। दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(वाटिका का दृश्य। यह राधा और कृष्ण का मिलन-स्थल है जहां वो प्रतिदिन मिलते हैं एवं वन विहार करते हैं। अभी तक राधा के न आने से कृष्ण बेचैन होकर उसे पुकारते हैं)

कृष्ण : राधा..... राधा..... (2+2)

(फिर आहत होकर)

आजा ओ वृषभान कुमारी, मुरली तुम बिन तरसे,
चंचल नयनों की छवि पाने को मेरा मन तरसे।
मुरली भी तुम बिन निष्ठुर सी, ढीठ बनी चुप रहके,
कानन के पंछी मतवाले, मुरली की धुन बिन तरसे।
वृक्ष, लताएं, जीव सभी को, आकर के सरसादे,
बरसाने की ओर निगाहें, आजा आजा राधे।

(कृष्ण इस प्रकार गाते गाते मंच से बाहर निकल जाते हैं तभी दूसरी ओर से राधा एवं उसकी सखियों का मंच पर प्रवेश। उसके साथ में उसकी सखियां–विशाखा ललिता आदि मटकियां लेकर पानी भरने जा रही हैं।)

राधा : (ऊंची आवाज में)– कान्हा..... कान्हा..... (2+2)
तुम बिन मेरा मनवा तड़पे, सखियां मन को सालें
(फिर तिरछी निगाहों से सखियों को देखते हुए)–
किस विध मुक्ति पाऊं इनसे, आऊं कौन बहाने
(फिर ज़मीन से पत्थर उठाकर मटकी में चुभोते हुए सखियों से)–
– अरी विशाखा 2

विशाखा : हां हां राधा 2

राधा : (ललिता को मटकी दिखाते हुए)–
ललिता देखो भूल हुई है 2
(विशाखा से)– मटकी मेरी फूट गई है 2

विशाखा : हाय दैया (1)

ललिता : हाय दैया (1)

दोनों : अब क्या होगा, अब क्या होगा?

राधा : होगा क्या तुम आगे चल दो 2
मैं जाती घर मटकी लाने 2
(प्रस्थान करती है)

विशाखा : जल्दी आना जल्दी आना 2

ललिता : (हंसती हुई)– बंशी की धुन पर मत जाना 2
(प्रकाश के परिवर्तन से दृश्य लोप एवं नेपथ्य में राधा–कृष्ण की पुकार)

कान्हा : राधा ..... राधा ..... 2+2

राधा : कान्हा ..... कान्हा ..... 2+2
(दोनों का मंच पर आगमन)

कृष्ण : (दौड़कर उसका हाथ पकड़ते हुए)– राधा! तुम आ गई। देखो तुम्हारे बिना ये सारे पशु–पक्षी, ये वृक्ष तथा लताएं सब मलिन हो गये हैं और (लताओं की तरफ देखकर कुटिलता से मुस्कुराते हुए) ये लताएं। देखो इनका अंकपाश वृक्षों पर से ढ़ीला पड़ गया है।

राधा : हां कान्हा! प्रेम के चरमोत्कर्ष के लिए आलम्बन का बड़ा महत्व है। तुम्हारे बिना मेरी दशा भी तो इन लताओं की भांति ही हो गई है।

कान्हा : (उसे अंकपाश में लेते हुए)– लेकिन देखो, अब वातावरण सरस हो उठा है, पक्षी चहक उठे हैं और लताओं में चेतना आ गई है। वृक्ष उनके पाश में आनन्दित हो उठे हैं (दोनों वृक्ष के नीचे बैठ जाते हैं)

राधा : (आँखे बंद कर आनन्द में झूमती हुई)– हां कन्हैया, ये लताएं आज आनन्दित हो उठी हैं, लगता है इनकी अब कोई जिज्ञासा नहीं रह गई है, पूर्ण सन्तुष्टि का आभास जो हो रहा है इन्हें।

कान्हा : (शून्य में देखते हुए)– काश, यह हर प्राणी के लिए हो पाता राधा! तो न कहीं कोई विरोधाभास होता, न विषाद का कोई कारण। हर ओर शान्ति–ही–शान्ति होती। पर धरती का हर जीव भरमाया हुआ है, तृष्णा के मोह एवं विषय–वासना की मृग–मरीचिका के पीछे। इस नीरव शान्ति और सत्य से विमुख होता जा रहा है राधे।

राधा : (भोलेपन से कृष्ण को देखते हुए)– हे सुख के सागर, नन्दनन्दन। मैं भोली–भाली अल्हड़–अज्ञानी तुम्हारी इन बड़ी–बड़ी रहस्यमय बातों को नहीं समझ पा रही हूं। सारे गोकुल व

बरसाने में तुम्हारी अविश्वसनीय लीलाओं की चर्चाएं होती रहती हैं। वे लोग तुम्हें अवतारी पुरुष मानते हैं। जब वे तुम्हारी इन लीलाओं का बखान करते हैं तो मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि तुम मेरे ही कान्हा हो। (फिर उत्सुकता से कृष्ण की ओर मुखातिब होकर) कान्हा, क्या नगरवासी जो कहते हैं वह सत्य है, तुम्हारी लीलाएं क्या हैं, क्या तुम निश्चय ही एक अवतारी पुरुष हो?

कृष्ण : (शून्य में देखते हुए)- छोड़ो राधिके, तुम इन बातों को नहीं समझ पाओगी।

राधा : नहीं कन्हैया। आज मैं तुम्हें नहीं छोडूंगी। सुना है कि तुम्हारे मामा कंस बहुत ही दुष्ट थे। उन्होंने तुम्हारे माता-पिता को जेल में बंद कर रखा था, और मथुरा नगरी की सारी प्रजा उनके अत्याचारों से त्रस्त थी।

कृष्ण : (रहस्यमय मुस्कान के साथ)- राधा, मैं स्वयं एक रहस्य हूं। जो प्रजा देख रही है, अनुभव कर रही है, वह भी इस रहस्य से अपरिचित है, और इस सृष्टि में वही हो रहा है जो मैं चाहता हूं।

राधा : लेकिन सुना है, तुम्हारे मामा कंस बड़े अत्याचारी थे। उन्होंने तुम्हारे छः भाइयों को जन्म लेते ही मार दिया था, जिससे तुम्हारे माता-पिता को बहुत पीड़ा सहन करनी पड़ी थी।

कृष्ण : (हँसते हुए)- राधिके, प्राणी प्राणी होता है। अच्छाई और बुराई जन्म से ही उसके साथ नहीं आती है, अपितु परिस्थितियां, परिवेश और स्वयं की सुरक्षा -असुरक्षा तथा मृत्यु का भय उनमें परिवर्तन ला देते हैं। जो किसी को भय और त्रास दिखाई देता है, वह किसी के हित का कारण भी तो हो सकता है।

राधा : (अवाक् सी)- क्या?

कृष्ण : हां राधे, हर अपकार में उपकार, हर बुराई में अच्छाई एवं पाप में भी पुण्य छिपा हुआ रहता है। त्रासदाता की त्रासदी में उसका बल, बुद्धि, कौशल, चातुर्य आदि छद्मवेश में उपस्थित रहते हैं। यह दृष्टि का दोष है कि वह ऐसे कीर्ति पक्ष को देख पाने में असमर्थ होती है।

(राधा पर सम्मोहन सा छा जाता है और वह कृष्ण को निहारते हुए उन्हीं में लीन हो जाती है।)

कृष्ण : (स्वगत) लगता है कि राधा को सब कुछ बताना ही पड़ेगा। लोगों को भ्रम है कि कंस मामा बुरे व्यक्ति थे। अतः इन्हें उनकी वीरता, प्रेम एवं उनके मानवीय पक्ष आदि बातों से अवगत कराना श्रेयस्कर ही रहेगा।

(कृष्ण आसमान की ओर हाथ करके इशारा करते हैं जिससे बिजली की कड़क के साथ ही वातावरण कम्पायमान हो जाता है।)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(महाराज उग्रसेन के महल में अन्तःपुर का दृश्य। देवकी एक कोने में खड़ी सुबक रही है। पास में ही उग्रसेन का पुत्र राष्ट्रपाल उसे धीरज बँधा रहा है।)

राष्ट्रपाल : मत रो बहिन देवकी, मत रो। अभी कुछ ही दिन तो व्यतीत हुए हैं बहिन शुरभू को अपने ससुराल गये हुए।

देवकी : नहीं भैया, अब शुरभू बहन के बिना नहीं रहा जाता। जिस बहिन ने मेरी बाल्यावस्था के एक-एक पल को स्नेह से सींचा, उसके बिना अब एक भी पल रह पाना मेरे लिए कठिन है।

(सहसा देववर्द्धन के साथ कंस का प्रवेश)

कंस : (घबराया हुआ सा) क्या बात है राष्ट्रपाल। आज हमारी देवकी बहिन रो क्यों रही है?

देवकी : (भर्राये गले से कंस की छाती से लिपटते हुए) भैया।

(जोर-जोर से रोने लगती है।)

कंस : (उसके सिर पर हाथ फेरते हुए खीज के साथ) क्या बात है राष्ट्रपाल। क्या किसी ने मेरी बहिन का दिल दुखाया है ?

(फिर उत्तेजित होता हुआ) सर्वनाश कर दूंगा मैं उसका।

(फिर अधीर होकर) हमारी यह बहिन हमें प्राणों से प्यारी है। इसके एक आँसू के बदले हम अपना खून बहा सकते हैं।

(तलवार निकाल लेता है देवकी सामान्य हो जाती है)

राष्ट्रपाल : नहीं भ्राताश्री नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।

कंस : (तलवार म्यान में रखते हुए) तो फिर क्या बात है राष्ट्रपाल?

राष्ट्रपाल : भैया, जब से बहिन शुरभू अपने सुसराल गई है , देवकी का मन ही नहीं लग रहा है और उसकी याद में रो रही है।

देवकी : हां भैया, (सुबकती है)

कंस : नि:श्वास छोडता हुआ-अच्छा यह बात है।
(फिर देववर्धन व राष्ट्रपाल से) देवकी हमारी सबसे चहेती बहिन है देववर्धन। और हम इसे कभी दुखी नहीं देख सकते।
(फिर कुछ सोचते हुए) आगे तो इस विषय में मैं कुछ करने की सोच ही रहा हूं, पर अभी तुम एक काम करो...

देववर्धन : (हाथ जोडते हुए)जी भ्राताश्री, आदेश करें।

कंस : तुम तुंरत लाव-लश्कर के साथ जाओ और शुरभू को तुरंत लिवा लाओ।

देवकी : (खुश होते हुए) हमारी बहिन आएगी, हमारी बहिन आएगी (प्रसन्नता के साथ उछलती-उछलती बाहर चली जाती है।)

राष्ट्रपाल : भैया, देवकी को हम सब भाइयों में से आपको सबसे अधिक लगाव है। (कंस गर्व से इतराता है।)

देववर्धन : पर भैया, बहनोई जी उन्हें भेजेंगे ?

कंस : देववर्धन, वे हमारी बहिन को तुरंत भेज देंगे इसकी हमें कम उम्मीद है।

राष्ट्रपाल : हां भैया, वे हमारी बहिन को उतना ही स्नेह देते हैं जितना तुम बहन देवकी को।

कंस : हां ये बात तो है। पर मैं तुम्हें एक युक्ति बताता हूं।

देववर्धन : कैसी युक्ति ?

कंस : तुम शुरभू को भेजने की बात हमारे बहनोई यामक जी से मत करना।

देववर्धन : तो फिर?

कंस : अरे भई, तुम सीधे वसुदेव जी को ही बताना। फिर बहनोई जी अपने बडे भाई की बात थोडे ही टालेंगें?

राष्ट्रपाल : वाह भइया वाह। मान गये आपको (फिर चुहुलबाजी के अन्दाज में) और फिर वे आपकी बात टालेंगें थोडे ही।

कंस : क्यों भाई क्यों?

देववर्धन : भईया हम सब जानते हैं कि वसुदेवजी आपके बहुत गहरे मित्र हैं और एक बार तो आप उनके प्राण भी मांग लें तो वे मना नहीं करेंगे।

कंस : हां देववर्धन, ठीक कहा तुमने।
(फिर शून्य में देखते हुए)
वसुदेवजी धीर, गम्भीर, नीतिवान एवं गुणवान हैं तथा वीर योद्धा एवं सच्चे इन्सान हैं, इसीलिए तो पिताश्री और काकाश्री देवक ने हमारी कंसा,कंसवती,कंका, शुरभू और राष्ट्रपालिका आदि सभी बहिनों का विवाह वसुदेवजी के छोटे भाईयों से करके इस मित्रता को और प्रगाढ बना दिया है (फिर देववर्धन से) जाओ देव जाओ, सांझ होने वाली है और अँधेरा होने तक तुम्हें वहां पहुंच जाना चाहिए।
(देववर्धन सिर झुकाकर प्रस्थान करता है)

कंस : (कुछ सोचते हुए)- राष्ट्रपाल।

राष्ट्रपाल : जी भ्राताश्री।

कंस : राष्ट्रपाल, तुमने ठीक ही कहा था कि हमारी बारह बहिनों में से देवकी हमें सबसे प्रिय है और उसे हमारी सब बहिनों में शूरभू सबसे अधिक प्रिय है।

राष्ट्रपाल : यह तो सत्य है भईया।

कंस : मैं कुछ सोच रहा हूं राष्ट्रपाल, कुछ सोच रहा हूं
(शून्य में ताकता है)

राष्ट्रपाल : क्या सोच रहे हैं भईया?

कंस : राष्ट्रपाल, मैं सोच रहा हूँ कि इस कंस की बहिन देवकी सदा सुखी रहे (फिर एकाएक उसकी ओर उन्मुख होकर)- समझे कुछ?

राष्ट्रपाल : (अवाक्सा) नहीं भईया, मैं कुछ समझा नहीं।

कंस : (उसी प्रकार शून्य में देखते हुए)–मेरे भाई। क्या ऐसा हो सकता है कि हमारी प्रिय बहन देवकी हमेशा– हमेशा के लिए चहेती बहिन शूरभू के घर चली जाए?

राष्ट्रपाल : यह क्या कह रहे हैं भईया।

कंस : डरो नहीं राष्ट्रपाल। कंस सदा ही अपनी बहिन देवकी का हित सोचता है।

राष्ट्रपाल : मैं समझा नहीं।

(सहसा देवक का प्रवेश)

देवक : (प्रवेश करते हुए) तुम क्या नहीं समझे राष्ट्रपाल और कंस तुम ऐसा कौन सा गूढ विषय समझा रहे हो इसे।

(कंस एवं राष्ट्रपाल देवक के पाँव छूते हैं और देवक उन्हें आशीर्वाद देते हैं)

कंस : (प्रसन्न होता हुआ) – अच्छा हुआ आप भी आ गये काकाश्री।

(फिर उसी प्रसन्नता से शून्य में देखते हुए)– अब मुझे सब कुछ अनुकूल दिखाई दे रहा है।

देवक : (राष्ट्रपाल से) – राष्ट्रपाल, इसे क्या हो गया आज। यह तामसिक और उच्छृंखल प्रवृत्ति का कंस आज दार्शनिकों तुल्य सम्भाषण एवं व्यवहार क्यों कर रहा है।

राष्ट्रपाल : क्षमा करें काकाश्री। अभी–अभी कंस भइया कह रहे थे कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि देवकी बहिन हमेशा– हमेशा के लिए शूरभू बहिन के घर चली जाए।

कंस : (प्रसन्नता से)– हां काकाश्री, मैं यही अब भी कह रहा हूं

देवक : कंस तुम देवकी को अपने प्राणों से भी अधिक मानते हो और सदा ही उसका हित सोचते हो अत: अब भी जो कुछ सोच रहे होंगे, वह उसके हित में ही होगा। भगवान तुम्हारी मनोकामना पूरी करे पुत्र।

कंस : क्या...क्या आपने मुझे आशीर्वाद दे दिया काकाश्री।

देवक : कंस। हमारा दोनों भाइयों का यह परिवार एक वटवृक्ष के समान है। भ्राता श्री उग्रसेन और मैं सदा ही अपने तेरह पुत्र एवं बारह पुत्रियों का हित चाहते रहे हैं जिसके लिए हमारा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है। यह सत्य है कंस, कि तुम कुछ उच्छृंखल प्रवृत्ति के हो परन्तु अपने बहिन एवं भाईयों के प्रति तुम्हारा जो स्नेह है, परिवार के प्रति जो चाह है वह प्रशंसनीय है।

राष्ट्रपाल : (सिर खुजलाते हुए)–पर मैं कुछ भी नहीं समझा भईया।

कंस : (देवक की ओर मुखातिब होकर) काकाश्री, मैं चाहता हूं कि बहिन देवकी का विवाह यदुवंश के वीर योद्धा वसुदेवजी के साथ हो जाए।

देवक : (प्रसन्न होते हुए) – वाह कंस वाह। यह तो तुमने बहुत अच्छी बात कही। वसुदेव एक वीर योद्धा होने के साथ ही साथ नीतिवान, गुणवान एवं एक पुण्य आत्मा भी हैं। (फिर प्रसन्न होते हुए)– वही वसुदेव ,जिनके जन्म के समय देवताओं के नगारे और नौबत स्वयं ही बजने लगे और वे आनन्द दुन्दुभि कहलाए।

(फिर प्रसन्न होते हुए)– उनके साथ देवकी को जीवन भर कोई कष्ट न होगा पुत्र।

(गला भर आता है) कोई कष्ट न होगा।

राष्ट्रपाल : अब समझा भइया कि देवकी बहिन इस प्रकार हमेशा– हमेशा के लिए अपनी बहन शूरभू आदि के साथ रह सकेगी

कंस : लेकिन काकाश्री क्या पिताश्री भी इस सम्बन्ध के लिए सहमत होंगे?

देवक : (प्रसन्नता से स्वगत) – कंस देवकी की कितनी चिन्ता रखता है। सदा उसका हित सोचता है।

(फिर दोनों हाथ ऊपर करके)– हे प्रभु, मेरे पुत्र कंस को सद्बुद्धि देना ताकि वह अपने स्वभाव एवं व्यवहार में सदा इसी तरह का बन सके।

(प्रकाश मन्द–मन्द होता हुआ बुझ जाता है)

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(राजदरबार का दृश्य।) महाराज उग्रसेन का आसन अभी खाली है। दरबार में सभी सभासद अपने–अपने आसनों पर विराजमान हैं और महाराज के आने की राह देख रहे हैं। कंस अपने सहयोगियों एवं साथियों को किसी अभियान हेतु निर्देश दे रहा है।)

कंस : (अपने निजी सेवक तृणावर्त से)- प्रिय तृणावर्त, ऐसा लगता है कि मेरे अपने ही भाईयों की दुर्बल नीतियों ने हमारे राज्य की प्रजा को उद्दंड़ी होने का अवसर प्रदान किया है।

बाणसुर : हां कुमार, नहीं तो ऐसा कभी हुआ कि यहां की तृण-तुल्य प्रजा, जो मेरे व भौमासुर (पास खडे भौमासुर की ओर इशारा करते हुए) की उपस्थिति से थर-थर काँपने लगती है, ने कटु वचन कह डाले।

कंस : (उत्तेजित होकर) - क्या... क्या कटुवचन कहे बाणासुर तुम्हें ? तुम मेरे अभिन्न अंग हो, और यहां की प्रजा की हिम्मत कैसे हुई हमारे सहायकों को कुछ कहने की।

तुष्टिमान : (खड़ा होकर पास में बैठे सुदेव की ओर इशारा करते हुए)- भईया, यह बाणासुर असत्य भाषण कर रहा है। (बाणासुर तिलमिलाकर रह जाता है।)

कंस : (उपेक्षात्मक स्वर में)- रहने दे रहने दे तुष्टिमान, तू अभी बच्चा है। जब दो बडे आपस में बात कर रहे हों तो बीच में नहीं बोलते।

सुदेव : (खडा होकर)- हां भ्राताश्री मैं और तुष्टिमान भइया अपने घोडों पर सवार होकर जा रहे थे, तभी पनिहारिनों की चीख सुनाई दी। पास जाने पर हमने देखा कि यह बाणासुर व भौमासुर उनके साथ अश्लील हरकतें कर रहे थे। तभी ग्राम-वासियों ने मिलकर इन्हें बुरा भला कहा।

भौमासुर : युवराज, प्यास के मारे हमारा कँठ सूखा जा रहा था अत: हमने तो पनिहारिनों से पानी ही मांगा था और गाँव वालों ने हमें खदेडना शुरू कर दिया।

बाणसुर : क्षमा करें युवराज। पर यदि आपके ये दोनों भाई हस्तक्षेप नहीं करते तो हम उस गाँव को मरघट बना देते।

कंस : वाह बाणासुर वाह। तुम्हारे और भौमासुर के होते हुए मैं निश्चिन्त हूं।

(फिर सुदेव व तुष्टिमान से क्रोध में)- आगे से तुम लोग राजकार्य में विघ्न मत डालना

(फिर उन्हें प्रेम से) अरे ये प्रजा बड़ी दुष्ट होती है। जरा सी ढ़ील दो कि सिर पर चढ बैठती है।

बाणसुर : युवराज अब क्या आदेश है ?

कंस : (क्रोध में दाँत पीसते हुए)- जाओ तुम दोनों मगध नरेश जरासंध के पास जाओ वे हमारे शुभचिन्तक हैं अत: उनसे सैनिक सहायता लेकर उन गाँवों को श्मशान बना दो।

(फिर तुष्टिमान और सुदेव की ओर देखते हुए)- पिताश्री तो समझते हैं कि मैं प्रजा का हित सोचना ही नहीं।

(कंस बाहर निकल जाता है उसके साथ बाणासुर व भौमासुर भी चले जाते हैं।)

तुष्टिमान : भईया सुदेव, कंस भईया उन दुष्ट राक्षसों के बहकावे में आकर बेचारी प्रजा को नाहक परेशान कर रहे हैं।

सुदेव : भगवान प्रजा की रक्षा करें।

दरबान : सावधान, खबरदार, होशियार, महाराजाधिराज उग्रसेन पधार रहे हैं ....(सब दरबारी खडे हो जाते हैं)

उग्रसेन : (सिंहासन पर विराजते हुए) - आज देववर्धन दिखाई नहीं दे रहा पुत्रवर।

तुष्टिमान : पिताश्री, भईया आज शुरभू बहन के ससुराल गये हैं।

उग्रसेन : (कुछ सोचते हुए) अच्छा। पर हमारे यहां न कोई पर्व है न कोई त्यौंहार, फिर वो किसकी आज्ञा से उसे लेने गया है ?

तुष्टिमान : पिताश्री जब से बहन शुरभू अपने सुसुराल गई है बहन देवकी दु:ख में घुल-घुलकर आधी हो गई है।

सुदेव : और भईया कंस ने ही देवकी की खातिर उन्हें शुरभू बहन को लेने भेजा है।

उग्रसेन : (आह भरते हुए मंन्त्री से) मुझे कंस के आचार-विचार व प्रजा के साथ उसके व्यवहार से बडी पीडा होती है मन्त्रिवर (फिर सहज होते हुए) - पर अपनी बहन देवकी को जो वह चाहता है, उसकी चिन्ता को अपने प्राणों की शत्रु जो वह समझता है, इसी बात से अब तक हमारा उससे लगाव है।

मंत्री : हां महाराज। युवराज भले ही प्रजा के साथ नरम रूख न रखें, पर अपनी बहन और भाईयों के प्रति वे सदा उदार हृदय हैं।

उग्रसेन : हां मन्त्रीवर, और यह भी जानता हूं कि देवकी के लिए तो वह सोता, जागता, उठता , बैठता सदा चिन्तित रहता है।

मंत्री : हां महाराज। तभी तो युवराज ने राजकुमारी देवकी का विवाह अपने मित्र यदुवंश के वीर योद्धा वसुदेव से करने की योजना बनाई है।

उग्रसेन : (खुशी से) क्या, क्या मन्त्रीजी? क्या यह सत्य है। क्या मेरी देवकी का विवाह वसुदेव से करने की बात कंस ने सोची है।

तुष्टिमान : हां पिताश्री। भईया ने काकाश्री से भी सहमति ले ली है

उग्रसेन : मन्त्री जी, यह तो हमारे लिए शुभ समाचार है। भला यदुवंश के श्रेष्ठ कुमार वसुदेव हमारे दामाद बनें इससे बडी खुशी हमारे लिए और क्या हो सकती है।

(फिर मंत्री से)- मन्त्री जी। आज ही हमारी ओर से इस रिश्ते का संदेश लेकर राजपुरोहित को महाराज शूरसेन के यहां भेजा जाए।

(आदेश का संगीत बजता है। प्रकाश मन्द-मन्द होता हुआ बुझ जाता है)

दृश्य समाप्त

पांचवां दृश्य

(महाराज शूरसेन के महल का दृश्य। शूरसेन सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके पास में ही उनके मित्र कुन्तिभोज जो उनसे मिलने आये हैं, बैठे हैं। उनके पुत्र देवभाग व सृंजय भी वहीं उपस्थित हैं जिनके साथ ही महाराज शूरसेन के बडे दामाद (श्रुतदेवा के पति) करूष देश के अधिपति वृद्ध शर्मा विराजमान हैं। महाराज के पास में ही यदुवंश के पुरोहित श्री गार्गाचार्य जी खड़े हैं।)

गार्गाचार्य जी: आज का दिन बड़ा शुभ है महाराज क्योंकि आज ही के दिन आप सिंहासनारूढ हुए थे।

शूरसेन : हां पुरोहित जी। और आज का दिन हमारे लिए और भी शुभ कारण इसलिए है कि आज हमारे सबसे घनिष्ठ मित्र (इशारा करते हुए) कुन्तिभोज हमारे बीच हैं।

कुन्तिभोज : (शूरसेन से) - और मित्रवर, हमारे बडे दामाद (वृद्ध शर्मा की ओर इशारा करते हुए) भी हमारे साथ जो हैं। (वृद्ध शर्मा अभिवादन करते हैं। सहसा एक दूत का प्रवेश।)

दूत : (उपस्थित होकर)- महाराज की जय हो।

शूरसेन : क्या है दूत, क्या कोई विशेष समाचार हैं?

दूत : (झुककर सम्मान देते हुए)- हां महाराज। वीर, पराक्रमी और न्यायप्रिय नृपति, महाराज उग्रसेन की ओर से उनके राजपुरोहित आपसे मिलना चाहते हैं।

शूरसेन : (चिन्तित होकर कुन्तिभोज से) - अभी अभी तो देववर्द्धन अपनी बहन को लेकर गए हैं। फिर इन राजपुरोहित का आगमन कुछ रहस्य सा लग रहा है मित्रवर।

वृद्ध शर्मा : (शूरसेन से) - जो कुछ भी हो महाराज उन्हें शीघ्र यहां बुलाना चाहिए।

शूरसेन : (हाथ जोडकर खडे दूत से)- जाओ दूत तुरन्त जाओ और उन्हें ससम्मान अन्दर लिवा लाओ।

(दूत सिर झुकाकर बाहर प्रस्थान करता है , बाकी सभी लोगों के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं उभर आती हैं।)

राजपुरोहित : (प्रविष्ट होकर सिर झुकाते हुए)- महाराज की जय हो।

शूरसेन : आइए राजपुरोहित जी आइए। हमारे राज्य में आपका स्वागत है। पहले अपने राज्य की कुशलता से अवगत कराएं और तत्पश्चात् अपने आने का प्रयोजन बताइए।

राजपुरोहित : महाराज, भगवान के आशीर्वाद से वहां सब कुशल मंगल है और इसी क्रम में एक शुभकार्य हेतु महाराज उग्रसेन ने मुझे आपकी सेवा में भेजा है।

शूरसेन : (उत्सुकता से) शुभकार्य। कैसा शुभकार्य राजपुरोहित जी?

राजपुरोहित : (विनम्रता से) क्षमा करें महाराज। हमारे महाराज उग्रसेन ने अपनी भतीजी महाराज देवक की पुत्री देवकी के विवाह का प्रस्ताव आपके बडे पुत्र वसुदेव जी हेतु भिजवाया है।

शूरसेन : (प्रसन्नता से वृद्ध शर्मा व कुन्तिभोज की ओर देखते हुए) यह तो बहुत ही शुभ समाचार है राजपुरोहित जी। महाराज उग्रसेन की पुत्रियां कंसा, कंसवती, कंका, शुरभू और राष्ट्रपालिका तथा महाराज देवक की पुत्रियां श्रुतदेवा,शान्तिदेवा, उपदेवा, श्रीदेवा, देव रक्षिता और सहदेवा हमारी पुत्र वधुएं हैं जिनके कारण हमारा घर स्वर्ग का संसार बना हुआ है।

कुन्तिभोज : हां मित्रवर। और अब यदि देवकी इस घर में और आ जायेगी तो हमारी खुशियां और भी बढ जायेंगी।

वृद्ध शर्मा : (उठते हुए) महाराज अब आप आगे की तैयारियां करें और मुझे आज्ञा दें।

(फिर प्रसन्न मुद्रा में)- अब मुझे आपकी पुत्री को भी तो यह शुभ समाचार जो बताना है।

(अभिवादन कर प्रस्थान करता है।)

शूरसेन : जाओ पुरोहित जी। और जाकर महाराज उग्रसेन से कहना कि हम उनके इस प्रस्ताव को आत्मा से स्वीकार करते हैं।

राजपुरोहित : (प्रसन्नता से) महाराज की जय हो।

(प्रस्थान करता है)

शूरसेन : (कुन्तिभोज से)- मित्रवर। आज आपकी उपस्थिति में यह नेक निर्णय भी हो गया।

कुन्तिभोज : अब मुझे भी आज्ञा दो शूरसेन, अपनी राजधानी जाकर कुछ आवश्यक कार्य शीघ्र निपटाने हैं ताकि वापस आकर विवाह की तैयारियों में तुम्हारा हाथ बंटा सकूं (प्रस्थान करता है)

दृश्य समाप्त

छठा दृश्य

(महाराज उग्रसेन के महल का दृश्य। देवकी का विवाह वसुदेव के साथ सम्पन्न हो गया है। अब देवकी की विदाई का समय है। विवाह-मंडप में

परिवार जनों के बीच देवकी और वसुदेव खडे हैं विवाह-मण्डप के बाहर देवक स्वयं अपनी पुत्री देवकी को दिये जाने वाले दहेज के सामान की व्यवस्था देख रहे हैं जिनके साथ उपस्थित कंस, तुष्टिमान, देववर्द्धन आदि सभी भाई उनके निर्देशों की पालना को तत्पर हैं।)

देवक : (कुछ सोचते हुए से कंस की ओर मुखातिब होकर) - बेटे कंस !

कंस : (सम्मान में झुकते हुए विनम्रता स)-जी काकाश्री।

देवक : बेटा, एक बार दहेज के सारे सामान की पुन: जांच करा लो।

तुष्टिमान : काकाश्री, सब कुछ पिताश्री और आप दिये गये निर्देशों के अनुरूप व्यवस्थित कर दिया गया है।

कंस : (देवक की ओर देखते हुए)- लेकिन तुष्टिमान फिर भी एक बार पुन: जांच कर लेना उत्तम रहेगा (फिर मंडप में उपस्थित देवकी की ओर इशारा करते हुए) हमारी प्रिय बहन के दहेज में जरा भी कहीं कोई कमी नहीं रहनी चाहिए।

तुष्टिमान : जी भ्राता श्री।

कंस : देववर्द्धन मैं दहेज में दिये जाने वाले सामान के नाम बोलता हूं और तुम देखना कि उसकी व्यवस्था हो चुकी या नहीं।

तुष्टिमान : जी भ्राताश्री।

कंस : (तुष्टिमान से) देवकी के हाथों के रत्न जडित कड़े रख दिये ?

तुष्टिमान : (हाथ के भोजपत्र में देखते हुए) जी भ्राताश्री।

कंस : और पहनने के वस्त्र?

तुष्टिमान : वे भी रख दिये गये हैं भ्राताश्री।

(इधर उधर दृष्टि दौडाते हुए)

और वो बाहर (हाथ का इशारा करते हुए) दालान में दायीं ओर रथों की कतारें हैं वे सभी देवकी बहिन हेतु उत्तम रत्नों से भरे हुए हैं।

कंस : और गहने?

तुष्टिमान : भ्राताश्री, सोने के आभूषणों से भरे हुए 10 रथ तैयार हैं।

कंस : और देवकी बहन की सुरक्षा व्यवस्था के लिए क्या लाव लश्कर है तुष्टिमान ? हाथी, घोडे, रथ और दासियों की व्यवस्था हो गई ?

देववर्धन : (प्रवेश करते हुए) हां भ्राताश्री। देवकी बहन को दहेज में देने हेतु काकाश्री ने सोने के हारों से अलंकृत 400 हाथी, 1500 घोडे, 1800 रथ तथा 200 दासियां देने का आदेश दिया था, और इन सबकी व्यवस्था हो गई है।

कंस : (भावुक होता हुआ) प्रिय तुष्टिमान। हमारी बहन को राजमहल के बगीचे के फल बहुत प्रिय हैं, वो भी रखे हैं या नहीं ?

तुष्टिमान : वे भी रख दिये हैं भ्राताश्री।

(इसी वार्तालाप के साथ शुरभू देवकी को लेकर मण्डप से बाहर आती है। उसके साथ में वसुदेव जी एवं उनके मित्र नन्द बाबा भी हैं। सभी लोगों का मन इस समय विछोह के संताप से पीडित एवं आर्द्र है।)

देवक : (विह्वलता से)- बेटे वसुदेव, मैं अपनी प्रिय देवकी को जन्म जन्मान्तर के लिए तुम्हें सुपर्द कर रहा हूं।

नन्द बाबा : महाराज। मेरे प्रिय सखा आपकी अपेक्षाओं की पूर्ति में निश्चय ही सफल होंगे, (फिर गर्व से वसुदेव की ओर देखते हुए)- ये वचन के पक्के और एक सच्चे इन्सान हैं महाराज।

कंस : (प्रसन्न होते हुए) हम जानते हैं नन्दराय जी, वसुदेव जी की सत्यता और श्रेष्ठता से कौन अपरिचित है , इसलिए आज सर्वत्र इनका नाम आदर के साथ लिया जाता है।

देवक : और इसीलिए हमने अपनी छः पुत्रियों का विवाह वसुदेव जी से किया था नन्दराय जी,(फिर प्रशंसात्मक लहजे में) और जिसके आप जैसे सच्चे व नेक मित्र हों भला वह इससे इतर क्योंकर हो सकता है।

(सभी परिजन देवकी को वसुदेव के साथ विदाई दे रहे हैं। देवकी अपने पिता देवक, तुष्टिमान, एवं देववर्द्धन से बारी बारी से मिलती है, कंस उसे सान्त्वना देता है। पार्श्व में विदाई का संगीत वातावरण को मार्मिक बना रहा है।)

गीत

देवक की आँखों का तारा आज विदाई ले रहा ,
कितनी पीडा आज सभी को, रह रह के है दे रहा।
सबसे प्यारी बहन कंस की, छोड उसे अब जा रही,
किसे कहूंगा बहना बहना, हाय रहा जाता नहीं।
शूरभू भाई को ढाढस दे, भैया मन में धीर धरो,
मैं इसकी रखवाली वहां पर, मत रो भैया तू मत रो।
जिस आँगन में बचपन बीता, गोद चढी बाबुल की थी,
तेरह भाई लाड लडायें, ऐसी बहन देवकी थी।
राजमहल भी सिसक रहा, है सिहर उठी हरियाली,
पंक्षी रो संतप्त हुए, हैं मुरझाई केसर क्यारी।
कंस बडा बलवान तथा, निष्ठुर मन का संतप्त करे,
हुआ जा रहा है विह्वल वह भी, बहन उसको संतप्त करे।
जिसके देखे बिन चैन नहीं, वह जाती है प्यारी बहना,
क्यों चैन चला रूदन करता,बहना बहना बहना मत जा।

देवक : (कंस से आर्द स्वर में)- पुत्र कंस, कब तक देवकी को रोकेगा बेटा। बाहर सारथी इन्तजार कर रहा है।

कंस : (अवरूद्ध कण्ठ से) काकाश्री। जिस बहिन को देखे बिना मुझे चैन न पडता था, जिसकी हर मुस्कराहट पर मेरा रोम रोम खिल उठता था , वह आज मुझे छोडकर चली जायेगी (सुबकता है)

देवक : (उसे सान्त्वना देते हुए) प्रिय पुत्र उसे तो एक न एक दिन जाना ही था। बेटी कब तक अपने पिता के यहां रह सकती हैं। जाओ बेटा, सारथी इन्तजार कर रहा है। (आंखें पोंछता है)

कंस : विनय के साथ- क्षमा करें काकाश्री। आपकी आज्ञा हो तो मैं स्वयं देवी बहिन को ससुराल पहुंचा आऊं ? और फिर सारथी की क्या आवश्यकता , यदि मेरी बहिन के रथ का सारथी भी मुझे बनने का सौभाग्य मिल जाय तो मेरा संताप कम हो जायेगा।

देवक : (आंखें मूंदकर भाव विभोर होते हुए)प्रिय पुत्र। मैं जानता हूं , सब कुछ जानता हूं मैं , सारथी बनना तो एक बहाना है, तुम तो अपनी बहन का कुछ पल साथ चाहते हो (फिर आदेशात्मक स्वर में)- जाओ पुत्र जाओ, तुम सारथी बनकर अपनी बहन को ससुराल पहुंचा आओ।

(कंस देवकी को सहारा देते हुए महल से बाहर ले जाता है,उसके साथ वसुदेव एवं नन्दराय जी हैं, वर-वधू के मंगल के लिए शंख, तुरही, मृदंग और दुन्दुभियों की आवाजें तेज होने लगती हैं जिनकी तीव्रता के साथ ही प्रकाश मन्द मन्द होता हुआ बुझ जाता है)

दृश्य समाप्त

सातवां दृश्य

(मंच पर उस्ताद के साथ जमूरे एवं कजरी का प्रवेश)

जमूरा : (प्रसन्नता से उछलते हुए उस्ताद से)-उस्ताद यह तो बड़ा ही मार्मिक दृश्य चल रहा था नाटक का।

कजरी : हां उस्ताद। कंस तो वाकई अपनी बहिन देवकी से बहुत अधिक स्नेह रखता था।

उस्ताद : अरे तुम दोनों तो मूर्ख थे, तुम्हें इतनी जल्दी यह सब कैसे समझ में आ गया।

कजरी : उस्ताद, कोई भी व्यक्ति, जिसमें जरा सी बुद्धि होगी उसके समझ में यह बात आ ही जायेगी।

जमूरा : उस्ताद लगता है हमें समझाते समझाते खुद ही बहक गये हो।

उस्ताद : चलो कुछ भी हो, परन्तु तुम लोग इसे साबित करो कि कंस देवकी से अपार स्नेह रखता था।

कजरी : उस्ताद, तुम ही सोचो कि यदि कंस युवराज होकर भी जब देवकी के रथ का सारथी बनकर उसे ससुराल पहुंचाने का कार्य करने की बात सोचता है तो इससे स्वत: ही सिद्ध हो जाता ह: कि एक युवराज सारथी जैसा छोटा कार्य करने की मन में

इच्छा रखे तो यह उसका अपनी बहन के प्रति स्नेह दर्शाता है या नहीं।

जमूरा : क्यों उस्ताद कैसी रही, बोलो हां या ना।

उस्ताद : (हँसते हुए) - हां भाई हां इससे यह स्वत: ही सिद्ध हो जाता है।

कजरी : उस्ताद तुम तो कह रहे थे कि कंस में केवल बुराई ही बुराई थी और वह अच्छा सोच ही नहीं सकता था, परन्तु यहां तो हमें अभी तक कंस की अच्छाई ही अच्छाई दिखाई दे रही है।

उस्ताद : अरे भाई, कंस वैसे तो पैदायशी उत्पाती था, परन्तु वह अपने बहिन- भाईयों को, और विशेषकर देवकी को बहुत चाहता था।

कजरी : (दोनों हाथों का इशारा कर उसे रोकते हुए) -ठहरो-ठहरो उस्ताद। अभी पहले क्या कहा था आपने ?

उस्ताद : क्या कहा था पहले मैंने ? (सिर खुजलाता है।)

जमूरा : उस्ताद बड़े भुलक्कड हो। एक पराक्रमी योद्धा को गाली दे दी और अब बड़े भोलेपन से कह रहे हो कि अभी अभी क्या कहा था मेंने - (हाथ नचाता है)

(उस्ताद न समझने के भाव से अपना सिर खुजलाता है)

कजरी : (उसकी पीठ में थाप मारती हुई) -अरे उस्ताद अभी-अभी तो आपने कहा था कि कंस तो पैदाइशी ही उत्पाती था।

जमूरा : हां बताओ कैसे कहा उस महान् योद्धा को पैदायशी उत्पाती। क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है इसका ?

उस्ताद : हां है।

कजरी : चलो चलो जल्दी करो और बताओ तो क्या प्रमाण है तुम्हारे पास।

उस्ताद : अरे भाई प्रेम सागर में लिखा है कि कंस का असली जन्मदाता ही एक राक्षस था।

जमूरा : क्या उस्ताद , नई - नई मनगढ़ंत बातें बता रहे हो आप।

कजरी : हां उस्ताद हमने तो इस प्रकार की कोई बात सुनी नहीं अभी तक।

उस्ताद : हां भाई, समय ही ऐसा आ गया है कि हमारे धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने की फुर्सत कहां है आज की पीढ़ी के पास।

जमूरा : उस्ताद, क्या हमारे धार्मिक ग्रन्थों में ये बातें लिखी गई हैं ?

उस्ताद : (उन दोनों के कन्धों पर हाथ रखकर समझाने के भाव से) - हां रे ये सब बातें हमारे पवित्र ग्रंन्थ श्रीमद्भागवत् महापुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि ग्रन्थों में लिखी हुई हैं और उन्हीं के आधार पर यह सब हम तुम्हें बता रहे हैं।

कजरी : पर उस्ताद लोगबाग तो बस इतना ही जानते हैं कि कंस दुष्ट था, पापी था,हत्यारा था, और उसने अपनी बहिन देवकी को बहुत यातनायें दी थीं।

उस्ताद : तुमने अभी तक नाटक देखा न, कंस।

जमूरा : (उछलकर आगे आते हुए) -हां उस्ताद बडी तल्लीनता से देखा।

उस्ताद : कैसा लगा तुम्हें कंस का चरित्र ?

कजरी : उस्ताद हमें तो लग ही नहीं रहा कि दुनिया में कंस की जो छवि लोगों के मस्तिष्कपटल पर अंकित है वह सही है।

जमूरा : हां उस्ताद, कंस तो अपनी बहिन देवकी को जी जान से प्यार करता था और देखो तो अपनी बहिन के स्नेहवश सारथी जैसा छोटा कार्य भी उसने किया।

कजरी : उस्ताद, मुझे तो लोगों की बातों से लगता है कि हमारे धार्मिक ग्रंन्थों में अतिश्योक्ति के साथ कंस के चरित्र को कुछ अधिक ही बुरा सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

उस्ताद : (उसे डांटते हुए धीमे से) - अबे चुप्प। हमारे धार्मिक ग्रन्थों पर आक्षेप लगाते हो। मारेगी ये जनता तुम्हें।

जमूरा : लेकिन उस्ताद मुझे तो कजरी की बातों में दम लगता है।

उस्ताद : दम तो मुझे भी लगता है भाई- हुक्के से तम्बाकूका कस खींचता है परन्तु हमारे आदि ग्रन्थ लोगों के मस्तिष्कपटल पर इस

कदर छा गये हैं कि भले ही कंस के चरित्र का दर्शाना अतिश्योक्ति के साथ ही किया गया हो परन्तु वह आज जन सामान्य को वास्तविक ही लगता है।

जमूरा : पर उस्ताद आपने अभी तक भी इस बात को सिद्ध नहीं किया कि कंस पैदायशी उत्पाती था।

कजरी : (चौंककर कुछ याद करते हुए) - अरे हां याद आया-(फिर हाथों से इशारा करते हुए)- अब जल्दी बताओ उस्ताद , जल्दी।

उस्ताद : हँसते हुए - चलो भाई बताना ही पड़ेगा अब तो तुम्हें। सब कुछ बताना पड़ेगा। तो लो सुनो कंस के जन्म का वह आख्यान जो शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को सुनाया था।

जमूरा-कजरी : (दोनों एक साथ) - हां हां उस्ताद सुनाओ।

उस्ताद : तो लो सुनो -मथुरापुरी के राजा काहुक के दो पुत्र थे-देवक और उग्रसेन। उनके पश्चात् उग्रसेन वहां का राजा बना। उग्रसेन की एक रानी जिसका नाम पवनरेखा था अति सुन्दर और पतिव्रता स्त्री थी जो आठों प्रहर अपने स्वामी की आज्ञा में रहती थी। एक दिन वह सोलह श्रृंगार कर, वस्त्राभूषणों से अलंकृत हो सखियों के संग रथ पर सवार होकर वनविहार के लिए निकली। जंगल में चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी , वृक्षों पर फल-फूल लगे हुए थे और वहां पर प्रवाहित होने वाली सुगंधित समीर मन को भी सुगंधित बना रही थी। जंगल में कोयल कूक रही थी ओर विभिन्न प्रकार के पक्षी नाना प्रकार की क्रीड़ाओं में मग्न थे।

कजरी : (बीच में बात काटते हुए)- इतनी मजेदार जगह थी उस्ताद। हमें भी ले चलो न वहां पर।

उस्ताद : (क्रोधित हो)- फिर काटी न बीच में बात-(फिर नाराज होकर)- लो नहीं सुनाता कहानी वानी मैं।

जमूरा : (कजरी की चोटी खींचते हुए)- अबे उस्ताद पागल है यह तो। बात - बात में इसका मन मचल उठता है। चलो सुनाओ आप तो कहानी , बड़ा मजा आ रहा है।

उस्ताद : (नि:श्वास छोडते हुए)–हां रे इसमें कजरी का कोई दोष थोड़े ही है, परन्तु रानी पवनरेखा तो यह दृश्य अपनी आँखों से देख रही थी , अत: प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर उस नवयौवना का मन भी मचलने लगा और वह अपनी सखियों से बिछुड़कर जंगल में भटक गई।

कजरी : (ड़रकर उस्ताद के नजदीक आते हुए) – जंगल में भटक गई? (उसकी घिग्घी बंध जाती है।)

जमूरा : फिर क्या हुआ उस्ताद?

उस्ताद : होना क्या था रे , उसी जंगल में एक राक्षस रहता था जिसका नाम द्रुमलिक था।

जमूरा : यह कौन था उस्ताद जो ऐसे मनोहर स्थान पर रहता था ?

उस्ताद : अरे भाई यह वह था जो पूर्व जन्म में कालनेमी राक्षस के नाम से जाना जाता था और उसने तब भगवान विष्णु से युद्ध किया था।

कजरी : अरे हां उस्ताद। हमारी बस्ती के मंदिर में जो पुजारी जी हैं ना वे कभी कभी बस्ती वालों को कथा सुनाते हैं उसमें मैंने सुना था कालनेमी राक्षस का नाम।

जमूरा : (उससे चुहुलबाजी करते हुए) –क्यों उस्ताद की हां में हां मिलाकर बेवकूफ बना रही है चमची। (कजरी उसे मारने दौड़ती है)

उस्ताद : देखो यदि लड़ोगे तो मैं अब आगे की कहानी नहीं सुनाऊंगा हां ....

जमूरा : उस्ताद इससे पूछो तो क्या यह मंदिर में कथा सुनने गई थी?

कजरी : नहीं तो मैं कभी भी ऐसी कथाओं के चक्कर में नहीं पडती हां ...।

जमूरा : तो फिर तूने पुजारी जी के मुँह से कैसे सुन लिया उस बेचारे कालनेमी राक्षस का नाम ?

कजरी : अरे भाई पुजारी जी तो कथा सुनाने में मस्त थे और बार बार उनका ध्यान चढ़ावे की ओर भी जाता रहता था। उधर मेरी

बकरी जाकर मंदिर में शिवलिंग पर चढे बिल्वपत्रों को बड़े चटखारे ले लेकर खा रही थी। जब मुझे पता चला तो मैं दौड़ी बकरी को लाने, तभी मेरे कानों में नाम पड़ा तुम्हारे उस बेचारे कालनेमी का नाम।

(बेचारे का विशेष ढ़ंग से कहती है)

जमूरा : (खिसयाते हुए) – देख कजरी यदि नकल उतारी तो ठीक नहीं होगा, हां ...।

उस्ताद : (कजरी को बचाते हुए) –अरे जमूरे, यह ठीक ही तो कह रही है। वह दुष्ट द्रुमलिक राक्षस बेचारा थोड़े ही था।

जमूरा : तो फिर क्या था वह ?

उस्ताद : अरे जमूरे दुष्ट था वह दुष्ट।

जमूरा : कैसे उस्ताद, उसने क्या दुष्टता का काम किया था।

उस्ताद : अरे जब उसने पवनरेखा को देखा तो उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर सोचने लगा कि मुझे इससे भोग करना चाहिए।

कजरी : (डरती हुई)– फिर ?

उस्ताद : फिर क्या। उसने तुरन्त अपनी राक्षसी शक्ति से उसके पति उग्रसेन का रूप धारण किया ओर पास में जाकर रानी से काम– क्रीड़ा करने का प्रस्ताव रखा।

जमूरा : फिर ?

उस्ताद : फिर क्या। रानी तो विदुषी महिला थी , अत: उसने उससे कहा कि महाराज आप ज्ञानी हैं अत: आपको ऐसा विचार नहीं रखना चाहिए क्योंकि दिन में काम केलि करना अनुचित है और इससे शील औरत धर्म की क्षति होती है।

कजरी : फिर ?

उस्ताद : फिर क्या, वह तो राक्षस था अत: उसने जबरदस्ती रानी को जल में भोगकर अपना असली रूप धारण कर लिया।

कजरी : अरे राम राम राम राम। इतना दुष्ट ! फिर रानी ने क्या किया?

उस्ताद : अब करना क्या था रे। उसने दुखी होकर द्रुमलिक से कहा कि अरे अधर्मी धिक्कार है तेरे माता– पिता और गुरु को जिसने तुझे

ऐसी बुद्धि दी जो ऐसा दुष्कृत्य किया। और वह उसे शाप देने लगी।

कजरी : (उत्साहित हो) क्या शाप दिया फिर उसने?

उस्ताद : अरे उसके शाप देने से पूर्व ही वह राक्षस बोला कि रानी तू मुझे शाप मत दे क्योंकि मुझे तेरी बन्द कोख देखकर बड़ी चिन्ता थी और इसीलिए मैंने ऐसा किया। अत: अब तू चिन्ता मत कर क्योंकि आज तू गर्भ से हो गई है और आज से दसवें मास बाद मेरी देह एवं स्वभाव के अनुसार तुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी और तेरा वह पुत्र नौखंड पृथ्वी को जीतकर राज्य करेगा और श्रीकृष्ण से युद्ध करेगा

कजरी : तो क्या उसके दसवें मास के बाद ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ ?

उस्ताद : हां रे हुआ और वही तो देवकी का भाई कंस था।

जमूरा : अच्छा कंस ही था उस राक्षस का बेटा ?

उस्ताद : हां भाई , इसीलिए उसकी बुद्धि राक्षसी प्रवृत्ति की थी।

कजरी : और सुनाओ उस्ताद, कहानी में बड़ा मजा आ रहा है।

उस्ताद : अरे यह तो मैंने जमूरे द्वारा बार- बार अपने कथन को सिद्ध करने के लिए बताया है तुम्हें। अब कहानी क्या लो चलो आगे का नाटक ही दिखा देते हैं तुम्हें।

(प्रकाश मंद मंद होता हुआ बुझ जाता है)

(दृश्य समाप्त)

आठवाँ दृश्य

(राजमार्ग का दृश्य। कंस देवकी और वसुदेव को रथ में बैठाकर रथ हाँकते हुए लिये जा रहा है। वह पीछे मुड़-मुड़कर देवकी से वार्तालाप भी करता जा रहा है। वसुदेव जी उनके वार्तालाप का श्रवण करते हुए आनन्द में मग्न हैं।)

कंस : देखो देवकी , ससुराल में पहुंचकर अपनी कुशलता के समाचार अवश्य देते रहना। कहीं वहां पर जाकर अपने इन भाइयों को न भूल जाना।

देवकी : नहीं भ्राताश्री, ऐसा कभी नहीं हो सकता, मेरी आत्मा तो अभी तक भी मेरे भाइयों में ही उलझी हुई है।

वसुदेव : (चुटकी लेते हुए) अरे भई हमारा भी थोड़ा ध्यान रखना। कहीं ऐसा न हो कि आपकी आत्मा को हमारे यहां पर लाने हेतु युवराज से संस्तुति करवानी पड़े।

(वसुदेव जी की इस बात पर कंस ठहाका मारकर जोर से हँसता है, जिसके साथ ही आकाश में तेज गर्जना के साथ आकाशवाणी होती है।)

आकाशवाणी : अरे मूर्ख! जिसको तू रथ में बिठाये ले जा रहा है, उसके आठवें गर्भ की सन्तान तुझे मार डालेगी।

(आकाशवाणी सुनकर कंस की हँसी रुक जाती है और वह हड़बड़कर घोड़ों की रास छोड़ देता है।)

कंस : (स्वगत) क्या....., क्या देवकी की आठवीं सन्तान मुझे मार डालेगी। नहीं - नहीं ऐसा नहीं हो सकता , देवकी मेरी सबसे प्रिय बहिन है और यह मेरा कोई अपकार नहीं कर सकती।

(पुन: आकाशवाणी होती है।)

आकाशवाणी : अरे मूर्ख अभी भी सोच रहा है। यह एक अटल सत्य है कि जिसको तू रथ में बिठाये ले जा रहा है, उसके आठवें गर्भ की सन्तान तुझे मार डालेगी।

कंस : (चौंककर एवं भयाक्रांत हो एक क्षण कुछ सोचकर क्रोधित हो देवकी से)-देवकी! आज तक मैं तुझे अपनी बहिन समझता रहा। पर तू, तू तो मेरे काल की जननी है।

(कंस उसके बालों को तेजी से झटका देता है। देवकी चीख पड़ती है , और वसुदेव जी कंस को समझाने का प्रयास करते हुए देवकी को सान्त्वना देते हैं।)

वसुदेव : राजकुमार! आप भोजवंश के होनहार वंशधर तथा अपने कुल की कीर्ति बढ़ाने वाले हैं और बड़े-बड़े शूरवीर भी आपके गुणों की सराहना करते हैं।

(फिर देवकी को सान्त्वना देते हुए)- इधर एक तो यह स्त्री, दूसरे आपकी बहन, और तीसरे यह विवाह का शुभ अवसर। ऐसी स्थिति में इसे मारने से आप पाप के भागी बनेंगे।

(वसुदेव उसे इसी प्रकार समझाते हुए)-हे वीरवर! जो जन्म लेते हैं उनके शरीर के साथ ही मृत्यु भी उत्पन्न होती है। अब उसकी मृत्यु आज हो या सौ वर्ष के बाद। परन्तु यह निश्चित है कि जीव मात्र की मृत्यु अवश्य होगी।

कंस : (अवहेलनात्मक स्वर में वसुदेव से)- मुझे समझाने का प्रयास मत करो वसुदेव। मैं सब कुछ जानता हूं, और यह भी जानता हूं कि मेरा यह शरीर कभी भी नष्ट नहीं होगा। (अट्टहास करता है)

वसुदेव : (उसे उसी प्रकार समझाते हुए) - हे राजकुमार ! जब शरीर का अन्त हो जाता है तब जीव अपने कर्मों के अनुसार दूसरे शरीर को ग्रहण करके अपने पहले शरीर को छोड़ देता है और उसे विवश होकर ऐसा करना ही पड़ता है।

कंस : (क्रोधित हो वसुदेव से उसी प्रवाह में) - परन्तु मैं विवश नहीं हूं वसुदेव। मैं अपने बाहुबल से इस होनी को अनहोनी में बदल दूंगा।

(देवकी पर वार करना चाहता है।)

वसुदेव : (उसे रोकते हुए) - राजकुमार! जैसे चलते समय मनुष्य एक पैर जमाकर ही दूसरा पैर उठाता है, और जैसे जोंक किसी अगले तिनके को पकड़ लेती है, तब पहले से पकड़े हुए तिनके को छोड़ती है, वैसे ही जीव भी अपने कर्म के अनुसार किसी शरीर को प्राप्त करने के बाद ही इस शरीर को छोड़ता है।

(वसुदेव के इस कथन को सुनकर कंस अवाक् सा उनकी ओर देखने लगता है।)

वसुदेव : (उसी प्रकार कंस को समझाते हुए)- हां युवराज, जैसे कोई पुरुष जागृत अवस्था में राजा के ऐश्वर्य को देखकर और इन्द्रादि के ऐश्वर्य को सुनकर उसकी अभिलाषा करने लगता है और उसका चिन्तन करते - करते उन्हीं बातों में घुल-मिलकर एक हो जाता है तथा स्वप्न में अपने को राजा या इन्द्र के रूप में अनुभव करने लगता है और साथ ही अपने दरिद्रावस्था के शरीर को भूल जाता है, वैसे ही जीव कामना और कामनाकृत कर्म के वश होकर दूसरे ही शरीर को प्राप्त हो जाता है, और अपने पहले शरीर को भूल जाता है।

कंस : (उपेक्षात्मक स्वर में)-मुझे उपदेश मत दो वसुदेव। अभी अपनी सुध नहीं भूला हूं मैं। और मैं...,मैं कंस हूं कंस, दूसरों के जीवन को तृण-तुल्य समझने वाला कंस। अत: अपने जीवन की रक्षा मैं स्वयं कर सकता हूं।

वसुदेव : राजकुमार! जीव का मन अनेक विकारों का पुंज होता है। देहान्त के समय वह अनेक जन्मों के संचित और प्रारब्ध कर्मों की वासनाओं के अधीन होकर माया के द्वारा रचे हुए अनेक पांच भौतिक शरीरों में से जिस किसी शरीर के चिन्तन में लीन हो जाता है, और मान बैठता है कि यह मैं हूं उसे वही शरीर ग्रहण कर जन्म लेना पड़ता है।

कंस : (अपने बालों को नोचता हुआ बेचैनी से स्वगत)-मैं कुछ नहीं समझ पा रहा, कुछ नहीं।

वसुदेव : (पूर्व की भाँति उसे समझाते हुए)- राजकुमार! जैसे सूर्य, चन्द्रमा आदि चमकीली वस्तुएं जल से भरे हुए घड़ों में या तेल आदि तरल पदार्थों में प्रतिबिम्बित होती हैं और हवा के झोंके से उसके जल आदि के हिलने - ड़ोलने पर उसमें प्रतिबिम्बित वस्तुएं भी चंचल जान पड़ती हैं, वैसे ही जीव अपने स्वरूप के अज्ञान द्वारा रचे हुए शरीर में राग करते हुए उन्हें अपना आप मान बैठता है और मोहवश उनके आने - जाने को अपना आना-जाना मानने लगता है।

कंस : (उसी स्थिति में अपने दोनों हाथों की मुठ्ठियां भींचते हुए बेचैनी से स्वगत)- मैं कुछ नहीं समझ पा रहा, कुछ नहीं।

वसुदेव : इसलिए हे राजकुमार! जो अपना कल्याण चाहता है, उसे किसी से द्रोह नहीं करना चाहिए , क्योंकि जीव कर्म के अधीन हो गया है और जो किसी से भी द्रोह करेगा उसको इस जीवन में शत्रु से और जीवन के बाद परलोक से भी भयभीत होना पड़ेगा।

कंस : (आगबबूला होते हुए)- लेकिन वसुदेव! मैं लोक-परलोक किसी से भी नहीं ड़रता। आज केवल ड़र रहा हूं तो देवकी के उस आठवें गर्भ से जो मुझे मार ड़लेगा। अत: आज मैं उस काल की जन्मदात्री इस देवकी को ही खत्म किये देता हूं, फिर देखता हूं कि काल मुझे कैसे मारेगा।

(अट्टहास करता है।)

वसुदेव : (हाथ जोड़कर उससे अनुनय-विनय करते हुए)- युवराज, यह आपकी छोटी बहन अभी बच्ची है और बहुत दीन है। यह तो आपकी कन्या के समान है। विवाह के मंगल चिन्ह भी इसके शरीर से अभी नहीं उतरे हैं, ऐसी दशा में आप जैसे दीन - वत्सल पुरुष द्वारा इस बेचारी का वध करना उचित नहीं है।

(कंस वसुदेव जी की इस बात को सुनकर क्रोध करके दाँत पीसने लगता है।)

वसुदेव जी : (स्वगत)- किसी भी प्रकार से यह संकट टालना चाहिए। बुद्धिमान पुरुष को, जहां तक उस की बुद्धि और बल साथ दे, मृत्यु को टालने का प्रयास करना चाहिए। प्रयत्न करने पर भी वह न टल सके तो फिर प्रयत्न करने वाले का कोई दोष नहीं रह जाता है।

(फिर ढ़ाढ़स बंधाने के उद्येश्य से देवकी के कन्धे पर युक्ति से हाथ रखते हुए स्वगत)-इसलिए इस मृत्युरूपी कंस को अपने पुत्र दे देने की प्रतिज्ञा करके मुझे इस दीन देवकी को बचा लेना चाहिए।

कंस : (क्रोधित हो वसुदेव से उसे सामने से हटाते हुए - सामने से हटो वसुदेव, और मुझे मेरा उपक्रम करने दो।

वसुदेव : (हाथ जोड़कर कंस से) - युवराज, होगा तो वही जो नारायण की इच्छा होगी, परन्तु बस इतना उपकार करो कि मुझे देवकी से एकान्त में एक बार बतिया लेने दो।

कंस : (अट्टहास करते हुए)- ठीक है ठीक है वसुदेव, तुम मेरे प्रिय मित्र रहे हो अत: भला तुम्हारी इस बात को मैं कैसे टाल सकता हूं, परन्तु जल्दी करो।

वसुदेव : (देवकी को एकान्त में ले जाकर समझाते हुए) - देखो प्रिये, इस समय कंस पर अपनी मृत्यु का भय हावी है और इसीलिए वह तुम्हारा प्रिय भाई होते हुए भी तुम्हें मार देना चाहता है।

देवकी : (सुबकते हुए)- परन्तु ऐसा कैसे हो गया प्राणनाथ। मेरा वह भाई कंस जो मेरे एक आँसू पर अपना ख़ून तक बहाने को तैयार रहता था, मेरी एक इच्छा की पूर्ति तक के लिए जो आकाश-पाताल तक में हलचल मचा देता था, आज क्योंकर मेरे प्राण हर लेना चाहता है। क्या मेरा भाई एकाएक आये इस परिवर्तन के कारण निश्चय ही मेरा वध कर सकता है।

वसुदेव : देवकी जब किसी व्यक्ति को अपनी मृत्यु की आशंका हो जाती है तो वह अपने को बचाने के लिए कुछ भी कर सकता है, और कंस की मृत्यु की घोषणा तो देवताओं ने आकाशवाणी के द्वारा की है, इसी कारण से तुम्हारा प्रिय भाई तुम्हारा वध करना चाहता है। और यह भी सत्य है कि वह तुम्हें नहीं अपितु अपने काल का वध करना चाहता है। और ऐसी स्थिति में यदि कंस के स्थान पर यदि कोई अन्य भी होता तो वह भी ऐसा ही करता। हो सकता है यदि मैं और तुम भी कंस के स्थान पर होते तो ऐसा ही करते। इसलिए हे प्रिये, हमें इस संकट से बचने की कोई युक्ति ढूंढ़नी चाहिए।

देवकी : (घबराते हुए)- प्राणनाथ मेरे प्रिय भाई की इस व्यथा में मैं अपनी सोचने-समझने की बुद्धि गंवा बैठी हूं (रोने लगती है)

वसुदेव : (उसे धीरज बंधाते हुए)- हे प्राणेश्वरी! इस मृत्युरूपी कंस को अपने पुत्र देने की प्रतिज्ञा करके इस समय मैं तुम्हारे प्राणों को बचा लूं यही उचित है।

(फिर उसे समझाते हुए)- यदि हमारे पुत्र उत्पन्न होंगे, और तब तक यह कंस स्वयं नहीं मर जायेगा, तब क्या होगा, सम्भव है तब उल्टा ही हो और हमारा पुत्र ही इसे मार डाले। प्रिये! विधाता के विधान का पार पाना बड़ा कठिन है। मृत्यु सामने आकर भी टल जाती है, और टली हुई भी लौट आती है। हे प्रिये! जिस समय वन में आग लगती है, उस समय कौनसी लकड़ी जले और कौनसी न जले, दूर की जल जाय और पास की बच रहे।

देवकी : हे प्राणेश्वर, आपकी ये सब बातें रहस्यमय एवं सत्य प्रतीत होती जान पड़ी हैं।

वसुदेव : हां प्रिये! ये बातें भले ही रहस्य प्रतीत हों, परन्तु इनमें अदृष्ट ही एकमात्र कारण होता है और इसी प्रकार किस प्राणी का कौनसा शरीर बना रहेगा और किस हेतु से कौनसा शरीर नष्ट हो जायेगा, इस बात का पता लगा लेना बहुत ही कठिन कार्य है।

(फिर सहज होते हुए कंस से)-हे राजकुमार! आप विद्वान हैं, नीतिवान हैं, और आपकी कीर्ति से सभी प्रभावित हैं, और फिर आपको देवकी से तो किसी प्रकार का भय है ही नहीं न?

कंस : (कुछ नरम पड़ते हुए वसुदेव से)- मैं तुम्हारा आशय कुछ समझा नहीं वसुदेव।

वसुदेव : हे राजकुमार! आकाशवाणी के अनुसार आपका अनिष्ट देवकी के पुत्रों से होने की सम्भावना है, अत: आपको देवकी से किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका नहीं होनी चाहिए। और रही इसके पुत्रों की बात, अत: उनका जन्म होते ही मैं उन्हें लाकर आपको सौंप दूंगा।

कंस : (अलग हटकर कुछ सोचते हुए स्वगत)- हां, यह तो ठीक बात है वसुदेव की। मुझे देवकी से किसी भी प्रकार का भय

नहीं है, भय है तो केवल इसके पुत्रों से, और इसके पुत्रों का जन्म होते ही वसुदेव स्वयं उन्हें लाकर मुझे सौंप देगा।

(फिर कुछ सोचते हुए स्वगत)-पर क्या वसुदेव अपने वचन का पालन करेंगे।

(फिर अपने मन ही मन में)-हां, क्यों नहीं। वसुदेव वचन के पक्के हैं, अत: मुझे उन पर विश्वास कर ही लेना चाहिए।

(कंस मन ही मन ऐसा विचार करता है। उसकी भावनाओं को ताड़ते हुए वसुदेव देवकी की ओर देखकर आँखों ही आँखों में उसे आश्वस्त होने का संकेत करते हैं। प्रकाश उन पर आकर स्थिर हो जाता है, तथा मन्द-मन्द होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

नवां दृश्य

(कारागार का दृश्य। देवकी और वसुदेव कारागार में बन्द हैं। देवकी के मुखपर वेदना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है। कारागार के बाहर कंस बेताबी से देवकी के आठवें पुत्र के जन्म लेने की प्रतीक्षा कर रहा है। सहसा बच्चे के रोने की आवाज़ एवं दूत का दौड़ते हुए कंस के समक्ष उपस्थित होना।)

दूत : (उपस्थित होकर प्रान्नता से)- महाराज, महाराज!

कंस : (आतुरता से)- क्या समाचार लाये हो दूत, शीघ्र बताओ?

दूत : (उसी प्रवाह में)- महाराज, आपके भांजे, आपके काल, देवकी के आठवें पुत्र ने जन्म ले लिया है।

कंस : (प्रसन्न होकर अट्टहास करते हुए)- क्या? मेरा काल इस संसार में आ चुका है!

(टहलने लगता है। देत चापलूसी-भाव से उसके आगे-पीछे चलता है।)

कंस : (दोनों हाथों की मुठ्ठियां भींचकर ज़मीन पर पैर पटकते हुए प्रसन्नता से)- मैंने अब तक देवकी के सात पुत्रों को तो मौत के

घाट उतार दिया है। अब देखता हूं कि मेरा काल मुझे कैसे मारता है। (फिर दूत की ओर उन्मुख होकर)–

हे दूत! मैं उसे पत्थर की शिला पर पटककर मार दूंगा। कंस को मारने वाला देवकी का आठवां गर्भ.... हा हा हा हा .....

(अट्टहास करते हुए कारागार में प्रविष्ट होता है जिसके साथ ही भयावह गर्जना होने लगती है, जिससे सभी नगरवासी ड़र जाते हैं। देवकी अपने नवजात शिशु को छाती से लगाये रो रही है जिसे वसुदेव जी धीरज बंधा रहे हैं।)

कंस : (प्रविष्ट होकर देवकी से)– देवकी! ला दे दे मेरा काल मुझे।

दंवकी : (गिड़गिड़ते हुए कातर–भाव से)–मेरे हितैषी भाई। यह कन्या तो तुम्हारी पुत्रवधू के समान है, स्त्री जाति की है अत: तुम्हें इसकी हत्या कदापि नहीं करनी चाहिए।

कंस : (कुछा नरम होकर)– ला देवकी इसे दे दे मुझे। तुम मेरी छोटी बहिन हो, अत: तुम्हें मेरे आदेश की अवहेलना कदापि नहीं करनी चाहिए। मेरी प्रिय बहिन, मैं तुम्हारी केवल यही सन्तान और मांग रहा हूं (फिर उत्तेजित होकर)–

यही मेरा काल है देवकी! ला दे दे इसे मुझे, फिर देखता हूं मैं इसे हा हा हा हा.....(पुन: अट्टहास करता है। वसुदेव जी उसे समझाने का बहुत प्रयास करते हैं, परन्तु वह देवकी से बलपूर्वक कन्या को छीन लेता है)

देवकी : (रोते–गिड़गिड़ते हुए)– मेरे प्रिय भाई ! आपने दैववश मेरे बहुत से अग्नि–समान बालक मार ड़ाले। अब केवल यही एक कन्या बची है, इसे तो मुझे दे दो भैया।

(कंस के पैरों में गिर पड़ती है।)

कंस : (पीछे हटकर अट्टहास करते हुए वसुदेव जी से)– हा हा हा हा...। यह नवजात कन्या और मेरा काल। देखा वसुदेव आपने। आकाशवाणी हुई थी कि देवकी का आठवां गर्भ मुझे मार डालेगा, और देवकी कह रही है कि इसकी यह आठवीं सन्तान एक लड़की है।

(वसुदेव रहस्यमय ढंग से कंस की ओर देखते हैं।)

देवकी : (गिड़गिड़ाते हुए कंस से)– भैया मैं आपकी छोटी बहिन हूं। मेरे बहुत से बच्चे मर गये हैं (सुबुकती है) इसलिए मैं अत्यन्त दीन हूं। अत: हे मेरे समर्थ भाई मुझ अभागिनी को यह अन्तिम सन्तान अवश्य दे दो। (पुन: उसके पैरों में गिर पड़ती है।)

कंस : नहीं देवकी नहीं, यह मेरा काल है और इसे अब मैं तुम्हें नहीं दूंगा (इतना कहकर वह कन्या को शिला पर मारना चाहता है, परन्तु कन्या–रूपधारी भगवती योगमाया उसके हाथ से छूटकर आकाश मे चली जाती है।)

आकाशवाणी : अरे मूर्ख! मुझे मारने से तुझे क्या मिलेगा। तेरे पूर्व जन्म का शत्रु तो तुझे मारने के लिए किसी स्थान पर पैदा हो चुका है। अत: अब तू व्यर्थ में ही निर्दोष बालकों की हत्या करना छोड़ दे।

(यह कहकर भगवती योगमाया अन्तर्ध्यान हो गयी। कंस फटी–फटी आंखों से आकाश की ओर देखता रह जाता है , फिर सामान्य होकर ड़री हुई अवस्था में स्वगत)

कंस : हैं ! फिर वही आकाशवाणी। पहले भी आकाशवाणी हुई थी और उसी के अनुसार सब कुछ घटित हुआ।

(उसके चेहरे पर पश्चाताप के भाव आ जाते हैं)

कंस : (पश्चाताप में स्वगत) – आज आकाशवाणी ने कहा है कि मुझे मारने वाला तो और कहीं पैदा हो चुका है और मैंने (अपने दोनों हाथों को सिर में मारते हुए आवेग से) – अपने इन बेरहम हाथों से (हाथों को घृणा के भाव से देखता है)–निर्दोष बच्चों की हत्या की है, और वह भी अपनी प्रिय बहिन देवकी के पुत्रों की।

कंस की आत्मा की आवाज : हां कंस। तू बड़ा पापी है। तूने अपने काल के डर से निर्दोष बालकों की हत्या की है और वह भी अपनी प्राणों से प्रिय बहन देवकी के पुत्रों की।

(विलाप करता हुआ ज़मीन पर बैठकर बिलख–बिलखकर रो पड़ता है।)

पार्श्व में आवाज : हा हा हा हा। अरे पापी अब तू पश्चाताप कर रहा है। अरे उन आँसुओं को देख कंस, जो तेरी बहिन की आत्मा के रूदन के कारण तेरे इन पैरों पर गिरे थे और तूने उन्हें बेरहमी से रौंद डाला था पामर। अरे यह तेरी वही बहिन है जिसकेएक एक आँसू पर तू अपना ख़ून बहा दिया करता था।

(उठकर पागलों की भाँति इधर उधर चक्कर लगाता हुआ विलाप करता है)

कंस : (स्वगत)- मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। मैं पापी हूं , अपराधी हूं। (फिर देवकी और वसुदेव जी की ओर हाथ जोड़कर याचना के स्वर में) - मेरी प्यारी बहिन ओर बहनोई जी। मैं बड़ा पापी हूं। जैसे राक्षस अपने ही बच्चों का मार ड़ालता है वैसे ही मैंने आपके बहुत से बच्चे मार डाले।

(फिर देवकी के पास ज़मीन पर बैठते हुए)-

इस बात का मुझे बड़ा खेद है मुझे माफ कर दो मेरी बहिन।

(देवकी और वसुदेव उसके हृदय - परिवर्तन से अवाक् रह जाते हैं और एक दूसरे को देखते हैं।)

कंस : (उसी प्रकार पश्चाताप करते हुए)- मैं इतना दुष्ट हूं कि करूणा का तो मुझमें लेश भी नहीं है-फिर रोता हुआ - मैंने अपने भाई - बन्धु और हितैषियों तक का त्याग कर दिया, पता नहीं अब मुझे किस नर्क में जाना पडेगा। वास्तव में तो मैं ब्रह्मघाती के समान जीवित होने पर भी मुर्दा ही हूं।

(देवकी भावावेश में दौडकर कंस के गले से लगते हुए) - भईया।

(वसुदेव जी के मुख पर प्रसन्नता छा जाती है।)

कंस : (देवकी के सिर पर हाथ फेरते हुए।) - मेरी प्यारी बहिन केवल मनुष्य ही नहीं विधाता भी झूठ बोलते हैं। उसी पर विश्वास करते हुए मैंने अपनी बहिन के बच्चे मार डाले। ओह। मैं कितना पापी हूं - (रोने लगता है।)

वसुदेव : (उसे सान्त्वना देते हुए) -शांत हों राजकुमार शांत हों।

कंस : (वसुदेव जी से) - बहनोई जी तुम दोनों महात्मा हो। अपने पुत्रों के लिए शोक मत करो सभी प्राणी प्रारब्ध के अधीन होते हैं। इसी से वे सदा सर्वदा एक साथ नहीं रह सकते।

(फिर वसुदेव जी की ओर उन्मुख होकर शून्य में देखते हुए) - जैसे मिट्टी के बने हुए पदार्थ बनते और बिगड़ते रहते हैं , परन्तु मिट्टी में कोई अदल- बदल नहीं होती वैसे ही शरीर का तो बनना और बिगड़ना होता ही रहता है परन्तु आत्मा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(फिर स्थान बदलते हुए)- जो लोग इस तत्व को नहीं जानते वो इस अनात्मा शरीर को ही आत्मा मान बैठते हैं, यही उल्टी बुद्धि अथवा अज्ञान है इसी कारण जन्म और मृत्यु होते हैं और जब तक यह अज्ञान नहीं मिटता तब तक सुख-दु:ख स्वरूपी संसार से छुटकारा नहीं मिलता।

देवकी : (उसे सान्त्वना देते हुए) - मेरे प्रिय भाई। जो कुछ हुआ वह प्रारब्धवश हुआ परन्तु भईया मेरी सभी संतानें प्रारब्ध का शिकार हो गई। (रोती है)

कंस : मेरी प्यारी बहिन, यद्यपि मैंने तुम्हारे पुत्रों को मार ड़ाला है, फिर भी तुम उनके लिए शोक मत करो , क्योंकि सभी प्राणियों को विवश होकर अपने कर्मों का फल भोगना पडता है। अपने स्वरूप को न जानने के कारण जीव जब तक यह मानता रहता है कि मैं मारने वाला हूं या मारा जाता हूं तब तक शरीर के जन्म और मृत्यु का अभिमान करने वाला वह अज्ञानी बध्य और बाधक भाव को प्राप्त होता है , अर्थात् वह दूसरों को दु:ख देता है और स्वयं भी दु:ख भोगता है।

(फिर देवकी के आगे हाथ जोडकर पैरों पर गिरता हुआ) - मेरी यह दुष्टता तुम दोनों क्षमा करो क्योंकि तुम दोनों ही साधु स्वभाव के ओर दीनों के रक्षक हो।

वसुदेव : (उसे उठाते हुए)- उठो राजकुमार उठो। तुमने अपने दुष्कृत्य को स्वीकारते हुए इस बात को सिद्ध कर दिया कि प्रत्येक

मानव में संवेदन हृदय होता है , अत: ऐसे में पीड़ित को क्षमा कर देना धर्म और नीति के सम्मत होता है।

देवकी : (भाव- विह्वल होकर)-भईया।

(उसे लिपटकर सिसक सिसककर रो पड़ती है)।

कंस : (उनके बंधन खोलकर उन्हें मुक्त करते हुए)- जाओ बहिन अपने ससुराल जाओ। मैं तुम्हें सदा सुखी देखना चाहता हूं।

(वसुदेव देवकी को लेकर प्रस्थान करते हैं और कंस कातर भाव से दोनों को जाते हुए देखता रह जाता है। प्रकाश मंद मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

बदले का अभिशाप

प्रथम दृश्य

(आज एक फ़िल्म निर्माता ने शहर के मध्य में स्थित 'रंगमहल' के मुख्य सभागृह में अपनी नई फ़िल्म के लिए कलाकार चयन करने हेतु लोगों को बुलाया है। शहर के मध्य में स्थित यह रंगमंच कलाकारों के दिल की धड़कन माना जाता है। यहाँ पर आयोजित कार्यक्रमों में सामान्यत: आयोजकों द्वारा दर्शकों को मिन्नतें कर करके बुलाया जाता है या फिर उन्हें किसी युक्ति से घेरकर लाया जाता है। इतना सब कुछ करने के उपरान्त भी दर्शकों का आँकड़ा बड़ी मुश्किल से पचास पार कर पाता है।

परन्तु आज यहाँ फ़िल्म का ऑडीशन होने के कारण काफी भीड़-भाड़ है और मुख्य सभागृह में मंचित किये जा रहे नाटक 'अश्वत्थामा' के लिये सभी सीटें फुल हैं। इन दर्शकों में ज्यादातर वे कलाकार हैं जो ऑडीशन से पूर्व का समय काटने के लिए यहाँ पर बेमन से बैठे हैं।

इन दर्शकों में श्रीमती शीला भी बैठी हैं जो एक संभ्रान्त परिवार की आधुनिक विचारों वाली नारी हैं। इन्होंने कई हिन्दी फ़िल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएं निभायी हैं और मुख्य भूमिका प्राप्त करने हेतु किये गये भरसक प्रयासों के बाद भी सफल नहीं हो पायी हैं। इसका कारण था उनके द्वारा अपने निर्देशकों के कुछ अस्पष्ट प्रस्तावों को न समझ पाना। इस क्षेत्र में पैर जमाने हेतु वे केवल इतना ही कर पायी कि अपना नाम शीला से बदलकर शैला रख लिया। परन्तु फिर भी वे अपनी सहेलियों रोमा एवं आभा की भाँति सफल न हो पायी शायद इसका कारण उन्हें तब समझ में आया जब उनकी उम्र ढल चुकी थी। इस बात के पश्चाताप के स्पष्ट चिन्ह उनके चेहरे पर साफ दिखलायी दे रहे हैं। आज ऑडीशन में वे अपनी बेटी कणिका को शायद इसी पश्चाताप के प्रायश्चित हेतु अपने साथ लायी हैं।)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(मंच पर सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार : (दर्शकों से)—नमस्कार। रसिक दर्शकों नमस्कार। ध्यान से देखो, आपके बराबर में कोई अश्वत्थामी तो नहीं बैठी हुई। चौंक गये न मेरी बात पर। आप में से कुछ लोग कहेंगे कि हमने अश्वत्थामा का नाम तो सुना है परन्तु यह अश्वत्थामी नाम हमारे लिए नया है। सही कहा आपने। पर भाई आज नये का ही तो बोलबाला है और आज हम आपको इस नये नाम 'अश्वत्थामी' के बारे में बतायेंगे, अश्वत्थामा की बहिन अश्वत्थामी। परन्तु पहले अश्वत्थामा के बारे में तो ठीक से जान लें।

आप में से ही किसी ने हमें बताया कि उन्होंने अश्वत्थामा को देखा है। जब अश्वत्थामा को देखना संभव हो सकता है तो इस युग में किसी की बेटी, किसी की बहिन आदि के रूप में अश्वत्थामी का होना भी तो संभव है। नारद, महर्षि व्यास, बलि, परशुराम, हनुमान, विभीषण और अश्वत्थामा। बाकी के छह को तो कभी किसी ने नहीं देखा, परन्तु बेचारा अश्वत्थामा और अश्वत्थामी? सीधे सादे और भोले भाले हैं। स्वभाव से कोमल हैं। प्रचण्ड आध्यात्म शक्ति तथा अद्वितीय अस्त्र शक्ति प्राप्त ये दोनों हमारे जैसा ही स्त्री-पुरुष हैं। हमारी ही तरह वचन, आज्ञापालन और अभिशाप में बँधे हुए हैं ये दोनों। तो चलो पहले आपको मिलाते हैं अश्वत्थामा से और उसके पश्चात् आधुनिक पात्र अश्वत्थामी से।

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(द्रोणाचार्य के आवास का दृश्य। द्रोणाचार्य अभी-अभी पूजा करके निवृत्त हुए हैं। पास ही में उनकी पत्नी कृपी

वाटिका को निहार रही है। उनका पुत्र अश्वत्थामा शायद घर से बाहर जाने की तैयारी में है।)

अश्वत्थामा : पिताश्री क्षमा चाहता हूं, परन्तु यदि आपकी आज्ञा हो तो आज शाम मैं और दुर्योधन जंगल में जाना चाहते हैं।

द्रोणाचार्य : संध्याकाल के हवन की तैयारी का जिम्मा आज तुम पर है पुत्रवर अत: तुम दोनों मेरी मदद के लिए यहीं पर रुको। अर्जुन भी हवन की समिधा लेकर आता ही होगा। चलो हम बाकी की तैयारी करते हैं।

अश्वत्थामा : जो आज्ञा गुरुदेव।

(अश्वत्थामा दो कदम पीछे जाता है। द्रोणाचार्य तेजी से चले जाते हैं। अश्वत्थामा स्तब्ध है। पार्श्व से आवाज़ गूंजती है।)

आवाज़ : द्रोणाचार्य चाहते थे, अश्वत्थामा श्रेष्ठ धनुर्धारी बने। अपनी पत्नी कृपी से वे हमेशा इसी बात का ज़िक्र किया करते थे

(मंच पर एक क्षण के लिए अँधकार होता है और दूसरे ही क्षण संध्याकाल में द्रोणाचार्य एवं कृपी प्रकट होते हैं।)

द्रोणाचार्य : कृपी, जब भी मैं अपने बेटे की ओर देखता हूं तो मुझे बड़ी चिन्ता होती है।

कृपी : क्यों? हमारा बेटा श्रेष्ठ धनुर्धारी बने यही तो आपकी चिन्ता है? आपका पराक्रम, शिक्षा-दीक्षा आदि को देखते-देखते वह अवश्य ऐसा ही बनेगा। और आपकी महात्वाकांक्षा पूरी होगी। क्यों होगी न?

द्रोणाचार्य : कृपी, मेरी महात्वाकांक्षा ही मेरी चिन्ता बन गई है जो पहले केवल विचारों तक ही सीमित थी। पहले हम अपने आश्रम में रहा करते थे। परन्तु अब हम यह नहीं भूल सकते कि आज हम भीष्म पितामह के बनवाये आश्रम में रहते हैं। इस आश्रम में रहकर मैं राजवंश के सभी राजकुमारों को धनुर्विद्या एवं अस्त्र विद्या सिखाने के कर्तव्य से बँधा हुआ हूं। और मेरे इस कार्य में मैं अश्वत्थामा की ओर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दे पा रहा। यही मेरी चिन्ता है।

कृपी : परन्तु हमारे घर में श्रेष्ठ धनुर्धारी की .....

द्रोणाचार्य : हाँ, उसे श्रेष्ठ धनुर्विद्या तो ग्रहण करनी ही है। मेरा जो अपमान किया था द्रुपुद ने उसका प्रतिशोध तो मुझे लेना ही है। बस, अब मेरा एक ही लक्ष्य है-प्रतिशोध, द्रपुद से प्रतिशोध। उसने मेरी भावनाओं के साथ ही साथ मेरी धनुर्विद्या को भी ललकारा है। अब ब्राह्म मुहूर्त से लेकर देर संध्या तक मैं अश्वत्थामा से अनेक अस्त्रों और धनुर्विद्या का अभ्यास करा लूंगा। इतना ही नहीं, अँधेरे में लक्ष्य-बेधन की कला भी उसे आत्मसात करनी ही होगी। उसकी ग्रहण शक्ति बहुत अच्छी है।

कृपी : स्वामी, सुनो, आपके अपमान के लिए हमारे लाडले आशु का इस्तेमाल करना क्या ठीक होगा? (अश्वत्थामा का प्रवेश)

अश्वत्थामा : प्रणाम, तात्।

द्रोणाचार्य : हवन का समय हो रहा है। चलो तैयारी करते हैं। (आचार्य तेजी से निकल जाते हैं)

अश्वत्थामा : माते, तात आजकल ऐसा क्यों करते हैं?

कृपी : प्यार के कारण। बेटा, तुम्हारे प्यार के ही कारण। जाने भी दो, बोलो, तुम कहाँ से आ रहे हो?

अश्वत्थामा : दुर्योधन के साथ घूम रहा था, माते।

कृपी : क्या कहता है, तुम्हारा सखा?

अश्वत्थामा : आज मैं राजमहल में दुर्योधन के साथ चर्चा कर रहा था।

कृपी : तो?

अश्वत्थामा : माते, आज उसने सभी के साथ मेरा परिचय करवाया। उसकी बातचीत में एक आत्मविश्वास था। पहले उसने खुद का परिचय दिया। कहता था—वैसे तो मुझे गदा युद्ध में रूचि है धनुर्विद्या में नहीं। परन्तु तुम्हारे रूप में मुझे अच्छा धनुर्धारी मित्र मिला है। मेरी दृष्टि से यह शुभ-शकुन है। बाद में उसने अपने सारे भाइयों की पहचान करा दी। यह दुष्यासन

मेरा दाहिना हाथ है। यह दुर्मुख ...। और जोर-जोर से हँसते हुए कहने लगा, 'इस उम्र में खुद को धर्मराज कहलाने वाला यह युधिष्ठिर है।' उसकी तरफ देखकर जोर से हँसते हुए कहने लगा, 'पितामह के प्यार के कारण उन्मत्त बने, पिताश्री की कृपा पर जीने वाले ये पाण्डव' (कुछ रुककर) माते, उसकी नीली आँखों में मैंने एक अनोखी चमक देखी, वही चमक जो तात की आँखों में दिखलायी देती है, द्रपुद का नाम सुनते ही। वहीं मुझे कौरव-पाण्डवों की सही पहचान हुई। मैंने उनकी पहचान महसूस की माते।

कृपी : पुत्र, राजवंश के इन राजकुमारों से जरा संभलकर ही रहो। तुम ज्ञानी हो। उम्र के हिसाब से तुम्हारी ग्रहण-शक्ति तीव्र है। तुम्हारे माथे का तेजस्वी मणि, तुम्हारे भविष्य को रोशन करेगा। कश्यप ऋषि ने तुम्हारे जन्म के समय यही कहा था।

अश्वत्थामा : माते, कभी-कभी मैं समझ ही नहीं पाता कि मैं कौन हूँ? मेरी बुद्धि कभी छोटे बालक की तरह भटकती है। आज भी ऐसा ही हुआ। आँखों के सामने सुनहरा सपना ...। दुर्योधन जैसा राजपुत्र मेरा सखा, मेरा दोस्त।

(अश्वत्थामा झट से चला जाता है। कृपी 2-3 पग आगे बढ़ती है, उतने में द्रोणाचार्य का प्रवेश।)

द्रोणाचार्य : क्या कहता था हमारा पुत्र?

कृपी : कुछ नहीं। ऐसे ही हमेशा की तरह बातें।

द्रोणाचार्य : तुम्हारे चेहरे से तो ऐसा नहीं लगता। निश्चित ही वह किसी अलग विषय पर बोल रहा था।

कृपी : हाँ, आज उसने वह देखा, जो उसे देखना नहीं चाहिए था।

द्रोणाचार्य : क्या देखा उसने? जरा हमें भी तो जानने दो।

कृपी : एक सपना, सुनहरा सपना? और ... एक वाचाल नग्न यथार्थ।

द्रोणाचार्य : अर्थात् ...। मेरे तो कुछ भी समझ में नहीं आया।

कृपी : मैं सोचती थी, तुम नहीं समझ पाओगे। सपना अर्थात् उसे

प्राप्त दोस्त-युवराज दुर्योधन और एक यथार्थ अर्थात् ...। (रुकती है।)

द्रोणाचार्य : बोलिए। हमें भी तो पता चले, हमारा पुत्र क्या पराक्रम कर रहा है।

कृपी : आपके लिए वह निश्चित पराक्रमी है। पर मेरे लिए? नहीं ... मुझे डर है कि पिता की महत्वाकांक्षा बेटे के भविष्य को नष्ट कर देगी।

द्रोणाचार्य : क्या कहता था? स्पष्ट बोलो।

कृपी : आपकी आँखों में जो चमक, जो अंगार दिखाई देता है, उसका अर्थ अश्वत्थामा ने लगा लिया है। आपकी आँख रूपी पोथी में उसने सब कुछ पढ़ लिया है। आज दुर्योधन ने राजकुमारों की पहचान कराते समय कहा ...

द्रोणाचार्य : क्या कहा दुर्योधन ने?

कृपी : धर्मराज की तरफ निर्देश कर दुर्योधन ने कहा 'मेरे पिताश्री की कृपा पर जीने वाले ये राजपुत्र! कितने दुष्ट विचार हैं दुर्योधन के। युधिष्ठिर और अर्जुन क्या इतने बुरे हैं? मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

द्रोणाचार्य : नहीं, ऐसा नहीं है। युधिष्ठिर और अर्जुन मेरे भी प्रिय शिष्य हैं। पर ... पर राजवंश के बारे में हमें अधिक न सोचना ही ठीक है।

(धीरे-धीरे अंधेरा, दूर से शंखध्वनि सुनाई देती है। अलग-अलग प्रकाश स्रोत सभी दिशाओं से मंच पर आते हैं। सारा वातावरण धीर-गंभीर है, युद्ध सदृश है। देर तक कोलाहल के बाद शान्तता फैलती है।

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(अत्यन्त थका-हारा अश्वत्थामा मंच पर प्रवेश करता है।)

अश्वत्थामा : प्रसंग घटित होते रहे। समय बीतता रहा। मेरे ही कहने से दुर्योधन ने कर्ण को सेनापति पद दिया। अब तात नहीं हैं।

पिताश्री की मृत्यु मैं कभी नहीं भूल सकता। पर ... प्रतिशोध की भावना, द्वेष की परम्परा कायम रही तो इस दुनिया में कुछ भी अच्छा नहीं होगा। सभी को बदलना जरूरी है। पिताश्री ने द्विज-वृत्ति छोड़ क्षात्रवृत्ति धारण की, शायद इसीलिए ऐसा हुआ। तात को तो ब्रह्मलोक प्राप्त हुआ। उनकी आत्मा को शान्ति मिले इसलिए कर्त्तव्य भावना से मैं युद्ध में शामिल हुआ। और ... फिर मुझमें प्रतिशोध की भावना बढ़ती ही गयी। अब उससे मुक्ति नहीं। मैंने मित्र प्रेम के खातिर नारायण अस्त्र का प्रयोग किया। कभी भी अनुचित न बोलने वाले अर्जुन ने मुझसे कहा, 'हे द्रोणपुत्र, गुरुपुत्र होने के नाते ... मुझे तुम पर नाज था। परन्तु आज नारायण अस्त्र का प्रयोग कर तुमने मानवता खो दी है। तू क्रूर है, पत्थर दिल है।' मुझे खुद पर ही शर्म महसूस हुई। एक दिन युद्ध में सब कुछ खत्म होने पर मैं वन की तरफ देखते खड़ा था। अचानक कौओं की कर्णकटु काँव-काँव से विचलित हो, रथपर आरूढ़ होकर मैं पाण्डवों के शिविर की तरफ तीव्र गति से निकल पड़ा। रास्ते में एक महाकाय शक्ति मेरा रास्ता रोके खड़ी थी। क्रोधित होकर मैंने उस पर कई अस्त्र-शस्त्र चलाए, तो कोई असर नहीं हुआ। कौन थी वह महाकाव्य शक्ति? भूत पिशाच थी? या देवता थी? क्षण भर ऐसा महसूस हुआ, शिव-पार्वती ही मुझे आशीर्वाद देने आए हैं। मन में उनका स्मरण कर मैंने मेरी मनोवांछा पूर्ण करने का वर माँगा। प्रसन्नता से उन्होंने कहा—तथास्तु। सन्तुष्ट होकर मैं पाण्डवों के शिविर की ओर चल पड़ा। मुख्य प्रवेश द्वार से मैंने अन्दर प्रवेश किया। सभी निद्रा में लीन थे। सामने ही धृष्टद्युम्न सोया था। उसके बाल खींचकर, प्रहार से मैंने उसे जगाया। उसके समझ में आने से पहले ही मैंने उसका सिर जमीन पर पटककर उसे मार डाला। पाँचों पाण्डव ही सोए हैं। इस धोखे से मैंने प्रतिविंध्य, सुतसोम, ज्ञातानिक, श्रुतकर्मा, श्रुतकर्मी इन द्रौपदी पुत्रों को भी खत्म कर डाला। सामने आए शिखण्डी के आक्रमण का प्रतिकार कर एक ही क्षण में उसके भी दो टुकड़े कर डाले। अब! अब मेरा लक्ष्य था अर्जुन। अर्जुन से युद्ध करने

मैं आगे बढ़ा। सामने से तेजी से आने वाले अर्जुन के रथ के सारथी, श्रीकृष्ण ने मुझे दूर ही से आवाज दी। 'अश्वत्थामा रुको।' यहाँ मैं धोखा खा गया। सारे पाण्डवों का विनाश हो, इस इच्छा से मैंने मंत्र का स्मरण कर 'ब्रह्मशिरस्' अस्त्र चलाया। दूसरे ही क्षण मुझे मेरी गलती का अहसास हुआ। अस्त्र हाथ से छूट चुका था। क्षण भर में ही उसका बुरा परिणाम नजर आने लगा। सर्वत्र अग्नि का साम्राज्य फैलने लगा। इस अस्त्र को शान्त करने के लिए अर्जुन को 'ब्रह्मास्त्र' चलाना पड़ा। अब मेरे सामने मेरी गलतियाँ पहाड़ बनकर खड़ी थी। अर्जुन से युद्ध करते-करते मैं थक गया। इतने में भीमसेन मुझ पर आक्रमण करने को तैयार था पर श्रीकृष्ण ने उसे रोक लिया। कृष्ण ने अपना चक्र मुझ पर छोड़ा। बचपन से प्रिय इस शस्त्र के सामने मैंने सिर झुकाया, और उस चक्र से माथे का मणि कट गया।

'ब्रह्मशिरस्' और 'ब्रह्मास्त्र' के प्रयोग से नारद मुनि और महर्षि व्यास प्रकट हुए। श्रीकृष्ण की लीला देखने के बाद व्यास मुनि गंगा मैया के पात्र में लुप्त हो गए। अपने शरीर की जलन और माथे के जख्म को शान्त करने के लिए मैं भी गंगा मैया के गोद में प्रविष्ट हुआ। सारी दुनिया के नजरों में मैं शायद शिव का अंश था पर सचमुच मैं खुद कौन था? क्या था? यही प्रश्न मेरे मन में छाया था।

(अश्वत्थामा स्तब्ध रहता है। थोड़ी देर बाद मानो होश में आकर दर्शकों से बात करने का प्रयास करता है) तात्। शरीर की जलन को जैसे-तैसे शान्त करने के लिए मुझे थोड़ा तेल और हल्दी मिलेगी? माते। मिलेगी थोड़ी हल्दी और तेल। (इस तरह मंच पर घूमते हुए वह बार-बार हल्दी-तेल माँगते-माँगते धीरे-धीरे शान्त होता है।)

आकाशवाणी : अश्वत्थामा जैसे ज्ञानी, तेजस्वी, तपस्वी, चतुरस्त्र व्यक्तिमत्व को भी प्रतिशोध की भावना ने खण्डित कर दिया, भंगित कर दिया।

अन्धकार दृश्य समाप्त

पाँचवां दृश्य

(शैला अपने घर के ड्राइंग रूम में अपनी बेटी कणिका के साथ नाश्ता कर रही है। वे कुछ सोचती जा रही हैं। कणिका कॉफी का घूंट भरती हुई अपनी माँ की मनोदशा का अनुमान लगाने की चेष्टा कर रही है।)

कणिका : (शैला से)—क्या सोच रही हो मम्मी?

शैला : वही द्रोणाचार्य की पीड़ा। द्रुपद द्वारा किये गये उसके अपमान के बारे में।

कणिका : (चुहुल के अंदाज में)—मम्मी, ये नाश्ते की टेबिल पर द्रोणाचार्य जी कहाँ पर आ गए।

शैला : मैं आज के नाटक में अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य के अपमान के बारे में सोच रही हूं बेटी।

कणिका : क्या मम्मी आप भी। गये द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा के दिन। (फिर मम्मी के बालों की लट को ठीक करते हुए)—छोडो भी।

शैला : नहीं बेटी। द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा आज भी प्रासंगिक हैं।

कणिका : मैं समझी नहीं।

शैला : द्रुपद द्वारा किये गये द्रोणाचार्य के अपमान में मैं अपना अपमान महसूस कर रही हूँ।

कणिका : कैसी पहेलियां बुझा रही हो। साफ-साफ कहो मम्मी। किसने किया आपका अपमान?

शैला : बेटी हमारे यहाँ नारी जाति को सदा ही अपमान सहना पड़ा है। इस फ़िल्म लाईन में निर्देशकों द्वारा मुझे भी तो एक प्रकार से अपमानित ही तो किया गया है।

कणिका : कैसे?

शैला : मेरी सहेलियां मोना और आभा क्या मुझसे अधिक सुन्दर और योग्य हैं जिन्हें कई फ़िल्मों में हीरोईन की भूमिकाएं मिल गई ? (फिर कणिका का हाथ अपने हाथ में लेकर)—जानना चाहोगी क्यों?

(गंभीरता से)—तो सुनो, एक नारी के अपमान की व्यथा। आज पुरुष नारी को वासना की दृष्टि से देखता है। नारी का गुण अवगुण, ये सब किताबी बातें रह गई हैं। असली जीवन में वही नारी सफल होती है जो अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए इन लालची पुरुषों की हर शर्त को स्वीकार कर ले।

कणिका : नहीं मम्मी। मैं ऐसा नहीं मानती। हमारे देश में नारी को सदा ही सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। हमारा देश देवताओं का देश है जिसके बारे में कहा गया है कि- 'यत्र नारीस्य पूजयन्ते रमंते तत्र देवता'।

शैला : (कुटिल मुस्कान के साथ)—कौनसे समय की बातें कर रही हो तुम? सती, सावित्री, सीता और अनसूइया के मायने बदल गये हैं आज हमारे देश में। आज पुरुष अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु परिभाषाएं बदलने पर तुला हुआ है।

(कणिका अपनी माँ की बात सुनकर हतप्रभ हो सिर्फ देखती रह जाती है।)

शैला : (उसी प्रवाह में)—कुछ दिन पूर्व तुम्हें मैंने एक मराठी नाटक दिया था 'मला उत्तर हवय', पढ़ा उसे?

कणिका : हाँ मम्मी। सुरेश खरे का यह नाटक आज की नारी की व्यथा को दर्शाता है।

शैला : मैं मूर्ख थी। मैंने मुख्य भूमिका पाने हेतु अपने आपको निर्देशकों के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया। सती, सावित्री, सीता, अनसूइया के आलोक में दिग्भ्रमित अपनी सहेलियों से पीछे कर लिया अपने आपको। 'मला उत्तर हवय'

के उस पुरुष की तरह क्यों नहीं धकेल दिया अपने स्त्रीत्व को जिससे खुश होकर निर्देशक मेरा भी प्रोमोशन कर देते।

कणिका : मम्मी जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ। यह फ़िल्म लाईन हम जैसों के लिए उपयुक्त नहीं है।

शैला : नहीं बेटी नहीं। मेरी अब तक की तपस्या यों ही व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। अरे मैं सफल नहीं हुई तो क्या। तुम तो सुन्दर हो, समझदार हो। मेरे अधूरे सपनों को अब तुम पूरा करोगी।

कणिका : मैं समझी नहीं मम्मी।

शैला : बेटी, मेरी जगह अब तुम फ़िल्मों में काम करोगी। (फिर शून्य में देखते हुए)—देखती हूँ कैसे कोई निर्देशक तुम्हें आगे बढ़ने से रोक पाता है। और वे मेरी सहेलियाँ... फिस्स हो जायेंगी तुम्हारे सामने।

कणिका : लेकिन मम्मी मुझे तो असलम के साथ पेंटिंग्स का बिजनिस शुरू करना है। जितना वह मेरी पेंटिंग्स की कद्र करता है उतना ही मुझे चाहता भी है।

शैला : बेटी, हम हिन्दू हैं और वह मुसलमान। उससे हमारा नाता कैसे हो सकता है। मेरा कहना मानो और उसके सपने देखना छोड़ दो। रही बात कला की। तो सुनो बेटी, कला तो कला ही होती है चाहे तुम चित्रकला में नाम करो या अभिनय कला में एक ही बात है। और फ़िल्मों में काम करके तुम उन निर्देशकों से मेरे अपमान का बदला भी ले सकोगी जिन्होंने अच्छी भूमिका देने हेतु मेरे सामने नाज़ायज शर्तें रखी थी।

कणिका : मम्मी...

शैला : (उसकी बात बीच में काटते हुए)—बेटी जब तुम चोटी की हीरोईन बन जाओगी तो तुम्हारे पास यश होगा, दौलत

होगी और एक तो क्या असलम जैसे सैंकड़ों नौजवान तुम्हारे कदमों में होंगे।

कणिका : पर मम्मी हम दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। और रही हमारे धर्मों के अलग होने की बात, तो आप यह क्यों भूल गई कि मानवता सबसे बड़ा धर्म है।

शैला : पागल न बनो लड़की। ये सब क़िताबी बातें हैं। जब शादी के बाद तुम असलम के घर पहुँचोगी तो इस्लाम के सख़्त कायदे-क़ानून और बुरके के भीतर तुम्हारी यह कला धरी की धरी रह जायेगी। (फिर नरमी के साथ उसे दुलारते हुए)—मेरा कहना मानो बेटी। फ़िल्म लाईन में रूपया-पैसा इज्ज़त-शोहरत सब कुछ है। आगे तुम्हारी मर्जी।

चलो अब आराम करो कल चक्रवर्ती साहब ने तुम्हें अपनी नई फ़िल्म के ऑडीशन के लिए बुलाया है।

(कणिका कपड़े बदलने अन्दर चली जाती है।)

शैला : (स्वगत)—अब लूंगी मैं अपने अपमान का बदला। मेरी बेटी बनेगी द्रोणाचार्य की अश्वत्थामी। और मैं द्रुपद के मुँह पर मारूंगी करारा तमाचा। हा हा हा हा (हँसती है। सहसा कालबेल बजती है।)

शैला : (ऊंची आवाज़ में)—कौन?

असलम : (प्रवेश करते हुए)—नमस्ते आण्टी। कणिका नहीं दिखलायी दे रही!

शैला : वह अब तुम्हारे साथ काम नहीं करना चाहती।

असलम : (आश्चर्य से)—लेकिन आण्टी कल तो हमारे शो-रूम का उद्घाटन होने वाला है। कणिका की एग्जीबिशन के कार्ड तक बाँट दिये गये हैं।

शैला : देखो असलम अब कणिका का विवाह होने वाला है और लड़के वालों ने उसे कोई भी काम करने के लिये मना कर दिया है।

असलम : पर आण्टी, वह तो मुझे चाहती है। हम दोनों शादी करना चाहते हैं। उसके साथ ही तो मैं अपना शो-रूम चला पाऊंगा।

शैला : मैंने कहा न कि वह अब तुमसे किसी प्रकार का वास्ता नहीं रखना चाहती।

असलम : आण्टी यही बात मैं एक बार कणिका के मुँह से सुनना चाहता हूँ। अगर वह कह देगी तो मैं उसे हमेशा-हमेशा के लिए भूल जाऊंगा।

(सहसा कणिका का प्रवेश।)

असलम : कणिका क्या कह रही हैं आण्टी? मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। (उसे एक कार्ड देते हुए)— ये लो मुख्य अतिथि का निमंत्रण पत्र। कल शो-रूम का उद्घाटन होने वाला है। बाकी सब काम तो हो गये परन्तु मुख्य अतिथि बहुत बड़े कलाकार हैं उन्हें तुम स्वयं ही देकर आना।

कणिका : असलम तुम इसे वापस ले जाओ। अब हमारी राहें अलग-अलग हैं।

असलम : क्या मतलब?

कणिका : नाउ यू आर ए बिजनिसमैन एण्ड आय एम ए हिन्दी फ़िल्म एक्ट्रेस। हम दोनों के धर्म अलग-अलग हैं। असलम, मुझे मेरी मम्मी की आकांक्षाओं को पूरा करना है और तुम अपने शोरूम को डवलप करो किसी और चित्रकार को लेकर।

असलम : मूर्ख हो तुम। मैं जा रहा हूँ, फिर कभी नहीं आऊंगा तुम्हारे पास।

(असलम बाहर चला जाता है। कणिका धम्म से सोफे पर गिर पड़ती है।)

शैला : बेटी तुम थक गई हो आराम करो। मैं चक्रवर्ती अंकल के घर होकर आ रही हूं। कल के ऑडीशन से पूर्व ही कुछ ऐसी बातें करने जा रही हूँ जो मैंने अपने ऑडीशन से पहले न की थी। (घर से बाहर निकल जाती है।)

कणिका : (स्वगत)—यह मैंने क्या किया। अपने असलम को खो दिया। (फिर सहज होते हुए)—पर अपनी मम्मी के अपमान का बदला तो ले सकूंगी न अब।

(सहसा टेलीफोन की घण्टी बजती है। कणिका फोन उठाती है।)—हैलो। हाँ हाँ मैं कणिका बोल रही हूँ। जी हाँ शैला जी की बेटी कणिका। हाँ हाँ, क्या! क्या कहते हैं आप! क्या मम्मी गाड़ी के नीचे आ गई? ऑन दा स्पॉट? (फोन हाथ से छूट जाता है।) नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

(होश खोकर बड़बड़ाती है)—मम्मी क्यों गई आप इतनी जल्दी। अभी मुझे फ़िल्म में रोल कहाँ मिला। मैं नामी हीरोईन कहाँ बनी।(रुक रुककर)—बिजनिसमैन असलम? वह भी मुझे छोड़कर चला गया। मम्मी बोलो। आपके और असलम के सिवा कौन था इस दुनिया में मेरा? (रोती हुई बेहोश सी हो जाती है। कुछ देर बाद होश में आने पर पुनः उसी प्रवाह में)—

मम्मी गई। फ़िल्म गई। और असलम? वह भी गया। मेरी चित्रकला भी अपने ही खूबसूरत रंगों में डूब गई। (मंच पर आगे आकर दर्शकों से)—

आप में से कोई मायबाप मुझे फ़िल्म की हीरोईन बना सकता है? बोलो बना सकते हो मुझे हीरोईन? आप भाईसाब! आप? कोई नहीं।

(बड़बड़ती हुई चक्कर लगाती है। सहसा मंच पर अश्वत्थामा का प्रवेश। इधर अश्वत्थामी फ़िल्म के लिए

रोल मांगती है उधर अश्वत्थामा हल्दी और तेल मांगता है। थोड़ी देर बाद दोनों एक दूसरे को सामने पाकर स्तब्ध रह जाते हैं।)

कणिका : (अश्वत्थामा से)—तुम कौन?

अश्वत्थामा : मैं द्रोणाचार्य का बेनसीब पुत्र अश्वत्थामा । और तुम?

कणिका : मैं आज के द्रोणाचार्य की प्रतीक शैला की बेनसीब पुत्री कणिका के रूप में अश्वत्थामी।

अश्वत्थामा : बहिन!

कणिका : भाई!

(दोनों आपस में एक दूसरे के गले से लग जाते हैं। उन दोनों पर गिरता हुआ प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान

15 जुलाई 1999 को रवीन्द्र मंच जयपुर पर की गई प्रस्तुति में कल्पना निर्देशन :- दिलीप भट्ट संगीत निर्देशन-गोपीकृष्ण भट्ट, तमाशा कलाकार

पात्र

उस्ताद/सूत्रधार	:	दिलीप भट्ट
कजरी	:	अनिता विष्ट
जमूरा	:	हेमू चौधरी
पृथ्वीराज चौहान	:	विजय मिश्रा 'दानिश'
संयोगिता	:	सुनीता तिवारी
शाहबुद्दीन गौरी	:	सिकन्दर अब्बास
जयचन्द	:	अमित सक्सेना
कवि चन्द/चेतानन्द	:	धमेन्द्र शर्मा/राकेश सैन
जोधमल	:	आशीष जैन
पन्ना/धाय माँ	:	श्रीमती ऊषा नागर
कमास/धर्मायण, सैनिक	:	वैभव माथुर
ताहर	:	सुनील अग्रवाल
दूत	:	आलोक कौशिक
रामसिंह	:	राजेन्द्र कुमार शर्मा
मन्त्री/सेनापति	:	कुमार सन्तोष
राजभट्ट	:	आलोक कौशिक
नख्तर खान	:	अलताफ/कैलाश विजयवर्गीय
चोबदार/दरबारी	:	प्रेमसिंह कण्डेरा, नवनीत शर्मा

तबला	:	गुलाम गौस, त्रिपुरारी सक्सेना, अभिषेक शर्मा
हारमोनियम	:	नसीर खाँ
कोरस	:	लोकेश साहू, अमर किशोर शर्मा, जफ़र खान, सुनील

सैन, अशोक कुमार छापालिया, नितिन गोस्वामी, यदुकुल भूषण, काजल शर्मा

मंच पार्श्व

मंच-व्यवस्थापक:-नितिन गोस्वामी, राकेश सैन, असलम पठान, धीरज चौधरी

मंच-निर्माण:-शहजोर अली, आलोक पारीक

प्रस्तुति समन्वयक:-विकास रावत, दीपक पारीक

प्रकाश परिकल्पना:-अभिषेक गोस्वामी, संदीप मदान

वेशभूषा:-राहुल त्रिवेदी, दिलीप विजय, अनीता विष्ट, काजल शर्मा

रूप सज्जा:-राधेलाल

विशेष सहयोग:-श्रीमती रेनू रानी शर्मा, अध्यक्षा, त्रिवेणी कला संगम जयपुर

दृश्य : प्रथम

(जंगल का दृश्य। चारों ओर बियावान जंगल है। बीच में नदी बह रही है जिसके किनारों पर आम, जामुन व सफेदे के बड़े-बड़े पेड़ हैं। पहाड़ी ढ़लान में बकरियों का झुण्ड चर रहा है। नदी के दूसरे किनारे नटों की झोपड़ियाँ हैं जिनमें से एक बालिका निकलकर नदी की तरफ आ रही है। मंच पर उस्ताद व जमूरे का प्रवेश।)

जमूरा : उस्ताद! ये हम कहाँ आ गए?

उस्ताद : आ कहाँ गए जमूरे, बस्ती की गन्दगी से निकलकर इस खूबसूरत इलाके में आ गये। देखों चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। पेड़ों की सुन्दर कतारें कैसी मनमोहक लग रही हैं।

जमूरा : और उस्ताद, देखो देखो वो सामने नदी की गिरती हुई धारा कैसे कल-कल करके बह रही है।

उस्ताद : अरे जमूरे।

जमूरा : हाँ उस्ताद।

उस्ताद : वो सामने कुछ देख रहा है।

जमूरा : क्या उस्ताद ?

उस्ताद : अरे वो पहाड़ी ढ़लान से जो छम-छम करती उतरकर आ रही है उस लड़की को देख रहा है। तुझे पता है कौन है वो ?

जमूरा : उस्ताद तुम भी बड़े चालू हो। यहाँ इतनी अच्छी जगह आकर भी कुदरत की सुन्दरता को देखने के बजाए छोकरी को देखते हो।

उस्ताद : चु...प्प। मजाक करता है।

जमूरा : अरे उस्ताद। मेरा मतलब है तुम इसे नहीं जानते, यह तो कजरी है कजरी।

उस्ताद : कौन कजरी ?

जमूरा : इस नटों की बस्ती के सरदार की लड़की उस्ताद। (कजरी पास में आ जाती है।)

कजरी : क्यों रे जमूरे। तू फिर आ गया तीतर पकड़ने। चल भाग यहाँ से।

उस्ताद : अरे कजरी नहीं, हम तीतर पकड़ने नहीं आये। हम तो कुदरत की इस सुन्दरता को देखने आये हैं। (नदी व पहाड़ों की तरफ इशारा करते हुए) देखो तो प्रात: काल का सूर्य कैसा सुहाना लग रहा है।

जमूरा : हाँ देखो तो झरना कैसे संगीतमय आवाज में बह रहा है।

कजरी : यहाँ कोई डर नहीं, किसी की गति में कोई अवरोध नहीं, चारों ओर शान्ति ही शान्ति है।

गाना

राग - पीलू बरवा ताल - कहरवा

उस्ताद : सूर्य प्रात:काल का शोभित हुआ नभ में अहा।
रक्तवर्णी रथ लिए विद्युत्गति से जा रहा॥

जमूरा : (तेज गर्जना से चौंक कर)
कैसी अनोखी गर्जना, कम्पित हुआ आकाश है।
महाकाल मर्दन को चला, क्रोधित हुआ साक्षात् है॥

कजरी : (उचक-उचक कर देखती हुई, कान लगाकर सुनती हुई)
धूल उड़ती यों लगे, ज्यों आ रहा तूफान है।

अश्व-टापों की ध्वनि! क्या आ रहा शैतान है॥

उस्ताद : (ऊँचा होकर कुछ देखता है फिर सकारात्मक नि:श्वास छोड़ता हुआ)
डर छोड़ दो निश्चित हों, देखो ध्वजा फहरा रही।
फौज यह तो जा रही है, पृथ्वीराज चौहान की॥

जमूरा : पृथ्वीराज चौहान की ? **कजरी** - पृथ्वीराज चौहान की ?

उस्ताद : हाँ हाँ..... हाँ हाँ, पृथ्वीराज चौहान की (नाचता है)

जमूरा : (उसके साथ नाचते हुए) पृथ्वीराज चौहान की, पृथ्वीराज चौहान की।

जमूरा : (रुकते हुए) लेकिन उस्ताद।

उस्ताद : हाँ जमूरे।

जमूरा : ये पृथ्वीराज चौहान कौन है ?

उस्ताद : धत् तेरे की। तू पृथ्वीराज चौहान को नहीं जानता।
तू जानती है कजरी पृथ्वीराज चौहान कौन है ?

कजरी : मैं क्या जानूँ। मैं तो वहाँ जंगल में रहती हूँ। मेरे बापू तो मुझे शहर में ले ही नहीं जाते हैं किसी से मिलाने। फिर मैं क्या जानूँ। पृथ्वीराज चौहान कौन है ?

उस्ताद : धत् तेरे की। कैसे बच्चे हो तुम लोग, अरे अपने देश के इतिहास को नहीं जानते। ऐसे प्रतापी राजा को नहीं जानते जिसके लिए राजस्थान का इतिहास गर्व से सीना ताने विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

जमूरा : हम तुम्हारी बड़ी-बड़ी बातों को नहीं समझ पा रहे हैं उस्ताद।

कजरी : हमें तो कुछ इस प्रकार बताओ कि हम आसानी से समझ जाएं कि पृथ्वीराज चौहान कौन है ?

उस्ताद : हाँ भई चलो हम तुम्हें चलकर ही बता देते हैं कि पृथ्वीराज चौहान कौन है। परन्तु हम तुम्हें बता दें कि पृथ्वीराज चौहान एक पराक्रमी राजा व वीर योद्धा थे जिन्होंने शाहबुद्दीन गौरी की अगणित सेना को मार-मार कर भगा दिया था।

जमूरा : और शाहबुद्दीन गौरी को मार दिया होगा।

उस्ताद : अरे नहीं जमूरे। मारा नहीं रे। पृथ्वीराज चौहान वीर और पराक्रमी राजा तो थे ही, साथ में दयालु भी थे। उन्होंने शाहबुद्दीन को सत्रह बार युद्ध में बन्दी बनाया और दया करके छोड़ दिया।

कजरी : फिर तो दुम दबाकर भाग गया होगा गौरी यहाँ से।

उस्ताद : नहीं रे कजरी (नि:श्वास छोड़ते हुए) गौरी पृथ्वीराज चौहान की तरह बहादुर नहीं था। कायर था, विश्वासघाती था। उसने अठारहवीं बार पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना लिया।

जमूरा व कजरी : (पास में आ जाते हैं फिर उत्सुकता से) फिर क्या हुआ उस्ताद। आगे तो बताओ।

उस्ताद : अरे भई। तुम तो निरे मूर्ख हो कुछ भी नहीं जानते इतिहास के बारे में (कुछ सोचता हुआ) एक काम करें। वो नीचे पहाड़ी की तलहटी में नाटक दिखाया जा रहा है पृथ्वीराज चौहान, चलो वहाँ चलकर देखते हैं।

जमूरा व कजरी : (मारे खुशी के एक साथ) .... हे.....! (और उछलकर उस्ताद के कंधों पर लटक जाते हैं।)

(फ्रीज दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(महाराज पृथ्वीराज चौहान का दरबार लगा हुआ है जिसमें पृथ्वीराज चौहान के मित्र कवि चन्द, ताहर, कमास, समरसिंह, कन्हराय आदि विराजमान हैं।)

चन्द : किस सोच में डूबे हैं महाराज? ऐसा कौनसा विषय है जो आपको चिन्तित किये दे रहा है?

पृथ्वीराज : हम चिन्तित नहीं है कविवर। हम तो सोच रहे हैं कि हमारे पिताश्री सोमेश्वर ने हमें अपने नाना श्री अनंगपाल के आग्रह पर उनकी राजसत्ता संभालने एवं प्रजा की सेवा करने के उद्देश्य से जो भेजा है, उसे हम पूरा कर भी पा रहे हैं या नहीं। कहीं हम उनके उन शब्दों को भूल तो नहीं गये हैं जो उन्होंने विदा देते समय हमें कहे थे।

ताहर : कौनसे शब्द महाराज?

पृथ्वीराज : विदा देते समय उन्होंने कहा था ताहर ..... (सोमेश्वर की आवाज) – 'राज-शासन संभालने से पहले मेरी दो बातें याद रखना पुत्रवर। एक तो यह कि प्रजा पालन में अपने प्राणों की आहूति देकर भी प्रजा की रक्षा करना, दूसरे अपने देश की रक्षा करने में देश के शत्रु से कभी मत डरना। कभी मत डरना।' (सभी आवाज सुनकर चौंकते हैं)

पृथ्वीराज : सुना आप लोगों ने। हमारे पिताश्री का हमें दिया हुआ हौसला। हमारा फर्ज़। हमारा कर्तव्य। क्या हम उसमें खरे उतरे हैं कन्हराय?

कन्हराय : हाँ महाराज। आप अपना पूरा फर्ज़ पूरा कर रहे हैं। हमारे दरबार के सभी योद्धा आपके एक इशारे पर देश की प्रजा की सेवा व अपने कर्तव्य के लिए अपनी जान पर खेल जाना अपना सौभाग्य समझते हैं।

पृथ्वीराज : (आँखें मूँदकर खुशी से) हे मेरे बहादुर और दिलेर शेरों। आप लोगों के सामने आपकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। यह सही है कि आप सभी ने अपनी बहादुरी व कर्तव्य निष्ठा से दिल्ली राज्य की नींव पाताल लोक तक पहुँचा दी है। मेरे बहादुर शेरों। तुम लोगों ने अपनी वीरता से चारों दिशाओं में हमारी धाक जमा दी है और युद्ध में मुहम्मद गौरी को पछाड़कर उसके अभिमान को चकनाचूर कर दिया है। वह इस कदर मुँह दबाये भागा है कि दुबारा कभी दिल्ली की ओर देखने का साहस न करेगा।

कमास : महाराज! यह तो आपकी बल-बुद्धि और नेतृत्व का ही परिणाम है कि जब-जब गौर ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब-तब मात खाकर भागा। परन्तु महाराज है वो अव्वल दर्जे का निर्लज्ज़। बार-बार पराजित होकर भी मुँह दिखाता है और मात खाकर भी पुन: आक्रमण करने का साहस करता है। यदि बुरा न मानें तो एक बात कहूँ महाराज?

पृथ्वीराज : हाँ हाँ कहो कमास।

कमास : महाराज वो इतना वाचाल है कि आपसे हर बार क्षमा मांग लेता है और आप इतने दयालु हैं कि उसे हर बार क्षमा कर देते हैं। महाराज इस शत्रु को क्षमादान देकर बार-बार क्षमा करना उचित नहीं है। हमारे हित में नहीं है। (सिर झुका लेता है)

पृथ्वीराज : तुम्हारा वचन सत्य है वीरवर। तुम ठीक कहते हो। परन्तु मानव धर्म यह बताता है कि बहादुर योद्धा क्षमादान से ही कीर्ति पाता है बहादुर के लिए याचक को दण्ड़ देना उचित नहीं। और फिर इस बार तो उसने ऐसी मात खाई है कि यदि मनुष्य होगा तो चुल्लू भर पानी में डूब मरेगा पर फिर कभी इधर मुँह उठाकर भी नहीं देखेगा।

ताहर : महाराज आप दयालु हैं। धर्म के प्रतीक हैं। और वह मक्कार और नीच है। जब आप युद्ध में पराजय के बाद उसे बन्दी बनाते हैं तो हर बार वह सौ-सौ झूठी कसमें खाता है परन्तु फिर भी वापस आकर चढ़ाई कर देता है। और महाराज आप फिर भी उसकी रिहाई कर देते हैं। महाराज कमास ठीक कहते हैं। गौरी अव्वल दर्जे का धूर्त और नीच प्रकृत्ति का आदमी है और ऐसे कपटी शत्रु को क्षमादान देना हमारे लिए हानि का कारण बन सकता है।

(पृथ्वीराज सुनकर हल्का-हल्का हँसता है)

समरसिंह : महाराज। अब युद्ध तो समाप्त हो गया अत: आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रस्थान करूँ। मुझे इजाज़त है ?

पृथ्वीराज : रावजी। कुछ दिन और ठहर जाइए। अभी तो युद्ध से छुटकारा मिला है। कुछ बैठकर वार्तालाप करने का अवसर तो अभी आया है।

द्वारपाल : (प्रवेश करके) - महाराज की जय हो। महाराज कन्नौज से एक राजदूत आवश्यक सन्देशा लाया है। आज्ञा हो तो आपके समक्ष पेश किया जाए।

पृथ्वीराज : उसे आदर सहित हमारे सम्मुख पेश करो द्वारपाल। (द्वारपाल चला जाता है) (पृथ्वीराज समरसिंह की ओर मुखातिब होकर) -न जाने कन्नौज से कैसी ख़बर आई है रावजी।

समरसिंह : महाराज मुझे तो आसार कुछ अच्छे नजर नहीं आ रहे हैं।

दूत : (प्रविष्ट होकर - झुककर अभिवादन करते हुए)-महाराज! अपने श्रीचरणों में दास का प्रणाम स्वीकार करें।

पृथ्वीराज : हमारे दरबार में तुम्हारा स्वागत है दूतवर। पहले कन्नौज राज्य की कुशलता बयान करो और फिर अपने यहाँ आने का प्रयोजन बखान करो।

दूत : महाराज भगवान की दया और आपकी शुभकामनाओं से कन्नौज में सब कुशल मंगल हैं। और यह सेवक आपकी सेवा में महाराज जयचन्द द्वारा रचाये जाने वाले राजसूय यज्ञ में पधारने का निमंत्रण पत्र लेकर हाजिर हुआ है।

पृथ्वीराज : (उत्तेजित होकर) दूतवर! क्या तुम जो कह रहे हो अपने होश और हवास में कह रहे हो। क्या जयचन्द ने जो संदेशा भिजवाया है वह उसके शांत चित्त की उपज है। क्या वाकई जयचन्द ने राजसूय यज्ञ कराने का निश्चय किया है ?

दूत : (शांत स्वर में विनम्र होकर) -क्षमा करें महाराज! मेरे स्वामी ने अपने बल बुद्धि व पराक्रम में अपने आपको सन्तुष्ट पाकर ही यह शुभकार्य करने का निश्चय किया है। अत: मेरा आपसे निवेदन है कि आप शांत चित्त व विवेक से निर्णय करते हुए इस निमंत्रण को स्वीकार करें।

चन्द : (आवेश में) -दूतवर! तुम्हारे महाराज को अपने बल-बुद्धि व पराक्रम से सन्तुष्टि का भ्रम हुआ है।

दूत : (व्यंग्य से) -परन्तु आपको इस बात का भ्रम कैसे हुआ कविवर ?

चन्द : यदि उन्हें भ्रम नहीं होता दूतवर! तो वे ऐसा अविवेकशील निर्णय लेते ही नहीं। उन्होंने अपनी शक्ति का अनुचित आकलन कर व्यर्थ में एक कठिन समस्या अपने सिर पर ले ली है। भाई जरा सोचो तो राजसूय यज्ञ करना कहीं ग्वाल-बालों का खेल है ? द्वापर युग के अन्त में जब महाराज युधिष्ठर ने यह यज्ञ रचाया था तो भगवान श्री कृष्ण के सहारे से सफल हो पाये थे। उसके बाद किसी ने राजसूय यज्ञ कराने की सोचने तक की

हिम्मत नहीं की। महाराज जयचन्द शायद पिछले युद्ध में हुए घावों एवं मार को भूल गये जो राजसूय यज्ञ कराने की ठानी है।

समरसिंह : (बीच में टोकते हुए) –कविराज क्षमा करें। परन्तु दूत के साथ ऐसी बातें करना नीति–विरुद्ध है।

पृथ्वीराज : तुम कविराज की बातों पर मत जाना दूतवर। ये तो कविराज का स्वभाव है कि जो भी बुरी बात मन में आयी तो बुरा ही बुरा सोचकर निर्भय होकर कह दिया और कहीं अच्छाई दिखी तो इसका अच्छा एवं अलौकिक वर्णन कर दिया। इसलिए कवि चन्द हमारे दरबार की अमूल्य निधि है। (प्रवाह में कहता है फिर एकाएक पलटकर)

आप जयचन्द को मेरी ओर से निमंत्रण हेतु धन्यवाद देना और कहना कि हमारा यवनों के साथ युद्ध ठना हुआ है अत: इस शुभ अवसर पर उपस्थित न हो सकेंगे।

(फिर मंत्री से) –मंत्री जी! दूत महाशय इतनी लम्बी यात्रा करके आए हैं, थक गए होंगे अत: इनको विश्राम गृह ले जाइये और अतिथि सत्कार की व्यवस्थाएं कीजिए।

दूत : (विनम्रता व उत्तेजना के साथ) –

क्षमा करें महाराज! परन्तु यदि आप हमारे महाराज का निमंत्रण स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं भी आपकी नगरी में अन्न–जल ग्रहण नहीं करूँगा और अपने महाराज की आज्ञानुसार अभी यहाँ से प्रस्थान करूँगा। (दूत का प्रस्थान)

चामुण्ड : महाराज! मुझे तो इस बात का आश्चर्य है कि कन्नौज नरेश को ये राजसूय यज्ञ कराने का भूत कैसे सवार हुआ।

पृथ्वीराज : खै़र! कन्नौज नरेश ने जो भी किया वे उसे स्वयं भुगतेंगे। परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि उनका दूत कविराज की बातों को बढ़ा चढ़ाकर जयचन्द को बतायेगा। मुझे उस दूत के विचार अच्छे नहीं लगे। इसलिए कुछ ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे कन्नौज में होने वाली समस्त घटनाओं का आसानी से पता लगता रहे।

द्वारपाल : (प्रवेश करके) –महाराज की जय हो। महाराज द्वार पर एक नवयुवक आपसे मिलने की जिद कर रहा है।

पृथ्वीराज : (कुछ सोचते हुए) द्वारपाल, कौन है वह नवयुवक। कहाँ से आया है और हमसे क्यों मिलना चाहता है?

द्वारपाल : महाराज। वह न तो अपना नाम–पता बताता है ओर न ही आपसे मिलने का प्रयोजन बताना चाहता है। बस, तुरन्त आपसे मिलना चाहता है।

(सभी दरबारी सोच में पड़ जाते हैं।)

पृथ्वीराज : (उत्सुकता में डूबे हुए) –

अच्छा द्वारपाल जाओ और उसे ससम्मान हमारे पास लेकर आओ।

(द्वारपाल का प्रस्थान और नवयुवक के साथ पुन: प्रवेश।)

नवयुवक : (प्रविष्ट होकर झुक कर अभिवादन करते हुए) –

महाराज दास का प्रणाम स्वीकार करें।

पृथ्वीराज : आपका स्वागत है वीरवर। कहो आपका क्या नाम है, कहाँ से आये हो और किस प्रयोजन से यहाँ तक आने का कष्ट किया है?

नवयुवक : महाराज इस दास का नाम जोधमल है और कन्नौज से आपके नाम एक गुप्त सन्देश लेकर आया है।

(फिर सभी की ओर सन्देहास्पद दृष्टि से देखते हुए महाराज को सम्बोधित करते हुए) –

आपकी आज्ञा हो तो सन्देशा आपको दूँ?

पृथ्वीराज : आप चिन्ता न करें जोधमल जी। ये सब तो मेरे विश्वस्त एवं अन्तरंग मित्र हैं अत: आप कोई ड़र मन में न रखें और सन्देशा हमें दें।

(जोधमल पत्र पृथ्वीराज को संदेशा देता है)

पृथ्वीराज : (पत्र मंत्री को देते हुए) –

मंत्री जी, जरा पढ़कर तो सुनाइये, इसमें कौनसा संदेश है।

मंत्री : (पत्र लेता हुआ) –जो आज्ञा महाराज (पत्र पढ़ता है) –

सेवामें,

हे क्षत्रिय कुलभूषण, वीर शिरोमणी दिल्ली नरेश!

अपने चरणों में इस निर्बल, असहाय अबला का प्रणाम स्वीकार करें।

हे पृथ्वीपति! आपको शायद पता लग गया होगा कि मेरे अभिमानी पिता ने राजसूय यज्ञ कराने का निर्णय कर लिया है। इसके साथ ही मेरे विवाह का स्वयंवर भी किया जाना तय है। मैं जानती हूँ कि आप अपने अपमान का ख्याल रखते हुए स्वयंवर में भी नहीं आना चाहेंगे। परन्तु नाथ! इस समय मेरा जीवन मंझधार में है जिसे आप ही बचा सकते हैं। मैंने आपको मन से अपना आराध्य देव मान लिया है और आपके सिवा अन्य किसी का पति रूप में वरण कभी न करूँगी। इसलिए मैंने प्रण किया है कि यदि आपने मुझ दासी को स्वीकार नहीं किया तो मैं अपना जीवन समाप्त कर लूँगी। अत: हे प्राणेश! यह जीवन अब आपके हाथ है, चाहें तो इसे बचा लें, चाहें तो मिटा दें।

आपकी अभागिनी दासी
संयोगिता

पृथ्वीराज : (नि:श्वास छोड़ते हुए) –आप हारे थके आये हैं जोधमल जी, अत: थोड़ा विश्राम करके जलपान कर लें।

जोधमल : क्षमा करें महाराज! मुझे तुरन्त पत्र का उत्तर लिख दीजिए अन्यथा मेरे विलम्ब के कारण कन्नौज में बहुत बड़ा अनिष्ट हो जायेगा। (मंत्री पृथ्वीराज के पास उत्तर लिखा पत्र लाता है जिस पर पृथ्वीराज अपने हस्ताक्षर करते हैं।)

पृथ्वीराज : (पत्र जोधमल को देते हुए) –ठीक है जोधमल जी! ये पत्र का उत्तर लीजिए और ये पुरस्कार आपके लिए।

जोधमल : (पुरस्कार लेने से इन्कार करते हुए) –पुरस्कार के लिए क्षमा करें महाराज! मैं एक क्षत्रिय हूँ और पुरस्कार लेकर क्षात्र धर्म को कलंकित नहीं करूँगा।

(पत्र लेकर सिर झुकाकर प्रस्थान करता है)

पृथ्वीराज : वीर कमास! आप तुरन्त एक सेना की टुकड़ी तैयार कीजिए। हम कल ही कन्नौज के लिए प्रस्थान करेंगे।

कमास : जैसा हुक्म महाराज! (शीश झुकाकर प्रस्थान करता है।)

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(मंच पर उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

उस्ताद : कहो बच्चों! नाटक कैसा लग रहा है?

जमूरा : नाटक तो अच्छा लग रहा है उस्ताद, लेकिन.....

उस्ताद : लेकिन क्या भाई, बताओ तो क्या कुछ कमी लग रही है नाटक में?

कजरी : कमी! कोई कमी तो नहीं लग रही है उस्ताद। पर कुछ धूम धड़ाका नहीं हो रहा है।

जमूरा : हाँ उस्ताद, आप तो कह रहे थे कि पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध में दुश्मनों को मार-मार कर भगा दिया था।

कजरी : और यहाँ तो केवल दरबार ही लग रहा है।

उस्ताद : अरे भाई, सब कुछ एक साथ थोड़े ही हो जायेगा। थोड़ी तसल्ली रखो, अभी युद्ध भी बतायेंगे। हम तुम्हें राजा जयचन्द के दरबार में कन्नौज ले चलते हैं।

जमूरा : लेकिन उस्ताद, मैं तो अपनी अम्मा से पूछकर ही नहीं आया।

कजरी : और मेरी अम्मा तो मुझे इतनी दूर भेजेगी ही नहीं।

उस्ताद : अरे अक्ल के दुश्मनों! हम तुम्हें सचमुच कन्नौज थोड़े ही ले जा रहे हैं। मेरा मतलब है नाटक में अब हम राजा जयचन्द का दरबार देखेंगे।

कजरी व जमूरा : फिर वही दरबार उस्ताद। फिर गये न जुबान से। तुम तो कह रहे थे युद्ध बतायेंगे।

उस्ताद : अरे भाई तुम देखो तो। इस दरबार से ही युद्ध की शुरूआत हो जायेगी।

कजरी व जमूरा : (खुशी से) हे.....हे.....(और उछलकर उस्ताद के कंधों से लटक जाते हैं। उस्ताद गिर पड़ता है)

(प्रकाश धीरे-धीरे मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(कन्नौज में संयोगिता स्वयंवर का दृश्य। मंडप सजा हुआ है। विभिन्न प्रान्तों के राजा-महाराजा और वीर योद्धा बड़े-बड़े आसनों पर विराजमान हैं। राजा जयचन्द मुख्य स्थान पर बैठे हैं। मंडप के एक कोने में चारण-भाट वीरों का गुणगान कर रहे हैं। संयोगिता बुझे मन से एवं व्यथित होकर हाथों में जयमाला लिए इधर-उधर चक्कर लगा रही है। साथ में राज भट्ट संयोगिता को हर वीर के बारे में गाकर बता रहा है।)

संयोगिता : (राजभट्ट से) -हे राजभट्ट। मैं इस स्वयंवर मंडप में चारों ओर चक्कर लगा आई परन्तु इस प्रतिमा में जो ओज एवं तेज मुझे देखने को मिला है उससे मैं प्रभावित हूँ।

राजभट्ट : (आँखें चुराते हुए) - यह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति की प्रतिमा नहीं है राजकुमारी जी। आप इसका ध्यान छोड़ें और स्वयंवर में उपस्थित बड़े-बड़े योद्धाओं की ओर चलें।

जयचन्द : (अट्टहास करता हुआ) - तुम्हारा ध्यान भटक गया है पुत्री।

संयोगिता : नहीं पिताश्री नहीं। मेरे ध्यान का निर्णय मुझ पर छोड़ दीजिए। (फिर भाट से) - हे राजभट्ट। मेरे ख्याल से ये कोई साधारण वीर नहीं है अत: इनके बारे में मुझे जान लेने दीजिए। आप तो केवल इस वीर की वंशावली और बहादुरी का वर्णन मात्र बखान कीजिए।

राजभट्ट : (जयचन्द के डर से सहमते हुए) - ठीक है कुमारी जी, आप नहीं मानती हैं तो सुनिए :-

राग-पीलू बरवा ताल-कहरवा

राजपूत अजमेर के श्री सोमेश्वर नाम।

उनके ही ये पुत्र हैं, पृथ्वीराज चौहान॥
आन-बान इनकी बड़ी शेरों की सन्तान।
चौहानों के वंश का चमकाया है नाम॥
गौरी को जीवन दिया, माफ किया हर बार।
धन- धन इनकी कीर्ति, दुश्मन से व्यवहार॥

संयोगिता : (पृथ्वीराज की प्रतिमा को जयमाला पहनाते हुए) - हे हृदयेश्वर। इस अनुचरी को अपने चरणों की दासी स्वीकार कर उद्धार कीजिए।

जयचन्द : (संयोगिता के इस साहस से अवाक् रह जाता है। फिर एकाएक क्रोध से) - मूर्ख लड़की! यह तुमने क्या किया? क्या तुम्हारा विवेक नष्ट हो गया है? क्या तुम अपने कुल और उसकी मर्यादा को बिलकुल भूल गई हो? तुम यह भी भूल गई हो कि यह तो एक ऐसे कायर की प्रतिमा है जो हमारे द्वारपाल के काबिल है (फिर नम्रता से) तुमने भूल की है पुत्री। ख़ैर कोई बात नहीं, अब तुम इस द्वारपाल की प्रतिमा से माला निकालो और किसी अन्य श्रेष्ठ वीर का पति-रूप में वरण करो।

संयोगिता : आपका यह उपक्रम सफल हुआ पिताश्री। यही द्वारपाल अब मेरे जीवन का रखवाला है। यही पत्थर की मूर्ति आपके इन समस्त शूरवीरों में श्रेष्ठ है। किसी प्रकार के भ्रम ने मुझे विचलित नहीं किया पिताश्री। मैंने इनका पति रूप में वरण कर आपका मान बढाया है।

जयचन्द : (क्रोध में मुट्ठियाँ भींचता हुआ बीच में बात काटते हुए) - मूर्ख और बद्तमीज लड़की। मैं नहीं जानता था कि तुम आस्तीन का साँप निकलोगी। तुम हमारे ही सामने हमारे सबसे बड़े दुश्मन की प्रशंसा कर रही हो। तुम हमारी पुत्री हो अत: हम लाचार हैं तुम्हें अब तक जिन्दा रखने के लिए। तुम्हारी जगह यदि और कोई होता तो अब तक उसका सिर धड़ से अलग हो चुके होते। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। आखिरी बार कह रहा हूं। जाओ और यह माला इस द्वारपाल की प्रतिमा

से निकाल लो अन्यथा मैं अपने ही हाथों से आज तुम्हारा वध कर दूँगा।

धाय माँ : (एकाएक बीच में आते हुए जयचन्द से) – इसे माफ कर दें महाराज। यह तो एक अबोध बालिका है। परन्तु इसने जो कुछ भी किया है उससे पीछे न हटेगी। मैं इसे जन्म से जानती हूँ। (संयोगिता धाय माँ के पास आ जाती है और धाय माँ उसे अपने से सटा लेती है।)

जयचन्द : (क्रोध में धाय से) – चुप कर बुढिया। तुम यदि इसकी धाय न होती तो इससे पहले मैं तुम्हारा वध कर देता। तुम इसे समझाने की बजाय हमें ही नसीहत दे रही हो।

धाय : क्षमा करें महाराज। आप धन्य हैं जिसने संयोगिता जैसी पतिव्रता भाव रखने वाली पुत्री को जन्म दिया और धन्य है संयोगिता जिसने धीर–गम्भीर वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान का पतिरूप में वरण किया है महाराज। और यह आप जैसे विद्वान और बहादुर राजा के योग्य नहीं कि अपनी पुत्री को शास्त्र और नीति के विरुद्ध आचरण को प्रेरित करें।

जयचन्द : (क्रोध से) – चुप कर बे चण्ड़ालिनी। तू अपनी हद को पार कर रही है। तू हमारी दासी होकर हमसे जुबान लड़ाने की हिम्मत कर रही है। (फिर क्रोध से) सैनिको बन्दी बना लो इसे।

संयोगिता : (बीच में आते हुए) ख़बरदार जो किसी ने धाय माँ को हाथ लगाया (फिर जयचन्द से) – क्षमा करें पिताश्री। परन्तु एक अबला पर हाथ उठाना और अत्याचार करना नीति–विरुद्ध है।

जयचन्द : (कुछ ढिलाई से) – हे पुत्री! तुम अभी नादान हो और अपना भला–बुरा सोचने में सक्षम नहीं हो। मैं जो भी करना चाहता हूँ वह तुम्हारे हित में ही होगा। तुम नहीं जानती पृथ्वीराज हमारा बहुत बड़ा शत्रु है और कोई बहादुर नहीं बल्कि कायरों का कायर है और तुमने जिसे वरमाला पहनाई वह कोई इन्सान न होकर केवल एक पत्थर की प्रतिमा मात्र है।

संयोगिता : (आँखें बन्द करके कानों पर हाथ रखते हुए) – बस करें पिताश्री! बस करें। ये द्वारपाल नहीं हैं बहादुर हैं, और ये पत्थर की मूर्ति नहीं, मेरे लिए साक्षात् भगवान हैं।

जयचन्द : (व्यंग्य से अट्ठहास करते हुए) – पत्थर की मूर्ति! तुम्हारा साक्षात् भगवान। (फिर क्रोध से) – मैं तुम्हें माफ करना चाहता हूँ पर तुम हर सीमा को पार ही करती जा रही हो। अब तुझ पर दया करना व्यर्थ है। (फिर म्यान से तलवार निकालते हुए) यदि तुम नहीं मानती हो तो हे कुल कलंकिनी! लो हो जाओ मरने को तैयार। (धाय माँ संयोगिता का बचाव करने बीच में आती है पर जयचन्द धक्का देकर संयोगिता पर तलवार से वार करना चाहता है। सहसा पृथ्वीराज चौहान प्रवेश करके तलवार का वार रोकता है और धाय माँ को उठाता है)

पृथ्वीराज : (प्रवेशते हुए जयचन्द से) – वाह जयचन्द वाह। जय हो तुम्हारी। आज पता चला कि तुम तो बहुत बडे सूरमा हो। एक अबोध और निहत्थी बालिका पर तुम जैसा बहादुर पिता ही वार कर सकता है।

जयचन्द : (पृथ्वीराज को देखकर आग बबूला होते हुए) – आजा बदमाश, तू भी आजा। अब मैं तुम दोनों को एक ही साथ तलवार से मौत के घाट उतारूँगा।

पृथ्वीराज : (संयोगिता का हाथ पकड़ते हुए) – हे हृदयेश्वरी! यदि तुम अब भी अपने इरादे पर अटल हो और मुझे अपना पति होने के योग्य समझती हो तो आओ मेरे साथ (संयोगिता का हाथ पकड़कर दरबार से बाहर जाने का प्रयास करता है)

धाय माँ : (पृथ्वीराज से) – हे महाराज! मेरी आँखों का तारा आज आप लिए जा रहे हैं। इसे हिफाजत से रखना महाराज (फिर सिसकती है)

संयोगिता : (सांत्वना देती हुई) : मत रो धाय माँ। मेरी चिन्ता मत करो पर इन पापियों की भूमि में अपना ख्याल रखना माँ।

जयचन्द : (अपने सैनिकों को ललकारते हुए) – हे मेरे बहादुर शेरों। पकड़ लो इस कायर को –

(सैनिक पृथ्वीराज को रोकने की कोशिश करते हैं परन्तु पृथ्वीराज संयोगिता को लेकर तेजी से निकल जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

पाँचवां दृश्य

(उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

उस्ताद : जमूरे!

जमूरा : क्या है उस्ताद?

उस्ताद : वो बजरी कहाँ है?

जमूरा : बजरी! उस्ताद बजरी का तुम क्या करोगे! (कुछ सोचता हुआ) अच्छा-अच्छा अपना स्तर सुधार रहे हो उस्ताद। उस पुराने झोंपड़े की जगह पक्का मकान बनवा रहे होंगे शायद। चलो हम सुबह ही गाड़ी वाले को कह देंगे बजरी के लिए।

उस्ताद : अबे जमूरे आज भांग खाई है क्या?

जमूरा : क्यों उस्ताद?

उस्ताद : अबे मैंने तो इस लड़की के बारे में पूछा है और तू अनर्गल बके जा रिया है।

जमूरा : (ताली मारते हुए) – अरे वो लड़की! अबे उस्ताद वो बजरी नहीं है, उसका नाम कजरी है कजरी।

कजरी : (दौड़कर आती हुई जमूरे से) क्यों बे तीतर! क्या चुगली कर रहा था मेरी उस्ताद से।

उस्ताद : अरे चुगली नहीं कर रहा था कजरी। ये तो मुझे तुम्हारा नाम बता रहा था कि तुम कजरी हो।

कजरी : अबे! मैं कोई संस्कृत का श्लोक हूँ जो मेरा नाम एक बार में समझ में नहीं बैठता। सच-सच बताओ बात क्या थी?

उस्ताद : अरे कजरी, मैं तो यह पूछ रहा था कि नाटक कैसा लग रहा है?

जमूरा : लग तो अच्छा रहा है उस्ताद। पर.....

उस्ताद : पर क्या रे जमूरे।

कजरी : पर ये उस्ताद कि साला जब-जब नाटक में मजा आता है तो तुम बीच ही में बटन बन्द कर देते हो।

उस्ताद : अच्छा भई तौबा – तौबा। यदि तुम्हें नाटक अच्छा ही लग रहा है तो बटन चालू कर देते हैं।

जमूरा : कजरी (खुशी से) – हे.....हे.....।

(दृश्य समाप्त)

छठा दृश्य

(जयचन्द का दरबार लगा हुआ है, वह पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता का हरण किये जाने से क्रोधित है।)

जयचन्द : धिक्कार है हमें कि हमने अपनी सेना में कायरों को स्थान दे रखा है। इतनी विशाल सेना के होते हुए भी हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारी इज़्ज़त को कुचलता हुआ संयोगिता को लेकर फरार हो गया और ये नमक हराम सिपाही तमाशा देखते रह गये।

मंत्री : क्षमा करें महाराज। आप सही फर्माते हैं। महाराज, हमारी तरफ से स्वयंवर का उचित इन्तजाम था परन्तु हमें क्या पता था कि इस खुशी के मौके पर पृथ्वीराज स्वयं आ पहुँचेगा। हमारे सैनिकों ने उसे रोकने का बखूबी प्रयास किया है महाराज और बहादुर सैनिक उसके पीछे गये हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि वो उसे मौत के घाट उतारकर राजकुमारी जी को शीघ्र ही अपने साथ ले आयेंगे।

जयचन्द : हमें भरमाओ मत मंत्रीवर। जब दुश्मन को हम हमारे ही घर में परास्त न कर सके तो वे कायर सैनिक बाहर क्या मौत के घाट उतारेंगे उसे।

मंत्री : क्षमा करें महाराज! मैंने तो आपको पहले ही मना किया था कि राजसूय यज्ञ का समय न जाने दें। परन्तु आपने मेरी राय को महत्त्व ही नहीं दिया।

दूत : (प्रवेश करके) – क्षमा करें महाराज। गजब हो गया। हमारी सेना भ्रम में थी कि पृथ्वीराज अकेला है। परन्तु उसने ज्यों ही एक आवाज़ दी तो देखते ही देखते उसके असंख्य सैनिक निकल आये और हमारे सारे सैनिकों को मौत के घाट उतारकर आसानी से निकल गये।

जयचन्द : (क्रोध से फुंफकारते हुए अपने सब योद्धाओं की ओर इशारा करते हुए) – इन सबकी बहादुरी का कायल तो मैं उसी समय हो गया था जब मेरा सबसे बड़ा दुश्मन संयोगिता को लेकर यहाँ से सकुशल साफ बच निकला था।

परन्तु मेरा नाम भी जयचन्द है जयचन्द। मैं हारने वाला नहीं हूँ। अपनी एक ही चाल से अपने दुश्मन का सफाया कर दूँगा मैं। पृथ्वीराज मेरे सबसे बड़े दुश्मन! मैं तेरे कुल का नामोनिशान मिटा दूँगा। देख अब मैं भी क्या मायाजाल रचाता हूं। तेरे ख़ून से प्यासे शाहबुद्दीन गौरी को अभी बुलाता हूं। उसे सैनिक सहायता देकर अभी दिल्ली पर चढ़ाई कराकर तेरा सर्वनाश कराता हूँ। फिर देखना पाजी मेरी बहादुरी।

रामसिंह : महाराज। आपका ये आचरण धर्म और नीति के विरुद्ध है, राजपूती मर्यादा के खिलाफ है। यह अपना आपसी विषय है अत: इस विवाद में किसी बाहरी शासक को बुलाकर भारतवर्ष की तबाही के बीज न बोइए।

जयचन्द : (कुटिलता से मुस्कुराते हुए) – चाचाजी आप अभी समझे नहीं। शाह गजनी को भारतवर्ष की सत्ता में कोई दिलचस्पी नहीं। वह तो केवल अपने दुश्मन पृथ्वीराज से बदला लेना चाहता है। धन का लोभी होने के कारण लूट का माल अपने साथ ले जायेगा और पृथ्वीराज को हराकर दिल्ली की सत्ता मुझे सौंप जायेगा।

रामसिंह : बेटा जयचन्द। मेरा कहा मान और ऐसे तुच्छ विचार अपने मन से निकाल दे। यदि तुमने ऐसा किया तो जन्म जन्मान्तर के लिए तुम्हारे माथे दाग पर लग जायेगा।

जयचन्द : (क्रोध में) ऐसा लगता है कि उम्र के साथ-साथ आपकी बुद्धि भी सठिया गई है अन्यथा आप मेरे दुश्मन को परास्त करने में मुझे अनुकूल मशविरा देते। अब यदि आपने आगे जबान खोली तो .....

रामसिंह : (आश्चर्य से) – तो क्या करोगे बेटा?

जयचन्द : यदि आप मेरे राज्य सम्बन्धी निर्णयों में हस्तक्षेप करेंगे तो यहां से ज़बरदस्ती निकाल दिये जाओगे।

रामसिंह : मुझे निकालने की आवश्यकता नहीं जयचन्द। लगता है अब तेरे सर्वनाश का समय आ गया है क्योंकि तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। ले मैं स्वयं ही तुझे अपनी तकदीर के सहारे छोड़कर जा रहा हूँ। (प्रस्थान करता है।)

जोधमल : (प्रवेश करके) महाराज की जय हो।

जयचन्द : ठीक समय पर आए जोधमल। कहो सब कुशल मंगल है न?

जोधमल : सब ठीक है महाराज। मेरे लायक कोई सेवा हो तो आज्ञा करें।

जयचन्द : तुम शीघ्र तैयार होकर आओ जोधमल। तुम्हें तुरन्त ही गजनी के लिए प्रस्थान करना है।

जोधमल : (आश्चर्य से) – गजनी के लिए। लेकिन किस काम से?

जयचन्द : जोधमल! तुमने तो उस कायर पृथ्वीराज की उद्दंड़ता देख ही ली। अब मैं उस अभिमानी से अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूँ। मैं शाहबुद्दीन को सैनिक सहायता देकर दिल्ली की ईंट से ईंट बजवाना चाहता हूँ। अत: तुम मेरा पत्र लेकर गजनी जाओ और उनसे यहां आने का प्रयोजन बताओ।

(जोधमल सोच में पड़ जाता है)

जयचन्द : किस सोच में पड़ गए जोधमल?

जोधमल : क्षमा करें महाराज। यह सेवक आपकी हर आज्ञा मानने को तैयार है लेकिन ऐसा निकृष्ट कार्य करने को तैयार नहीं। आप अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें महाराज। आप जो काम करने जा रहे हैं वह धर्म-नीति और क्षात्र धर्म के लिए कलंक है और भारतवर्ष की तबाही की भूमिका है।

जयचन्द : ख़बरदार जोधमल। यह विवाद का समय नहीं बल्कि संकट का समय है अत: शीघ्र गजनी के लिए प्रस्थान करो। यह मेरी आज्ञा है।

जोधमल : आप मेरे स्वामी हैं महाराज और आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है। आपकी आज्ञा से मैं इसी क्षण पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने को तैयार हूँ, पर यदि आप विदेशी शासक शाहबुद्दीन को भारत में बुलायेंगे तो वह पहले मेरे ही हाथों से मारा जायेगा। (आवेश में प्रस्थान कर जाता है)

जयचन्द : (विजय सिंह से) – विजय सिंह! जाने दो इस नमक हराम को। यह भी कायर और डरपोक निकला, हे वीर! यह भार अब तुम्हें ही उठाना है (पत्र देते हुए) ये लो पत्र और इसे शीघ्र शाह गजनी तक पहुंचा दो।

विजय सिंह : (झुककर पत्र लेता हुआ) – जैसी महाराज की आज्ञा। (प्रस्थान करता है)

(दृश्य समाप्त)

सातवाँ दृश्य

(रणभूमि का दृश्य। शाहबुद्दीन और पृथ्वीराज दोनों की सेनाएँ मोर्चे पर ड़टी हुई हैं। अभी युद्ध प्रारम्भ नहीं हुआ है। पृथ्वीराज और जोधमल आपस में बातें करते हुए प्रवेश करते हैं)

जोधमल : क्षमा करें महाराज! परन्तु आज जयचन्द ने जो एक विदेशी को सैनिक सहायता देकर युद्ध के लिए उकसाया है वह राजपूती उसूलों के विरुद्ध है, वीरता के नाम पर धब्बा है और मातृभूमि के माथे पर कलंक है महाराज। (उसकी दोनों मुट्ठियाँ और दाँत आवेश में आने के कारण भिंच जाते हैं।)

पृथ्वीराज : (रुककर जोधमल का हौसला बढ़ाते हुए) शांत हो वीर, शान्त हो। भले ही जयचन्द देश के प्रति बागी हो जाए, भले ही वह शाहबुद्दीन से मिलकर हमारे पर आक्रमण करे (फिर शून्य में देखते हुए) परन्तु जोधमल। हम भी इस पाजी और कमीने

को रणभूमि में ऐसा सबक सिखायेंगे जो उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी नसीहत होगी, हम उसकी ऐसी गत करेंगे कि फिर कोई राजपूत अपने उसूलों के साथ गद्दारी नहीं करेगा।

जोधमल : (कुछ सोचते हुए) क्षमा करें महाराज।

पृथ्वीराज : (रुकते हुए) – हाँ कहो जोधमल क्या कहना चाहते हो।

जोधमल : महाराज मैं एक सन्देशा आपके पास पहले लेकर आया था और दूसरा आज लेकर आया हूँ। यदि आप उचित समझें तो इनका ईनाम चाहता हूँ महाराज।

पृथ्वीराज : (अवाक् रह जाता है) – वीर जोधमल। हम तो तुम्हें पहले भी ईनाम देना चाहते थे पर तुम ही ने कहा था कि तुम ईनाम लेकर क्षात्रधर्म का अपमान नहीं करना चाहते। उस रोज किसी बहादुर के मुँह से ऐसे शब्द सुनकर हम आशान्वित थे कि राजपूताने में अभी भी सच्चे वीर मौजूद हैं। ख़ैर तुम ईनाम चाहते ही हो हम तुम्हें अवश्य देंगे। मांगो जोधमल क्या ईनाम माँगते हो।

जोधमल : (पृथ्वीराज के पैरों में पड़कर) क्षमा करें महाराज। मैं जयचन्द का साथ हमेशा के लिए छोड़ आया हूँ। उसके कायरतापूर्ण निर्णय को मेरी आत्मा ने नहीं स्वीकारा महाराज अत: अब आप मुझे अपने साथ मिलकर वीरता दिखाने का ईनाम दीजिए और अपनी शरण में ले लीजिए महाराज।

पृथ्वीराज : (गद्‌गद् होकर) धन्य हो वीर तुम धन्य हो, तुम्हारी देशभक्ति से भारतमाता का मस्तक आज गर्व से ऊँचा हुआ । तुम भारतमाता के होनहार सपूत हो। मैं तुम्हें अवश्य आश्रय देता जोधमल परन्तु भारतीय संस्कृति के अनुसार तुम्हें संकट में उसी का साथ देना चाहिए जिसका तुमने नमक खाया है। अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना ही सच्ची देश भक्ति है वीरवर, अत: मेरा कहना मानो और वापस जयचन्द के पास चले जाओ।

जोधमल : (विश्वास के साथ) –यह सत्य है महाराज की सेवक को अपने स्वामी का साथ देना चाहिए। परन्तु यह भी तो सेवक का कर्त्तव्य है महाराज कि अपने स्वामी को उसके अहित से बचाना चाहिए। मैंने जयचन्द को हजार बार समझाने का प्रयास किया कि शाहबुद्दीन को सैनिक सहायता देना हम सभी के विनाश का, भारतवर्ष की दुर्गती का कारण होगा, पर वह न माना महाराज। यदि जयचन्द बहादुरीपूर्वक मुझे कहीं भी लड़ने को भेजते तो मैं अवश्य जाता; पर मैं कायरतापूर्वक लड़ने को या ऐसे में किसी का साथ देने को भारतीय संस्कृति और क्षात्र धर्म के अनुकूल नहीं समझता महाराज।

पृथ्वीराज : (जोधमल को गले से लगाते हुए) धन्य हो वीर, तुम धन्य हो। राजपूती वीरों के प्रति मैं आशान्वित हुआ (फिर उसे अलग करते हुए कुछ सोचता हुआ) तुम्हारी दलीलें और दृढ़ निश्चय को देखते हुए मैं तुम्हें रण में जाने की इजाज़त देना चाहता हूँ वीर जोधमल परन्तु.....

जोधमल : (उत्सुकता से बात काटते हुए) परन्तु क्या महाराज, क्या कोई समस्या है ?

पृथ्वीराज : कोई समस्या नहीं है जोधमल। परन्तु अभी–अभी समाचार आया है कि तुम्हारी माता बीमार है और ऐसी दशा में माता की सेवा करना तुम्हारा प्रथम कर्त्तव्य है। जोधमल जननी का स्थान जन्मभूमि से भी ऊँचा होता है और ऐसी दशा में यही नीतिसंगत है कि तुम पहले अपनी माता की सेवा करो।

(अचानक कराहते हुए जोधमल की माता का प्रवेश)

अन्ना : धन्य हो महाराज, आप धन्य हो। आपके विचार और नीति आपकी महानता को दर्शाते हैं। धन्य है यहाँ की प्रजा जो आपके जैसे राजा का नेतृत्व पाया (कराहती हुई निढाल–सी होती है, जोधमल उसे सहारा देता है)

पृथ्वीराज : आप बीमार हैं माता, विश्राम करें। मैं जोधमल को आपकी सेवा सुश्रुसा के लिए छोड़े जा रहा हूँ।

अन्ना : नहीं महाराज नहीं। आप मेरी परवाह न कीजिए। मुझसे ज्यादा पीड़ित आज भारत माता है। आज मुझसे अधिक सहारा भारत माता को अपने पुत्रों का चाहिए।

(फिर जोधमल से) जाओ पुत्र आज तुम्हारी परीक्षा का समय है। आज तुम्हारा धर्म अपनी माता से अधिक भारत माता की रक्षा करने का है।

पृथ्वीराज : धन्य हो वीर जननी तुम धन्य हो। तुम जैसी वीर माताओं के लिए भारत अन्य देशों के सामने अपना मस्तक गर्व से ऊँचा उठा सकेगा। परन्तु आप अत्यन्त रूग्णावस्था में हैं और ऐसी दशा में एक पुत्र का अपनी माता की सेवार्थ रहना न्यायसंगत एवं नीति सम्मत है।

अन्ना : क्षमा करें महाराज। नीति यह भी कहती है कि वीर योद्धा को संकटकाल में अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ अपनी माता के दु:ख को भी भूल जाना चाहिए। यदि आप मेरी अवस्था पर दया करके मेरे पुत्र को रण में न ले गये महाराज, तो इतिहास मुझे कलंकिनी समझेगा, मेरा पुत्र वीरों की श्रेणी में आने से वंचित रह जायेगा महाराज, और मरने के बाद भी मेरी आत्मा अपने आपको क्षमा नहीं कर सकेगी। (फिर जोधमल से) हाँ मेरे वीर पुत्र! तुझे मेरी कसम है जो युद्ध में न जायेगा। एक क्षत्राणी ने जो वीरता के दूध के घूँट तुम्हें बचपन से पिलाये हैं आज उसकी मर्यादा रख ले मेरे पुत्र। आज से मैं हमेशा–हमेशा के लिए तुझे अपनी मोह माया के जाल से मुक्त करती हूँ। (अपने सीने में कटार भोंक लेती है)

जोधमल : (अन्ना के पास जाता है) – हाँ माता मैं अवश्य जाऊँगा। तुम्हारे दूध का मान रखूँगा माता।

अन्ना : हाँ मेरे लाल। अब तू निश्चित होकर युद्ध में जा। अब तो महाराज भी तुम्हें नहीं रोकेंगे (दम तोड़ देती है)

(पृथ्वीराज सहित सभी के चेहरों पर विषाद की रेखाएँ हैं पर जोधमल के मुख पर गर्व की चमक है। प्रकाश धीरे–धीरे अन्ना पर आकर स्थिर हो जाता है। पर्दा गिरता है।)

(दृश्य समाप्त)

आठवाँ दृश्य

स्थान : युद्ध भूमि का एक हिस्सा।

(जयचन्द का अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए प्रवेश)

जयचन्द : हे मेरे वीर सैनिको। अब समय आ गया है तुम्हें अपनी बहादुरी दिखाने का। अपने नमक का हक़ अदा करने का। अब मैं इस नीच और कायर पृथ्वीराज को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि सुनने वालों और देखने वालों के भी रोंगटे खड़े हो जायेंगे। एक नीच और कायर से क्या अपने अपमान का बदला लेने को तुम सभी सहमत हो?

सब सैनिक (ऊँची आवाज में) हाँ, हम सब सहमत हैं।

एक सैनिक : क्षमा करें महाराज। मेरे ख्याल में महाराज पृथ्वीराज ने कायरता और नीचता जैसा कोई कार्य नहीं किया।

जयचन्द : (क्रोध में) - चुप रहो सैनिक। तुम नहीं जानते कि तुम किसके सामने और किसकी तरफदारी कर रहे हो? (फिर सब सैनिकों से) - क्या यह सही नहीं है कि उसने स्वयंवर में अनाधिकृत प्रवेश करके और हमारी पुत्री संयोगिता का हरण करके हमारा अपमान नहीं किया। सब सैनिक (चुप)

वही सैनिक : (सब सैनिकों को निहारते हुए महाराज की ओर उन्मुख होकर) क्षमा करें महाराज। आपके सोच में द्वेष है। आप ही ने प्राचीन परम्परा के अनुसार संयोगिता का स्वयंवर रचाया था जिसमें राजकुमारी जी ने महाराज पृथ्वीराज को वरमाला पहनाकर पतिरूप में वरण किया था। जब आपने राजकुमारी जी को खत्म करना चाहा तो महाराज पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी की जीवन-रक्षा करके नीति सम्मत और वीरता का ही कार्य किया है। और वे कन्नौज से राजकुमारी जी को कायरता से नहीं बल्कि वीरता से ले गये हैं। (बहुत से सैनिक एक स्वर में) हाँ महाराज पृथ्वीराज चौहान कायर नहीं वीर हैं।

जयचन्द : (ललकारते हुए क्रोध से) नमक हरामो। तुम्हें इसकी सज़ा अवश्य मिलेगी। अभी हम युद्ध में व्यस्त हैं। युद्ध समाप्ति के बाद हम तुम्हारा निर्णय राज दरबार में करेंगे।

वही सैनिक : तब तक हम आपकी सेना में रहेंगे ही नहीं महाराज। ऐसे अन्यायी राजा का साथ हम कभी नहीं देंगे।

बहुत से सैनिक (एक साथ) - हाँ कभी नहीं देंगे। रणभूमि से प्रस्थान कर जाते हैं। इसके साथ ही शाहबुद्दीन अपने सरदारों के साथ प्रवेश करता है।

जयचन्द : (अगवानी करते हुए) - आइए हुजूर आइए। इधर कदम रजा फरमाइए।

शाहबुद्दीन : मैं आपके पैगाम और हमदर्दी का शुक्रगुजार हूँ राजा साहब। आपने हमें जो सहयोग दिया है एवं गजनी पर जो एहसान किया है उससे गजनी का बच्चा-बच्चा आज आपका एहसानमन्द रहेगा महाराज।

जयचन्द : (झेंपते हुए) यह तो आपका जर्रानवाजी है आलीजाह जो आप इस नाचीज की शान में चार चाँद लगा रहे हैं। यह तो बन्दे की खुशकिस्मती है जो आपके किसी काम आ सका।

शाहबुद्दीन : अच्छा तो अब युद्ध प्रारम्भ होने में देर किस बात की है राजा साहब?

जयचन्द : (कुटिलता से) - कोई देर नहीं है महाराज, परन्तु...

शाहबुद्दीन : परन्तु क्या राजा साहब। आप कोई संकोच न करें। हम से स्पष्ट कहें।

जयचन्द : अगर गुस्ताखी माफ हो आलीजाह, तो अपने दरम्यान जो शर्तें तय हुई थी उनको एक बार फिर दोहराना चाहता हूँ।

शाहबुद्दीन : (हँसते हुए) - आप निश्चिन्त रहें राजा साहब। अपने दरम्यान जो शर्तें तय हुई थी उन पर मैं अटल हूँ। युद्ध में विजय के उपरान्त मुझे पृथ्वीराज चौहान चाहिए। दिल्ली की हुकूमत मैं आप ही को सौंप दूँगा उसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। अब आप अपने सैनिकों को युद्ध की आज्ञा दीजिए। (प्रस्थान)

(लाईटें बुझती हैं एवं फिर जलती हैं।)

(मंच पर युद्ध के मैदान का दूसरा भाग दिखाई देता है जहाँ पृथ्वीराज अपने सैनिकों को उद्‌बोधित कर रहे हैं)

पृथ्वीराज : हे भारत भूमि के वीर योद्धाओ! आज तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया है। आज वह कायर शाहबुद्दीन फिर युद्ध के लिए आ गया है जिसको अनेक बार दया करके हमने जीवनदान दिया। परन्तु इस बार उस देशद्रोही जयचन्द ने इसको सैनिक सहायता दी है इसलिए वीरो, यह युद्ध हमें बहादुरी से लड़ना है और उन दोनों को सबक सिखाना है।

सेनापति : आप चिन्ता न करें महाराज। हमारे वीरों ने केसरिया बाना पहन रखा है। बस अब आपके इशारे की देर मात्र है, हमारे योद्धा इस बात में सक्षम है कि शाहबुद्दीन को हराकर उन दोनों को जिन्दा पकड़ लायेंगे।

(दोनों और बारी-बारी से रणभेरी की आवाज आ रही है। पृथ्वीराज के सैनिक धीरे-धीरे युद्ध को जा रहे हैं। महाराज पृथ्वीराज भी अपने सैनिकों के साथ प्रस्थान करते हैं। प्रकाश धीरे-धीरे मंद-मंद होकर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

नवाँ दृश्य

(उस्ताद, जमूरे व कजरी का पृथ्वीराज के विजयोत्सव का गान करना)

उस्ताद : पृथ्वीराज चौहान की, सेना में थे वीर। सुनो जमूरे काजरी गौरी की तकदीर॥

(जमूरा व कजरी पास आ जाते हैं)

उस्ताद : हाँ तो भई क्या हुआ?

जमूरा व कजरी : (दर्शकों की ओर देखते हुए) - हाँ भई क्या हुआ युद्ध में। आप सब भी सुनो (गाते हैं)

पृथ्वीराज चौहान की, सेना में थे वीर।
सुनो-सुनो तुम भी सुनो, गौरी की तकदीर॥

उस्ताद : गौरी जिस पर कूदता, वह कायर जयचन्द।
दिल्ली की सत्ता मिले, यह सोचे हर दम॥

कजरी व जमूरा : युद्ध हुआ घनघोर यों, चौहानों की जीत।
गौरी की सेना भगी, होकर के भयभीत॥

उस्ताद : गौरी को फिर डाल दी, लोहे की जंजीर।

जमूरा व कजरी : आगे की लो देख लो, गौरी की तकदीर।

(उस्ताद, जमूरा व कजरी का गाते हुए प्रस्थान। मंच पर प्रकाश मन्द होता-होता लुप्त हो जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

दसवाँ दृश्य

(महाराज पृथ्वीराज चौहान का दरबार। शाहबुद्दीन को जंजीरों में जकड़े हुए वीर सैनिकों का दरबार में प्रवेश)

पृथ्वीराज : (व्यंग से) आइये। आइये मेहरबान। हमारे दरबार में आपका स्वागत है। हमारे लायक कोई खिदमत हो तो बखान करें।

शाहबुद्दीन : नजरें झुकाए हुए खामोश रहता है, कुछ नहीं बोलता।

पृथ्वीराज : क्या खूब रही शाह गजनी। आप अकेले ही तशरीफ लाये हैं। दिल्ली के उस भावी कायर नरेश, जो मैदान से पीठ दिखाकर भाग रहा था, उसको ऐसे सम्मानजनक अवसर पर आप अपने साथ नहीं लाये?

शाहबुद्दीन : (हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाते हुए) - महाराज मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। मुझे अपने किये पर बहुत पछतावा है। मैं तो उस चालबाज जयचन्द के बहकावे में आ गया था महाराज। आप महान हैं, वीर हैं, चौहान वंश के वीर शिरोमणी हैं महाराज। इस खादिम की गलती पर न जाइये और मुझे क्षमादान दीजिए।

पृथ्वीराज : (क्रोध में) चुप कर कमीने और मक्कार। मैंने तेरी बातों में आकर तुझे हर बार क्षमादान दिया और एहसान फरामोश तूने हर बार लौटकर वापस मुझ पर ही आक्रमण किया। तू क्षमा के योग्य है ही नहीं। अब बोल तुझे अपने किये की क्या सज़ा दी जाए।

शाहबुद्दीन : (पैरों में गिरते हुए) दुहाई है महाराज। आपने मुझे हर बार क्षमा किया, इससे आपकी संसार में कीर्ति बढ़ी है महाराज।

क्षमा आप जैसे कीर्ति पुरुष का आभूषण है महाराज। वो तो मुझे जयचन्द ने दम दिलासे देकर उकसाया था महाराज अन्यथा आप जैसे बहादुर और प्रतापी राजा की बहादुरी का मैं तो कायल था महाराज।

पृथ्वीराज : (कुछ पसीजते हुए) – तुम्हारा कोई दीन ईमान नहीं है शाहबुद्दीन। अब हम तुम पर किस प्रकार भरोसा करके रिहा करें। इस बात का क्या सबूत है कि तुम जो कुछ कह रहे हो सच कह रहे हो और भविष्य में ऐसी ग़लती नहीं करोगे।

शाहबुद्दीन : (कुछ आशान्वित होते हुए) – मैं मक्कार हूँ। कमीना हूँ महाराज। परन्तु अबकी बार मेरी बात पर और भरोसा कीजिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आइन्दा कभी लौटकर नहीं आऊँगा।

(पृथ्वीराज सोच में पड़ जाते हैं)

धीर पुन्डीर : क्षमा करें महाराज। मेरे ख्याल में आप इनकी बात पर विचार कर सकते हैं, जो व्यक्ति क्षमा की भीख चाहता है उसे एक बार और अवसर दिया जा सकता है।

चामुण्ड : मेरे ख्याल में इन्हें रिहा करना उचित नहीं महाराज क्योंकि यह छूटते ही बाहर जाकर फिर उत्पात मचायेगा। मेरे ख्याल में इसकी बात पर भरोसा करना उचित नहीं है।

पृथ्वीराज : आपका कहना उचित है चामुण्डराय। परन्तु जब यह क्षमादान माँग ही रहा है तो इसे एक अवसर और दिया जा सकता है। (फिर वीर पुण्डीर की ओर मुखातिब होकर) – इसका कसूर तो बहुत बड़ा है वीरवर। परन्तु आप सब सामन्तों से विचार विमर्श और सिफारिश के आधार पर हमारा हुक्म है कि इससे तीस हाथी और पाँच सौ घोड़े बतौर हर्जाने के लेकर छोड़ दीजिए (फिर गौरी की और मुखातिब होकर) जाओ शाह गजनी जाओ और फिर कभी मेरी आँखों के सामने मत आना। (धीर पुण्डीर गौरी के बन्धन खोल देता है और गौरी दुआएँ देता हुआ। प्रस्थान करता है।)

(दृश्य समाप्त)

ग्यारहवाँ दृश्य

(शाहबुद्दीन गौरी का दरबार लगा हुआ है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज द्वारा दी गई मात से क्रोधित है। उसकी फौज के मुख्य सरदार व सलाहकार अपनी-अपनी राय देकर उसका हौसला बढ़ा रहे हैं।)

शाहबुद्दीन : (गुस्से से दाँत चबाते हुए और दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भींचते हुए) – मुझे सख़्त अफसोस है कि मैंने जब-जब हिन्दुस्तान पर आक्रमण करके जीतने की तदबीर चलाई तब-तब यह पृथ्वीराज चौहान बीच में रुकावट बनकर सामने आ गया। (फिर सबकी ओर देखते हुए) कभी-कभी तो मैं यह भी सोचता हूँ कि मैं क्यों हिन्दुस्तान पर आक्रमण करूं। परन्तु मेरा ज़मीर मेरे इन विचारों को मानने नहीं देता। हिन्दुस्तान सोने की चिड़िया है और मैं उसका मोह क्योंकर छोड़ सकता हूँ। उसके नूर के दीदार की चाह ने मुझ पर नशा-सा कर दिया है। (फिर शून्य में देखते हुए ललचाई निगाहों से प्रसन्न होकर) वो देखो वहाँ की सम्पन्नता, वैभवता और राजसी ठाठ-बाट। अब तो मैं उन सबको हासिल करके ही रहूँगा।

नश्तर खान : आप जी छोटा न कीजिए आलीजाह। अगर हम अपना हौसला कायम रखेंगे तो एक दिन निश्चय ही उस सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान को हम पना गुलाम अवश्य बना लेंगे।

शाहबुद्दीन : तुम्हारा कहना ठीक है नश्तर खान। परन्तु हिन्दुस्तान पर फतह कर पाना इतनी आसान बात नहीं है। वहाँ का बच्चा-बच्चा दिलेर है। और पृथ्वीराज (प्रशंसात्मक रूप में आँखें मूंदकर खोलते हुए) वाह, वाह। उसके जैसा सूरमा न हमने आज तक देखा..... न सुना। वह तो शेरों का भी शेर है और काल का भी काल है, उसके सभी सैनिक व साथी अपने देश के लिए मर मिटने को सदा तैयार हैं। (फिर अफसोस करते हुए) – काश! हमारे सैनिकों में भी ऐसी भावना होती तो हम अब तक हिन्दुस्तान फतह कर चुके होते।

नश्तर खान : (सान्त्वना देता हुआ) – आप इत्मीनान रखिए आलीजाह। (फिर दोनों हाथ ऊपर करता हुआ) – वह अल्लाह ताला बड़ा रहम दिल है। आप उस पर भरोसा रखिए। जब उसकी रहमत होगी तो यह हिन्दुस्तान तो क्या, सारी दुनिया पर आपकी हुकूमत होगी।

चोबदार : (प्रवेश करके झुककर सलाम करता हुआ) – जहाँपनाह। हिन्दुस्तान से आलीजाह के नाम पैगाम लेकर कोई आया है।

शाहबुद्दीन : (कुछ सोचकर) – जाओ और उसे बिना किसी रोक टोक के हमारी हुजूरी में पेश करो।

धर्मायण : (प्रवेश करके सलाम करते हुए) – आलीजाह की खिदमत में यह गुलाम सलाम बजा लाता है।

शाहबुद्दीन : (खुश होकर) – क्यों धर्मायण आज तो बहुत दिनों में आये हो और बड़े खुश नजर आते हो। क्या कोई खुशख़बरी लाये हो?

धर्मायण : (उतावला होते हुए खुशी से) – हाँ आलीजाह। बहुत बड़ी खुशख़बरी लाया हूँ। अब आप जल्द से जल्द शाही फरमान जारी कीजिए और अपनी फौजें सजाकर शीघ्र ही हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दीजिए।

शाहबुद्दीन : (आश्चर्य से) – क्या तुम होश में हो धर्मायण। क्या तुम जो कह रहे हो वह होने योग्य है?

धर्मायण : (निश्चिन्तता से) – हाँ महाराज। मैं वहाँ का हाल, आपसी द्वेषभाव और राजपूतों की फूट स्वयं अपनी आँखों से देखकर आया हूँ।

शाहबुद्दीन : (खुशी से अपने पास बुलाते हुए) – अरे दूर क्यों खड़े हो धर्मायण। यहाँ आओ हमारे पास (धर्मायण पास आ जाता है) – अब सुनाओ वहाँ के हाल जो तुम देखकर आये हो।

धर्मायण : (दृढ़ता से) – महाराज। मेरी बात पर यकीन कीजिए। पहली बात तो यह कि इस लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान के अधिकांश बहादुर शूरवीर काम आ चुके हैं और वीर कमास जैसे नीतिवान और विश्वस्त व्यक्ति को पृथ्वीराज ने स्वयं ही मिटा दिया है तथा चामुण्डराय को क़ैदखाने में डाल दिया गया है।

शाहबुद्दीन : (ताली बजाते हुए) –होय, होय। (फिर धर्मायण की ओर देखते हुए) अरे तुम रुक क्यों गये धर्मायण। आगे की सुनाओ।

धर्मायण : (प्रसन्न होकर) – महाराज! पृथ्वीराज स्वयं ऐशो आराम में इतना डूब गया है कि अब न उसे दरबार में आने की फुर्सत है और न ही राजकार्यों में कोई दिलचस्पी रह गई है। वह तो संयोगिता के प्रेम में इतना डूब चुका है कि न उसे अपने राज्य का ख्याल है और न ही अपने दुश्मनों का डर। (फिर कुछ रुकते हुए) और महाराज जैसा राजा वैसी प्रजा। उसके सभी दरबारी, ओहदेदार, सिपहसालार, सरदार, थानेदार, हवलदार, चौकीदार सभी के सभी राग रंग में इतने मस्त हो गये हैं कि उन्हें इनके अलावा कुछ सूझता ही नहीं।

शाहबुद्दीन : (खुश होकर) – बस धर्मायण, बस। अब मेरी समझ में सब कुछ आ गया है। पृथ्वीराज चौहान के राज्य में इस समय बहुत-सी कमजोरियों ने घर कर लिया है। इस वक्त वह एकाएक युद्ध करने की स्थिति में नहीं है। परन्तु अभी तक महाराज जयचन्द का कोई समाचार हमारे पास नहीं आया। हम पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने से पूर्व कन्नोज नरेश के रुख को नजर अन्दाज भी तो नहीं कर सकते।

(सहसा चोबदार का प्रवेश)

चोबदार : जहाँपनाह। कन्नोज का दूत कोई गुप्त सन्देश लेकर द्वार पर उपस्थित है और आपसे मिलना चाहता है।

शाहबुद्दीन : उसे बाइज्ज़त अन्दर आने दिया जाए।

(चोबदार का बाहर जाना व दूत के साथ पुन: प्रवेश करना)

दूत : (अभिवादन करते हुए) – अलीजाह। मैं कन्नौज से महाराज जयचन्द का पैगाम लेकर उपस्थित हुआ हूँ। (पत्र देता है)

(शाहबुद्दीन पत्र पढ़ता है)

पत्र का मजमून (जयचन्द की आवाज़)

शहन्शाह गजनी को जयचन्द का आदाब अर्ज। पहले अपने मन से हमारे प्रति शिकायत को दूर कीजिए। अब हमारी आपसे विनती है कि तुरन्त अपनी सारी फौजें तैयार

करके हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दें। पिछली लड़ाई में पृथ्वीराज के अधिकाँश बहादुर सैनिक काम आ चुके हैं और पृथ्वीराज एवं उसके बाकी योद्धा राग रंग में इतने खो गये हैं कि अब न तो उन्हें राज-काज से कोई मतलब है और न ही अपने दुश्मनों से कोई डर।

यह सही समय है शाह गजनी हिन्दुस्तान पर फतह पाने का। इसलिए देर न करें और तुरन्त फौजें तैयार कर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दें। हमारी फौजें इस जंग में आपका साथ देने को तैयार हैं।

आपका

जयचन्द

शाहबुद्दीन : (सभी की ओर देखकर) - अब हम अपनी विजय के प्रति आश्वस्त हुए। (फिर दूत से) -जाओ दूत। महाराज जयचन्द को कहना हम सेना लेकर शीघ्र पहुँच रहे हैं। (दूत का प्रस्थान। शाहबुद्दीन की हँसी के साथ-साथ प्रकाश मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

बाहरवाँ दृश्य

(मंच पर उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

कजरी : (घबराते हुए) - अब क्या होगा उस्ताद?

जमूरा : गौरी तो पृथ्वीराज पर चढ़ाई कर रहा है और वो लोग तो अभी युद्ध के लिए तैयार हैं भी नहीं बेचारे।

उस्ताद : (निःश्वास छोड़ते हुए) - हाँ रे। ये तो चढ़ाई कर रहा है और उन्हें तो अभी तक इसका भान भी नहीं है।

कजरी : अब आगे क्या होगा उस्ताद।

जमूरा : अच्छा खासा नाटक चल रहा था उस्ताद बन्द करा दिया न आपने।

कजरी : अब आगे का भी तो नाटक दिखाओ उस्ताद, बड़ा अच्छा लग रहा था।

उस्ताद : (रुआंसा होकर) - चलो हटो, अब मेरा मूड खराब हो गया। अब मैं नहीं दिखाता नाटक-वाटक।

कजरी : देखो उस्ताद दिखा दो आगे का नाटक।

जमूरा : नहीं तो .....

उस्ताद : (बात काटते हुए) - नहीं तो क्या? क्या कर लोगे तुम लोग नहीं तो?

जमूरा व कजरी : नहीं तो हम नारे लगायेंगे।

जमूरा : (हाथ ऊपर करते हुए) उस्ताद!

कजरी : हाय, हाय।

उस्ताद : (दोनों को रोकते हुए) - अरे चुप करो उस्तादो। चुप करो। हम तुम्हारी आधी बात मान लेते हैं।

जमूरा व कजरी : आधी? वो कैसे?

उस्ताद : वो ऐसे भई कि अब मैं इस युद्ध का देखा हुआ हाल संक्षेप में बता देता हूँ।

जमूरा व कजरी : लेकिन उस्ताद हम तो नाटक देखना चाह रहे थे।

उस्ताद : अरे भई। मायूस मत हो। अगर कुछ समय मिला तो हम तुम्हें थोड़ा नाटक और दिखा देंगे। लो अभी तो सुनो, युद्ध में क्या हुआ-

धावा किया गौरी ने यों फिर जाय पृथ्वीराज पर।
देश का गद्दार जयचन्द साथ था अभियान पर॥
आ डटे थे युद्ध में तब पृथ्वीराज चौहान भी।
दूर तक था ना अंदेशा युद्ध का विश्वास भी॥
ऐसा हुआ घनघोर मर्दन युद्ध के मैदान में।
देखा नहीं ना ही सुना ऐसा समर संसार में॥
पर क्या करें जब देश में गद्दार पैदा हो गए।
सब और थे निश्चिन्त हो रंग राग में थे खो गए॥
जयचन्द द्रोही देश का, था साथ गौरी का दिया।
लड़कर मिटे चौहान योद्धा, साथ स्वामी का दिया॥

पृथ्वीराज चौहान तो भी , युद्ध करता ही रहा।
नि:शस्त्र होकर भी वह, उत्साह से लड़ता रहा॥
पर अन्त में बन्दी बना, गौरी उसे लेकर चला।
गजनी चलें बन्दी बने क्या हाल पृथ्वीराज का॥

(दृश्य समाप्त)

तेरहरवाँ दृश्य

स्थान : क़ैदखाना

(पृथ्वीराज चौहान गौरी की जेल में बन्द है। वह कुछ सोचता हुआ जेलखाने में चक्कर लगा रहा है सहसा एक साधु चेतानन्द का प्रवेश)

चेतानन्द : (स्वगत) हे प्रभु। जो कल तक सबका राजा था, जिसके सिर पर भारतवर्ष का ताज था। उसकी ये दशा। जिन आँखों के डर से बड़े-बड़े प्रतिद्वन्दी भी काँपते थे, आज उनकी ज्योति इन आतताइयों ने छीन ली है।

पृथ्वीराज : (प्रसन्न हो हवा में दोनों हाथों से टटोलते हुए) - कौन कविराज! कहाँ हो तुम? (वह जैसे ही गिरने को होता है चेतानन्द बने चन्द कवि उन्हें अपनी बाहों में थाम लेते हैं। पृथ्वीराज उन्हें अपने सीने से लगा लेता है, फिर अलग करते हुए) - हे कविराज। भले ही मेरी नेत्र दृष्टि इन कायरों द्वारा छीन ली गई हो, परन्तु मैं आपके चेहरे पर देशभक्ति के भाव, मातृभूमि की दुर्दशा से उद्‌भित क्रोध की लकीरें देख सकता हूँ मित्रवर। (फिर सहज होते हुए) - कहो कविराज आप इतना जोखिम उठाकर यहाँ तक कैसे पहुँचे?

कवि चन्द : (इधर-उधर देखते हुए धीरे से) महाराज मैं जैसे-तैसे बचता बचाता आप तक आ पहुँचा हूँ।

पृथ्वीराज : (व्यग्रता से) - यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कविवर, जो आप यहाँ तक आ पहुँचे पर अब दिल्ली राज्य के भी तो समाचार कहो।

चन्द : (दु:खी होकर) - महाराज। मुहम्मद गौरी ने दिल्ली राज्य में जो लूटपाट मचाई है, उसकी जो दुर्दशा की है वह बताई नहीं जा सकती महाराज (गला भर आता है। फिर सहज होते हुए) - महाराज! अब आप शोक और सन्ताप छोड़िए। आप बहादुर हैं अत: अब आपकी बहादुरी के प्रदर्शन का और अपने दुश्मन गौरी से बदला लेने का अवसर आ गया है । पृथ्वीराज (नि.श्वास छोड़ते हुए विवशता से) - कैसी बहादुरी! कैसा बदला कविराज। आज हम दृष्टिहीन हैं। हर तरफ से लाचार हैं।

चन्द : आप चिन्ता न करें महाराज। मैंने एक युक्ति सोची है।

पृथ्वीराज : (उत्सुकता से) कैसी युक्ति कविराज?

चन्द : महाराज मैंने चेतानन्द बनकर गौरी के राज्य में यह प्रचार किया है कि महाराज पृथ्वीराज चौहान शब्दबेधी बाण चलाने में सिद्धहस्त हैं और उनका बाण सीधा वहीं पर जाकर लगता है जहाँ से शब्द होता है।

मैंने ऐसा प्रबन्ध करा लिया है महाराज कि किले के मैदान में सारी जनता आज आपका यह जौहर देखने को मैदान में एकत्र होगी। वहीं पर दुष्ट मुहम्मद गौरी भी होगा। बस यही मौका है महाराज गौरी से बदला लेने का, उसे खत्म करने का।

पृथ्वीराज : धन्य हो कविराज, आप धन्य हो। भारत माता को आप जैसे सपूतों पर गर्व है। अब मैं निश्चिन्त होकर उस कायर गौरी से बदला ले सकूँगा। जाओ मित्र जाओ और आगे की तैयारियाँ करो।

(चन्द का धीरे-धीरे प्रस्थान। प्रकाश धीरे-धीरे कम होता है फिर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

अन्तिम दृश्य

स्थान : मुहम्मद गौरी के किले का मैदान।

(पृथ्वीराज चौहान के शब्दबेधी बाण का जौहर देखने को भीड़ जमा है मुहम्मद गौरी ऊँचाई पर बैठा है। पृथ्वीराज चौहान को बेड़ियों में जकड़े हुए मैदान में लाया जाता है। कवि चन्द चेतानन्द के रूप में साथ में है।)

मुहम्मद गौरी : (पृथ्वीराज से) – महाराज पृथ्वीराज। आप तो बड़े बहादुर हैं और सुना है आप शब्दबेदी बाण चलाने में पारंगत हैं। हमारी सारी जनता एवं सैनिक आपका यह कमाल देखना चाहते हैं।

पृथ्वीराज : क्या करूँ शाह गजनी। एक महात्मा ने मुझसे इस कार्य को करने का वचन ले लिया है अत: यह जौहर दिखाने को मजबूर हूँ परन्तु आप यदि मेरे पाँवों की बेड़ियाँ खुलवा दें और मेरी कमान मंगवा दें तो अवश्य ही मैं यह जौहर दिखा सकता हूँ।

गौरी : (सिपाहियों से) – महाराज पृथ्वीराज के आदेश की तामील हो (सैनिकों द्वारा पृथ्वीराज की बेड़ियाँ खोलना और उसकी कमान लाकर देना)

नश्तर खाँ : (गौरी से) – अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है हुजूर। मेरी बात मानिए और यह बखेड़ा खड़ा मत कीजिए। पृथ्वीराज बहादुर है अत: इसे वापस बेड़ियों में जकड़ दीजिए।

गौरी : (क्रोध से) – तुम्हारा दिमाग फिर गया है नश्तर खान। यह अंधा और लाचार हमारा कर ही क्या सकता है ?

पृथ्वीराज : (कमान संधानते हुए स्वगत) – हे भगवान। अब तू ही लाज रखना। क्षत्रियों की आन-बान और वचन की रक्षा अब तेरे ही हवाले है प्रभु।

(रणभेरी की आवाज उभरती है जो धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और एकाएक रुक जाती है।)

(कवि चन्द का काव्य पाठ) –

सावधान चौहान हो राख लाज और कान।
ध्यान धरो भगवान का, लेकर हाथ कमान॥
ऊँच नीच का मैं तुम्हें देऊँ ठीक प्रमाण।
शत्रु तेरा है जहाँ सुनले ठीक निशान॥
चार बीस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान॥

(पृथ्वीराज द्वारा इस अनुमान के आधार पर छोड़ा गया तीर सीधा मोहम्मद गौरी को जाकर लगता है। वहाँ उपस्थित लोगों एवं सैनिकों में भगदड़ मच जाती है। इस अवसर का लाभ उठाकर पृथ्वीराज और कवि चन्द एक दूसरे को कटार मारकर इस लोक से प्रयाण कर जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है).....

(नाटक समाप्त)

लडी : मैड़ की

पहला दृश्य

(लन्दन के एक चौराहे का दृश्य। चौराहे पर भीड़ जमा है जहां पर भारतीय कलाकारों द्वारा एक हिन्दुस्तानी नाटक दिखाया जाने वाला है। भारतीय नाटक एवं लोककलाओं को विदेशों में बड़े चाव से देखा जाता है, अत: कई राहगीर भी आते-जाते भारतीय लोक नाटक की इस प्रस्तुति को देखने के लिए रुक-रुककर खड़े होते जा रहे हैं।)

मि. हाल्वे : (सिल्विया से)-सिल्विया सामने हिन्डुस्टानी नाटक हो रहा है, टुम भी देखेगा!

सिल्विया : हाल्वे , टुम भूल गया क्या। हॉम तो हिन्डुस्टान की आर्ट, कल्चर एण्ड पहनावे पर फिदा है।

मि. हाल्वे : ओ, आई रिमेम्बर। तभी तो आजकल टुम हमारी तरफ ध्यान नहीं देता।

सिल्विया : टुम मजाक करता है। टुम खुड हिन्डुस्टान को पसन्द करता है और तभी हमने टुमारे कहने से हिन्दी सीखी, और अब, अब हम वहां की एक-एक बाट को सीखने की कोशिश में हैं।

मि. हाल्वे : गुड। तभी तो हम टुमको लाइक करता है। उतना ही जितना टुम हिन्डुस्टानको।

(चौराहे पर ढ़ोलक की आवाज तेज हो जाती है)

सिल्विया : लैट्स गो नाउ। टमाशा छूटना नहीं चाहिए।

(दोनों का प्रस्थान। दो हिन्दुस्तानी कलाकारों का आपस में बात करते हुए आगमन)

नं. 1 : इन अंग्रेजों का दिमाग खिसक गया है शायद।

नं. 2 : भाई कैसे।

नं. 1 : अरे हम तो हमारे गाँवों के गँवारपन से पीछा छुडाकर यहां तक आये हैं और ये इस स्वर्ग जैसे शहर को छोडकर उन गाँवों की ओर जाने की सोच रहे हैं, मूर्ख कहीं के।

नं. 2 : हां सही कहा रामप्यारी तूने।

नं. 1 : (नाराज होते हुए) तू भी गँवार का गँवार ही रहा न। जा चला जा इन गँवारों के साथ तू भी हिन्दुस्तान।

(फिर क्रोध से) तू यहां अंग्रेज़ों में रहने के काबिल नहीं है।

नं. 2 : (भोलेपन से)- क्यों क्या हुआ, ऐसा क्यों बोल रही है।

नं. 1 : अरे तू अभी तक मेरे नाम को बोलना नहीं सीख पाया तो अंग्रेज़ क्या खाक बन पायेगा।

नं. 2 : (अपने सिर पर चपत लगाते हुए अंग्रेजी लहजे में) - ओ आय एम सॉरी रामप्यारी नहीं, रोमियो।

रोमियो : यस और टुम भी बलदेव नो बट बैल्डो, बैल्डो। (दोनों हँसते हैं)

रोमियो : जल्दी चल अब तमाशा शुरू करना है।

बैल्डो : हाँ जल्दी चलो, हमारा उस्ताद भी इन अंग्रेजों की तरह ही सनकी दिमाग का है, देरी से पहुंचने पर लैक्चर झाड़ेगा।

रोमियो : (अपने उस्ताद की नकल करते हुए) - अरै बावळी छोरी, कैडे चक्कर काटरी छी। (दोनों हँसते हैं)

दूसरा दृश्य

(डुगडुगी बजाते हुए मदारी का प्रवेश। साथ में जमूरा एवं एक छोटी बालिका, जिसका नाम कजरी है मदारी के साथ में चल रहे हैं। मदारी के कन्धे पर एक बड़ा सा झोला है। वह आगे-आगे हुक्का पीता हुआ चल रहा है। जमूरे एवं कजरी के हाथों में ढोलक, लोहे का बंगड एवं बड़ी सी रस्सी है। ये तीनों गाँव को जाने वाली पगडंडी पर चले जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो ये बस्ती में तमाशा

दिखाने जा रहे हैं। मदारी की चाल में उसका उत्साह दिखाई पड़ रहा है जबकि जमूरा एवं कजरी बोझिल कदमों से चल रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानो वे चलते-चलते थक गए हैं।)

कजरी : (हांफते हुए जमूरे से) - अरे राम राम । मर गये आज तो।

जमूरा : हाँ कजरी। हम लोग तो बोझ से दबे जा रहे हैं और ये उस्ताद मजे से हुक्का गुड़गुड़ाते चले जा रहे हैं।

कजरी : अरे धीरे बोल, उस्ताद सुन लेंगे।

जमूरा : अरे सुनेंगे नहीं ..... तो हमें सुस्ताने कैसे देंगे ?

कजरी : (कुछ सोचते हुए) - चल ऐसा करते हैं, उस्ताद को मस्का लगाते हैं थोड़ा।

दोनो (एक साथ) : उस्ताद, उस्ताद।

(उस्ताद अपनी धुन में मस्त है, कोई उत्तर नहीं देता।)

दोनो (पुनः एक साथ) : उस्ताद जी।

उस्ताद : (पीछे मुड़कर मुँह बनाते हुए)- क्या है ?

जमूरा : (सामान ज़मीन पर पटकते हुए) - उस्ताद तम्बाकू कैसी लग रही है ?

उस्ताद : (खुश होता हुआ एवं ललचायी निगाहों से हुक्के की ओर देखता हुआ)- मजा आ गया जमूरे इस बार तो।

कजरी : (समान ज़मीन पर पटकते हुए) - उस्ताद, पता नहीं यह जमूरा आजकल कहां से बहुत अच्छी तम्बाकू बनाना सीखकर आया है। (फिर चापलूसी के अन्दाज में) - आप कहें तो बना दें आपके लिए।

जमूरा : हाँ उस्ताद, (हुक्के की तरफ इशारा करते हुए) इसमें तो कोई दम रहा ही नहीं है।

उस्ताद : (खुश होता हुआ) अच्छा , अच्छा। भई पता नहीं ऐसा अवसर कब मिलेगा (सामने की ओर इशारा करते हुए) ये ऊंची-ऊंची फूलों की हरी-भरी घाटियां।

कजरी : खजूरों के ये ऊंचे-ऊंचे पेड़ और उन पर चहकते हुए पंछी।

जमूरा : और वो मन्दिर के पास बहती नदी का कल-कल करता नाद

कजरी : सब कुछ कितना सुहाना लग रहा है।

उस्ताद : और देखो बाणगंगा नदी की पुलिया के बायीं ओर सियावरजी का धुँधला - धुँधला सा दिखाई देने वाला वह मन्दिर जो इतिहास के गौरवशाली पन्नों को अपने अन्तर में समेटे हुए है।

जमूरा : उस्ताद ये कैसी साहित्यकारों की सी बोली बोल रहे हैं आज आप ?

कजरी : हां उस्ताद, मजा नहीं आ रहा तुम्हारी इस बोली में। अपनी साधारण बोली बोलते तो मजा ही कुछ और आता।

उस्ताद : हां भाई, सही कहा तुम लोगों ने। दुनिया की बहकाने वाली होडा-होडी और विकास की चकाचौंध में आदमी समझने लगा है कि उसने तरक्की कर ली है (व्यंग्य से हँसता हुआ)- बोली-भाषा, खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक रिश्तों, सभी में तरक्की का भ्रम। पागल कहीं का।

जमूरा : उस्ताद, तुम्हारी तबियत तो ठीक है न।

कजरी : (भागकर पास आते हुए) - कहीं भूत-प्रेत की चपेट में तो नहीं आ गये उस्ताद ? कैसी नासमझी की बातें कर रहे हैं।

उस्ताद : चलो छोड़ो तुम लोग नहीं समझोगे।

दोनो : नहीं उस्ताद, समझाओ।

उस्ताद : (जमूरे से)-तुम कहां के ?

जमूरा : बीकानेर का।

उस्ताद (कजरी से) : तुम कहां की ?

कजरी : बीकानेर की।

उस्ताद : तुम दोनों की बोली कौनसी ?

दोनों : बीकानेरी राजस्थानी उस्ताद।

उस्ताद : ये कौनसी राजस्थानी हुई भाई ?

जमूरा : धत् तेरी की उस्ताद। काहे के उस्ताद हुए तुम जब इतना भी नहीं समझते कि राजस्थानी भाषा के नाम पर आज विवाद चल रहा है।

कजरी (हँसते हुए) – अरे जमूरे तू नहीं जानता उस्ताद बहुत चालू हैं। समझते सब हैं पर वो ये देखना चाह रहे हैं कि तुझे कितना ज्ञान है और जनता को इस बारे में तू कितना बता सकता है।

जमूरा : ना बाबा ना। मुझे ज्यादा पता नहीं है।

कजरी : तो फिर जनता को कौन बताएगा इस राजस्थानी भाषा के चक्कर के बारे में ?

जमूरा : (खुशमद करते हुए) – उस्ताद बताएंगे

उस्ताद : (नखरे दिखाते हुए) – चल हट नहीं बताता।

कजरी : (खुशामद करते हुए) – बता दो ना उस्ताद जी।

उस्ताद : (स्वगत) – उस्ताद जी! कितनी मिठास है तुम्हारी वाणी में। (फिर प्रसन्न होते हुए)–चल तू कहती है तो बता देता हूं राजस्थानी का यह सारा झमेला।

कजरी : हां तो मेहरबानो कद्रदानो सायबानो

जमूरा : सुनो, सुनो, सुनो

दोनों : राजस्थानी का ब्यौरा (उस्ताद डुगडुगी बजाता है)

उस्ताद : कर्नल टाड का नाम सुना है तुमने

जमूरा : नहीं तो।

कजरी : कौन थे ये।

उस्ताद : एक विदेशी व्यक्ति जिनहेंने राजस्थान का इतिहास लिखा।

कजरी : क्या । विदेशी व्यक्ति ने लिखा हमारे यहां का इतिहास?

उस्ताद : हां भाई हिन्दुस्तान की भाषा, कला, संस्कृति इन सबमें इतना दम है कि विदेशियों तक को खींच लाते हैं अपनी तरफ (कजरी की चोटी खींचता है)

कजरी : उस्ताद मैं कोई विदेशी हूं जो मेरी चोटी खींच रहे हो।

उस्ताद : नहीं हमारे यहां टांग खिंचाई की आदत है इसलिए मैं आदत से मजबूर हो तुझे खींच रहा हूं।

कजरी : आप कुछ टोड के बारे में कह रहे थे।

जमूरा : अरे पागल टोड तो मेंढ़क को कहते है। उस्ताद कह रहे थे कर्नल टाड के बारे में।

कजरी : हां मैने सुना था। तू अपने आपको ज्यादा समझता है क्या ?

जमूरा : हां तो बता क्या सुना था ?

कजरी : टाड। कर्नल टाड जिन्होंने राजस्थान का इतिहास लिखा था।

जमूरा : तो इसमें तूने कौनसा तीर मार लिया (दोनों झगड़ते हैं)

उस्ताद : अरे, चुप्प। मैं बताता हूं। (फिर तमाशबीनों से) – हां तो मेहरबानो, कद्रदानो, सायबानो सुनो। आगे सुनो जो कर्नल टाड ने हमारी, मतलब राजस्थानी बोली के बारे में लिखा है।

जमूरा–कजरी : सुनो, सुनो, सुनो (डुगडुगी)

उस्ताद : कर्नल साब ने राजपूताना के लिए राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है ।

जमूरा : अच्छा!

उस्ताद : और इसी आधार पर विद्वान ग्रियर्सन ने इस क्षेत्र की बोली को राजस्थानी का नाम दिया । राजस्थान को चार क्षेत्रों में बांटा गया। मारवाड़ के कारण पश्चिमी क्षेत्र की बोली मारवाड़ी, मेवात (अलवर) के कारण पूर्वोत्तरी भाग की बोली मेवाती, जयपुर–हाड़ौत के कारण मध्य क्षेत्र की बोली जयपुरी–हाड़ौती और मालवा की बोली के नाम मालवी पड़े।

जमूरा : और उस्ताद तुम हमेशा वो छूं छूं करते रहते हो वो बोली कौनसी है।

उस्ताद : (इधर – उधर देखता हुआ नासमझी का अभिनय करते हुए)–छूं छूं छछूंदर?

कजरी : (आँखे चलाते हुए) – ढूं.....ढूं.....

उस्ताद : अच्छा ढूँढाड़ी

दोनों : हां

उस्ताद : भाई ढूँढाड़ी को जयपुरी बोली भी कहा जाता है। जयपुर क्षेत्र पहले ढूँढाड़ था।

जमूरा : अच्छा ।

उस्ताद : हां और इसी आधार पर यहां की बोली को ढूँढाड़ी कहा जाने लगा। यह बोली जयपुर क्षेत्र के 40-50 मील के क्षेत्र तक बोली जाती है।

कजरी : अच्छा।

उस्ताद : हां और इसकी एक बोली हाड़ौती भी है इसलिए कुछ भाषा विज्ञानी इसे जयपुरी हाड़ौती भी कहते हैं।

कजरी : पर उस्ताद इसमें हमारी बोली बीकानेरी तो आयी ही नहीं।

जमूरा : अरे पगली वह भी राजस्थानी में ही आ गई होगी।

उस्ताद : हां भाई, और वहां के रहने वाले सामान्य बोलचाल की भाषा में इसे बीकानेरी कहने लगे। पर तुम कोई टैणसण मत रखो हम सब एक हैं और एक-दूसरे की बोली को समझ सकते हैं।

जमूरा : पर उस्ताद मुझे तो तुम्हारी वाली छां छूं, अण्डे - वण्डे बोलना ही अच्छा लगता है।

कजरी : और मूझे भी ढूं.....ढूं.....।

उस्ताद : ढूँढाड़ी।

कजरी : हां उस्ताद और ढूँढाड़ी भी तुम्हारे गाँव मैड़ की।

उस्ताद : जमूरे

जमूरा : हां उस्ताद।

उस्ताद : कजरी।

कजरी : हां उस्ताद (उस्ताद के पास आगे आ जाते हैं)

उस्ताद : हमारी भाषा कौनसी ?

दोनों : राजस्थानी उस्ताद ।

उस्ताद : हम बोल कौनसी भाषा रहे है ?

दोनों : हिन्दी उस्ताद।

उस्ताद : ऐसा क्यों (दोनो चुप्प)

उस्ताद : यही तो। यही तो एक भयंकर प्रश्न है हमारे लिए। कहते कुछ हैं, और करते कुछ..

जमूरा : और हैं। (डुगडुगी)

कजरी : क्या मतलब ?

उस्ताद : मतलब यह कि आज हमने बोली में भी तरक्की कर ली है। भूल गये अपनी मातृभाषा को।

उस्ताद : (फिर ऊंची आवाज में) - कजरी!

कजरी : हां उस्ताद।

उस्ताद : जमूरे!

जमूरा : हां उस्ताद।

उस्ताद : हमने अपनी बोली क्यों बदली ?

कजरी : तमाशबीनों को तमाशा दिखाने के लिए।

उस्ताद : और तमाशा किस लिए दिखाते हैं।

जमूरा : इस पापी पेट के लिए (कजरी जमूरे के पेट पर मारती है।)

उस्ताद : तमाशा कहां-कहां दिखाया ?

जमूरा : फ्रांस, जर्मनी

कजरी : अमेरिका, इंग्लैण्ड

उस्ताद : कितना पैसा कमाया ?

जमूरा : लाखों डालर उस्ताद।

उस्ताद : ठीक कहा जमूरे। आज हिन्दुस्तान में तो तमाशे की कद्र है नहीं पर विदेशों में है। फिरंगी पागल हो रहे हैं, हमारी बोली- भाषा, कला-संस्कृति और रीति-रिवाजों को जानने-सीखने के लिए (जमूरे से) - जा हुक्का ले आ। (जमूरा हुक्का लाता है, उस्ताद हुक्के से एक लम्बा घूंट खींचता है फिर धुएं को आकाश में छोडते हुए - शून्य में देखते हुए) और हमारे देश के लोग। (हुक्के का कश खींचती कजरी सहम जाती है। जमूरा उसके हाथ से हुक्का लेकर चोरी - चोरी घूंट खींचता है फिर हुक्का सामने रख देता है। उस्ताद उसी प्रवाह में) हमारे देश के लोग इसे पिछड़ेपने की निशानी समझकर भूलते जा रहे हैं। थू (थूकता है) पर मैंने अब सोच लिया है।

कजरी : (भय से देखते हुए) - क्या सोचा उस्ताद ?

उस्ताद : यही कि अपनी ही वेशभूषा पहनूंगा और अपने ही गाँव की बोली बोलूंगा।

कजरी : हां उस्ताद। हमें भी अपनी ही बोली में बोलना अच्छा लगता है।

जमूरा : हमारे गाँव के लोगों के बारे में, वहां के अतीत के बारे में जानना अच्छा लगता है।

कजरी : उस्ताद तुम कह रहे थे कि सामने के आपके उस गाँव में सियावरजी का मन्दिर है, वहां का अपना इतिहास है।

उस्ताद : शून्य में देखते हुए) – हां भाई वहां पर एक ग्रहस्थ महात्मा हुए हैं– महन्त श्री गणेशदास जी महाराज। वे ही मेरे गुरु हैं, उन्होंने ही मुझे कला को सीखने का अवसर सुलभ कराकर इस काबिल बनाया कि आज हम लोगों को तमाशा दिखा रहे हैं।

जमूरा : उस्ताद तुम हमारे गुरु हो इसलिए सबसे पहले हम तुम्हारे उन गुरु को प्रणाम करते हैं।

उस्ताद : तो आओ पहले उस महान् गुरु की वन्दना कर लें –
गुरुः ब्रह्मा: गुरुः विष्णो, गुरुः देव महेश्वरा:
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्मा:
तस्मै श्री गुरुवै नमः
तस्मै श्री गुरुवै नमः
तस्मै श्री गुरुवै नमः

उस्ताद : गुरु वन्दना के पश्चात् अब देखो वो..... सामने।

जमूरा : (कजरी से आगे आते हुए) – क्या है सामने?

कजरी : (जमूरे के चप्पल मारते हुए)– साले फिर आगे आ गया तू। मुझे भी तो देखने दे।

उस्ताद : (उन्हे अलग–अलग करते हुए) – अरे भाई लड़ो मत और वो सामने देखो मेरे, मतलब हमारे गुरु महंत श्री गणेश दास जी महाराज का दरबार।
(सामने के दृश्य में खो जाता है।)

जमूरा : कजरी।

कजरी : हाँ जमूरे।

जमूरा : जब–जब हमारे उस्ताद अपने गाँव की बात करते हैं तो वहीं खो जाते हैं।

कजरी : (हाथों से इशारा करते हुए) –गये ये तो काम से।

जमूरा : (उस्ताद के चेहरे के सामने अपना हाथ लहराते हुए) – उस्ताद। उस्ताद।

उस्ताद : (वर्तमान में लौटते हुए) – हाँ रे जमूरे।

जमूरा : उस्ताद ऐसा क्या देख लिया जो खो गये उसी में।

उस्ताद : अपना विगत, छुटपुन के दिन, हमारे देश की धर्म निरपेक्षता, अखण्डता और एकता की एक झलक।

कजरी : कैसी बहकी–बहकी बातें कर रहे है उस्ताद।

जमूरा : मैने चौथी क्लास की पुस्तक में पढ़े थे ये सब। उसमें लिखे हुए थे ये सब। धर्म निरपेक्षता, अखण्ड़ता, एकता वगैरह– वगैरह।

उस्ताद : केवल लिखा ही नहीं है वैसा है भी हमारे देश में।

कजरी : क्यों झूठ बोल रहे हो उस्ताद। कहाँ है धर्म निरपेक्षता, अखण्डता, एकता। देख नहीं रहे कैसे सामुदायिक और जातीय जातीय दंगे चल रहे हैं हमारे देश में। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई ये सब अलग–अलग खेमों में बँटते जा रहे हैं, और तुम कह रहे हो कि मैं उन सबको एक सूत्र में बँधा हुआ देख रहा हूँ।

उस्ताद : (आह भरते हुए) – तुम नहीं समझोगी कजरी। यह सब राजनीतिक चक्रव्यूह है आज के युग का।

जमूरा : वैसा ही चक्रव्यूह जैसा महाभारत में बनाया गया था और जिसमें फँसकर अभिमन्यु मर गया था?

उस्ताद : अरे वाह, तुम्हें तो देश के इतिहास की भी जानकारी है।
(जमूरा गर्व से गर्दन ऐंठता है।)

उस्ताद : (व्यंग्य से) – पर जमूरे उस चक्रव्यूह में ओछापन नहीं था। सिद्धांत थे, तर्क थे, मान्यताएँ थीं। और मैं जिस चक्रव्यूह की बात कर रहा हूँ वह ओछी राजनीति है,कुछ राजनेताओं का व्यक्तिगत स्वार्थ है उसमें। कौमी एकता के टुकड़े – टुकड़े

करके अपना फायदा करने के लिए और आवाम को एक-दूसरे के प्रति भड़काने का प्रयास है चन्द स्वार्थी लोगों का।

कजरी : (आश्चर्य से आँखें फाडते हुए)- क्या कह रहे हो उस्ताद!

उस्ताद : हाँ कजरी। हमारा हिंदुस्तान तो धर्मनिरपेक्षता, कौमी एकता और भाईचारे की मिसाल रहा है।

(दोनों उस्ताद की बातों में खो जाते हैं)

उस्ताद : (उसी प्रवाह में) - हमारे देश के वाशिंदे भले ही विभिन्न मजहबों, जातियों एवं कबीलों में बँटे हुए थे परंतु एक-दूसरे की परम्पराओं में, धार्मिक निष्ठाओं में दखल नहीं दिया करते थे और आपस में हिल मिल कर रहते थे।

कजरी : काश। हम भी पैदा हुये होते उस समय और देख सकते यह सब।

जमूरा : उस्ताद अब समझ में आयी बात कि तुम सामने यही सब देखने में खो गये थे।

उस्ताद : हाँ भाई, हमारे गुरुजी का दरबार भी कौमी एकता की एक जीती जागती मिसाल था। मैड़ गाँव में हिंदू - मुसलमान आपस में हिलमिल कर रहते थे। सभी जातियों के लोग आते थे हमारे गुरूजी के दरबार में। एक वाकया याद हो आया है भाई।

कजरी : कौनसा वाकया उस्ताद ?

उस्ताद : सियावरजी के मंदिर में भजन-सत्संग का आयोजन है। गाँव के सभी जातियों के लोग आ रहे हैं उसमें शामिल होने। महंत गणेश दास जी महाराज मंदिर के आगे दालान में बनी संतों की धूणी के चबूतरे पर अपने शिष्यों एवं भक्तों से घिरे बैठे हैं। सब लोग सुलपी पी रहे हैं। हर जाति, हर धर्म के लोगों के पास अपनी - अपनी साफी है। जब वे खुद सुलपी पीते हैं तो उसके अपनी साफी लगा लेते हैं और यदि दूसरी जाति वालों को पीने को सुलपी देते हैं तो सुलपी से अपनी साफी हटा लेते हैं।

जमूरा : उस्ताद ये साफी क्या होती है और किसी दूसरी जाति-धर्म वाले को सुलपी देने से पहले इसे हटा क्यों लेते हैं ?

उस्ताद : जमूरे, साफी लगभग तीन चार इंच लम्बा और दो इंच चौड़ा बारीक कपड़े का एक टुकड़ा होता है जिसे सुलपी पीते समय लोगबाग गीला करके सुलपी की नली के लपेटकर फिर खींचते हैं घूंट।

कजरी : ऐसा क्यों ?

उस्ताद : भाई इससे तंबाकू का धुआँ छनकर जाता था मुँह में और गीला कपड़ा रहने से घूंट ठंडी भी रहती थी। नुकसान नहीं करती थी तम्बाकू।

जमूरा : वाह क्या सांटेफिक तरीका था तंबाकू पीने का।

कजरी : लेकिन दूसरों को सुलपी देने से पहले लोगबाग साफी को सुलपी से हटा क्यों लेते थे ?

उस्ताद : भाई एक बात बताओ।

कजरी : क्या ?

उस्ताद : क्या तुम किसी दूसरी जाति वाले का झूठा खा सकते हो ?

(दोनों सोच में पड़ जाते हैं)

उस्ताद : मैं बताता हूँ। अभी हमारे देश में धर्म बचा है, धर्मनिरपेक्षता खत्म नहीं हुई है। और विभिन्न जातियाँ इसका प्रतीक हैं। हमारे यहाँ पर सभी धर्मों का आदर किया जाता है। किसी जाति को छोटा या बड़ा नहीं समझा जाता और इसीलिए कोई भी जाति वाला किसी अन्य जाति का झूठा नहीं खाता। सबके अपने-अपने उसूल हैं। इसीलिए किसी जाति विशेष का कोई व्यक्ति जब सुलपी के साफी लगाकर घूंट खींचता था तो इससे उसकी साफी झूठी हो जाती थी और इसीलिए दूसरी जाति वाले किसी व्यक्ति को सुलपी देने से पहले वह अपनी साफी हटा लेता था ताकि दूसरी जाति वाले का मान-सम्मान बना रहे। इसे साफी टालना कहते थे।

जमूरा : और सुलपी से याद आई हुक्के की । क्या उसमें भी साफी लगाते थे लोगबाग ?

कजरी : (रौब से) और नहीं तो क्या। यह भी कोई पूछने की बात है ढींच हो गया है पर अक्ल तो है ही नहीं।

उस्ताद : (कजरी को समझाते हुए) - अरे कजरी उसमें साफी नहीं लगती थी। असल में हुक्के को कळी भी कहा जाता है।

कजरी : कळी। कळी क्या ?

उस्ताद : अरे भाई हुक्के के तीन भाग होते है- चिलम, नैचा और नै।

जमूरा : वाह बड़े मजेदार नाम हैं।

कजरी : जरा खोलकर समझाओ उस्ताद।

उस्ताद : भाई हुक्के के नीचे वाले हिस्से में सामान्यत: पीतल से बना गोल एवं छोटा हांडीनुमा पात्र होता है जिसमें पानी भरा रहता है। उसके ऊपरी भाग पर चिलम रखने के लिए लकड़ी का लगभग एक या आधा फीट लम्बा नलीदार मुँह होता है। इन दोनों को मिलाकर नैचा कहते है।

जमूरा : और चिलम ?

कजरी : सुलपी रे गधे, सुलपी। सुलपी को ही चिलम पीना कहते हैं।

जमूरा : तूने पी होगी तभी तुझे पता है। भैया हम तो ऐसे ग़लत शौकों से दूर ही रहते हैं।

(जमूरे को मारती है।)

उस्ताद : (बीच-बचाव करते हुए) - जमूरे कजरी की बात ग़लत तो नहीं है।

जमूरा : कैसे ?

(कजरी इतराते हुए जमूरे की ओर देखती है ।)

उस्ताद : भाई कुछ लोग सामान्य बोलचाल की भाषा में सुलपी पीने को चिलम पीना कहते हैं पर असल में तो जब सुलपी में तम्बाकू की जगह गाँजा रखकर खींचते हैं तो उसे चिलम पीना कहा जाता है।

कजरी : साले क्यों नाटक करता है उस्ताद के सामने। उस्ताद उसी चिलम की बात कर रहे हैं जो तू रोज रात को मंदिर में उन बाबाजियों के साथ बैठकर पीता है।

(जमूरा कजरी को मारने को होता है।)

उस्ताद : (बीच-बचाव करते हुए) - अरे भाई हुक्के की चिलम भी काफी कुछ वैसी ही होती है परंतु आकार में बहुत बड़ी होती है कटोरेनुमा (हाथों से चिलम बनाते हुए) यह भी मिट्टी की बनी हुई होती है जिसके पेंदे में तम्बाकू रखने के लिए लगभग दो इंच की गोलाई में दो सूत गहरा एक स्थान बना होता है जिसमें लगभग आधा इंच इंच नीचे तक गोलाकार हिस्सा होता है। इसे चिलम कहते हैं जिसके पैंदे में मिट्टी की एक छोटी टिकड़ी, जिसे चुगल कहा जाता है, लगाते हैं, उसके ऊपर तम्बाकू जमाते हैं और उसे मिट्टी की एक बड़ी- सी टिकड़ी से ढंक देते है उसे तवा कहा जाता है। फिर उस चिलम में अँगारे भरकर नैचे में नै लगाकर हुक्का पीते हैं।

कजरी : अभी नै और रह गई जमूरे। हुक्के का इतिहास पूरा नहीं हुआ।

जमूरा : चुप्प। उस्ताद अपनी कला, संस्कृति के बारे में बता रहे हैं और तुझे मसखरी सूझी है। (फिर उस्ताद की खुशामद करते हुए)- उस्ताद बताओ न नै क्या होती है ?

उस्ताद : अरे नै लकड़ी से बनी एक दो-ढ़ाई फीट नली होती है जिसे नैचे के पैंदे में बने मोटे सुराख में लगाकर फिर पीते हैं हुक्का।

जमूरा : ऐसे (घूंट खींचने का अभिनय करता है।)

कजरी : तो क्या उसमें साफी टालने जैसा चक्कर नहीं। सब जातियों के लोग पीते हैं नै से हुक्का।

उस्ताद : नहीं भाई हुक्के का भी एक नियम है।

कजरी : क्या नियम होता है उस्ताद हुक्के का ?

उस्ताद : भाई जब किसी जाति विशेष के लोगों द्वारा हुक्का पीया जा रहा हो और किसी दूसरी जाति का व्यक्ति वहाँ पहुँच जाए तो वे लोग नैचा और नै नहीं देंगे पीने को।

जमूरा : तो क्या वह उन लोगों के साथ हुक्का पी नहीं पायेगा ?

उस्ताद : अरे भाई हुक्का, सुलपी, ये ही तो हैं विभिन्न जातियों, धर्मों को मिलाने वाले जहाँ सब लोग एक साथ मिलकर पीते हैं सुलपी और हुक्का।

कजरी : बताया था न गधे उस्ताद ने पहले कि कैसे सब लोग एक साथ मिलकर पीते थे सुलपी।

जमूरा : अरे पर मैं तो हुक्के की पूछ रहा हूँ।

उस्ताद : भाई दूसरी जाति वाले को पूरा हुक्का न देकर नैचे से चिलम उतार कर देते थे पीने को।

जमूरा : चिलम तो मैने देखी है। बहुत बड़ी होती है, मुँह में लेकर कैसे पीयेगा कोई बेचारा।

कजरी : (उसके चप्पल मारते हुए) –साले पहले तो ऐसे पूछ रहा था उस्ताद से हुक्के के बारे में जैसे पहले कभी देखा ही न हो और अब कह रहा है कि मैने चिलम देखी है बोल ? (मारती है)

उस्ताद : (उन्हें छुड़ाते हुए और हुक्का पीने की मुद्रा बनाते हुए) – छोड़ कजरी। जमूरे! ऐसे।

जमूरा : (खुश होते हुए) – वाह उस्ताद वाह।

कजरी : बड़ा ही मजेदार इतिहास है उस्ताद हुक्के का तो।

उस्ताद : समाज को नियंत्रित भी करता है, अनुशासन में रखता है और अच्छे कार्य करना सिखाता है हुक्का।

जमूरा : हुक्का ? (कजरी व जमूरा दोनों हँसते हैं)

उस्ताद : तुम लोग मेरी बात को मजाक समझ रहे हो। परंतु यह सच है भाई।

कजरी : हुक्का सिखाता है आदमी को अनुशासन? वाह उस्ताद वाह कहीं नशा तो नहीं कर आये आज?
(जमूरा कजरी को मारता है)

उस्ताद : (कुछ सोचते हुए): भाई 'हुक्का-पानी बंद' होने की बात सुनी है तुम लोगों ने ?

कजरी : (जमूरे को चिढ़ाते हुए) – उस्ताद सुनी तो नहीं पर 'हुक्का-पानी बंद' ऐसा सुनने में मजा आ रहा है।

जमूरा : सुनाओ न उस्ताद 'हुक्का-पानी बंद ' करने की कहानी।

उस्ताद : अरे भाई यह कोई कहानी किस्सा नहीं, सच्ची बात है।

जमूरा-**कजरी**: (एक साथ) – क्या ?

उस्ताद : भाई यदि कोई व्यक्ति चोरी, डकैती, बदमाशी या अन्य कोई ग़लत काम करता था तो उसे समझाया जाता था, और यदि वह फिर भी नहीं मानता था तो गाँव की पंचायत में उसकी शिकायत की जाती थी और पंचायत उस अपराधी को हुक्का- पानी बंद तक करने की सजा दे देती थी।

जमूरा : तक का मतलब? क्या यह बहुत बड़ी सज़ा होती थी ?

उस्ताद : बड़ी। अरे इतनी बड़ी सज़ा होती थी कि इससे अपराधी का जीना दूभर हो जाता था।

कजरी : कैसे ?

उस्ताद : अरे हुक्का-पानी बंद होने का मतलब अपराधी का सामाजिक रूप से बहिष्कार करना होता था।

जमूरा : यह क्या होता था उस्ताद ?

कजरी : (उत्सुकता से) – सज़ा में उसके कोड़े लगाए जाते होंगे ?

जमूरा : मुर्गा बनाया जाता होगा (मुर्गा बनता है) ऐसे।
(कजरी उसके ऊपर बैठ जाती है। जमूरा उसे मारने को होता है, उस्ताद दोनों को छुड़ाकर अलग-अलग करता है।)

उस्ताद : अरे भाई ऐसी सज़ा नही दी जाती थी।

कजरी : (लयात्मक ढ़ंग से) – तो फिर कैसी सजा दी जाती थी ?

उस्ताद : भाई या तो उसे अर्थदंड .....

जमूरा : (बात बीच में काटते हुए) – ..... अर्थदंड क्या ?

उस्ताद : भाई अर्थदंड का मतलब रूपये – पैसे के रूप में जुर्माना करना होता है।

कजरी : (जमूरे को डाँटते हुए) – चुप बे बात बीच में काटता है (फिर उस्ताद से) बताइए न उस्ताद कैसी सज़ा दी जाती थी।

उस्ताद : या तो उसे अर्थदंड (जमूरे की ओर देखता है, जमूरा समझने के इशारे से गर्दन से हामी भरता है) दिया जाता था जिसे सामाजिक कार्यों पर खर्च कर दिया जाता था।

जमूरा : या फिर?

उस्ताद : या फिर उसे ऐसी सज़ा दी जाती थी जिसमें वह पूरी बिरादरी को दावत देता था। और हाँ कभी-कभी तो सज़ा में लोग पति-पत्नी तक बन जाते थे जिनकी हरी-भरी फुलवारी आज तक महक रही है। (उँगली से सामने की ओर इशारा करता है।)

कजरी : मैं समझी नहीं उस्ताद।

उस्ताद : (कुछ संकोच करते हुए) - भाई मानो किसी युवक ने किसी लड़की को बुरी निगाहों से देख लिया और उसे छेड़ दिया।

जमूरा : राम राम राम राम।

उस्ताद : हाँ जमूरे। फिर ऐसी लड़की से कोई दूसरा युवक विवाह करने में हिचकिचाता था अत: पंचायत अपराधी को ऐसी सज़ा देती थी कि अपराधी उस लड़की से विवाह करे।

कजरी : क्या लड़की से बिना पूछे ही थोप दिया जाता था यह निर्णय ?

उस्ताद : नहीं रे। पंचायत उस लड़की के अभिवावकों से पहले पूछती थी और उसके अभिवावक अपनी पुत्री से पूछते थे तभी लड़की के हितों को ध्यान में रखकर ऐसा निर्णय सुनाया जाता था।

कजरी : यह सब छोटी जातियों में होता होगा उस्ताद।

उस्ताद : कजरी। हमारे देश में सभी जातियाँ एक समान हैं, कोई जाति छोटी-बड़ी नहीं होती और सभी जातियों में ये कानून- कायदे लागू होते रहे हैं।

जमूरा : उस्ताद आपकी यह बात जँची नहीं कि कोई जाति छोटी नहीं होती और कोई दूसरी जाति बड़ी नहीं होती। जातियों का भेदभाव तो होता ही आया है हमारे देश में।

उस्ताद : जमूरे।

जमूरा : हाँ उस्ताद।

उस्ताद : (शून्य में देखते हुए) - तुम जातियों के, धर्म के बँटवारे को, उसके मर्म को समझ नहीं पा रहे (फिर कजरी व जमूरे की ओर मुखातिब होकर) और तुम लोग क्या, शायद आज की पीढ़ी ही समझ न पाये।

कजरी : तो समझाओ न उस्ताद।

उस्ताद : भाई, पहले गाँव में हर जाति का व्यक्ति अन्य जाति के व्यक्ति को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानता था और उसी आत्मीयता से उसे संबोधित करता था।

जमूरा : कैसे उस्ताद ?

उस्ताद : भाई, मानो एक ब्राह्मण का लड़का पढ़- लिखकर बड़ा अफ़सर बन जाता है।

जमूरा : (बात काटते हुए कमीज की कॉलर ऊपर करते हुए) बन गया उस्ताद।

कजरी : (उसे चप्पल मारते हुए) अबे साले ठूंठ बात बीच में काटता है। (फिर उस्ताद से) हाँ उस्ताद आगे बताओ।

उस्ताद : भाई वह बड़ा अफ़सर जब अपने गाँव आता था तो पता है अपने पिता से आयु में बड़े व्यक्ति को कैसे सम्बोधित करता था ?

कजरी : कैसे करता था उस्ताद ?

उस्ताद : (कजरी की ओर हाथ जोड़ते हुए) राम राम ताऊजी।
(कजरी हँसने लगती है।)

जमूरा : चाहे वह शूद्र वर्ण का आदमी ही हो उस्ताद?

उस्ताद : अरे पगले। वर्ण - व्यवस्था तो प्राचीन काल में सामाजिक कार्यों को ठीक प्रकार से निपटाने के लिए बनाई गई थी। परंतु इंसान ग़लती कर बैठा और जाति, धर्म, वर्ण, समुदाय, इन सबकी अलग-अलग गठरी बाँधकर बैठ गया। परन्तु हमारा हिन्दुस्तान इन सबमें एकता की मिसाल रहा है।

कजरी : काश! हम भी देख पाते यह सब और हर जाति वाले को चाचा, ताऊ, बुआ, ऐसा कहकर बुला पाते। मजा आता।

उस्ताद : ऐसी बात है (फिर कुछ सोचकर) तो वो देखो सामने गुरुजी का दरबार। आज मंगलवार का दिन है और भजन शुरू होने से पहले वो देखो लोगबाग सुलपी पी रहे हैं। बच्चे लोग सत्संगियों के बैठने हेतु बरामदे में दरियां बिछा रहे हैं।

दोनों : हाँ रे। दीख रहे है लोगबाग।

उस्ताद : (उसी प्रवाह में)– देखो भजन शुरू हो गये हैं। कोई हारमोनियम बजा रहा है, कोई ढ़ोलक, कोई मंजीरे। और कोई भाव – विह्वल होकर भगवान के सामने नृत्य प्रस्तुत कर रहा है। (उस्ताद उंगली से सामने दिखाता है। कजरी व जमूरा देखते हैं।)

गाना प्रारंभ

स्थाई

च्यारूं मेर चूंथरा कै माळै बैठ्या गाँव हाळा
सुलपी कै साफी लपेट घूंट खींचीं छीं

1

सियावर का मिन्दर आगै धूणी सन्तां की,
ऊंकै आगै चूंथरो छै माटी को लीप्यो
मंथ गणेश दास जी बात खैर्‌या ज्ञान की
सुणता–सुणता गाँव हाळा सुलपी पीर्‌या रै।

2

भोळी देर व्हैगी खैतां–सुणतां बातां ज्ञान की
भजना मैं बैठांगा बेटा एक हेलो दै
छोरो जाओ लेर आवो मांयं सूं दर्‌यां
अइयां खैर मंथ जी धूणी सैं उतर्‌या।

3

चूंथरा कै नीचै, दूब को मैदान छै
कऊ मैं, आँच बाळ हाथ सेकीं छोरा
सूखा पत्ता ल्यार गेर करीं धूंधाडो
चालो ऊठो मंथजी जार बैठ्या रै।

4

सद्‌यो बाबो ढोलकी कै थाप मारी
टाबर–टोळी भक्त आर बरण्डै बैठीं
सुवालाल मंथ अर रूडजी बाबोसा
मंथजी कै आर सारा ढोक देर्‌या रै

5

सूरदास कीरां कै अर बब्बूजी बैठ्या
मंथ गणेश दास जी मंजीरा बजार्‌या
सगर्‌यो कीर म्हादेवो अर बाळ की ढ़ाणी का
जै हडमान बोलता, भाग्या आर्‌या रै

6

भूरजी बैद्‌जी भजन गार्‌या
छींड, भ्याजर पूराळा का लोग आया
सोन्यो नायक पेटी नै बजावै देखो कइयां
धम धमाधम व्हैरी देखो रूडजी नाचीं रै

7

मांयनै भण्डार मैं चाय छै उकळरी
भाटा माळै टाबर, अदरक नै दचकीं
जायफळ भी मिलगो डेकची कै मांय
बाल्टी मैं छाण–छूण रामझारो भरीं रै

8

कप्पां नै आंगळयां मैं लटकायां देखो
छोरा–छोरी चाय पाबै भजन्यां नै चाल्या
थोड़ी देर थ्यावस खाल्यो मंथजी बोल्या
वांकै साथ भजनां बैठ्या भजनी चाय पीवीं रै

9

थोड़ा वां सै ऊठ लोग दूब मैं आ बैठ्या
सुलपी भर बात करता साफी लगा पीर्‌या

चालो चालो मंथजी हेलो देर्‌या चालो
ओज्यूं बैठ्‌या भजनी देखो भैरवी गार्‌या रै

10

तडकाऊ को टेम व्हियो आरती उतारूं
अइयां सोच मंथजी पूजा करबा तांईं
फूलबत्ती जो इक्कीस दैणै हाथ लिय्यां
बावैं हाथ टणटणी बजावीं करता पूजा रै

11

तंत्र-मंत्र सारा बोल्या, बोल्या जै हडुमान
कोई-कोई ढोक देबा लेटगा बरण्डै
मंथजी कै चरणां पटक्या टाबरां नै मांयां
मंथ गणेश दास जी वांनै आशीर्वाद देर्‌या रै
आशीर्वाद देर्‌या रै
आशीर्वाद देर्‌या रै
बोलो मंथ गणेश दास जी महाराज की

(पुस्तक मेरे गीत दिखायें गाँव : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

जमूरा-कजरी : जै हो।

जमूरा : वाह उस्ताद वाह। आँखें खोल दी इस भजन ने तो। वाकई हमारा देश धर्म निरपेक्ष है। हमारे यहाँ सभी जातियों, धर्मों एवं वर्णों के लोग एक ही परिवार की भाँति मिलकर रहते रहे हैं।

कजरी : उस्ताद कितने महान् थे आपके गुरुजी।

जमूरा : हाँ उस्ताद। ऐसे महान् संत का आज गुणगान होना चाहिए। : काश, आज के साहित्याकार ऐसे - ऐसे महान् गुरुओं की आराधना में कुछ लिख पाते।

उस्ताद : भाई लिखा गया है उनका गुणगान भी।

कजरी : अच्छा!

उस्ताद : हाँ भाई इस भजन के पश्चात् अब सुनो उस महान् गुरु की भक्ति में समर्पित एक भजन जो गाँव मैड़ के ही संस्कृत के

एक विद्वान स्व. श्री विश्वनाथ जी शर्मा ने लिखा था और आज से चालीस पैंतालीस वर्ष पूर्व तक मैड़ - अंचल में आयोजित सत्संग - कीर्तनों में गाया जाता था। सुनोगे तुम लोग ?

दोनों : हां उस्ताद, सुनेंगे।

उस्ताद : तो लो भाई सुनो.....

कहो धन्य गणपति दास नै .. हनुमत नै .. ध्याव.. छै.. ,
हनुमत नै . ध्यावै.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर॥
ध्यान देके सुनो जरा, दास का सुनाऊं हाल,
भक्ति में भरपूर कहिए , धर्म को सके ना टाल,
कहां कैसा काम किया, सबको बताऊं हाल।
जयपुर जिला बीच एक, मैड़ नामक ग्राम कहिए ,
मैड़ से पश्चिम की ओर, बाणगंगा धाम कहिए ,
बाणगंगा ऊपर वन में, सियावर स्थान कहिए ,
सियावर के पास मित्रों, हनुमत का दरबार कहिए।
हो गये प्रेम में लीन, बन गये भक्ति के शौकीन,
करी जब उन्नत की तरकीब,
प्रेम से हनुमत ल्यावै छै....।
कहो धन्य गणपति दास नै .. हनुमत नै .. ध्यावै.. छै.. ,
हनुमत नै . ध्यावै.. छै.. वो बजरंग नै ध्यावै.. छै.. ॥ टेर॥
वर्तमान बड़ के नीचे, पहले भी स्थान था,
सादा से पत्थर के रूप, छोटा सा हनुमान था,
छोटी सी गुमटी थी यहां, और ना मकान था,
जा के देखी मूरती, फिट पाँच का अंदाज था,
कीमत पूरी पाँच सौ, और पाँच का विकास था,
इससे ज्यादा गाड़ी भाड़ा, बैल खर्चा और था,
किवाड़ों की जोड़ी, चूना, पट्टी- भाटा और था।
कर दिया खर्च कुछ और,
जिमाकर विप्रों को उस ठौर,
हो गये राजी नन्द किशोर,

हो गये राजी नन्द किशोर,
रकम शुभ काम लगावै छै..।
कहो धन्य गणपति दास नै .. हनुमत नै .. ध्यावै.. छै.. ,
हनुमत नै . ध्यावै.. छै.. वो बजरंग नै ध्याव.. छै.. ॥ टेर॥
ध्यान देके सुनो जरा, पूजा का बताऊं नेम,
जायफल का भोग लागे, पूजा होवे तीनूं टेम,
बिना तोल घी का देख्या, करता देख्या हमने होम,
धूप की महकार देखी, और देख्या भारी प्रेम,
छोटे छोटे बाल बच्चे, रोग में हुए थे जाम,
उनके खाली झाड़ा देवे, औषधि का ले ना नाम,
झाड़ा से ही ब्हाल होवे, ऐसा देख्या हनुमान।
सुनो तुम, नाम गणेश ही दास,
करत है हनुमत की अरदास,
करेंगे हनुमत बेड़ा पार,
करेंगे हनुमत बेड़ा पार,
भजन विश्वनाथ बणावै छै..।
क्कहो धन्य गणपति दास नै .. हनुमत नै .. ध्यावै.. छै.. ,
हनुमत नै . ध्यावै.. छै.. वो बजरंग नै ध्याव.. छै.. ॥ टेर॥

कजरी : वाह उस्ताद वाह कितने महान् थे महन्त श्री गणेशदास जी महाराज।

जमूरा : उनकी भक्ति, उनके परमारथ के कार्य, कितनी प्रेरणा देते हैं। उस्ताद अब ले चलो जल्दी तुम्हारे गाँव में।

कजरी : हां।

(उस्ताद, जमूरा एवं कजरी तीनों का प्रस्थान)

कजरी : उस्ताद पहाड़ियों के बीच में यह साँप..

जमूरा : हैं कहां है साँप ?

कजरी : अरे डरपोक साँप नहीं। साँप जैसी पगड़ंड़ी। कितनी अच्छी लग रही है।

जमूरा : और उस्ताद वो दाहिने हाथ को जो सुन्दर सी पहाड़ी है उसकी तलहटी में जो घना बरगद का पेड़ है कितना अच्छा लग रहा है।

कजरी : उस्ताद उस पेड़ के इर्द-गिर्द जो गोल चबूतरा बना है उस पर चलकर बैठें थोड़ी देर ?

उस्ताद : (हँसता हुआ)-चलो भाई चलो चलकर थोड़ी देर आनन्द ले लो इन हरी-भरी घाटियों का भी।

जमूरा : क्या बात है उस्ताद। बड़े खुश हो रहे हो।

उस्ताद : हां रे जमूरे खुशी की तो बात ही है। अपनी जन्मभूमि की ओर जा रहा हूं वर्षों बाद।

(तीनों चने खा रहे हैं)

कजरी : (चने चबाते हुए)- उस्ताद कितना अच्छा सुना था इस गाँव के बारे में।

जमूरा : और वाकई यहां का आस-पास का इलाका है भी वैसा ही।

कजरी : उस्ताद और बताओ न तुम्हारे गाँव मैड़ के बारे में।

जमूरा : हां उस्ताद पुरानी बातें। अतीत के चलचित्र (शून्य में देखता है)

उस्ताद : तुम्हारे जन्म से पहले की बात है, सुनोगे ?

कजरी : हां उस्ताद, पर आपकी अपनी बोली में शुद्ध ढूं ढूं..... (जमूरा चपत लगाता है)

कजरी : (मुँह से उगलने का अभिनय करते हुए)-ढूँढाड़ी में।

जमूरा : पर हमारी बोली में और उस्ताद की बोली में थोड़ा अन्तर है।

कजरी : कोई बात नहीं जमूरे। है तो राजस्थानी ही। चाहे वह जोधपुर की हो, कोटा की हो, जैसलमेर की हो, अलवर की हो...

जमूरा : (टोकते हुए) हो गई चालू। अरे बस, बस, बस ...

कजरी : (उसे झिडकते हुए) बोलने दे। चुप्प..... (फिर खुश होते हुए) बीकानेर की हो या जयपुर की। परन्तु हम सब आपस में समझ लेंगे।

उस्ताद : (खुश होकर उठता हुआ सामने की ओर इशारा करते हुए)- तो भाई सुणो। वै सामांनै धोळा-धोळा सा घर दीखर्‌या छीं.....

कजरी : कैडे। मूंनै तो दीखर्‌या ही कोनै।

जमूरा : अरै तेरा डिय्यां नै खोल अर नीकां देख वै सामानै डूंगरी कै नीचै दीखर्‌या.....

कजरी : (आँखे गडाकर सामने देखती हुई)-हां रै, अब दीख्या। कैड्या की छीं वै झूंपड्यां अर मकान?

उस्ताद : अरै भाई वाई छै मैड़ गाँव। अइयां सुणबा मैं आवै छै अक जद पाण्डवां नै अज्ञातवास मिल्यो तो वै राजा विराट कै नौकर - चाकर बण अर वांका भिखा को एक बरस को टेम बैराठ मैं ही बिताया।

कजरी : अरै उस्ताद, कदे तो खो छो बैराठ अर कदे विराट?

जमूरा : या कांई चक्कर छै?

उस्ताद : अरै एक ही बात छै। पैली ई को नांव विराट छो पाछै समय बीततां बीततां ऊं जगां को नांव बैराठ व्हैगो अर अब फेरयूं विराट व्हैगो।

कजरी : अरै उस्ताद वाही के विराटनगर।

जमूरा : बात व्हैरी छी मैड़ की अर पोंछगा विराटनगर। वाह उस्ताद वाह। कीली देर गंगाजी पोंछगा न थे भी।

कजरी : कांईं की कीली अर कसी गंगाजी?

जमूरो : अरै कजरी, उस्ताद बतार्‌या छा मैड़ कै बारा मैं अर पोंछगा विराटनगर।

कजरी : हां रै। अब आई मेरी समझ मैं साँची बात।

उस्ताद : अरै विराटनगर कोई मामूली जगां थोडी ही छै।

जमूरो : क्यूं, कांईं ख़ास बात छै ऊं मैं?

उस्ताद : अरै अबार भजन सुण्यो जींसै कोनै पत्तो चाल्यो के अक मंथ गणेश दासजी जिस्या कई सन्त - म्हात्मा अर तपसी- ऋष्यां का पग भी उण्ड्या की भौम पर पड्या छीं।

जमूरो : अर और?

उस्ताद : और? (सोचता व्हियां) तो ल्यो मैं थांनै हात्यूं हाथ ही दिखा द्‌यूं छूं। ल्यो देखो ....

गीत बावन कूणा

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

जमूरो : उस्ताद, पैली ज्यो भजन सुण्या छा म्हांनै तो ऊंसै ही पत्तो पड़गो छो अक मैड़ गाँव मैं अस्या- अस्या कर्मयोगी व्हिया छीं।

उस्ताद : अरै थांनै कइयां पत्तो चाल्यो कर्मयोगी का बारा मैं ?

कजरी : कसी बावळी बात करो छो उस्ताद, खुद ही तो थांका गुरुजी की बातां बताओ छो अर अब म्हांनै पूछोछो अक कइयां पतो चाल्ये।

उस्ताद : अरै मैं कर्मयोगी किताब कै तांईं खैर्‌यो छूं।

जमूरो : कसी कर्मयोगी किताब, अब या कस्यो नयो तुर्‌रो हेर ल्याया उस्ताद जी?

उस्ताद : अरै बावळाओ। आपणा गाँव को एक आदमी मंथ गणेश दासजी की जीवनी लिख्यो छै,जींको नांव कर्मयोगी छै।

जमूरो : ऊंमैं कांईं वांकी बातां ही लिख्यो छै वा?

उस्ताद : ना रै। ऊं किताब मैं मैड़ कूण्डळा की सैंकड़ां बरस पैल्यां की बातां छीं। ऊंमैं मंथ जी को जीवन - चरित। वां सैं मिलबाळा-जुलबाळां को नांव। यै सब लिख्योड़ा छीं।

जमूरो : (राजी व्हैता व्हियां)- म्हांका नानेरा हाळां का नांव भी व्हैगो।

उस्ताद : अरै थांका कांईं, सब पुराणां लोगां को, चोखा - चोखा काम करबाळां कै बारा मैं लिख्योड़ो छै ऊं किताब मैं।

कजरी : अछ्या! या तो ब्होत बड़ी बात छै।

उस्ताद : अर ऊं सैं भी बड़ी बात या छै अक महाराज जी की ईं किताब को विमोचन भारतीय ज्ञानपीठ का पैली हाळा निदेशक डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय कै हाथां सूं दिल्ली मैं एक ब्होत बड़ा समारोह मैं पुर-पुरार नै व्हियो छो।

जमूरो : अरै कजरी, या तो ब्होत बड़ी बात छै भाई।

कजरी : उस्ताद जी।

उस्ताद : हां खै कांई खै छै।

कजरी : म्हे भी फडांगा या किताब।

जमूरो : (मूंडो बणातां हुयां) - हां म्हे भी फडांगा या किताब। काळा अक्षर भैंस बराबर। फडबो आवै छै?

कजरी : (लीतरो काढ़ अर ऊंनै दिखाता व्हियां) हां तो फडेसरी की पूँछडी, तूनै तो अंग्रेजी फडबो आतो दीखै?

जमूरो : अंग्रेजी नै सरी, पण हिन्दी तो फड ही ल्यूं छूं। चौथी फैल छूं समझी?

कजरी : तो कांई। तू कांई उस्ताद सूं ज्यादा फड्योडो थोडी ही छै। उस्ताद फड दींगा अर मैं सुण ल्यूंगी (फेर उस्ताद सूं) क्यूं उस्ताद, थे कतरा फड्योडा छो?

उस्ताद : क्यूं कांई लेबाटै पूछै छै?

कजरी : अइयां ही बस।

उस्ताद : अरै नाण अमरसर सैं शास्त्री की परीक्षा पास कर्‌यो छो, पण अब तो वा कॉलेज ही बन्द व्हैगो।

जमूरो : क्यूं, क्यूं बंद व्हैगो। कांई कबाड़ो कर्‌या छा थे उण्डे?

उस्ताद : (दु:खी व्हैता व्हियां)-अरै आज आपणो देश अंग्रेजीकरण मैं फस्योडो छै।

कजरी : कइयां?

उस्ताद : अरै अंग्रेज तो आपणा देश सूं चलेगा, पण आपां लोगां की गुलामी करबा की आदत अभी तक कोनै गई। (फेर दर्शकां की ओर देखतो व्हियो) - आज आपणा देश का लोग बेद, शास्त्र, संस्कृत यां सब नै फडबो छोड़ता जार्‌या छीं।

जमूरो : अच्छ्या।

उस्ताद : हां रै जमूरा, दूसरा देश हाळा तो आपणा देश की यां बातां नै सीखर्‌या छीं, अपणार्‌या छीं अर आपणा देश का लोग म्हाडा अंग्रेजी फडबाटै बावळा व्हैर्‌या छीं। (फेर सामानै आंगळी सैं इशारो करता व्हियां)- देखो वै सामानै छोटी-छोटी ढाण्यां मैं भी प्राईवेट अंग्रेजी इस्कूलां का बोर्ड टंगर्‌या।

जमूरो : अर देखो वांकी टाई कैडी नै जारी छै।

कजरी : उस्ताद मेरी बात नै तो खागा नै।

उस्ताद : कइयां।

कजरी : उस्ताद, या बताओ अक थे आठवीं पास कर्‌याक कोनै या सास्तरी तक फडर ही छोड दिया? (उस्ताद अर जमूरो हँसी छीं)

कजरी : (जमूरा नै चप्पल दिखाता व्हियां)-क्यूं रै दांतल्या कैंयां ठी ठी काढै छै यां नै?

उस्ताद : (बीच-बचाव करता व्हियां)-अरै कजरी सुण।

कजरी : कांई?

उस्ताद : देख मैं तूनै मंथजी की जीवनी फड अर सुणाद्यूंगो। बस अब तो ठीक?

जमूरो : उस्ताद थे खिया छा अक आपणा गाँव को एक आदमी महाराज जी की जीवनी लिख्यो छै।

उस्ताद : हां भाई सही बात छै। वा आदमी आपणा गाँव की बातां आपका साहित्य मैं लिख्यो छै।

कजरी : उस्ताद क्यांटै चक्कर द्‌यो छो। मेरी माँ खैरी छी अक थांका गाँव..

जमूरो : (ऊंकी बात काटता व्हियां) फेर्‌यूं बोली थांको गाँव। अरै बावळी आपणी माँ मैड़ की छै। तो या गाँव आपणो नानेरो व्हियो। अर नानेरो कोई परायो थोडी ही व्हैबो करै छै। वा भी आपणो ही गाँव छै।

उस्ताद : हाँ कजरी अब मैड़ नै थांको मत बोलजे, आपणो ही खीजे। हां अब खै कस्यो चक्कर देबाकी बात खैरी छी।

कजरी : उस्ताद सांची खैरी छी।

जमूरो : अरै कांई खैरी छी सांची। खै तो, अब खै दै।

कजरी : उस्ताद थांका.. (फेर अपणै माथै कै चपत लगाता व्हियां)- मेरो मतलब आपणा गाँव को कोई साहित्य लिख्यो ही कौनै गयो।

उस्ताद : या बात तू कांई आधार पर खै छै भाई।

कजरी : उस्ताद मेरी माँ खैरी छी।

उस्ताद : तेरी मां नै पतो कौने।

कजरी : कैंयां कौने पतो। ल्यो मैं मेरी माँ नै बुलावूं छूं माँ .....ओ माँ.....

उस्ताद : (ऊंनै डपटतां व्हियो)-अरै च्युप्प।

कजरी : तो म्हांवळी माँ कांई झूंठ खै छी?

उस्ताद : नहीं रै। तेरी मा सांची खै छै। अबसैं पैली आपणी बोली मैं, आपणा गाँव का बारा मैं कांई लिख्यो ही कौनै गयो छो, पण अब आपणा ही गाँव को एक आदमी लिखर्‌यो छै हर बात आपणां गाँव की।

जमूरो : कांई नांव छै ऊंको।

उस्ताद : नांव-नूंव नै छोड़ो। बात असी छै अक वा अपणा ढूं.....

कजरी : ढूं.....ढूं.....

उस्ताद : हां रै। वा अपणा ढूँढाड़ी गीतां मै आपणै अण्ड्या की बोली-चाली, रीति-रिवाज, रिश्ता-नाता, बार-त्युंवार, यां सबका बारा मैं लिख्यो छै। बोलो सुणोगा।

कजरी : हां

उस्ताद : देखोगा

जमूरा : हां

उस्ताद : तो भाई ल्यो ऊं एक-एक गीत नै देखो, समझो अर जाणो।

कजरी : वैंय्यां ही जिय्यां जैपर का चौरायां मालै लिख्योड़ो र्‌है छै ठहरो। देखो। अर जाओ।

(तीनवां को चालबो। थोड़ी देर तक चालता र्‌हबा कै पाछै)

कजरी : उस्ताद। उस्ताद।

उस्ताद : हां कांई छै।

कजरी : उस्ताद, म्हे तो आपक्याया। अब पंगा कौने चाल्यो जाय।

जमूरा : मोटर मैं बैठ अर चालांगा अब तो (कजरी नै भी ज़मीन पर बैठा ले छै)

उस्ताद : अरै अण्ड़े कैडे छै बस । चाल्या चालो पगां पंगा हीं पगां पंगा हीं.....

कजरी : ना उस्ताद ना कोनै चाल्यो जाय अब तो। अर वा देखो उण्डी कै बैराठ का डूंगर कांणी सूं मोटर आबा की आवाज़ आरी छै।

जमूरो : देखां मैं सड़क माळै कान लगार देखूं छूं।

(जमूरो अर कजरी दोन्यूं कान लगार देखीं छीं)

(गाणो-नाचणो)

कजरी : अरै बांदरोळ का घाटा मांयां नार बोलै छै

जमूरो : मोटर पडी-पडी धूँधावै तेवड़ी दूर दी खै छै

दोनों : तेवड़ी दूर दीखै छै रै तेवड़ी दूर दीखै छै
तत् तत् तत् तत् तिगदा दिगदिग थै .. 8
तत् तत् तत् तत् तिगदा दिगदिग थै .. 8
तत् तत् तत् तत् तिगदा दिगदिग थै .. 8
तिगदादिगदिगि थै तिगदादिगदिगि थै
तिगदादिगदिगि
ता

जमूरो : सम पर धूं धूं.....(चक्कर लगावै छै)

कजरी : देख्या उस्ताद आयी नै मोटर आबा की आवाज।

उस्ताद : (दर्शकां कांणी जार अपणा मन मैं)-
अब कांई करूं यां नै कैंया समझाऊं। मेरा बेटा यै तो अण्ड़े ही पग फा दिया (फेर वां कै कन्नै जार)- अरै पण अण्ड्या की मोटरां मैं तो ब्होत भीड़-भाड़ व्है छै। बूढ़ा बड़ा डोकरा, छोरा-छापरा। सब बैठ्या बैठ्या बीड़ी पीवीं छी बसां मैं।

कजरी : उस्ताद बीड़ी सिगरेट पीबो.....

जमूरो : अरै बीड़ी, सिगरेट पीबानै धूरमपान करबो खींची फड्योडां की भाषा मैं।

कजरी : अरै फड़ेसरी की पूंछड़ी। फेर्‌यूं बीच मैं बात काट्यो नै। ल्या तेरा कान नीचै ल्या।

(जमूरो ऊंकी चोटी खींचै छै)

जमूरो : (चोटी खींचता हुयां)-लै आगा नै नीचै कान।

उस्ताद : (बीच बचाव करता व्हियां जमूरा सूं)-छोड़ रै छोड खबड़दार. ज्यो छोरी की चोटी कै हाथ लगायो तो। (फेर कजरी सूं) अर कजरी, तू जद ईं कै बराबर की व्है जाय नै, जद पकड़ लीजे ईं का कान।

कजरी : (ताळी बजातां व्हियां)-जद तक तो या बूढ़ो बांदरो भी व्है जायगो। खों खों (बांदरा की नकल करै छै।)

उस्ताद : अरै मेरा उस्तादो। मैं थांकी सगळी बातां मान ल्यूंगो पण थे लड़ो मत (फेर जमूरा सूं) देख रै जमूरा अब ईं की बात मत काटजे बीच मैं (फेर कजरी सूं)-हां कजरी, खै अब तू तेरी बात।

कजरी : (कुछ सोचता व्हियां) कांई खैरी छी मैं? भूलगी उस्ताद मैं तो।

उस्ताद : अरै बीडी सिगरेट (फेर जमूरा कै कांणी देखता व्हियां)-धूरमपान की।

कजरी : हां उस्ताद धूम्रपान करबो। बीड़ी सिगरेट पीबो तो ब्होत बुरी बात छै। ईं सै काळजो फुंक जाय छै, टीबी व्है जाय छै। अर मूंड़ा मैं सूं बास भी आवै छै।

जमूरा : हां जद ही तो तू भी कदे कदे उस्ताद का हुक्का मैं सूं खींच ले छै सुट्टो।

कजरी : (आँख्या दिखाता व्हियां)- अर साळा तू। तूभी तो खींचै छै सुट्टो। (दोन्यू लड़ीं छीं। उस्ताद छुड़ावै छै)

उस्ताद : छोड़ो रै छोड़ो। पण तू अइयां बता अक तूनै कइयां थाक?

कजरी : अरै उस्ताद मैं मेरी मामी कै साथ एक बार बकर्यां चरा री छी, तो राधाकान्जी का मिन्दर मैं ज्यो स्कूल छै नै ऊंका मास्टरजी टाबरां नै फड़ार्‌या छा कोई किताब।

उस्ताद : अरै देखो वा सामानै सूं बस आगी। ल्यो मैं रुकवाऊं छूं। थे दोन्यू एकोड़ी नै हट जाओ अर अब ईं मैड़ जाबाळी बस की सवारी को आनंद ल्यो।

गीत मोटरगाड़ी

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

जमूरो : वा वा वा वा मजो आगो उस्ताद ईं बस मैं तो।

कजरी : अरै ईं मैं तो बकरी, ऊंका बच्या सै का सै आगा । तूनै थाक छै जमूरा, अबार जद मैं बस मैं सूं उतरबाटै ऊभी हुई तो बकरी पाछा सैं मेरी चोटी नै ही खाबा लगी।

उस्ताद : अर तूनै थाक ही कौने पड्यो।

कजरी : उस्ताद जद वा मेरी चोटी नै मूंड़ा मैं लिई जद मैं तो अइयां जाणी अक थां दोन्यां मैं सैं कोई खींचर्‌यो छै। पण जद थां दोन्यां नै मैंरै अगल बगल मैं देख्या जद मैं पाछाड़ी नै देखी अर बकरी नै धमकायी जद छोडी वा। (हँसै छै।)

जमूरो : अर ऊंनै धमकातां ही वा तेरी निय्यां बोली व्हैगी में में। अर ऊंको मूंडो खुलतां हीं तू तेरी चोटी नै खींच ली।

कजरी : (जमूरा नै मारता व्हियां)-मैं में में करूं छूं बोल?

उस्ताद : (बीच - बचाव करता व्हियां)- अरै थे दोन्यू फेर्‌यूं लड़बै लागगा। लड़ो मत । अइयां करो वा सामानै बड़ा महादेव जी को मिन्दर दीखर्‌यो छै उण्डे चाल अर कलेवो - धलेवो करल्यो थांनै भूख लाग्याई व्हैगी।

दोनों : हां उस्ताद। कांई म्हांका मन की बात खैदी।

उस्ताद : तो अब कलेवो करबा की पाँच मिन्ट की छुट्टी

तीसरा दृश्य

(जमूरो, कजरी अर उस्ताद तीन्यूं बड़ा महादेव जी का मिन्दर कै सामानै बण्या चूंथरा माळै बैठ्या बैठ्या रोटी खार्‌या छीं।)

कजरी : उस्ताद या सामानै सूं धम धम की आवाज़ क्यांकी आरी छै?

जमूरो : हां उस्ताद, अर बीच बीच मैं चूड़ी खणकबा की भी।

कजरी : अच्छ्या मेरा बेटा तूनै खाली चूड्यां की खणक ही सुणायी दी। लै तेरा कांनां को इलाज तो छै मेरे कन्नै (चप्पल निकाळबो चावै छै)

उस्ताद : अरै नुंगराओ खायां पीयां पाछै भी लड़बै लाग्या ? (फेर कजरी नै धमकाता व्हियां) क्यूं रै छोरी जद देखै जद लाग जाय छै ई बिचापड़ा कै।

कजरी : तो उस्ताद मैं खूं जी कै उल्ठो ही क्यूं चालै छै या लामळ्यो। (फेर चप्पल कांणी हाथ.....)

उस्ताद : फेर्यूं

कजरी : हां तो फेर बताद्यो या कसी आवाज़ आरी छै (जमूरो मूंड़ा सैं बोलतां बोलतां चुप्प व्है जाय छै)

उस्ताद : अरै भाई या आवाज़ तो नाज छड़बा की आरी छै।

कजरी : या कांई व्है छै ?

जमूरा : उस्ताद म्हे तो अतरा बड़ा व्हैगा पण कदे सुण्या ही कोनै छड़ाई (फेर कजरी काणी देखतो व्हियां ऊंची गुद्दी कर अर)- हां फढ़ाई जरूर कर्‌या छा।

कजरी : अर वा भी साळा चौथी फैल। उस्ताद ही तेरा सैं कम सैं कम दो-तीन किलास ज्यादा फड्योडा छीं। सास्तरी तक।

उस्ताद : (वांनै न्यारा-न्यारा करता व्हियां)-अरै नाज छड़ाई को मतलब नाज, मतलब जौ, गिऊं यांनै ओंखळ मैं गेर अर कूटबा नै खीं छीं।

जमूरा : तो यांने क्यूं कूटीं छीं ?

उस्ताद : अरै यां की पिसाई करबा सूं पैली यां नै साफ करबा तांई।

कजरी : तो कूट कूट अर कोई अतरो बारीक चून थोड़ी ही बण जायगो जितरो पिस्या - पिसाया लक्ष्मी भोग जिसी मोमजामी की थैली को चून व्है छै।

उस्ताद : अरै थे समझ्या कौनै। नाज नैं तो ई बात आटै छड़ीं छीं अक ऊंका फूसका-वूसका अर ऊपर लाग्योडो गोबर - माटी हट जाय।

जमूरो : (सूग आबाको सो मूंड़ो बणाता व्हियां) -उस्ताद तो कांई नाज कै गोबर भी लाग जाय छै।

कजरी : कतरा सूगला छीं गाँव का अै लोग। अस्या गोबर सैं अड्योड़ा नाज नै ही खा लीं छीं।

जमूरो : हां रै अर सैर का लोगा। थैल्यां को पिस्यो पिस्योडो चून खांवी छीं जद ही देख कतरा गोरा-गोरा व्हीं छी तेरी निय्यां । (उसके हाथ लगाता है)

कजरी : (आंख्यां काढ़ती व्हियां) - देख रै गोबर्‌या, मेंरै हाथ नहीं लगावैगो।

उस्ताद : अरै वाह। तो गाँव मैं आतां ही अण्ड्या की पुराणी बातां जाणगी अर बोलबै लागी।

कजरी : कसी पुराणी बातां उस्ताद ?

उस्ताद : पाछै बताऊंगो। पैली थांकी ऊं बात की जवाब दे द्यूं अक खराब चून अै गाँव हाळा खावी छीं अक सैर हाळा।

जमूरो : सैर हाळा तो साफ सुथरो चोखो ही खावीं छीं ।

उस्ताद : (दोन्यां सूं) - अब अइयां बताओ अक ज्यो थैल्यां मैं चून आवै छै, ऊंनै थे गिवां सैं पिसतो व्हियां देख्या के ?

दोन्यूं : नहीं तो

उस्ताद : अरै तो बात असी छै अक गाँवां मैं तो जौ - गिंवां नै पीसबा सूं पैल्यां वांनै छड़ ली छीं जींसैं वांको गोबर- माटी हट जाय छै अर फेर वै ऊंनै पाणी सैं धोर फेर सुखार पिसावीं छीं चक्की मैं। अर या थैल्यां को चून। कांई थाक अइयां बिना छड्यो गोबर लग्योड़ो ही गेर देता व्हींगा चक्की मैं। तो भाई अब थे ही बताओ अक काईं गाँव हाळा खराब चून खावीं छीं ?

जमूरो : हां उस्ताद अब आयी बात समझ मैं। गाँव हाळा तो निखालिस चून खांयं छीं।

कजरी : तो उस्ताद चाल अर दिखाद्यो नै अक यै लुगायां नाज कैंयां छड़ीं छी।

जमूरो : देख लै तू ही खै री छे अक नाज लुगायां ही छड़ीं छीं। अर म्हे.....

उस्ताद : अरै म्हे का बच्चा आदमी तड़काऊ कै ही हळ-बळद ले अर खेत मैं पोंछ जांयं छीं।

कजरी : साळा तू अइंयां मत समझ जे अक आदमी बैठ्या-बैठ्या खाट तोड़ीं अर नाज बिचापड़ी लुगायां हीं छड़ीं। (फेर्यूं उस्ताद कांणी देखता व्हियां) क्यूं उस्ताद?

उस्ताद : हां भाई हां। चालो चाल अर देख ल्यां छां

गीत नाज छड़ीं

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

कजरी : वा उस्ताद वा कतरो सुथरो जीवन छै गाँव को। मेरो मन करै छै अक मैं भी नाज छडूं।

जमूरो : पण पैली मूसळ जितरी बड़ी तो व्है जा।

कजरी : (चप्पल काढ़तां व्हियां)-साळा तू छै नै मूसळ को मूसळ तेरी ही टांट पकड़ अर ओंखळी मैं मारुंगी धैं धैं (चप्पल मारै छै। जमूरो बैठ जाय छै। चप्पल उस्ताद कै लाग जाय छै)

कजरी : (ड़रपती हुयां)- मूंसै गलती व्हैगी उस्ताद।

उस्ताद : कोई बात कोनै-देखो वै थांकै निय्यां हीं सामानै भोभळ्यां का टाबर लडर्या।

जमूरा : कैड़े। मूनै तो दीख्या ही कोनै।

कजरी : अरै तेरा डिंय्या नै नींका खोल अर देख। वै सामानै गाड़ी कै कन्नै लड्रया।

जमूरो : हां रै। अब दीख्या। पण उस्ताद या सड़क कै किनारै ब्होत पुराणी गाड़ी छै जीं मैं ही गूदड़ा-गांथड़ा पड्या छीं। कांई यै ईं गाड़ी मैं ही सोवीं छी?

कजरी : हां उस्ताद कांईं यां कै घर बार कोनै?

उस्ताद : भाई या तो राजस्थान का इतिहास की खास बात छै।

कजरी : पण म्हे भी तो राजस्थान का ही छां म्हांनै कैंयां कोनै थाक?

उस्ताद : अरै भाई सैंकडां बरस पैल्यां सब जाणै छा यां भोभाळ्यां का बारा मैं। पण धीरै धीरै म्हे सब भूलगा आपणो ही इतिहास।

जमूरो : उस्ताद मूंनै थोड़ो थोड़ो याद आर्यो छै। मेरी चौथी की किताब मैं फड्यो छो चित्तौड का बारा मैं जीं मैं यां भोभळ्यां का बारा मैं लिख्योड़ो छो।

कजरी : हां नींकां फड्यो छो जद ही तो फैल व्हैगो चौथी मैं। अब अपणी स्याणपत मत लगा अर उस्ताद की सुण लै। हां थे ही बताओ उस्ताद जी।

उस्ताद : उस्ताद जी। (खुश व्हैता व्हियां जमूरा कै उछल अर चपत लगाता व्हियां)-सुणरै जमूरा। अर छोरी नै भी सुणबादै। तो भाई सुणो । अै भोभळ्या छीं नै ज्यो महाराणा परताप का वंशज मान्या जांय छीं।

जमूरो : अतरा बड़ा वीर परतापी राजा का वंशज और गाड्यां मैं रहर्या छीं या कांई बात उस्ताद जी?

उस्ताद : (आह भरता व्हियां)-हां रै जमूरा। बात असी ही छै।

कजरी : बताओ उस्ताद आगै बताओ।

उस्ताद : (शून्य मैं देखता व्हियां) - भाई महाराणा परताप जद म्हैल छोड़ अर जंगळां मैं र्हैबै लाग्या तो या परतिज्ञा करी छी.....

कजरी : कांई उस्ताद?

उस्ताद : अक जद तक अपणा राज्य चित्तौड़ पर वापिस अधिकार नै कर ल्यूंगो ज़मीन पर ही सोऊंगो।

जमूरो : फेर?

उस्ताद : महाराणा परताप कै पाछै वांका यै वंश हाळा भी वां की ऊं परतिज्ञा नै निंभार्याछीं।

कजरी : कैंयां।

उस्ताद : भाई यै घर बणार कोनै र्हीं। गाड़ी मैं ही र्हीं छीं। या ही वांको घर छै। या ही वां को संसार छै।

जमूरो : जद ही कतरा खुश दीखर्या छीं सब का सब।

कजरी : अतरा खुश तो महल - माळियां मैं रहबाळा भी कोनै देख्या कदे।

जमूरो : उस्ताद चालो यां कै कन्नै चाल अर देखां

कजरी : हां।

उस्ताद : तो ल्यो भाई देखो यां गाड़िया लुहारां की जिन्दगी भी।

गीत भोभळ्या

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

जमूरो : उस्ताद यां भोभळ्यां नै म्हे तो ब्होत ही छोटा आदमी समझर्‌या छा।

कजरी : पण अै तो वाकई ब्होत ऊंचा खानदान का निकळ्या।

उस्ताद : हां। अर खूब मेहनत करबाळा भी छीं।

जमूरा : उस्ताद यां की ओर सरकार ध्यान कोनै दे के?

उस्ताद : अब तो ध्यान देरी छै भाई। कई गांवां मैं सरकार यां कै आटै घर बणा दिया यांनै एक जगां बसाबाटै

कजरी : उस्ताद अब अण्डे ही र्‌होगा अग गांव नै आगै भी दिखाओगा?

जमूरो : हां उस्ताद, थे तो म्हांनै टाबरां की निय्यां बैलावो छो। चालो अब आगै चालो गाँव मैं।

उस्ताद : अइयां करां, पैली उण्डे वै सिक्कां का घरां कनै ज्यो सेढ़ माता को मिन्दर छै नै उण्डे चाल अर ढोक देल्यां माता कै।

कजरी : उस्ताद सब तरां की माता को नांव सुण्या पण या सेढ़ माता कांई व्है छै ईं को नांव तो कदे सुण्या ही कोनै।

जमूरो : अर या सिक्कां को घर गांव मैं कद सूं व्हैगो। सिक्का तो बैंक हाळा निकालीं छीं अर थे यां सिक्कां को घर गाँव मैं बतार्‌या छो। (कजरी कांणी देखता व्हियां)–क्यूं?

कजरी : हां उस्ताद, जमूरो सांची खैर्‌यो छै। क्यूं?

उस्ताद : अरै थे तो मेरी खोपडी चाट जाओगा म्हाडाओ। गाँव की बातां नै समझो ही कोनै।

जमूरो : तो समझा द्‌योनै उस्ताद।

कजरी : जद ही तो आया छां म्हे थांकै साथ।

उस्ताद : समझा बा सूं मतलब?

कजरी : उस्ताद या कस्यो बाजो बाजर्‌यो छै?

जमूरो : कैडे?

कजरी : अरै देख वा....डूंगर कांणी बाजर्‌यो (सब उण्डी कै देखीं छीं)

उस्ताद : अरै खैडे चोरी व्हैगी दीखै भाया।

जमूरो : थांनै कैंया थाक?

कजरी : हां उस्ताद थांनै कैंया थाक चोरी को?

जमूरो : कांई दूसरो धंधो भी तो न कर लिया भायलां कै साथ?

उस्ताद : च्युप्प।

कजरी : उस्ताद या तो जमूरा की बात को जवाब द्‌यो नहीं तो ईं की बात सांची छै?

उस्ताद : अरै ईं गाँव मैं असी रीत बणाई छी।

जमूरो : कुण बणाई छी रीत।

कजरी : (चप्पल निकालबाटै व्होता व्हिंयां) फेर काट्‌यो बात?

उस्ताद : (ऊंको हाथ पकडता व्हियां)–अरै भाई गाँव हाळा आपस मैं मिलर ही बणाई छी या रीत।

कजरी : कसी रीत?

उस्ताद : अरै जद ईं गाँव मैं कोई कै भी घर मैं चोरी व्है जाय छै तो फकीरां कै कादर्‌यो आपको बांक्यो.....

कजरी : बांक्यो कांई?

जमूरो : फेर्‌यूं काटी नै बात।

कजरी : (चप्पल काडबा व्हैती व्हियां)– अरै तो साळा या नयो नांव पैली कदे सुण्यो छो?

जमूरो : नहीं तो?

उस्ताद : (वां दोन्यां नै न्यारा– न्यारा करता व्हियां)–अरै कजरी बांक्यो एक तरां को बाजो व्है छै, जियां को ब्याव, शादी मैं बाजा बजाबाळा बजावीं छीं।

जमूरो : पण उस्ताद फकीरां कै कादर्‌यो ही क्यूं बजावै छै ऊं बांक्या नै?

उस्ताद : देखो मैं थांनै बताद्‌यूं अक एक तो गाँवां मैं ज्यो बोली भाषा बोली जाय छै नै वा दो तरां सैं बोली जाय छै ।

कजरी : (जमूरा सैं) फेर कोई नयो तुर्रो।

जमूरो : हां उस्ताद अब या कस्यो नयो लिफाफो खोलर्‌या छो।

उस्ताद : अरै बडा काम की बात छै गांवां की हुश्यारी की।

जमूरो : कांई ?

उस्ताद : देखो भाई जद गाँव का बड़ा लोगां नै वांकै खुद कै सामांनै बुलावीं छीं, या वाकां जाणबाळां कै सामानै बुलावीं छीं तो दूसरी तरयां सै बुलावी छीं अर वांकै पीठ पाछै दूसरा नाँव सैं।

कजरी : कइयां ?

जमूरो : कोनै समझ्या म्हे तो।

उस्ताद : (टांट खुजातां व्हियां कजरी सैं) - तेरी दादी डीलडोल सैं भोळी मोटी छी नै ?

जमूरो : थांनै कइयां थाक ?

उस्ताद : अरै एक बार मैं थांनै बुलाबाटै थांकै घरां कै बारानै ऊभो छो जद थांकी माँ आपकी भायल्यां सूं थांकी दादी का बारा मैं खैरी छी।

कजरी : अब टरकाओ मत। मैं जांणू छूं थांकी बैलाबाकी बिद्या। पूछर्‌या छा मेरी दादी की बात और पोंछंगा मेरी माँ की भायल्यां मैं।

जमूरो : कीली देर गंगाजी पोंछगा नै।

कजरी : हां वा बात बताओ। मेरी दाद्‌ी मोटी छी मेरी निय्यां। बोलो (सामै आर मोटी बणै छै।)

उस्ताद : काँई नांव छो तेरी दादी को ?

कजरी : संझ्या

उस्ताद : तेरी मां वांनै कांई खै छी ?

कजरी : भूजी।

उस्ताद : पण तेरी माँ तेरी दादी कै पीठ पाछै आपकी भायल्यां नै पतो छै कांई नांव सै ऊंका बारा मैं बतारी छी ?

कजरी : कांई ?

उस्ताद : बुल्डोजर।

कजरी : (चप्पल निकाळ अर उस्ताद नै मारबाटै ऊंकै पछै - पाछै भागै छै। जमूरो बचावै छै)

जमूरो : क्यूं मारै छै उस्ताद नै।

कजरी : (रोता व्हियां) यै आपणी दादी नै बुल्डोजर खिया।

उस्ताद : तू ई तो खैरी छी अक गांवां मैं दो तरां की बोली कइयां बोली जाय छै बताओ। अर अब जद बतारयो छूं तो बुरो मानगी।

कजरी : तो बतार्‌या कैडै छो। थे तो मेरी दादी को नांव बिगाडर्‌या छो।

उस्ताद : हां कजरी अंइयां ही कादर फकीर भी ब्होत बडो कलाकर छो। हर ब्याव शादी मैं जद बाजो बजावै छो -

कजरी : बाजो कांई ?

जमूरो : अरै बैंड रै, मेरी मांवसी बैंड।
(कजरी मारबाटै चप्पल काडबाटै व्है छै)

उस्ताद : (बचाता व्हियां)-हां रै कादर ऊं बैंड को मास्टर छो रोजीना तो शाम नै वा घर घर सैं जा अर रोटी मांगर ल्यावै छो पण बाजो ब्होत चोखो बजावै छो। सुर, ताळ, लय या को ब्होत ज्ञान छो। जद ही तो रोटी भी गीत गाबा का लहजा मैं ही मांगै छो ।

दोन्यू : कइयां ?

उस्ताद : (हाथ फैलार मांगता व्हियां) - अलाय बलाय दूर भागीगीं ल्या दे दै ए माँ रोटी.....
(दोन्यूं ऊंका हाथ मैं रोटी म्हेल दीं छीं)

उस्ताद : क्यूं रै। मैं थांनै भिखमंगो लागूं छूं ?

कजरी : उस्ताद थे अतरी बढ़िया तरां सूं मांगर्‌या छा अक म्हांसैं बिना दियां रिह्‌यो ही कोनै गयो।

उस्ताद : जद ही तो कादर फकीर नै सै लोग भाग - भाग अर दे छा रोटी।

कजरी : पण थे दो तरां की बोली कै बारा मैं बतार्‌या छा।

उस्ताद : हाँ भाई। लोग बाग सामानैं अर वांका जाणबाळा पिछाणबाळां कै सामानै तो ऊंनै खै छा कादर मास्टर। पण पाछा सूं .....

जमूरो : पाछा सूं कांई ?

उस्ताद : कादर्‌यो फकीर । अइयां ही छींतर नै पाछा सै खै छा छींतर्‌यो। पहलाद नै पैलाद्‌यो।

जमूरो : अब आई बात समझ मैं।

कजरी : गाँव की दो बोल्यां की।

उस्ताद : पण भाई उमर मैं बडा लोग कोई नै ऊंकै सामानै भी दोन्यूं तरां का नांवां सूं बुला सकै छा।

(बांक्यो बाजबा की आवाज तेज व्हैरी छै)

कजरी : उस्ताद या बांक्यो कद तक बजातो र्‌हगो। देखो कैंया मस्त व्हैर बजार्‌यो छै।

उस्ताद : हां भाई या गाँव मैं चोरी व्हैबा की सूचना छै सब नै।

कजरी : ईंसै कांई व्हैगो?

उस्ताद : हर घर मैं सूं एक एक आदमी आवैगो अण्डे ईं बड कै नीचै। (शून्य मैं देखता व्हियां) पंचायत लागैगी। खाट मैं घाल अर दरोगा कै बींज्या बाबा नै ल्यावींगा। फैसलो वहैगो अक चोर हेरबाळी पलटण मैं कुण-कुण व्हींगा। कस्या गाँव कांणी जावींगा।

जमूरो : अर फेर?

उस्ताद : चोरी को पतो चालैगो। चोर सूं डंड ले अर चोरी गया ढाँढाँ कै साथ सै का सै अण्डे बडा म्हादेव जी कै ही वापिस आवींगा।

जमूरो : उस्ताद म्हे भी देखांगा या सब।

कजरी : अर सिक्कां का मकान का बारा मैं भी पाछै बताज्यो।

जमूरो : सेढ माता कै भी ढोक पाछै द्यांगां।

उस्ताद : तो ल्यो भाई। महादेव जी का मिंदर की पैड्यां छड अर मिंदर मैं ऊपर चाल अर बैठ जाओ।

जमूरो : चालो चालो।

उस्ताद : पण डरपज्यो मत।

कजरी : क्यूं?

उस्ताद : मिन्दर मैं ऊपर मुरारी व्हैगो।

जमूरो : फेरयूं नयो तुर्रो।

कजरी : मुरारी कुण ?

उस्ताद : बाण्यां कै मुरारी ज्यो बावळो व्हैगो अर अब असी धुन लागी अक अण्डे महादेव जी का मिन्दर मैं आर सारै दिन खोर पीसै छै ।

कजरी : तो ऊंका घर का ऊंको इलाज़ कोनै कराया के ?

उस्ताद : अरै कई जतन कर‌या् रै पण जद कोई फायदो नै व्हियो तो हार-थक अर र्‌हैगा बिचापडा।

जमूरो : उस्ताद मूंनै तो डर लागबै लाग्यो अब मुरारी सूं।

कजरी : अर जद तू बावळो व्है जायगो तो म्हांनै डर लागैगो। क्यूं उस्ताद?

उस्ताद : (बीच बचाव करता व्हियां) - चालो चालो ऊपर चाल अर बैठो जल्दी। देखो गाँव हाळा आबै लागगा।

(तीन्यूं ऊपर जार बैठ जांय छीं। पंचायत जुडबा लागगी)

गीत- कादर्‌या को बांक्यो

(बांक्या की आवाज़)

(पार्श्व से -बोलो शंकर भगवान की, जय।)

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

कजरी : वाह उस्ताद वाह। कतरी एकता छै गाँव हाळा मैं। सब जात्यां का लोग आर भेळा व्हैगा अंडे संकट का टेम मैं।

जमूरा : पर उस्ताद। ईं पंचायत मैं हिन्दू दीख्या, मुसलमान दीख्या, पण सिक्ख अर ईसाई कोनै दीख्या। या कांई बात छै ?

उस्ताद : (शून्य मैं देखता व्हियां) भाई जमूरा या बात तो तगड़ी पूछ ली तू भी।

कजरी : तो ईं की बात को जवाब द्यो।

उस्ताद : भाई जद आपणा देश को बँटवारो व्हियो तो आपणा गाँव मैं हिन्दू अर मुसलमान तो आगा पण सिक्ख अर ईसाई अल्पसंख्यक व्हैबा कै कारण पैली तो अण्ड्या तक आया ही कोनै।

जमूरा : अर अब।

उस्ताद : (नि:श्वास छोडता व्हियां) – अरै जमूरा अब तो गावाँ का हालात ही बदलगा। लोगबाग दीन- ईमान, काण – कायदा, बडां को आदर करबो, सभी नै भूलगा। आपस मैं लडबै लागगा। भाई-भाई का ख़ून को प्यासो व्हैगो। लोगां का मन मैं लालच आगो। जद लोगबाग खुद का भायां की ज़मीन नै ही दाबर्‌या छीं, हडपबाटै बावळा व्हैर्‌या छीं तो वै वां सिक्ख अर ईसाइयां नै बसबाटै कैड्‌या सूं दीं धरती।

कजरी : हाँ उस्ताद, जमानो तो बदलगो या सुणबा मैं आवै छै।

जमूरो : उस्ताद थे तो भी तो ई गाँव का छो। थांकी भी तो व्हैगी भाई-बाँटा की धरती। ऊंमैं सूं ही देद्‌यो वांनै बसबा आटै।

कजरी : हाँ उस्ताद, थे तो पुराणो टेम देख्योडा छो।

जमूरो : थांको तो दिल दरियाव छै।

उस्ताद : (फेर्‌यूं नि:श्वास छोडता व्हियां) – थांकी बात तो सही छै भाई। पण मेरी भाई-बांटा की धरती नै तो मेरा भाई-भतीजा दाब मेल्या छीं। मैं फडबा-लिखबाटै अर फेर अतरा बरस आपणां देश की संस्कृति, कला, नृत्य-संगीत यां का प्रचार-प्रसार कै ताईं लोगां कै साथ विदेश मैं र्‌हियो तो मेरा भाई-भतीजा सोच्या अक मेरै कन्नै तो खूब पीसा व्हैगा अर अब मै वापिस गाँव आऊंगो ही कोनै। (फेर दोन्यां नै कन्नै-कन्नै लेता व्हियां) एक बात बताऊं।

दोन्यूं : (कन्नै आर) – बताओ।

उस्ताद : मूनै अइयां लागै छै अक वै मन ही मन मैं मेरी धरती नै आपस मैं बाँट भी लिया व्हींगा म्हाड़ा।

कजरी : थे गया कोनै थांकी धरती नै संभाळबा ताईं ?

उस्ताद : गयो रै, कई बार गयो पण म्हाडा घर हाळा ही लडबै लागगा। भगवान का मिन्दर की पूजा करबा को हवालो देबै लागगा।

जमूरो : अर उस्ताद थे गाँव का बारा मैं, अपणी कला, संस्कृति का प्रचार-प्रसार कै बारा मैं विदेशां तक जार ज्यो काम कर्‌या ऊंकी शाबाशी कोनै दिया के वै थांनै ?

उस्ताद : नहीं रै। उल्टा म्हाडा लडबै लागगा।

कजरी : कई यां ?

उस्ताद : ल्यो देखो अइयां।

गीत - पूजा को ओसरो

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

जमूरो : उस्ताद, वाकई ब्होत ही बदलगा गाँव तो।

कजरी : अर उस्ताद एक आँधी माई फाट्‌या कपडा पैर्‌यां देखो कइयां टपटेळा खाती डोल री छै। उंकै कोई आगै – पाछै कोनै के ?

उस्ताद : (आह भरता व्हियां) – जागीरी की मालकिण छै रै वा आँधी।

जमरो : अच्छ्‌या!

कजरी : काईं खैर्‌या छो उस्ताद ?

उस्ताद : हाँ भाई। एक ही बेटो छै उंकै। वा माई आँधी कोनै छीं नीकां दीख छो ऊंनै। खूब उम्मीदां सूं वा आपका बेटा को ब्याव करी छी। पण ऊंका बेटा की भू असी आई अक ऊं छोटा सा घर का भी टुकड़ा-टुकड़ा कर दिया।

कजरी : अच्छ्‌या उस्ताद।

उस्ताद : हाँ रै। छोरा का माँ-बाप तो या सोच अर ऊं गरीब घर की छोरी नै भू बणार ल्याया छा अक वा आपका सासू – सुसरा की सेवा करैगी। पण काम सारो उल्टो ही व्हैगो।

जमूरो : कइयां उल्टो व्हैगो उस्ताद।

उस्ताद : भाई अइयां उल्टो व्हैगो, अक ब्याव व्हियां पाछै वा आपका बींद नै लेर सासू-ससुरा सैं न्यारी व्हैगी।

कजरी : सासू-सुसरा ऊंनै समझाया कोनै के ?

उस्ताद : खूब समझाया रै। पण कोनै मानी। वा आपका पीर हाळां का बहकावा मैं आगी।

जमूरो : फेर ?

उस्ताद : फेर ऊं छोरा की मां ईं दु:ख मैं दिन रात रोती र्‌हैती अर अइयां आँधी व्हैगी।

कजरी : या तो ब्होत बुरो व्हियो उस्ताद। और बताओ आगै।

जमूरो : उस्ताद थे साँची खैर्‌या छा। आज गाँव बदलगा। वैण्डया का ज्यादातर लोग संस्कृति नै, संस्कारां नै अर धर्म नै भूलगा।

कजरी : जद ही तो बिचापडा सिक्ख अर ईसाई कइयां आवीं ईं गाँव मैं बसबा आटै।

उस्ताद : नहीं रै कजरी। असी बात कोनै। आदमी का संस्कार कदे ही कोनै मरीं। ऊंकी आत्मा जागैगी। हिन्दुस्तान की धर्मनिरपेक्षता कायम र्‌हैगी। इन्सान बदलैगो। भाईचारो बढैगो। लोग एक-दूसरा नै चावींगा, अर एक दिन आपणा गाँव मैं भी सब धर्मां का लोग हिलमिल अर एक साथ र्‌हींगा।

जमूरो : थांनै विश्वास छै ?

उस्ताद : सब बातां सांची व्हींगी। मैं जार्‌यो छूं मिंदर-मिंदर, मस्जिद-मस्जिद, चर्च-चर्च अर गुरुद्वारै-गुरुद्वारै, प्रार्थना करबै अक यै सब बातां सांची व्हीं। अतरै थे दोन्यूं गाँव मैं डोला-फिरी करो। लोगां नै समझाओ अर बताओ वांका अतीत का बारा मैं।

कजरी : म्हे बतावां यांनै यां का अतीत का बारै मैं?

उस्ताद : हाँ भाई थे तो अतरा बरस विदेशां मैं र्‌हिया छो। अै भूलगा तो कांई, थांनै तो हिन्दुस्तान की हर बात की जाणकारी नीकां छै। (प्रस्थान कर जाय छै)

जमूरो : (कजरी सूं) - कजरी आपणां उस्ताद कतरा महान् छीं।

कजरी : ठीक वाकां गुरु महन्त श्री गणेश दास जी महाराज की नियां।

जमूरो : आपां या चोखो काम कर्‌या अक विदेश सूं अण्डे आगा उस्ताद कै साथ।

कजरी : वंडे तो दम घुटबै लागगो छो भाई।

जमूरो : अर अण्डे।

कजरी : डोलतां-डोलतां सारी रात निकळगी अर पतो ही कोनै चाल्यो देखो सुबेरो व्हैगो।

जमूरो : पेडा माळै चीं-चीं करती चिड्‌यां कतरी चोखी लागरी छीं।

कजरी : चाल-चाल आगै चाल। कन्नै चाल अर देखांगा।

गीत - हुये उजाळो

(पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव' : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम जयपुर से साभार)

(गीत समाप्ति पर पार्श्व में से मन्दिर के घंटों, ढोल-ताशों, ईसाईयों की प्रार्थना एवं गुरुग्रंथसाहब के पाठ का स्वर सुनायी दे रहा है।)

जमूरो : अरै यै कसी आवाज़ां आरी छीं ?

कजरी : न्यारी-न्यारी।

जमूरो : मंदिर का घंटा की।

कजरी : मस्जिद की नमाज की।

जमूरो : ईसाइयां की प्रार्थना की।

कजरी : अर गुरुग्रंथ साहब फडबा की।

जमूरो : चाल, चाल अर देखां।

(आवाजें तेज होती हैं। पार्श्व से हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख एवं ईसाई लोगों का मंच पर आगमन। सभी आकर भारत के नक्शे के आकार में खड़े हो जाते हैं। एक लड़की श्वेत साड़ी पहने, सिर पर मुकुट लगाए भारत माता बनी हुई आ रही है जिसके पीछे तीन लडकियां भारत के झंड़े के तीन रंगों की साड़ियां पहने एवं हाथों में भारत का झंडा लिए आकर बीच में खड़ी हो जाती हैं। स्टेज पर खड़े विभिन्न समुदाय के लोगों के हाथ में भारत के झंड़े है। सब मिलकर 'विशाल भारत' कविता को गाते है। नन्हीं-नन्हीं बच्चियां तितली बनी स्टेज पर मंडरा रही हैं।)

कविता विशाल भारत

विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
उर हर्षाया मन मुस्काया दूर गगन के पँछी पाकर।
अन्तर का आमंत्रण पाकर निज जीवन संरक्षित समझा
अगणित बार विलोका इसको मन में संशय रहा न अब था
विविध जात के.. विविध भाँत के..

विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
विश्व यात्रा के ये राही निद्रा की गोदी में सोये
प्रथम बार ऐसा सुख पाकर स्वप्न शृंखला में वे डोले
स्वप्न शृंखला ..... में वे डोले
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
धर्म मिला निरपेक्ष नहीं था जात पाँत का रूदन
सामुदायिकी छुआछू त का पाया कहीं न क्रन्दन।
मन्दिर देखे मस्जिद देखे चर्च मिली हर ओर
दिव्य विराट रूप भारत का पाकर हुए विभोर
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर
रहे अचंभित कौन देव यह स्वामी विवेकानंद
दर्शन जिनका विश्वव्यापी है मधुमय जीवानंद
मुल्ला बाँग सुनी मंदिर के घण्टे की टंकार
नींद उड़ी आकाश हुआ प्रात: का उनको भान
विविध जात के.. विविध भाँत के..
विविध जात के विविध भाँत के पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी चहचाते यहाँ आकर
पँछी ..... चहचाते यहाँ आकर

सूर्योदय पीताभ छटा भारत का भाल विशाल
सागर की गहराई से अभिभूत हुए बेहाल
ऐसा भी क्या स्वर्ग दूसरा होता होगा और
पंछी अपने देश चले पर मन उनका इस ओर
मन उनका इस ओर, मन उनका इस ओर
(साभार- काव्य संग्रह तरुणाई: डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा)
पार्श्व से -बोलो भारत माता की
सब - जय हो, जय हो, जय हो।

नाटक समाप्त

कार्यवाहक हलवाई

प्रथम प्रस्तुति : 24–25 नवम्बर 2007, रवीन्द्र मंच जयपुर।

भाग लेने वाले कलाकार :

हलवाई–सरदार	:	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
बदलू– नाक–कान बिंधवाने वाली लड़की	:	सूफिया ईरम सिद्दिकी
मिठ्ठन हलवाई का भाई	:	महेश कुमार सोनी
लुहारी–लडकी की माँ	:	डॉ. रेशमा परवीन
पनिहारिनें	:	डॉ. रेशमा परवीन
		कु. लक्ष्मी शर्मा
		कु. रश्मि सोनी
		शबाना खान
		सूफिया ईरम सिद्दिकी
ग्राहक		आशीष मेहरानिया
सितोलिया खेलने वाले		मो. सैफ, मो. तोषिफ, आशीष
साँड		मो. सैफ, मो. तोषिफ
फरमाईशी गीतों की उद्घोषिका	:	सहीफा ईरम सिद्दिकी

मंच पार्श्व

निर्देशन	: डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
तबला संगत	: गुलाम गौस खाँ
फोटोग्राफी	: फैजियाब अनवर सिद्दिकी
मंच सज्जा	: श्री महावीर सिंह राठौड़

टिप्पणी—इस नाटक के चौथे दृश्य का 'मिठ्ठन हलवाई' के नाम से विगत कई वर्षों में रवीन्द्र मंच, जयपुर पर एक अलग नाटक के रूप में मंचन किया गया जिनमें निर्देशक द्वारा यह महसूस किया गया कि नाटक का एकाएक प्रारम्भ किया जाना बनावटी सा है । इसके पूर्व प्रस्तुतीकरणों में निर्देशक को इसमें संगीत के समावेश न होने की कमी भी महसूस की गई अत: 24 नवम्बर 2007 को रवीन्द्र मंच, जयपुर पर किये जाने वाले मंचन में इस दृश्य को एक अलग नाटक का स्वरूप दिये जाने के उद्येश्य से संगीत पक्ष का समायोजन करते हुए 7 नवम्बर 2007 को संवादों में आवश्यक परिवर्द्धन–परिवर्तन किया गया और पाठकों एवं आगामी प्रस्तुतीकरणों की सुविधा को देखते हुए इसे संशोधित रूप में यहां पर दिया जा रहा है –

पहला दृश्य

(गाँव के एक चौराहे का दृश्य। ग्रामीण जनजीवन अपने सामान्य रूप में गतिमान है। किसान अपने–अपने खेतों पर कार्य करने जा रहे है। एक ओर पेड़ के नीचे बैठे बुजुर्ग लोग चौपड़ का खेल खेल रहे हैं। पास के कुए से पनिहारिनें पानी भरकर मटकी सिर पर धरे आपस में बतियाती हुई जा रही हैं, वहीं रास्ते के बीच में बच्चे सितोलिया खेल रहे हैं। पार्श्व में संगीत बज रहा है।)

स्थाई सितोलियो सितोलियो बणगो म्हारो रै
सितोलियो सितोलियो बणगो म्हारो रै

पुरुष औषधालै कन्नै छै पटवार–घर ऊंकै नीचै
संसकिरत इस्कूल का छोरा गैला मैं खेलैं
भांडां का मकान आगै खेलीं सितोल्या रै + स्थाई

स्त्री पंडाळी पर पाणी भरबा जारी छीं पणिहारी
खुसफुस–खुसफुस बातां करती धीरै–धीरै जारी
काकी, माई, बाई–भाभी देखो जारी रै + स्थाई

पुरुष सात टिकड़ियां भाटा की देखो गोळ–गोळ छीं ऊभी
बोद्यो ऊंकै पाछै ऊभो कर्‌यो छै रूखाळी

लाल्यो फैंक्यो गैंद नै बोद्‌यो ऊंनै पकड़ै रै + स्थाई

स्त्री उल्ठो फैंक्यो बोद्‌यो जिण्डे लाल्यो ऊभो हँसर्‌यो
गयो निसाणो चूक ऊंको काकी कै जा लाग्यो
काकी ऊंकै कन्नै आर कान मरोड़ै रै + स्थाई

पुरुष लाल्यो खैर्‌यो काकी मार छोरो या बदमाश
मैं तो खय्यो छो रुकजा पण कोनै मानी बात
लाल्या काणी देख बोद्‌यो दाँत भींचै रै + स्थाई

स्त्री कान खींचअर काकी चाली पंडाळी की ओर
बोद्‌यो लाल्या सूं गुंथगो खेल-खाल सब छोड
क्यूं साळा तू लगालूतरी आज लगाई बोल रै
आज लगाई बोल रै आज लगाई बोल रै

(बोद्‌या लाल्या के बाल खींचता है, लाल्या उसके बटका भरता है। खेल बीच में ही बन्द हो जाता है और बच्चे इस अप्रत्याशित तमाशे का आनन्द ले रहे हैं।)

(सहसा एक ग्रामीण का प्रवेश। उसके सिर पर लकड़ी का गठ्ठर है। अपने कंधे पर उसने अपने एक छोटे बच्चे को बैठा रखा है और हुक्का गुड़गुड़ाते हुए चला जा रहा है। रास्ते में लड़ रहे बच्चों को देखकर वह रुक जाता है।)

ग्रामीण : (लड़ रहे बच्चों को छुड़ाते हुए) क्यूं रै क्यूं लडर्‌या छो। छोडो-छोडो। (क्यों रे क्यों लड़ रहे हो। छोडो-छोडो।)

एक बच्चा : या मेरा बाळ खीच्यो। (इसने मेरे बाल खींचे।)

दूसरा बच्चा : या मैंरै बटको भर्‌यो। (इसने मेरे बटका भरा।)

पहला बच्चा : साळा पैली तू मेरा बाळ खींच्यो जदी तो मैं तेंरै बटको भर्‌यो। (साले, पहले तूने मेरे बाल खींचे तभी तो मैंने तेरे बटका भरा।)

(दूसरे बच्चे को मारने को होता है।)

ग्रामीण : (उन्हें अलग-अलग करके समझाते हुए)- बेटा आपस में लड़ना अच्छी बात नहीं है। अरे वैसे ही पडौसी देशों का कलह कुछ कम है जो तुम घर में ही लड़ रहे हो। बच्चों हिलमिलकर

रहो। जाओ अपने-अपने घर, और वह भी हिलमिलकर।

(लड़ रहे बच्चे एक दूसरे के कन्धे पर हाथ रख लेते हैं और ग्रामीण अपनी राह पर चल पड़ता है। सहसा पार्श्व में से किसी की आवाज़ उभरती है।)

आवाज़ : नाक-कान बिंधवाल्यो.... टूट्या ताळा ठीक कराल्यो
नाक-कान बिंधवाल्यो.... टूट्या ताळा ठीक कराल्यो

एक बच्चा : आगो आगो सरदार आगो।

एक लड़की : नाक-कान बिंधवांवांगा।

बच्चा : टूट्या ताळा ठीक करवांवांगा।

अन्य बच्चा : ताळा कै कूंची भी लगवांवांगा।

पार्श्व-गीत

सरदार

स्थाई पेटी लिय्यां आयो सरदार चक्कर काटै गळी-गळी
ल्यावो-ल्यावो टूट्या ताळा पीपा पेटी ज्यो भी छीं

1 सुसमो आँख्यां माळै लगायां दैणै हाथ कडो पैर्‌यां
लाल पागड़ी माथै बाँध्यां पाड रह्यो हेलो
टूट्या ताळा ठीक कराल्यो कूंची भी लगवाल्यो
नाक कान भी बींधूं छूं मैं टाबर-टोळी आवो +स्थाई

2 सामानै दो साँड लड रि्हया देखो रट्टक मारीं
च्यारूं मेरां छोरा छापरा लोग लुगायां देखीं
नाक-कान बिंधवाल्यो सुणतां ध्यान बँट्यो साँडां को
लाल पागड़ी माथै देख्या पाछै पड्या सरदार कै +स्थाई

3 ज्यान बचाबै भोभळ्यां की गाडी मैं छिपगो सरदार
हाँडी कूंडा फूटगा जद धम्म सैं पड्यो
चूला की कड़ैली ऊंका मूंडा कै जा लागी रै
देख लुहारी चप्पल सूं ऊंकी मरमत कररी रै +स्थाई

4 मीणा का मोहला मैं पोंछ्यो ज्यान बचा सरदार
खूब मिलींगा टूट्या ताळा या सोच्यो मन मैं

भाग-भागकर मीणा आया असी बता कूँची
एक बार मैं खुलै कस्यो ही जबरो सारो ताळो रै
जबरो सारो ताळो रै जबरो सारो ताळो रै

5 भाग-भूगकर उण्ड्या सूं वा पोंछ गयो बस्ती मैं
ताळा-कूंची ठीक कराल्यो नाक-कान बिंधवाल्यो
अइयां खैतां काट रि्हयो वा चक्कर बीच बजारां मैं
भाग-भागकर छोर्यां आरी नाक-कान बिंधवाल्यो रै +स्थाई

6 खोल दियो पेटी नै अर नकली कुण्डळ दिखलार्यो
लोंग नाक की दिखा खालसा चमचम करती सी
कानां मैं कुण्डळ पैरा अर देखै मूंडा काणी
चप्पल सैं तड़ तड़ मारीं ऊंनै छोर्यां की मायां रै
देखो चप्पल पड़री रै देखो चप्पल पड़री रै

(सरदार लड़की को कुण्डल पहनाते हुए उसका मुँह देखने में खो जाता है , इतने में ही लड़की की माँ अपनी पुत्री को ढूंढते हुए वहाँ पर आ पहुँचती है और यह सब देखकर सरदार की चप्पल से पिटाई करने लगती है। सरदार की पगड़ी खुल जाती है। जब लड़की की माँ को यह पता चलता है कि यह सरदार का छद्मवेश बनाये हुये है तो वह और भी क्रुद्ध होकर सरदार की दाढी भी नोच लेती है तथा उसी प्रवाह में उसकी चप्पलों से पिटाई करने लगती है। सहसा एक राहगीर का प्रवेश)

राहगीर : (अपने हाथ की माला फिराते हुए) राम राम राम राम। क्या हुआ बहनजी, क्यों मार रही हैं इस बेचारे को।

औरत : बेचारा! यह तुझे बेचारा दिखता है। अरे तुझे पता नहीं यह गाँव की लड़कियों को छेड़ता है।

राहगीर : राम राम राम राम। परन्तु बहनजी आप तो लड़की की माँ हैं। देखो कैसे भीड़ लग गई है तमाशबीनों की। आप अपने घर जायें मैं इसे समझाता हूं।

औरत : (अपनी लड़की का हाथ पकड़कर ले जाते हुए)- मैं सब समझती हूं। सभी एक-से हैं मुँहजले। मुख में राम बगल में छुरी। (चली जाती है)

सरदार : (राहगीर के पैरों में पड़ते हुए)- आपने मुझे बचा लिया, आप साक्षात् भगवान हैं।

राहगीर : पर भाई तुम हो कौन और सरदार का वेश क्यों धारण किया?

सरदार : मैं एक बहुरूपिया हूं.....

राहगीर : (आश्चर्य से)-क्या बहुरूपिया?

सरदार : हाँ बहुरूपिया। एक कलाकार। (फिर शून्य में देखते हुए)- कला ही मेरी रोजी-रोटी का साधन थी।

राहगीर : राम राम राम राम। भाई मैं कुछ समझा नहीं।

बहरुपिया : (उसी प्रवाह में)- कभी मेरी कला के दूर-दूर तक चर्चे थे। राजे-महाराजाओं के समय में हम लोगों को राज्याश्रय प्राप्त था। राजदरबार के गुणीजनखाने का सिरमौर हुआ करता था कभी मैं। मेरी कला के प्रदर्शनों से प्रसन्न होकर राजा लोग अशर्फियां न्यौछावर करते थे मुझ पर।

राहगीर : फिर?

बहरुपिया : देश में प्रजातन्त्र आया। तथाकथित चहुँमुखी विकास हुआ देश का, परन्तु कला की, कलाकार की स्थिति?

राहगीर : कला और कलाकार को क्या हुआ भाई? राम राम राम राम।

बहरुपिया : जानना चाहते हो।

राहगीर : भाई तुम्हारी बातों में दर्द की झलक है, कौन नहीं जानना चाहेगा भाई। बताओ सबको बताओ।

बहरुपिया : (पुन: शून्य में देखते हुए पूर्व प्रवाह में)- कला के पारखी चले गये। विकास की आधुनिक व्यवस्थाओं में कला को पैरों तले रौंदा जाने लगा।

राहगीर : (आपत्ति करते हुए)- राम राम राम राम। कैसी बातें करते हो भाई। देश का विकास हुआ है। और तुम्हारी कला आदि के विकास के लिये सरकार ने कला, संगीत, नाटक, साहित्य आदि पता नहीं कितनी ढेर सारी एकेडमियों की स्थापना की है।

बहरुपिया : हाँ भाई बनी हैं एकेडमियां। इनके बनने से कई पद बने। साहित्य, संगीत, नाटक, कला आदि के विकास के लिये कई बड़े-बड़े अफ़सरों को मोटर-बँगलों की सुविधाएं दी गई। पर पता है आज भी बड़े-बड़े कलाकार कहाँ रह रहे हैं।

राहगीर : भाई मैंने तो बड़े-बड़े कलाकारों को टी.वी. पर और बड़े-बड़े प्रोग्रामों में चमकदार कुर्ते-पाजामे पहने देखा है। अब वे लोग कोई खराब जगह थोड़े ही रहते होंगे। राम राम राम राम।

बहरुपिया : राम राम के अलावा शायद कुछ पता नहीं तुम्हें तो।

राहगीर : क्या कह रहे हो भाई।

बहरुपिया : सही कह रहा हूं मैं। तुम्हें पता होना चाहिए कि इनमें से अधिकतर बड़े-बडे कलाकार झुग्गी झोंपडियों और कच्ची बस्तियों में रह रहे हैं।

राहगीर : पर भाई यह बताओ कि तुमने यह सरदारगिरी क्यों शुरू की?

बहरुपिया : भाई आज के इस युग में जब कला के प्रदर्शन से गुजारा नहीं हो पाया और भूखों मरने लगा तो मैंने सरदार का रूप धारण किया और लगा नाक-कान बींधने टूटे ताले ठीक करने। कलाकार हूं न अत: कला को परखने में खो गया और लोग बाग मुझे ग़लत समझकर पीटने लगे। (कराहता है)

राहगीर : (उसे सहलाते हुए)- भाई कलाकार मैं तुम्हारी कला की कद्र करता हूं और मुझे तुमसे सहानुभूति है , इसलिए मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं।

बहरुपिया : मेरी मदद। मैं कुछ समझा नहीं।

राहगीर : भाई चौंको मत। तुम्हारी मदद में मेरा भी स्वार्थ है।

बहरुपिया : मेरी मदद। तुम्हारा स्वार्थ। भाई मैं कुछ समझा नहीं।

राहगीर : भाई इसी गाँव में मेरा चचेरा भाई हलवाई की दुकान करता है और वह अपनी पत्नी के साथ लम्बे समय के लिए तीर्थ यात्रा पर चला गया। मैं ठहरा पूजा-पाठ करने वाला सीधा-सादा आदमी और मेरा भाई इस अवधि में दुकान संभालने का दायित्व मुझ पर छोड़कर चला गया है। मैं इस धर्मसंकट के

बारे में सोचता-सोचता वहीं जा रहा था कि सहसा रास्ते में तुम मिल गये। (फिर कुछ सोचते हुए)- भाई तुम्हें कुछ ज्ञान है हलवाईगिरी का।

बहरुपिया : कलाकार हूं। और एक सच्चे कलाकार को हर बात का ज्ञान होता है। (फिर एक विशेष अंदाज़ में)- दूध गरम। गरमागरम जलेबी।

(आवाज़ सुनकर एक भिखारी आ जाता है। बहुरूपिया उसे भगाता है।)

राहगीर : वाह भाई वाह क्या खूब जब एक धन्धा करने वाला भिखारी तुम्हारी आवाज़ के चक्कर में आ गया तो क्या कहने। मुझे विश्वास है कि तुम दुकान को मुझसे भी बेहतर तरीके से संभाल सकोगे। और ये लो तुम्हारी एक महिने की अगाऊ पगार। (उसे रुपये देता है।) मैं सामने की पहाड़ी पर बने मन्दिर पर जाकर भगवान का भजन करता हूं।

(जाते-जाते रुक जाता है। फिर वापस मुड़कर बहुरूपिया से) - और यह लो पत्र, जो मेरे चचेरे भाई ने मुझे लिखा था।

बहरुपिया : यह पत्र ले जाकर मैं किसे दूं?

राहगीर : उसका नौकर बदलू होगा दुकान पर। पर थोड़ा होशियार रहना बड़ा ही चालू पुरजा है वह।

बहरुपिया : पर वह मुझ पर विश्वास कैसे करेगा भाई?

राहगीर : भाई, वह मुझे भी केवल नाम से ही जानता है। हम लोग कभी मिले थोड़े ही हैं। तुम ऐसा करना कि यह पत्र उसे देना और अपने आपको उसके मालिक मिठ्ठन का भाई बताना। बस हो गया काम। (दोनों का प्रस्थान)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(बहुरूपिया खुशी-खुशी मार्ग में चले जा रहा है। उसे अपने नये कार्य पर पहुँचने की शीघ्रता है। वह गाँव के एक चौराहे पर आकर रुक जाता है।)

बहरुपिया : (स्वगत)- मैं तो गाँव में काफी दूर तक निकल आया पर अभी तक मिठुन हलवाई की दुकान दिखायी नहीं दी। कहीं ऐसा न हो कि मैं चलते-चलते गाँव से बाहर ही निकल जाऊं। किसी से पूछ लेना चाहिए। (फिर सामने सिर पर बोझा ले जाते हुए एक लड़के को देखकर स्वगत)- यह लड़का शायद इसी गाँव का है। इसी से चलकर पूछता हूं। (फिर उसके पास जाकर)- ऐ भैया, रुको तो।

लड़का : क्या है ?

बहरुपिया : भैया, एक पता बताओगे जरा।

लड़का : (बोझ को संभालने का प्रयास करते हुए)- जरा ये कार्टून थामो तो अभी बताये देता हूं। (बिना उसके प्रत्युत्तर के अपने सिर का बोझा उसके सिर पर रख देता है। बहुरूपिये को कार्टून भारी लगता है जिसे संभालने में वह लड़खड़ाने लगता है।)

लड़का : वजन ज्यादा है, ठीक से थाम लो। अभी बताता हूं तुम्हें पता। (एक गहरी अँगड़ाई लेकर अपनी कमर सीधी करता है।)

बहरुपिया : अरे भैया बोझा पकड़ा दिया और पता भी नहीं बता रहे।

लड़का : कैसा पता। किसका पता। क्या पता।

बहरुपिया : अरे मैंने पता पूछने के लिए ही तो यह आफत सिर पर ली है।

लड़का : लेकिन तुमने तो पता पूछा ही नहीं। मैंने मना कब किया। (हँसता है।)

इसी गाँव में रह रहा हूँ बारह महिने से, पर गाँव के हर घर की ख़बर है मुझे। कौन किस घर में रहती है, कब आती है-कब जाती है। कौन आता है-कौन जाता है, कब आता है-कब जाता है। पूछो-पूछो, मैंने मना कब किया।

बहरुपिया : (स्वगत)- लगता है यह भी कलाकार है।

लड़का : क्या कहा भैया ?

बहरुपिया : कुछ नहीं। यह बताओ भाई कि इस गाँव में मिठुन हलवाई कहाँ है ?

लड़का : (चौंकते हुए) मिठुन हलवाई ! वह तो गंगा तट पर चला गया है नहाने। और लगता है वहीं रह जायेगा मन्दिर बनाकर।

बहरुपिया : मेरा मतलब उसकी दुकान कहाँ पर है ?

लड़का : क्यों, क्या करोगे दुकान का ? (फिर बड़बड़ाते हुए)- मुझे क्या। चलो बताये देता हूं-ऐसा करो पहले एक फर्लांग आगे चले जाओ।

बहरुपिया : चला गया।

लड़का : फिर वहाँ से बीस गज बायीं ओर आ जाओ।

बहरुपिया : आ गया।

लड़का : क्या भाई अभी गये नहीं गये नहीं कि आ गया आ गया बोलते हो। अक्ल है कि खेत में चरने छोड़ आये।

बहरुपिया : ठीक है भाई नहीं बोलूंगा आ गया, पर तुम आगे बताओ तो।

लड़का : बताता हूं, पर मैं था कहाँ ?

बहरुपिया : यहीं थे भाई जहाँ अब खड़े हो।

लड़का : (झुंझलाते हुए) - मेरा मतलब कहाँ तक बता चुका था ?

बहरुपिया : अरे बीस गज बायीं ओर आ गये थे। मेरा मतलब आने को कहा था।

लड़का : (खुश होता हुआ)- अच्छा अब ऐसा करना, एक फर्लांग पीछे की ओर आ जाना।

(बहुरूपिया खुश होता हुआ चलने लगता है। लड़के को ध्यान आता है कि उसका कार्टून तो वह राहगीर ही ले जा रहा है)

लड़का : (स्वगत)- यह तो मेरा भी उस्ताद निकला। मेरा मिठाई का कार्टून ही लिये जा रहा है। मुझे इसे रोकना चाहिए।

(वह उसे पुकारने को हाथ ऊपर करना ही चाहता है कि बहुरूपिया हाथ से बायें-दायें करते वापस लड़के की ओर मुड़ जाता है।)

बहरुपिया : (लड़के के पास आकर)- क्यों भैया ?

लड़का : हाँ भैया।

बहरुपिया : तुमने बताया उस हिसाब से तो तैं वापस तुम्हारे ही पास में आ गया।

लड़का : सो तो है।

बहरुपिया : परन्तु मैं मिठुन हलवाई की दुकान पर तो पहुँचा ही नहीं।

लड़का : पहुँच जाओगे।

बहरुपिया : कैसे ?

लड़का : आओ मेरे पीछे-पीछे आ जाओ।

बहरुपिया : तुम्हारे पीछे, क्यों ?

लड़का : अरे मैं मिठुन हलवाई का नौकर बदलू हूं। (चलते-चलते) और जब तक उसका धर्मात्मा भाई नहीं आ जाता, इस दुकान का मालिक भी मैं ही हूं।

(मिठुन हलवाई की दुकान आ जाती है।)

लड़का : ऐसा करो भैया, ये कार्टून यहां पर रख दो, जरा संभालकर लड्डू हैं गणेशजी के मन्दिर से लाया हूं खरीदकर, कहीं फूट न जायं।

(बहुरूपिया उसके बताये स्थान पर कार्टून रख देता है।)

लड़का : (सेठ की गद्दी पर बैठकर इतराते हुए)- अब बोलो भाई कैसे आना हुआ। क्या पीओगे, दूध, राबड़ी-छाछ ?

बहरुपिया : क्या राबड़ी भी रखते हो ?

बदलू : हाँ रखते हैं और राबड़ी भी ऐसी-वैसी नहीं। छाछ की जगह राईमार दही ड़ालते हैं उसमें।

बहरुपिया : अरे राईमार नहीं रईमार।

बदलू : ओह यश यश वही। नॉट नो हिन्दी। इंग्लिश-इंग्लिश। तभी तो नाम है मिठुन हलवाई की इस दुकान का। गाँव-गाँव तक, शहर-शहर तक, सब लोग जानते हैं मिठुन हलवाई की ईमानदारी के बारे में। मुनाफे की जगह क्वालिटी पर ध्यान दिया जाता है यहाँ।

बहरुपिया : (धीमे से) - बेटा इधर आ।

बदलू : (उसके पास आकर)- क्या है बोलो ?

बहरुपिया : बेटा मैं ही तुम्हारा कार्यवाहक मालिक हूं, मिठुन का भाई।

बदलू : क्या ?

(बेहोश होकर गिर जाता है। प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

(यहाँ पर अगला दृश्य प्रारम्भ करने से पूर्व कार्यवाहक हलवाई का बोर्ड़ लगाना है।)

तीसरा दृश्य

(बाज़ार का दृश्य। मिट्ठन हलवाई कड़ाही में दूध घोंट रहा है। पास में ही उसका नौकर बदलू कुछ काम कर रहा है।)

हलवाई : (बदलू से) बदलू, अरे ओ बदलू।

बदलू : (दौड़कर आते हुए) जी मालिक।

हलवाई : देख तो बेटा, वो बर्तनों की नाली के पास मर्तबान में जो थोड़ी-सी बर्फी रखी है, मुझे ला दे तो।

बदलू : (बुरा सा मुँह बनाते हुए) क्या करेंगे मालिक उसका ? (फिर दर्शकों की ओर देखते हुए) वह तो दो महिने पुरानी हो गई है। उसमें से आधी तो चीटिंयां उठाकर ले गई हैं और बाकी के लिए उसमें पड़े कीड़ों और चीटिंयों में (रस्साकसी का इशारा करते हुए) जोर आजमाईश चल रही है।

हलवाई : (दबी आवाज में) अबे मेरे बाप धीरे बोल। कहीं वह निसपेटर का बच्चा आ गया तो रेट से दुगने पैसे ले जायेगा।

बदलू : कौन निसपेटर मालिक। और कैसी रेट ?

हलवाई : अरे देख बेटा, मेरी बात ध्यान से सुन। अब मेरे बाद तू ही उत्तराधिकारी है इस दुकान का। मेरा तो बुढ़ापा है, पता नहीं कब बुलावा आ जाय।

(किस्मती यमदूत की ओर देखकर मुस्कुराता है।)

बदलू : कैसी बातें कर रहें हैं मालिक। (फिर दीवार पर टंगी हीरोईन की तस्वीर की ओर देखते हुए व्यंग्य से) अभी तो आपकी जवानी है।

हलवाई : (झेंपते हुए) हाँ सो तो है, पर बेटे मैं कभी दुकान पर न रहूँ तब की बात है। (फिर पास में आने का इशारा करते हुए धीरे से) सरकारी विभाग का एक फूड़ निसपेटर।

बदलू : निसपेटर नहीं मालिक इंस्पैक्टर।

हलवाई : अरे हां वही। वह हर महिने दुकान का निरीक्षण करने आता है।

बदलू : यह तो अच्छी बात है मालिक। इससे हमारी दुकान की इमेज बढ़ती है।

हलवाई : अरे इमेज बढ़ने की दुम (फिर जेब की ओर इशारा करते हुए) ये जेब तो कटती है न।

बदलू : कैसे?

हलवाई : (उसके पलटा मारते हुए) अबे वो ही तो बता रिया हूँ। साला सुनता ही नाहीं।

बदलू : जी मालिक, सुनाएँ।

हलवाई : अब भाई वह हर महिने यहाँ आकर 500 रु० ले जाता है।

बदलू : क्यों ले जाता है मालिक वो 500 रुपये। क्या वह सब दुकानों से ले जाता है।

हलवाई : हाँ भाई, सबसे ले जाता है।

बदलू : तो क्या वह सरकार से तनख़्वाह नहीं लेता? (फिर दर्शकों की ओर देखते हुए) अच्छा। समझ में आ गई बात। सरकार से बेचारा लेगा भी कैसे! अपनी डयूटी के चक्कर में दिन भर तो फील्ड़ में मारा-मारा फिरता है। (फिर उंगलियों पर गिनकर उछलते हुए मिट्ठन की ओर देखते हुए) वहा मालिक वाह। बड़ी अच्छी तनख्वाह है इन्सपैक्टर साहब की तो।

हलवाई : कैसे भाई?

बदलू : 500X30=15,000 रु० प्रतिमाह।
(फिर मिठाइयों की ओर इशारा करते हुए) और जहाँ जाये उसी दुकान पर दूध मिठाई फ्री.....(उछलता है)

हलवाई : (उसे डांटते हुए खीझ के साथ) अबे जेल जायेगा क्या फूड़ निसपेटर को ये मिठाईयां खिलाकर।

बदलू : (भोलेपन से) कैसे मालिक?

हलवाई : (डांटते हुए) अबे, पहले वो मर्तबान की बर्फी उठा ला जा।
(बदलू एक हाथ से नाक बन्द करते हुए बर्फी का मर्तबान लाकर मिट्ठन को दे देता है।)

बदलू : (मर्तबान ज़मीन पर रखते हुए) ये लीजिए मालिक।

हलवाई : अरे, इस कड़ाहे में डाल दे।

बदलू : लेकिन मालिक, इससे तो कड़ाही की सारी बर्फी बेकार हो जायेगी।

हलवाई : (सिर पर हाथ मारते हुए) अरे बुद्धू, यह सोच इससे मर्तबान की सारी बर्फी अच्छी हो जायेगी।
(मिट्ठन स्वयं ही मर्तबान कड़ाही में उलट देता है)

बदलू : पर मालिक, इसे खरीदेगा कौन?

हलवाई : अरे तू देखे जा हमारी दुकान के रंग-ढंग। (फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए) आजकल वो मेरा नालायक बेटा है न, वो अम. बी.ए. कर रहा है। (फिर आह भरते हुए) काश वो ये फालतू की डिग्रियों के चक्कर में न पड़कर मेहनत करता तो पाण्डे जी के लड़के की तरह बी.ए. ही कर लेता तो बिरादरी में मेरा नाम ऊँचा हो जाता।

बदलू : (हँसते हुए) अरे मालिक बी.ए.के बराबर परीक्षा, बी.कॉम. तो वो पहले ही पास कर चुका (फिर गर्व से ऐंठते हुए) हाँ, मुझसे कम नम्बर जरूर थे उसके।

हलवाई : तो क्या तू बी.ए. पास है?

बदलू : हाँ मालिक, और आपके लड़के से ज्यादा परसन्टेज हैं, बी.कॉम. में।

हलवाई : अबे तो यहाँ कप-प्लेट क्यों धो रिया है।

बदलू : क्या करें मालिक। बूढे पिता जी ने इस आशा में मुझे पढ़ाने के लिए घर तक बेच दिया कि शायद पढ़ लिखकर नौकरी मिल

जाय। परन्तु बी.कॉम. प्रथम श्रेणी से पास होने के बाद भी नौकरी नहीं मिली तो बूढे माता-पिता और अपना पेट भरने के लिए मुझे यह सब करना पड़ रहा है।

(रहस्यात्मक ढंग से हँसता है)

(फिर व्यंग्य से) और हाँ मालिक आपका लड़का अम.बी.ए. नहीं एम.बी.ए. कर रहा है।

हलवाई : (झेंपते हुए डाँटते हुए) अच्छा। मेरी मजाक उड़ाता है। अभी नौकरी से निकाल दूंगा।

बदलू : (शरारतपूर्वक) लेकिन मालिक, आपने अभी-अभी मुझे फूड़ इन्स्पैक्टर वाली बात बताई है।

हलवाई : (गद्दी से उठकर नीचे आते हुए उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) बेटा बदलू, मैं तो मजाक कर रिया था।

बदलू : ठीक है ठीक है मालिक, माइंड योर बिजनिस। और हाँ मेरे स्टैन्डर्ड का भी अपनी बोलचाल में ध्यान रखा करो, (उसकी ओर घूमकर) और हाँ, आपका वो लड़का अम.बी.ए. नहीं एम.बी.ए. कर रहा है।

हलवाई : (प्यार के लहजे में) अरे हाँ वही..... वही कर रहा है वह। कहता है..... इससे उसे (फिर बदलू की ओर देखते हुए कुछ सहमे से कुछ याद करते हुए) म म (फिर अटकते से) मर्केटिंग का ज्ञान होगा, बड़े-बड़े व्यापार चलायेगा। नालायक कहीं का। (फिर दर्शकों से) भैया.....। ऐसी पढ़ाइयों से चली हैं कहीं दुकानदारी।

(फिर रुकते हुए) हम अंगूठा छाप हैं, पर तू देखना अभी बेच देंगे सारी की सारी बर्फी और वह भी डबल दामों में।

बदलू : (आश्चर्य से) कैसे मालिक?

हलवाई : अरे बेटा, दीपावली का त्यौंहार है, कोई भाव-ताव नाहीं पूछता। (फिर उसे समझाते हुए दर्शकों से) लाईनें इतनी लम्बी-लम्बी रहती हैं कि कोई क्वालिटी भी नहीं देखता।

बदलू : पर मालिक यह सारी बर्फी तो जहर हो गई, इससे आदमी मर जायेंगे।

हलवाई : अरे बेटा, मरेंगे तो तब, जब वो खायेंगे मिठाई।

बदलू : क्या मतलब?

हलवाई : (उसके कंधे पर हाथ रखकर समझाते हुए दर्शकों की ओर मुखातिब होकर) - अरे बेटा..., (फिर दर्शकों से) इस कमरतोड़ महंगाई में लोग-बाग मिठाई खाने के लिए थोड़े ही खरीदते हैं।

बदलू : (भोलेपन से)-मैं समझा नहीं।

हलवाई : (दर्शकों की मुखातिब होकर)-भैया, आज की इस मंहगाई के युग में लोग-बाग, मिठाई या तो परम्परा निभाने के लिए मजबूरन पूजा के लिए खरीदते हैं।

बदलू : (बीच में बात काटते हुए) तो क्या पूजा के बाद वे मिठाई खाते नहीं?

हलवाई : नहीं रे। थोड़ी-थोड़ी चख लेते हैं जिसका उन पर दुष्प्रभाव पड़ता नहीं, आजकल मिलावटी वस्तुएं खा-खा कर इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि असली वस्तु का उन पर जहर का सा असर होने लगता है।

बदलू : या फिर?

हलवाई : या फिर अपने फ्रीज में रखने के लिए खरीदकर ले जाते हैं।

बदलू : केवल रखने के लिए! तो क्या वे उन्हें खाते नहीं?

हलवाई : अरे बुद्धू। बड़े-बड़े घरों में लोग बाग ठंड़े की बोतलें और बर्फी की चक्कियां इसलिए जमाकर रखते हैं, ताकि जब मेहमान आयें तो उनके सामने उनकी नुमाईश कर सकें।

बदलू : तो क्या मेहमान हमारी दुकान की मिठाई खाने से बीमार नहीं होते?

हलवाई : हाँ भाई, यहाँ पकड़ी तूने बात। भैया, मेहमान ऐसी मिठाईयों को फोकट की समझकर खूब चटखारे ले लेकर खाते हैं और घर जाकर बीमार पड़ जाते हैं।

बदलू : तो क्या वे मेजबान को कोसते नहीं इसके लिए।

हलवाई : नहीं रे, वे समझते हैं उन्हें कोई अंग्रेजी बीमारी हो गई और सीधे अपने फमेली डाक्टर के पास भागते हैं, (फिर हँसते

हुए) और उनके ये विलायती डिग्री पास डाक्टर लम्बी चौड़ी जाँच करने और हजारों रुपये के कई टेस्ट कराने के बाद यह घोषणा करते हैं कि उनके पसेन्ट को डाबेटीज.....,

बदलू : (बीच में बात काटते हुए) डाबेटीज नहीं मालिक डायबेटीज।

हलवाई : अरे हाँ वही तो, वो हो गई है। बड़े गर्व से बताते हैं लोगों को। और बड़े-बड़े डॉक्टरों को भी पता नहीं लग पाता कि यह तो हमारी इस (बर्फी की ओर इशारा करता है) दवाई का चमत्कार है।

(सहसा बाहर से कुत्ता भौंकता है)

भौं.....भौं.....

बदलू : (डरकर पास आते हुए) मालिक, मालिक, कुत्ता आ गया।

हलवाई : (लापरवाही से हँसते हुए) अबे ड़र गया क्या? बेटा! इन कुत्तों से निपटने के लिए हमारे पास अत्याधुनिक किस्म के अलग-अलग नुस्खे हैं।

बदलू : मालिक, लट्ठ लाऊं?

हलवाई : अरे बेटा। ये साधारण किस्म के कुत्ते नहीं हैं। हमारी दुकान शहर की एक पोश कॉलोनी में है और ये कुत्ते यहाँ के प्रभावशाली अधिकारियों के हैं।

बदलू : मालिक। तो क्या ये डंडे से नहीं ड़रते?

हलवाई : अरे बेटा! जब पुलिस का डंड़ा तक इनसे ड़रता है तो ये तेरे इस डंडे से क्या डरेंगे। (फिर उसे पुचकारने के अंदाज में आदेश देते हुए) जा बेटा जा, रख दे इस डंडे को किसी कोने में। किसी शरीफ आदमी को धमकाने के लिए काम में आयेगा।

बदलू : तो मालिक अब ये कुत्ता कैसे भागेगा?

हलवाई : अरे मरवायेगा क्या? पहले अपनी भाषा सुधार। अफसरों के कुत्ते को कुत्ता कहता है, कहीं इसने उनसे हमारी शिकायत कर दी तो।

बदलू : तो क्या कहूँ मालिक उसे।

हलवाई : टॉमी, टाईगर या शेरा।

बदलू : जो कुछ भी हो मालिक। पर अब ये भागेगा कैसे?

हलवाई : भाषा। भाषा के चमत्कार से।

बदलू : (दोनों हाथों को ऊपर करते हुए) यह कैसा चमत्कार है ऐ मेरे मालिक।

हलवाई : (उसे डाँटते हुए) अबे तुर्कीस्तान के नवाब, मालिक ऊपर नहीं नीचे है।

बदलू : सॉरी मालिक।

हलवाई : (गर्व से) बेटा। मुझे कुत्ते की आवाज़ निकालनी आती है। मेरी आवाज सुनकर ये टॉमी लोग समझते हैं कि इनका कोई सवा सेर दुकान के अन्दर बैठा है और वे डरकर भाग जाते हैं।

बदलू : मालिक, क्या आप सही कह रहे हैं।

हलवाई : हाँ भाई, चल मैं तुझे भी इन टॉमियों को भगाने का नुस्खा सिखाता हूँ।

(कुत्ते की आवाज़ें निकालना सिखाता है)

बदलू : (खुशी से उछलते हुए) वाह मालिक वाह। आप तो बहुत बड़े कुत्ते निकले। (फिर दर्शकों की ओर मुखातिब होकर स्वगत) अब मैं भी आगे पढ़ने का चक्कर छोड़कर कुत्ते, बिल्ली, गधे आदि की आवाजें निकालना सीखूँगा। ये ही असली पढ़ाई है जो जीवन में काम आयेगी।

हलवाई : (बदलू से) अरे, आज निसपेटर जी आने वाले हैं। जा तो, ऊपर बरनी में से एक प्लेट मिठाई निकाल ला।

बदलू : ऊपर वाली में से क्यों मालिक? हम सबको तो (नीचे रखी बर्फी की ओर इशारा करते हुए) - इसमें से देते हैं।

हलवाई : अरे बुद्धू। वी.आई.पी. लोगों के लिए मिठाई अलग प्रकार की होती है। (फिर कुछ सोचते हुए झटके से) और देख, दूध खत्म हो गया है, पर कोई लेने या पीने आये तो मना मत करना, इससे ग्राहकी टूटती है।)

बदलू : तो क्या करें मालिक?

हलवाई : अरे वो बाल्टी में जो दूध रखा है, उसमें से दे देना सबको।

बदलू : लेकिन मालिक, उसमें से तो बिल्ली पी गई है, वह बिल्ली का झूठा हो गया है।

हलवाई : अरे तो क्या बिल्ली जीव नहीं होती, उसमें आत्मा नहीं होती? देख भैया, हमें अंग्रेजी आये या न आये, संस्कृत के हम बहुत बड़े विद्वान हैं (फिर उसे समझाते हुए) भैया..... संस्कृत में कहा है-

मातृवत पर दारेषु, (बदलू को समझाते हुए हीरोइन की तस्वीर की ओर इशारा करता है)

परद्रव्येषु लोष्ठवत। (अपने गल्ले की ओर इशारा करता है)

आत्मवत् सर्वभूतेषु (हाथों से बिल्ली की आकृति बनाकर उसे बताता है)

य पश्यति स: पण्डित:। (गर्व से स्वयं की ओर इशारा करता है)

बदलू : क्या मतलब?

(सहसा फूड़ इन्स्पेक्टर का प्रवेश)

इन्स्पैक्टर : (प्रवेश करते हुए) नमस्कार सेठजी। कहिए; कैसा चल रहा है?

हलवाई : (चापलूसी के अंदाज में खींसें निपोरते हुए) आइए हुजूर आइए। धन्य भाग हमारे, जो दीपावली के इस अवसर पर आप यहां पधारे। (मिठाई की प्लेट आगे करता है)

इन्स्पैक्टर : (मिठाई का एक टुकड़ा मुँह में ड़ालते हुए) काफी दिन हो गये थे सेठ साहब। सोचा, दीपावली की राम राम भी हो जायेगी और नौकरी का दायित्व भी पूरा हो जायेगा।

हलवाई : (बही-खाते सामने रखते हुए)-हाँ हुजूर क्यों नहीं। कानून की मदद करना व सरकारी काम में सहयोग देना (पाँच सौ का नोट व एक मिठाई का डिब्बा देता है) तो हमारा धर्म है, कर्तव्य है।

इन्स्पैक्टर : (खुशी से डिब्बा लेते हुए बही-खातों पर हस्ताक्षर करता हुआ) अच्छा भाई सेठ साहब अब हम चलते हैं (फिर रुपयों को जेब में रखते हुए खुश होता हुआ) यह दीपावली का पर्व आपके व आपके परिवार के लिए मंगलमय हो।

(बदलू एकटक ठगा-सा यह सब देखता रह जाता है और फिर एकाएक बेहोश होकर गिर पड़ता है)

हलवाई : (उसे घसीटकर अन्दर ले जाते हुए एकाएक रुककर दर्शकों की ओर देखते हुए) - लगता है लड़के ने ग्राहकों वाली मिठाई खा ली है।

(उसे घसीटकर दुकान के अन्दर पटक आता है)

हलवाई : (स्वगत)- अब फुर्सत का समय है ढूँढाड़ गीतमाला के गीत सुन लेता हूं। (रेड़ियो चला देता है।)

(सहसा मंच पर दो लड़कियों का प्रवेश)

पहली लड़की : जल्दी चल, हलवाई की दुकान से दही लाना है।

दूसरीलड़की : भई जब से यह नया हलवाई आया है, मिठुन हलवाई की दुकान की रौनक बढ़ गई है।

पहली लड़की : कैसे?

दूसरी लड़की : अरी उसने अपनी दुकान में बच्चों का सामान, घर की छोटी-मोटी जरूरत की चीज़ें, लेडीज सामान, ये सब भी रखना शुरू कर दिया है।

पहली लड़की : अच्छा! तुमने तो मुझे बताया ही नहीं।

दूसरी लड़की : भई मैं तो अपनी जरूरत की चीज़ें वहीं से लेकर आती हूं। आज भी लाऊंगी वहीं से।

पहली लड़की : क्या-क्या लाएगी?

दूसरी लड़की : नाक की लौंग और कानों के कुण्डल लाऊंगी।

पहली लड़की : पर जल्दी करना। दही लेकर घर जल्दी पहुँचना है।

(दुकान पर पहुँच जाती हैं। सहसा रेडियो पर फरमाइश बोली जाती हैं)

फरमाइश : अब सुनिए जूतों की बरसात पिक्चर का गाना आप सबकी फरमाईश पर-

बकरी गंज से सुस्या राम,तीतर राम, कुत्ता कुमार, और इनके साथी। जामुन की गली बड़पुर से कुमारी बागल, कुमारी मधुमक्खी , डा. मोर कुमार शर्मा और इनकी धर्मपत्नी।

खूंटों के रास्ते, डेयरी नगर से भैंसरानी श्रीवास्तव, भैंसा श्रीवास्तव, गाय रानी गुप्ता, बछड़ी गुप्ता और उनकी सहेलियाँ, तथा रेवड़सर से- समस्त भेड़ परिवार। चोरपुरा से- बळद सिंह चौहान, हुक्काराम यादव, कौआ कुमार शर्मा,

कुमारी कुतिया चौहान, बागा कुमार ,कुमारी आंची खूंटेटा, प्रो. कोयल रानी मेहता, बेवकूफ भाई देसाई, महाबदमाश भाई देसाई, चालाक भाई देसाई, और पूरा देसाई परिवार, श्रीमति पूँछ सक्सैना, सींग सक्सैना, थोबड़ा राम, दाँत कुमार, और पजामा राम शर्मा, भूतगंज से रावण लाल, विभीषण लाल, कुमारी प्रभाती, कल्ली, डा. धापा रानी अग्रवाल, सुखली अग्रवाल और उनके धर्मपति।

शोरपुर से – रामदयाल आगरा, छप्पन कुमार छत्तीस, हज्जारी लाल इलाहाबाद और महादेव मल्ल जोधपुर। सिगड़ी बाई, चूल्हा राम, नत्थीराम बेवकूफ, हुश्यार लाल चौधरी, दुबलाराम चौधरी, मूर्खराम चौधरी और इनके स्वर्गीय दादाजी,

कुए के अन्दर बाणगंगा से, डॉ. कछुआ कुमार कोचर, मेंढ़क लाल और श्रीमति मछली शर्मा, पाताल लोक से अहिरावण सिंह राजावत, भूतनाथ जिंद श्रीमति भूतणी जिंद और समस्त जिंद परिवार।

लोमड़ी का नाका ड़रपोक गंज से– ताकतराम शर्मा, पत्थर श्रीवास्तव, कारतूस कुमार और कुमारी पिस्तौल रानी माथुर। भेभरा की ढाणी सिरगंज से कानसिंह माथुर, नाक राम चौहान, पिटोकड़ा कुमार शर्मा, गप्पीसिंह यादव और प्रो. गाजर रानी नीलम,

आप सभी सुनिए पिक्कर –''जूतों की बरसात'' का एक युगल गीत।

गीतकार हैं रामला बाबा, संगीतकार हैं चोथूराम और गायक कलाकार हैं दफ्फी और सुरज्या कुमार

पेटी लिय्यां आयो सरदार .....

(हलवाई अपनी गद्दी से नीचे उतर आता है और लड़की के कानों में कुण्डल पहनाकर उसका चेहरा देखने में मशगूल हो जाता है। तभी लड़की की माँ उसे ढूंढ़ते हुए आ पहुँचती है)

लड़की की माँ : (हलवाई को गौर से देखते हुए)– अरे वही है।

(और वह चप्पल लेकर हलवाई को मारने दौड़ती है। एक साँड भी हलवाई के पीछे पड़ जाता है। प्रकाश मन्द–मन्द होते हुए बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

आधुनिक यमलोक

अब तक की गई प्रस्तुतियों में निम्न कलाकारों ने भाग लिया :

यमराज	:	कुमार संतोष,भरत वैष्णव, मेघराज रामावत,नन्दराज शर्मा, सुधांशु कश्यप
सितारा देवी	:	सुनीता मिश्रा, शालिनी जौहरी, मंजू शर्मा, भूमिका शर्मा,नीता माथुर, कामिनी शर्मा, ज्योति कटारा, किरण
किस्मती	:	डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा, दिनेश कुलकर्णी
उपकारी	:	शेखर शर्मा, मुकेश शर्मा, अभिषेक शर्मा, महेन्द्र सिंह राठौड़, प्रवीर मुखर्जी, सीताराम राठी, निखिल जैन, अंशु कश्यप
टाईगर	:	नीरज कडेला, मनोज स्वामी, पुनीता मंगा, सत्यनारायण मीणा, रीना शर्मा
नेकीराम	:	अभिषेक शर्मा, अनिरुद्ध सोनी, सीमा गुसाईं, गिरधर सिंह जाड़ावत, प्रीति अग्रवाल
डाकू/ मूमल देवी	:	शैलेन्द्र मिश्रा, हरीश गंगवानी,शैलेन्द्र मिश्रा, वनिता सरीन, रेखा शर्मा, शान्तनु बनर्जी,
बड़े बाबू	:	सुभाष जांगड़ि, अभिषेक शर्मा (वैशाली नगर), भरत वैष्णव, भगवान सहाय, डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा, डॉ. मुकेश वशिष्ठ
भोलाराम	:	हरीश गंगवानी, सीमा गुसाईं, प्रभु लाल मीणा,विनीता
साधू महाराज	:	शैलेन्द्र मिश्रा, हरीश गंगवानी, अजीत भटनागर, पुष्कर सिंह कन्याल
यमदूत	:	प्रेम सिंह कण्डेरा, पुरुषोत्तम सिसोदिया, रचित अरोडा, सतीश सैन, मुकुन्द गोकटे
भगवान	:	हेमू चौधरी, प्रियंका शर्मा, सीमा गुसाईं
नटी	:	सुनीता कुमारी, ज्योति कटारा, पद्मा धाकड़, किरण

मंच पार्श्व

रूप सज्जा	:	बिन्दू भटनागर, रेनूरानी शर्मा,काजल शर्मा
प्रकाश व्यवस्था	:	शहजोर अली
तबला	:	गुलाम गौस खाँ, अभिषेक शर्मा
मंच संचालन	:	डॉ. योजना शर्मा, ममता शर्मा, शालिनी जौहरी
निर्देशक एवं नट	:	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा

कथासार

यमलोक का दृश्य। यमराज अपने आसन पर बैठे खर्राटे ले रहे हैं। यमलोक का रिश्वतखोर एवं भ्रष्ट चौकीदार किस्मती व उसका साथी उपकारी ड्यूटी के दौरान ताश के पत्ते खेलने में मशगूल हैं।

यमराज अपने पूर्व जीवन में धरती पर एक राज्य के मुख्यमंत्री थे तथा चौकीदार किस्मती एक शहर में थानाधिकारी एवं चपरासी उपकारी भी उनका साथी था, अत: इस जन्म में ये सब जोड़-तोड़ बैठाकर एक ही कार्यालय में नियुक्त होकर आ गए हैं। पृथ्वी पर ये लोग भ्रष्टाचार में लिप्त थे अत: यहां पर भी यमराज अपने सहयोगियों किस्मती व उपकारी के साथ आत्माओं का न्याय करने में खूब रिश्वत ऐंठते हैं तथा सभी ईमानदार आत्माओं को नर्क तथा बेईमान एवं दुष्ट आत्माओं को स्वर्ग में स्थान देते हैं।

भोलाराम, साधू महाराज आदि नेक आत्माएं हैं जिन्होंने अपने पूर्व जन्म में पृथ्वी पर हमेशा अच्छे कर्म किये एवं ईमानदारी से जीवन व्यतीत किया परन्तु यमराज को रिश्वत की धनराशि न दिए जाने के कारण उनके आदेश से किस्मती व उपकारी उन्हें नर्क में धकेल देते हैं। यमराज द्वारा अदालत में निर्णय करते समय यह तर्क दिया जाता है कि स्वर्ग में स्थान कम हैं अत: वे अपनी सूझबूझ से न्याय करते हुए उन्हीं व्यक्तियों को स्वर्ग का सुख देना चाहते हैं जो पृथ्वी पर हमेशा सुख भोगने के आदि रहे तथा जिन्होंने कभी दु:खों से साक्षात् नहीं किया। इन्हीं तथ्यों के आधार पर अपने साथियों-चौकीदार किस्मती व चपरासी के जरिए रिश्वत लेकर वे ज़मीन के तस्करों की प्रसिद्ध एजेन्ट सितारा देवी, प्रसिद्ध डकैत व दस्यु सुन्दरी मूमल देवी तथा प्रसिद्ध जेबकतरे टाईगर को स्वर्ग में भेजने का आदेश देते हैं तथा साधू महाराज द्वारा धार्मिक पिक्चरें देखने को मादक पिक्चरें मानते हुए अपराधी ठहराते हैं एवं नर्क में भेज देते हैं।

यमलोक में केवल बडे बाबू ही ईमानदार कर्मचारी हैं जो बेईमान व दुष्ट आत्माओं को नर्क एवं ईमानदार आत्माओं को स्वर्ग दिलाने के भरसक प्रयास करते हैं परन्तु यमराज के चालबाज व बेईमान साथी किस्मती व उपकारी ऐसी आत्माओं से पैसा ऐंठकर उसका आधा हिस्सा यमराज को पहुंचा देते हैं तथा शेष का आधा-आधा हिस्सा खुद रख लेते हैं। जब बडे बाबू दफ्तर से बाहर होते हैं तो ये दोनों उनकी आलमारी से बेईमान आत्माओं की फाईलें चुराकर उनमें लगे विरोधी सबूतों को नष्ट करके यमराज की दराज से छपे छपाये प्रशंसा पत्र लाकर उनमें इन आत्माओं का नाम लिख देते हैं। उन्होंने नकली मोहरें बनाने वाले नेकीराम से भी साठ-गांठ कर रखी है जो बड़े बाबू की अनुपस्थिति में यमलोक में आकर किस्मती व उपकारी के इशारों पर मोहरें बना देता है तथा अपराधी टाईगर के सामने चौकीदार किस्मती की ओर मुखातिब होकर कहता है ''अरे इनसे क्या छुपा है अब। ये ज़मीन पर बड़े थानाधिकारी थे। कई मोहरें बनवाई थी इन्होंने मुझसे। कई बडे-बडे वकील और जज घर पर मेरी सेवाएं लेते थे और मुंह मांगी कीमत मिलती थी मुझे वहां पर।''

उपकारी टाईगर के छपे-छपाये प्रशंसा-पत्र पर नेकीराम से लेकर थानाधिकारी की मोहर लगाकर उसे फाईल में लगाकर रख देता है। अदालत में बडे बाबू टाईगर को नर्क दिलाने हेतु आवाज़ उठाते हैं तथा यमराज को कहते हैं कि महाराज थानाधिकारी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि टाईगर धरती पर एक विशेष इलाके का प्रसिद्ध जेबकतरा था और इसके खिलाफ वहाँ के विभिन्न थानों में सैंकड़ों अपराधिक मामले दर्ज थे तथा टाईगर ने वहाँ के नागरिकों का जीना दूभर कर रखा था।

यमराज की जेब में टाईगर द्वारा दी हुई रिश्वत का हिस्सा पहुँच चुका होता है अत: वे बड़े बाबू का उपहास करते हुए उन्हें फाईल देकर उसमें लगी थानाधिकारी की रिपोर्ट देकर उसमें लगी थानाधिकारी की रिपोर्ट पढ़ने को कहते हैं। बडे बाबू फाईल में थानाधिकरी की रिपोर्ट देखकर दंग रह जाते हैं पर अदालत में उपस्थित लोगों की मांग पर पढ़ते हैं-

प्रशंसा पत्र

मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओं एवं किये गए कार्यों तथा पुलिस प्रशासन को सहयोग देने के एवज़ में यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ-

टाईगर इस शहर का एक बहुत ही शरीफ और ईमानदार नागरिक है। शहर के बदमाशों और जेबकतरों को पकड़वाने में एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

हस्ताक्षर थानाधिकारी

इस प्रकार टाईगर को स्वर्ग मिल जाता है और जाते हुए वह मूंछों पर हाथ फेरता हुआ रहस्यात्मक ढंग से बड़े बाबू को नमस्ते कहता है।

बड़े बाबू भोलाराम के पक्ष में उसके मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं ताकि उसको स्वर्ग मिल सके। भोलाराम मनुष्य जीवन में एक ईमानदार व्यक्ति था परन्तु बड़ी ही चतुराई व उसकी सहमति से यमराज उसे नर्क में भेजने के आदेश देते हैं। चारों तरफ यमराज के न्याय की जय जयकार होती है परन्तु बड़े बाबू अपना सिर पकड़ लेते हैं।

नाटक के तीसरे दृश्य में यमलोक की अदालत के उस दृश्य को बताया गया है जिसमें यमराज धरती की प्रसिद्ध सिने तारिका एवं विदेशी तस्करों की एजेन्ट सितारा देवी को एक प्रतिभाशाली कलाकार बताते हैं तथा किस्मती एवं उपकारी द्वारा भी यह तर्क दिया जाता है कि इनकी पत्रावली में संगीत एवं नृत्य की एम.ए., डबल एम.ए. तक की परीक्षाओं के प्रमाण पत्र लगे हैं अत: इनका गुणी एवं प्रतिभाशाली होना स्वयंसिद्ध है।

इस प्रकार यमराज सितारा देवी की चाह एवं मूमल देवी की अनुशंषा पर उसे स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी के समान ही यमलोक की अप्सरा रूपसी के पद पर नियुक्ति की घोषणा करते हैं।

इसी दृश्य में धरती की प्रसिद्ध डकैत एवं दस्यु सुन्दरी मूमल देवी को नर्क की सज़ा दिलाने हेतु बड़े बाबू पूरा प्रयास करते हैं परन्तु यमराज उन्हें यमलोक के गृहमंत्री के पद पर नियुक्त कर देते हैं।

इस प्रकार यमलोक में यमराज रिश्वत लेकर मनमाने निर्णय करते हैं।

नाटक के अन्तिम दृश्य में यमराज द्वारा भगवान के आगमन पर चतुराई से निरीक्षण कराने को दर्शाया गया है। यमराज अपने सहयोगियों एवं दुष्ट आत्माओं के सहयोग से एक युक्ति ढूंढ निकालने हैं जिसके अनुसार स्वर्ग एवं नरक के साईनबोर्ड पलट दिये जाते हैं। जब भगवान नरक लगे बोर्ड वाले भाग में सब दुष्ट आत्माओं को एवं स्वर्ग लगे बोर्ड वाले भाग में भोलाराम को बैठा पाते हैं तो यमराज की न्याय व्यवस्था की प्रशंसा करते हैं।

इस निरीक्षण दौरे में यमराज उस बेईमान डाक्टर को भी भगवान से अनुमोदन कराकर स्वर्ग का वैध अधिकारी बना देते हैं जिससे उन्होंने रिश्वत ली है।

इस प्रकार इस नाटक में समसामयिक परिस्थितियों एवं वर्तमान व्यवस्थाओं का सटीक चित्रण किया गया है। आधुनिक यमलोक द्वारा विभिन्न आत्माओं की जो प्रस्तुति की गई है वह अंतहीन है और भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी आदि की यह शृंखला लगातार चलती जा रही है।

पहला दृश्य

नट : सुनो सुनो सुनो

नटी : सुनो सुनो सुनो

नट : हालत यमलोक की

नटी : तुम भी तो जानो

नट : ये सच्च है या झूठ है तुम भी पहचानो।

नटी : ये सच्च है या झूठ है तुम भी पहचानो।

नट : दुष्ट प्रशासन के चंगुल में, न्याय व्यवस्था तडप रही।

नटी : रिश्वतखोरी, बेईमानी, तीव्र गति से पनप रही।

नट : नैतिक मूल्य झुके बेबस हों, पीडित अत्याचारों से।

नटी : देश रो रहा जार—जार, सच्चाई के बलिदानों से।

नट : यही बताना था हमको, हालत जो भारत देश की।

नटी : आप सभी ने भी तो है, आंखों से यह सब देख ली।

नट : सबको आशीष है,

नटी : सबको प्रणाम है,

नट : सबको सलाम है,

नटी : सबको राम राम है। — नट का हाथ पकडकर जाने लगती है।

एक कलाकार —(दर्शकों में से)— : ऐ ऐ जाते कहां हो, नाटक दिखाकर जाना होगा।

अन्य सब कलाकार : हां ।

नट : कितने सारे दर्शक आये, धा धा धा धा — तबले की थाप

नटी : क्या क्या आशा मन में लाये, धा धा धा धा — तबले की थाप

नट : अच्छा सा एक नाटक देखें, धा धा धा धा — तबले की थाप

नटी : और खुशी से घर को जायें। नट का हाथ पकडकर जाने लगती है।

एक कलाकार —(दर्शकों में से सीटी बजाते हुए) : ऐ ऐ नाटक दिखाकर जाते हो कि नहीं!

अन्य सब कलाकार : हां ।

नट : नाटक तो हम शुरू करें पर करें अकेले क्या,

नटी : नाटक तो हम शुरू करें पर करें अकेले क्या,

नट : तुम्ही सारे हो कलाकार, धा धा धा धा तुम्ही सारे हो कलाकार

नटी : बैठे रहोगे क्या रे नाटक शुरू करें कैसे

नट— नटी — (एक साथ)— हम नाटक शुरू करें कैसे— तबले पर दो आवर्तन के बाद सम पर

नटी : किस्मत्ती कौन बनेगा !

एक कलाकार दर्शकों में से : हम बनेंगे।

उपकारी : हम बनेंगे।

मूमल देवी : हम बनेंगे।

टाईगर : हम बनेंगे।

सितारा देवी : हम बनेंगे।

भोला राम : हम बनेंगे।

साधू : हम बनेंगे।

बडे बाबू : हम बनेंगे।

यमदूत : हम बनेंगे।

भगवान : हम बनेंगे। (इस प्रकार सब पात्रों के नाम बोले जायेंगे।)

नट : (अन्त में मुख्य पात्र को लक्ष्य करके) : यमराज कौन बनेगा

!

मुख्य पात्र : (मंच पर आकर) — हम बनेंगे ।

इसके साथ ही सभी कलाकार स्टेज पर आकर गोल—गोल घूमते हैं।

नट : ठहरो रे ठहरो ।

सब कलाकार एक साथ : क्यूं! जमीन पर गोलाकार बैठ जाते हैं।

नटी : नाटक शुरू करने से पहले यमराज भजन तो कर लो रे यमराज भजन तो कर लो।

नट : नाटक शुरू करने से पहले यमराज भजन तो कर लो रे यमराज भजन तो कर लो।

नटी : (उठकर बेसुरे स्वर में) : हे .....

(सब कलाकार उसके बेसुरेपन पर हंसते हैं।)

नट : (उन्हें शान्त करते हुए उठकर) :

स्थायी : हे यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई।

(सब कलाकार दोहराते हैं।)

नट : हे.. यम के भजन से डाकू बने मन्त्री।

नटी : डाकू बने मन्त्री

नट : यमराज—भजन से चोरों ने गति पाई

कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई

नट : हे. यम के भजन से तस्कर छूटे जेल से

नटी : हां हां छूटे जेल से

नट : अपराधियों की खुशहाली आ..ई।

कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई

नट : हे. यम के भजन से घोटाले हुए देश में

नटी : घोटाले हुए देश में

नट : यमराज की धजा, चहुं ओर फहराई

कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई

नट : हे. यम के भजन से जेल बने स्वर्ग सब

नटी : जेल बने स्वर्ग सब।

नट : जाने की वहां सभी ने बुकिंग कराई

कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई
नट : हे. यम के भजन से रेप कर बरी हुए
नटी : रेप कर बरी हुए
नट : उंचे हो सीना ताने लूटें वाही वाही
कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई
नट : हे. यम के भजन से सिद्धान्त टूटे सब के
नटी : सिद्धान्त टूटे सब के
नट : यम के भजन से संस्कृति ठिठुराई
कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई
नट : हे. यम के भजन से हवाले घोटाले हुए
नटी : हवाले घोटाले हुए
नटी : राजनेता चारा चर, लेते जंभाई
कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई
नट : हे. यम के भजन से पुजारी भोग चट करें
नटी : पुजारी भोग चट करें
नट : मन्दिरों में ऐययासी की, महफिल जमाई
कोरस : यमराज भजो यमराज भजो यमराज भजो भाई
नट : यम के प्रताप से रिश्वतखोर खुले घूमें
नटी : रिश्वतखोर खुले घूमें
नट : मेरे प्रिय देश की हुई बदहाली
नट-नटी : आओ सब मिल गायें जय—जय यमराज की
सब : जय—जय यमराज की जय—जय यमराज की जय—जय यमराज की जय—जय यमराज की

दूसरा दृश्य

(यमलोक के कार्यालय का दृश्य। सबसे ऊपर सामने की ओर 'कार्यालय यमलोक' का बोर्ड लगा हुआ है जिसके नीचे सबसे पीछे एक बड़ी मेज पर यमराज खर्राटे ले रहे हैं। यमराज की सीट से थोड़ा आगे दायें हाथ को हटकर बड़े बाबू टेबिल पर कुछ काम करने में व्यस्त हैं। स्टेज के दायीं ओर पब्लिक की ओर मुँह करते हुए एक दरवाज़ा है जिस पर स्वर्ग का बोर्ड लगा है एवं दाहिनी तरफ इसी प्रकार का दूसरा दरवाजा है जिस पर नरक का बोर्ड लगा है। स्वर्ग में वे

व्यक्ति हैं जो मरने के उपरांत स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं। इस विभाग पर पर्दा गिरा हुआ है, केवल बोर्ड दिखाई देता है।

नरक वाले विभाग में एक बुड्ढ़ा आदमी, जिसका नाम भोलाराम है, उकडू-मूकडू दोनों घुटनों को हाथों में थामे बैठा हुआ है। नरक के बाहर ज़मीन पर चौकीदार किस्मती और चपरासी उपकारी ताश-पत्ते खेलने में मशगूल हैं।

उपकारी : (किस्मती से)- भैया, मेरी नौकरी पक्की कब होगी ?
किस्मती : जब तू दुनियादारी के सारे रास्ते सीख जायेगा। और यह सब हम जैसे बड़े आदमियों के पास में बैठने से ही आयेगा। इसलिए तुझे और सेवा करनी होगी हम सबकी।
उपकारी : भैया जब मैं धरती पर था न, तब आपसे भी बड़े-बड़े आदमियों की सेवा की थी और उनसे कई ज्ञान की बातें सीखी हैं।
किस्मती : जरूर सीखी होंगी बच्चे बड़े-बड़े आदमियों से ज्ञान की बातें। मैंने भी सीखी थी पर उनके अर्थ आज बदल गये हैं और तेरा सारा ज्ञान इस यमलोक में आकर निरर्थक हो गया है।
उपकारी : कैसे ?
किस्मती : (किस्मती सोचता है)- अब तुझे कैसे समझाऊं ?
(फिर कुछ रुककर)- देख भाई मैंने भी बुजुर्गों से एक काम की बात सीखी थी।
उपकारी : क्या भैया ?
किस्मती : हमारे बुजुर्ग कहा करते थे कि व्यक्ति को अपने भाइयों में ही बैठना चाहिए, छाया छाया में ही आना-जाना चाहिए और रस्ते-रस्ते जाना चाहिए। और इसके लिए वे कहा करते थे :-
बैठबो भायां को चाहे बैर ही हो
आबो-जाबो छाया को चाहे कैर ही हो
अर चालबो गैला को चाहे फेर ही हो।
उपकारी : वाह वाह वाह वाह (उछलता है)
किस्मती : चुप्प (डांटता है) क्यों उछलता है ?
उपकारी : भैया कितनी अच्छी बात कही है आपने।

किस्मती : इसमें तुझे क्या अच्छी बात लगी, हैं ?

उपकारी : बैठबो भायां को चाहे बैर ही हो
आबो-जाबो छाया को चाहे कैर ही हो
अर **चालबो गैला को चाहे फेर ही हो।**
फेर ही हो पर जोर देते हुए- ये। भैया, रस्ते-रस्ते जाने का आनन्द ही कुछ और है।

किस्मती : अरे मेरे ताऊ, आजकल रस्ते-रस्ते जाने वाले बेवकूफ समझे जाते हैं। जो सीधा रास्ता छोड़कर पतली गली से अपना काम निकाल ले उसे ही ज्ञानी माना जाता है और भाई रस्ते-रस्ते जाने वालों के लिए तो आज भी एक पुरानी कहावत सटीक लागू होती है।

उपकारी : कौनसी कहावत भैया ?

किस्मती : गैलै-गैलै जाय ऊंकी ड़ोकरी मर जाय
जीं का मालपुआ कुण खाय
काळी कुत्ती खाय।

उपकारी : (किस्मती के कोहनी मारते हुए)- बड़े बाबू इधर ही देख रहे हैं।
(यहां से नाटक आधुनिक यमलोक का प्रारम्भ होता है)

नोट—यह भाग अप्रैल 2007 से सितम्बर 2007 के लगभग बीच के समय में शाहजहाँपुर में लिखा गया। इससे पूर्व किये गये नाटक के प्रस्तुतीकरणों में नाटक का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ :-

किस्मती : (ताश का पत्ता जमीन पर मारते हुए) ये काट्टा.....
(बड़े बाबू के काम में व्यवधान होता है और वे चश्मे के फ्रेम में से निगाहें ऊँची करके दोनों को देखते हैं।)

उपकारी : (उसके कोहनी मारते हुए धीमे स्वर में) बड़े बाबू इधर ही देख रहे हैं।

किस्मती : (थोड़ी ऊँची आवाज में) तू बड़ा डरपोक है रे उपकारी। क्या कर लेंगे बड़े बाबू हमारा। ईमानदार हैं वे। और हम.....
(रहस्यात्मक ढ़ंग से हँसता है) तुझे पता होना चाहिए कि

यमराज जी से पहले ही सैटिंग है अपनी। धरती पर वे एक राज्य के मुख्यमंत्री थे और मैं एक अफ़सर था अफ़सर।

उपकारी : (आँखें फाड़कर गर्दन हिलाते हुए) अच्छा... (धीमे स्वर में)
तभी तो मैं सोचूँ कि तू बड़े बाबू से डरता क्यों नहीं। (फिर सहमते से बड़े बाबू और उसके बाद खर्राटे ले रहे यमराज की ओर देखते हुए) लेकिन भैया। मुझे तो अभी बड़े बाबू का भी ड़र लगता है। तू तो जानता ही है कि अभी मेरा प्रोबेशन पीरियड़ पूरा होने में कुछ दिन बाकी हैं। (फिर हाथों को मोड़कर बलशाली होने का अभिनय करते हुए) फिर तो मैं भी रावण हो जाऊँगा रावण।

किस्मती : (मुँह बिचकाते हुए) अबे क्या घटिया नाम ले लिया उस ज़मीन के एक छोटे से राक्षस का।

उपकारी : (आश्चर्य से) क्यों भाई। रावण तो बहुत बड़ा राक्षस राजा था और ज़मीन पर तो जब कोई व्यक्ति दुष्टता का काम करता है तो उसको रावण की उपमा दी जाती है।

किस्मती : अरे उपकारी अभी तू ज़मीन से नया-नया आया है। (फिर उसे समझाते हुए) अरे भैया। ये यमलोक है यमलोक, और यहाँ का तेरे मेरे जैसा एक एक कर्मचारी कई सौ रावणों से अधिक गुणी और महाबली है।) (नरक में बैठा भोलाराम उन दोनों की बातों को सुनकर उनके पास सलाखों तक आ जाता है।)

भोलाराम : महाबलियों की जय हो। भाई लोगो! मैं एक ईमानदार और गरीब आदमी हूँ। भाई, आप लोगों ने मुझे नरक में बन्द कर रखा है। बड़े बाबू तो कह रहे थे कि मुझे स्वर्ग मिलना था, फिर क्यों मुझे नरक में पटक रखा है। मुझ पर मेहरबानी करो और मुझे स्वर्ग में पहुँचा दो भैया।

किस्मती : अच्छा! स्वर्ग में जायेगा ? अरे, उस दिन नहीं कहा था तुझे जब तू पहले दिन यहाँ आया था, कि भैया हमारे यमराज जी

मुख्यमंत्री थे ज़मीन पर, उनकी आदतें कुछ राजनीतिक हैं (फिर उसे धमकाते हुए) दस्तूरी दी तूने तब?

भोलाराम : कैसी दस्तूरी साहब! मैं तो तब भी नहीं समझा था और अब भी नहीं समझा।

उपकारी : (उसे डंडे से अन्दर ठेलते हुए) सब समझ जायेगा बच्चू सब समझ जायेगा। पहले दिन तो तू कह रहा था कि बाबू। मुझे तो स्वर्ग ही मिलेगा स्वर्ग।

किस्मती : (हाथ नचाते हुए) मैंने ज़मीन पर कोई ग़लत काम नहीं किया, बड़ा ईमानदार था और मेरी फाईल साफ-सुथरी थी। (एक यमदूत के साथ एक आत्मा का प्रवेश। किस्मती व उपकारी सतर्क होकर ललचायी निगाहों से आत्मा को देखते हैं)

यमदूत : (प्रवेश करके) गुड मॉर्निंग बड़े बाबू। यह ज़मीन का प्रसिद्ध जेबकतरा टाईगर है। इसने अपने जीवन में कोई अच्छा काम नहीं किया और हमेशा लोगों की जेबें काटी हैं। (फिर एक फाईल देते हुए) यह इसकी पत्रावली है। (वापस प्रस्थान करता है।)

किस्मती : (खुशी से) जेबकतरा। बेईमान हुर्रे.....।

उपकारी : (किस्मती को अलग ले जाते हुए) मिलेगा हमको माल

किस्मती : ये तो है अपना मेहमान.....। (दोनों हाथ मिलाते हैं)

बड़े बाबू : उपकारी।

उपकारी : (पास जाकर) जी बड़े बाबू।

बड़े बाबू : (सीट से उठते हुए) मैं लंच में जा रहा हूँ। (फिर टाईगर की पत्रावली उपकारी को देते हुए) इसकी यह पत्रावली संभालकर रखना। मैं लंच से आकर इसे साहब के सामने पेश करूँगा। वे ही इसका निर्णय करेंगे। (फिर किस्मती से) किस्मती। यह एक खतरनाक अपराधी आत्मा है, इसका ध्यान रखना। कहीं भाग न जाये।

किस्मती : (व्यंग्य से) आप निश्चिन्त होकर जायें बड़े बाबू। हम हर चीज का ध्यान रखेंगे।

(बड़े बाबू का प्रस्थान)

किस्मती : (टाईगर से) कहो दोस्त कैसे हो?

(टाईगर डरता है)

उपकारी : (उसके कंधे पर हाथ मारते हुए) घबराओ नहीं टाईगर। हम भी जेबकतरे ही हैं।

टाईगर : जी.....मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : देखो भाई। तुमने ज़मीन पर लागो की जेबें काटी हैं, तो यह तो मानना ही पड़ेगा की तुम इस कला में प्रवीण हो।..... अब तुम्हारी पत्रावली में ये सब बातें साफ-साफ लिखी हुई हैं।

उपकारी : और अब लंच के बाद बड़े बाबू अपनी रिपोर्ट के साथ पत्रावली साहब को पेश करेंगे।

किस्मती : और तुम्हें नरक मिलेगा नरक। सोचो तो। सुबह पड़ेगे कोडे। दिनभर चक्की पीसनी पड़ेगी और रात को काठ में दे दिए जाओगे। (टाईगर घबरा जाता है।)

उपकारी : (उसकी मनोदशा भाँपते हुए) हाँ.....। तुम्हे स्वर्ग भी मिल सकता है।

(अन्दर कोठरी में बन्द भोलाराम उनकी तरफ सलाखों तक आता है)

भोलाराम : (खुशी से) मुझे पता था मेरे साथ न्याय जरूर होगा और आप मुझे स्वर्ग में भेज देंगे।

किस्मती : (उसे डंडे से अन्दर ठेलते हुए) अबे चल बे ईमानदार फटीचर। ये मुँह और मसूर की दाल।

उपकारी : यह सब हम इस नये मेहमान को कह रहे हैं।

टाईगर : (कुछ बनते हुए) मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : अरे बस वही करना पड़ेगा जो तुम ज़मीन पर थानेदार के साथ करते थे।

उपकारी : ज़मीन का थानेदार (किस्मती की ओर इशारा करते हुए) यहाँ है हवलदार। (फिर चुटकी से रुपयों की झन्नाहट का इशारा करते हुए) समझ गये न।

टाईगर : (खुश होता हुआ) अच्छा। यह बात है।

(मोजे में से 100 रु० का नोट निकालकर उपकारी को देता है।)

किस्मती : नोट! वाह भाई वाह! तुम्हारे पास रुपये। यह तो बताओ भैया..... यह रुपये तुम्हारे पास आये कहाँ से?

टाईगर : अब आप लोगों से क्या छुपाना। आप तो अपनी ही बिरादरी के आदमी हो..... (फिर इतराते हुए) ये रुपये मैंने उस यमदूत की जेब काटकर पार किये हैं, जो मुझे लेकर यहाँ आया था।

उपकारी : अरे भैया। इससे क्या होगा। यहाँ पर परसेंटेज के हिसाब से चलता है।

टाईगर : कैसे?

उपकारी : भैया बड़े भोले हो। इसमें से पचास प्रतिशत हिस्सा यमराज जी का होगा। अब तुम्हीं बताओ पच्चीस रु० में हमारा गुजारा होगा?

(टाईगर रुपये जेब में रखने लगता है।)

किस्मती : (खुशी से रुपये झटकते हुए) अरे वाह मेरे हीरो! तुम तो बड़े काम के आदमी निकले।

टाईगर : कैसे?

किस्मती : (टाईगर को देखते हुए) देखो टाईगर! ज़मीन पर तुम अपराधी गिरोह के लिए काम करते थे, अब तुम यहाँ पर हमारे लिए काम करोगे। तुम रोजाना इन सब लोगों की जेबें काटोगे और उससे प्राप्त राशि हमें दोगे।

टाईगर : जो हुक्म आप लोगों का। पर मुझे स्वर्ग तो मिल जायेगा न?

उपकारी : अरे भैया, बड़े भाई ने जो कह दिया वह लोहे की लकीर है।

टाईगर : पर बड़े बाबू की रिपोर्ट का क्या होगा? सुना है कि वो तो बड़े सिद्धान्तवादी और ईमानदार आदमी हैं।

किस्मती : (व्यंग्य से मुस्कराते हुए) तुम चिन्ता मत करो। इस तरह की समस्याओं से निपटने के लिए हमारे पास अलग-अलग तरह के कई नुस्खे हैं।

(सहसा मोहर बनाने वाले का प्रवेश)

मोहरवाला : जै यमराज जी की साहब लोगो।

किस्मती : (खुश होता हुआ) अरे भाई आओ नेकीराम आओ। बड़े मौके पर आए भाई। (फिर उपकारी से) उपकारी। टाईगर की फाईल तो लाना जरा।

नेकीराम : (खुश होकर झोला ज़मीन पर रखता हुआ) समझ गया साहब सब समझ गया। बताइये कौन-कौन-सी मोहरें बनवानी हैं।

(उपकारी फाईल खोलकर पन्ने पलटता है।)

उपकारी : पुलिस स्टेशन.....(रुक जाता है)

किस्मती : क्यों क्या हुआ?

उपकारी : बड़े भैया..... जगह का नाम नहीं दिख रहा।

किस्मती : अरे नीचे थानाधिकारी की मोहर लगी होगी जिसमें लिखा होगा जगह का नाम।

उपकारी : नहीं आ रहा भैया यहाँ भी समझ में। मोहर में नाम घिलमिल-सा हो गया है।

नेकीराम : कोई बात नहीं साहेब। तजुर्बेकार आदमी हूँ। यहाँ तक ऐसे ही थोड़े ही पहुँचा हूँ?

किस्मती : क्या मतलब?

नेकीराम : मतलब यह साहब। कि मैं मोहर ही इस तरह की बनाऊंगा कि उसमें जगह का नाम क्लीयर आयेगा ही नहीं।

उपकारी : यानि कि हू बहू नकल। मान गये नेकीराम तुम्हें मान गये।

नेकीराम : (गर्व से गर्दन ऐंठते हुए) मानेंगे कैसे नहीं साहब। ज़मीन पर भी सब लोग हमें मानते थे। (फिर टाईगर की आरे देखते हुए) भैया! सेशन कोर्ट के बाहर हमारी मोहर बनाने की थड़ी थी। बड़े-बड़े अफ़सर लोग हमसे इस प्रकार की सेवाएँ लेते थे।

टाईगर : अच्छा.....! यार देखने में तो बच्चे लगते हो।

नेकीराम : अरे भैया.....। आज के जमाने में बच्चे क्या नहीं कर सकते? बच्चे हथियारों के बड़े-बड़े कारखाने चला रहे हैं, बम बना रहे हैं, फिर मैं मोहरें क्यों नहीं बना सकता? (फिर किस्मती की ओर इशारा करते हुए) इनसे क्या छुपा है अब। ये ज़मीन पर

बड़े थानाधिकारी थे। कई मोहरें बनवायी थी इन्होंने मुझसे। (फिर धीमे से) कई बड़े-बड़े वकील और जज घर पर मेरी सेवाएं लेते थे और मुँह मांगी कीमत मिलती थी मुझे वहाँ पर। (फिर मोहर बनाने लगता है।)

किस्मती : (टालने के उद्देश्य से नेकीराम को देखते हुए) ठीक है ठीक है। तुम अपना काम करो नेकीराम (फिर उपकारी से) उपकारी पढ़ना तो जरा, क्या लिखा है थानाधिकारी के इस पत्र में।

उपकारी : (पत्र पढ़ता हुआ) भैया इसमें लिखा है कि..... टाईगर इस इलाके का बहुत बड़ा जेबकतरा है और इसके खिलाफ विभिन्न थानों में सैकड़ों आपराधिक मामले दर्ज हैं। टाईगर ने यहाँ के नागरिकों का जीना दूभर कर रखा है।

किस्मती : (उपकारी से) ऐसा करो। साहब की दराज में कुछ छपे हुए फार्म रखे हैं। निकाल लाओ।

उपकारी : (जेब से फार्म निकालते हुए) भैया, ये तो एड़वांस में ही हैं मेरे पास।

किस्मती : अब इसमें नाम की खाली जगह पर टाईगर का नाम लिख दो।

उपकारी : (नाम लिखते हुए) लिख दिया, टाईगर।

किस्मती : अब इसे पढ़ो।

उपकारी : (पढ़ता है) प्रशंसा-पत्र - मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओं और पुलिस प्रशासन को सहयोग देने के एवज में यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ ''टाईगर इस शहर का एक बहुत ही शरीफ और ईमानदार व्यक्ति है। शहर के बदमाशों और जेबकतरों को पकड़वाने एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।''

किस्मती : (खुश होता हुआ) : वाह भाई वाह। (फिर नेकीराम से) मोहर बन गई नेकीराम।

नेकीराम : (मोहर देता हुआ) - हाँ साहब। इमरजेन्सी केस में क्या देर लगती है।

किस्मती : (मोहर उपकारी को देते हुए) - लो भैया उपकारी, लगाओ ठप्पा और करो टाईगर का उद्धार।

(उपकारी कागज पर मोहर लगा देता है)

टाईगर : मान गये साहब मान गये। ऐसा करिश्मा तो कभी पृथ्वी पर भी नहीं देखा था।

(सब हँसते हैं। प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य - समाप्त)

तीसरा दृश्य

स्थान - यमराज की अदालत

(यमराज न्यायाधीश की सीट पर विराजमान हैं। बड़े बाबू ईमानदार आत्माओं की तथा किस्मती बेईमान व आपराधिक प्रवृत्ति की आत्माओं की पैरवी कर रहे हैं। उपकारी चपरासी भी पास में ही खड़ा है। एक तरफ स्वर्ग की ओर धरती की प्रसिद्ध दस्यु सुन्दरी मूमल देवी खड़ी है तो उसके पास में ही प्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेत्री सितारा देवी, प्रसिद्ध जेबकतरा टाईगर आदि खड़े हैं। दायीं और नरक है जिसमें सलाखों के पीछे धरती का कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति भोलाराम एवं एक भगवां वेशधारी साधू महात्मा खड़े हैं।)

यमदूत : (ऊँची आवाज में) - आत्मा टाईगर हाजिए हो.....।

टाईगर : (सामने आकर अपना हैट उतारकर यमराज का अभिवादन करते हुए) -जै यमराज जी की साहब लोगों।

यमराज : (मुस्कुराकर अभिवादन का मौन उत्तर देते हुए) बड़े बाबू। क्या केस है इनका?

बड़े बाबू : महाराज। इस आत्मा की पत्रावली के शुरू में ब्रीफशीट लगा रखी है जिसमें लिखा है कि यह अपराधी धरती के एक प्रमुख शहर का बहुत ही खतरनाक मुजरिम और जेबकतरा था। इसके ख़िलाफ वहाँ के स्थानीय थानों में कई अपराधिक मुकदमे दर्ज थे। और इस खरतनाक मुजरिम ने वहाँ के शरीफ और ईमानदार लोगों का जीना दूभर कर रखा था (टाईगर मूंछों पर हाथ फेरता है।)

यमराज : बड़े बाबू आप जो कुछ कह रहे हैं क्या वाकई ठीक है ?

बड़े बाबू : हाँ महाराज।

यमराज : भाई देखने में तो ये शरीफ आदमी लगता है। ख़ैर। इसके ख़िलाफ कोई सबूत है आपके पास ?

बड़े बाबू : हाँ महाराज। एक साधू महाराज गवाह हैं इस बात के।

यमराज : (आदेशात्मक स्वर में) उन्हें गवाहों के कठघरे में खड़ा किया जाए।

यमदूत : आत्मा साधू ..... हाजिर हो .....।
(किस्मती साधू महाराज को शपथ दिलाने हेतु उपकारी को इशारा करता है। उपकारी एक पोथी साधू महाराज के पास ले जाता है।)

साधू : (पोथी को छूते हुए) –मैं इस गीता.....

उपकारी : (झिड़कते हुए) – गीता नहीं।' इसका नाम यमग्रंथ है साधू जी।

साधू : (डरते हुए) हाँ मैं इस यमग्रंथ पर हाथ रखकर शपथ लेता हूँ कि जो भी कहूँगा सच सच कहूंगा सच के अलावा कुछ न कहूंगा। (फिर यमराज की ओर देखता हुए) – महाराज। मैंने एक बार पिक्चर हॉल में इस आदमी को (टाईगर की ओर इशारा करते हुए) किसी की जेब काटकर भागते हुए देखा था।
(सितारा देवी, मूमल देवी, किस्मती व उपकारी साधू महात्मा की इस बात पर हँसते हैं)

यमराज : (मेज पर हथौड़ा मारते हुए) – ऑर्डर.....ऑर्डर.....। (सब आत्माएँ चुप हो जाती हैं।)

बड़े बाबू : (यमराज से) – महाराज इस तरह अदालत में हँसना अदालत की तौहीन है। मेरी अदालत से दरख़्वास्त है कि इन (इशारा करते हैं) अनुशासनहीन आत्माओं और कर्मचारियों के खिलाफ ऐक्शन लिया जाये।

यमराज : भई बड़े बाबू। हँसी तो हमें भी आ रही है इन साधू महाराज की गवाही पर। अरे भाई साधू महात्मा और पिक्चर। हीरो-

हीरोइनें। (कुटिल मुस्कान से सितारा देवी को देखते हैं) जमने वाली बात नहीं है यह कुछ। (फिर चुटकी लेते हुए व सितारा देवी को देखते हुए) लगता है .... रसिक मिजाज हैं साधू महाराज।

साधू महाराज : (आपत्ति करते हुए) – क्षमा करें महाराज। मैं जो भी कहता हूँ सत्य वचन है।

किस्मती : (सितारा देवी की ओर देखते हुए) – सत्य वचन है महाराज।
(सितारा देवी साधू महाराज की ओर देखकर मुस्कुराती है)

बड़े बाबू : (क्रोध में) – महाराज। यह अदालत है या पिक्चर हॉल। गवाह को अपनी सफाई देने का मौका दिया जाय।

यमराज : ऑर्डर..... ऑर्डर.....। हाँ तो साधू महाराज। क्या आप वाकई पिक्चर देखने गये थे। (फिर चुटकी लेते हुए) – साथ में कौन थी महाराज ?

साधू : हाँ महाराज। मैं अपने चेले सेवादास के साथ धार्मिक पिक्चर जय श्रीराम देखने गया था।

यमराज : (क्रोध से हथौड़ा मेज पर मारते हुए) – होश की दवा करो साधू। यह यमराज की अदालत है और यहाँ पर और किसी की जय बोलने की इजाजत नहीं दी जाती। हमारी हद में जय श्री यमराज बोला जाता है, समझे आप। (फिर बड़े बाबू की ओर देखते हुए) – बड़े बाबू। इन पर अदालत की मानहानि का मुकदमा चलाया जाय।

बड़े बाबू : इसे क्षमा करें प्रभु। यह आत्मा अभी यहाँ के नियमों से वाकिफ़ नहीं है।

यमराज : ठीक है ठीक है। (फिर साधू की ओर देखते हुए) – अभी पता चल जाता है कि ये वाकई पिक्चर देखने गये थे या नहीं।
(फिर किस्मती से) – हवलदार। इसके चेले सेवादास की गतिविधियाँ पता करो कि क्या उसे वाकई पिक्चर देखने का शौक है।
(किस्मती पास में रखी दूरबीन आँखों से लगाकर देखता है।)

किस्मती : (मुस्कराते हुए और लिप्सा के मारे होठों पर जीभ फिराते हुए) – वाह-वाह महाराज। वाह वाह! सब कुछ दिख रहा है। (अदालत में उपस्थित सभी लोग कुछ जानने को उत्सुक हो उठते हैं।)

यमराज : क्या दिख रहा है तुम्हें हवलदार। आँखों देखा हाल सुनाओ।

किस्मती : महाराज एक पिक्चर हॉल दिखाई दे रहा है जिसके सामने गोल गोल सीढियाँ हैं। चालीस-पैंतालीस सीढ़ियाँ चढकर ऊपर एक गोल बरामदा है जिसके दायें बायें दो टिकिट खिड़कियाँ हैं और ऊपर पिक्चर का बहुत बड़ा होर्डिंग लगा है।

अब एक साधू वेशधारी किसी के साथ पिक्चर हॉल की सीढियाँ चढ रहा है महाराज.....

साधू महाराज : (बीच ही में बात काटते हुए ऊँची आवाज़ में) मैं कह नहीं रहा था महाराज, कि मेरा चेला मेरे बताये आदर्शों पर चल रहा है और मुझे जो धार्मिक पिक्चरें देखने का शौक था वह मेरे चेले को अब भी है महाराज।

बड़े बाबू : अब तो मान गये न महाराज कि साधू महाराज की गवाही सच्ची है।

किस्मती : वाह वाह .... मजा आ गया। क्या खूबसूरती है महाराज।

यमराज : (उत्सुकता से) क्या है हवलदार..... ? जरा खुलासा करके बताओ।

किस्मती : महाराज अब वे साधू-वेशधारी घूमकर खड़े हो गये हैं। उनके साथ एक चन्द्रमुखी साध्वी भी है महाराज।

यमराज : (सीट से खड़े होते हुए खुशी से) – साध्वी..... चन्द्रमुखी आगे बताओ हवलदार जल्दी बताओ।

(उपकारी व टाईगर भी ललचायी दृष्टि से किस्मती के पास आ जाते हैं।)

किस्मती : (दूरबीन में देखते हुए) हाँ महाराज ऐसी सुन्दरता न कभी देखी न सुनी। साध्वी है चन्द्रमुखी, पतली-छरहरी। उम्र सोलह से ऊपर। रंग चाँदी-सा। रूप चन्दन-सा। सिर से पैर तक जैसे

साँचे में ढली हुई। बड़ी-बड़ी मदभरी आँखें, लाल-पतले अधर, नुकीली चिबुक, उठा भरा वक्ष, पतली बलखाती कमर, लम्बी बाहें। जब वे चलती हैं महाराज तो लगता है सारी दुनिया डोल रही है।

यमराज : (किस्मती से) हवलदार अबकी बार किसी आत्मा को पृथ्वी से लाना होगा तो हम स्वयं भी साथ जायेंगे। (फिर साधू महाराज की ओर देखते हुए) ऐसा करो, ये दूरबीन साधू महाराज को दो। ये भी तो पहचानें कि क्या यही उनका शिष्य सेवादास है।

(किस्मती दूरबीन साधू महाराज को देता है।)

किस्मती : लीजिए महाराज। एक नजारा आप भी देख लीजिए।

साधू : (दूरबीन में देखते हुए) राम-राम राम-राम..... (उपकारी उन्हें आँखें दिखाता है। साधू महाराज दूरबीन किस्मती को पकड़ाकर दोनों हाथों से आँखें ढाँप लेते हैं।)

यमराज : क्यों महाराज। क्या यही आपका शिष्य है ?

साधू महाराज : महाराज, मत कहो उस दुष्ट को मेरा शिष्य।

बड़े बाबू : इससे क्या हुआ महाराज। वह किसी के साथ भी जाये। पर है तो धार्मिक पिक्चर ही न।

यमराज : अरे हवलदार। जरा देखना तो कौनसी पिक्चर लगी है उसमें (किस्मती दूरबीन लगाकर दुबारा देखता है)

किस्मती : महाराज। पिक्चर का नाम तो कुछ समझ में नहीं आ रहा पर पिक्चर हॉल पर लगे होर्डिंग पर अंग्रेजी का एक बहुत बड़ा ''ए'' लिखा है। और.....

यमराज : और क्या हवलदार ?

किस्मती : (सितारा देवी की ओर देखता हुआ) और एक खूबसूरत युवती की मजेदार तस्वीर भी है होर्डिंग पर महाराज।

यमराज : (उतावलेपन से) ला तो जल्दी मुझे दे दूरबीन। निर्णय तो मुझे ही करना है।

(यमराज दूरबीन से देखकर झूम उठते हैं) वाह भाई वाह। (फिर हवलदार से) हवलदार।

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : अभी, इसी वक्त एक दूत को हमारी ओर से आदेश दो कि वह उस चन्द्रमुखी साध्वी की आत्मा को हमारे दरबार में हाजिर करे, शीघ्र।

उपकारी : महाराज मैं जाऊं?

यमराज : शटअप।

किस्मती : शटअप। (उपकारी चुप हो जाता है)

बड़े बाबू : (आश्चर्य से) लेकिन महाराज उसके जीवन काल का समय तो अभी बहुत बचा है। हम उसे अभी कैसे ला सकते हैं?

यमराज : (खुश होते हुए) याड़ा एक्ट के तहत बड़े बाबू याड़ा एक्ट (फिर शून्य में देखते हुए झूमने के अन्दाज में) यमलोक की न्याय व्यवस्था के द्वारा बनाया कानून याड़ा एक्ट।

टाईगर : (उत्सुकता से) यह कौनसा एक्ट है महाराज पृथ्वी पर तो कभी नाम नहीं सुना ऐसा। हाँ, टाड़ा एक्ट का नाम जरूर सुना है।

यमराज : (किस्मती को ऊँची आवाज में) हवलदार। इन सभी नई आत्माओं को याड़ा एक्ट के बारे में जानकारी दे दो।

किस्मती : (सबको समझाते हुए) याड़ा एक्ट का मतलब है यमलोक एक्ट फोर डाँवाडोल आत्मा .....।

गाना

किस्मती : आओ भैया तुम्हें बताएँ महिमा याड़ा एक्ट की।
शान्ति नियंत्रण हेतु व्यवस्था जो है यमलोक की।
जय हो याड़ा एक्ट की, जय हो याड़ा एक्ट की। बोलो!

कोरस : जय हो याड़ा एक्ट जय हो याड़ा एक्ट।

किस्मती : धरती पर कोई जीव करे, उद्वेलित किसी परजीव को।

कोरस : धरती पर कोई जीव करे, उद्वेलित किसी परजीव को।

उपकारी : क्राईम माना जाता ऐसा, करता कोई जीव तो।

कोरस : क्राईम माना जाता ऐसा, करता कोई जीव तो।

यमराज : डाँवाडोल करें मन को वे अपराधी होते हैं,
इसीलिए जीवन रहते हम उसे बुला सकते हैं।

किस्मती : बोलो जयश्री यमराज, जयश्री यमराज।

कोरस : जयश्री यमराज, जयश्री यमराज।

किस्मती : धरती की वह साध्वी करती, विचलित सेवादास को,

कोरस : धरती की वह साध्वी करती, विचलित सेवादास को।

उपकारी : इसीलिए यमराज बुलाते, चन्द्रमुखी महाराज को।

कोरस : इसीलिए यमराज बुलाते, चन्द्रमुखी महाराज को।

किस्मती : जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट बोलो

कोरस : जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट

साधू : भवगत् भक्ति छोड चला वह मूरख पिक्चर हॉल को,

कोरस : भवगत् भक्ति छोड चला वह मूरख पिक्चर हॉल को।

साधू : मैं भी जाता था पिक्चर पर छोडा ना भगवान को,

कोरस : यह भी जाता था पिक्चर पर छोडा ना भगवान को।

टाईगर : काश, यहाँ पहले आ जाता सेवा में मैं आपकी,

कोरस : काश, यहाँ पहले आ जाता सेवा में ये आपकी।

टाईगर : धन्य-धन्य किस्मती भैया महिमा याड़ा एक्ट की,

किस्मती : जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट,

कोरस : जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट।

साधू : जयश्रीराम... सब:- जय हो याड़ा एक्ट, यमराज अरे... चुप्प....।

यमराज : खामोश! इस एक्ट के तहत हम पृथ्वी की किसी भी आत्मा को उसके जीवन काल में कभी भी बुला सकते हैं। यदि हमें लगता है कि पृथ्वी का कोई जीव ऐसा काम करे जिससे किसी की आत्मा डावाँडोल हो जाय, तो ऐसी स्थिति पैदा करने वाली आत्मा को हम इस एक्ट के तहत कभी भी यहाँ बुला सकते हैं।

किस्मती : अब वह साध्वी चन्द्रमुखी भी तो सेवादास के मन को डावाँडोल करके उसे पथभ्रष्ट कर रही है। इसीलिए महाराज उसे यहाँ बुला रहे हैं बड़े बाबू।

यमराज : (दूरबीन में से देखते हुए) वाह वाह पिक्चर हॉल के होर्ड़िंग पर क्या खूबसूरत तस्वीर है।

किस्मती : (चापलूसी के अंदाज में) महाराज। वह हमारे यहीं की एक अपराधी आत्मा की तस्वीर है।

यमराज : अच्छा .....। हमारे यहाँ ऐसी-ऐसी आत्माएँ भी हैं? (फिर आदेशात्मक स्वर में) यमदूत...!

यमदूत : (प्रविष्ट होकर) जी महाराज।

यमराज : पहले उस आत्मा को हाजिर किया जाय.....।

यमदूत : (ऊँची आवाज में) आत्मा सितारा देवी हाजिर हो.....।

(सितारा देवी का छम-छम की ध्वनि के साथ इतराते हुए प्रवेश)

यमराज : (सितारा देवी को देखते हुए) वाह वाह। काफी कुछ होर्ड़िंग वाली तस्वीर से मिलता-जुलता है। क्या धरती पर आपकी कोई डुप्लीकेट है?

सितारा देवी : (इतराते हुए यमराज को देखते हुए) नहीं महाराज, वह मेरी ही पिक्चर का एक सीन है।

यमराज : (प्रसन्नता से) क्या कहा। आपकी पिक्चर है वो।

सितारा देवी : हाँ महाराज। गोल्ड़न जुबली पिक्चर थी वह मेरी 'द बर्निंग हर्ट'। देखिए न कितनी सफल पिक्चर थी मेरी वह। पर वहाँ की घटिया व नासमझ सरकार ने उसे एडल्ट पिक्चर माना।

यमराज : काश! ऐसी ज्ञानवर्धक और प्रेरणास्पद पिक्चरें हम यहाँ भी देख पाते।

किस्मती : आप चिन्ता न करें महाराज। हम यहां भी ऐसी पिक्चरें बना सकेंगे। (फिर सितारा देवी की ओर देखते हुए) अब हमारे पास पिक्चर की हीरोइन है। सहनायिका है। (स्वयं की ओर इशारा करते हुए) और हीरो भी है महाराज।

बड़े बाबू : (आपत्ति करते हुए) क्षमा करें महाराज। हम यहाँ पर न्याय करने के लिए एकत्र हुए हैं या कोई पिक्चर बनाने के लिए।

आप मुकदमे पर आएं महाराज और इस टाईगर के अपराधों को मध्यनजर रखते हुए इसे नर्क की सज़ा दें।

यमराज : बड़े बाबू आप द्वारा पेश किया गया गवाह, यह साधू झूठा व अय्यास साबित हुआ है अत: पहले इस पाखण्डी साधू का निर्णय करना जरूरी है।

(फिर कुछ लिखते हुए) इसलिए हम इस साधू महात्मा को झूठी गवाही देने व धरती पर अपने शिष्य सेवादास के साथ अय्यासी करने, मादक पिक्चरें देखने और भोली-भाली किशोरियों को फुसलाने के जुर्म में नरक की सज़ा देते हैं। ले जाओ इसे और नर्क की काल-कोठरी में डाल दो।

किस्मती : (उपकारी से) चलो मामला पक्का हुआ (वे साधू महाराज को घसीटकर नर्क की कोठरी में डाल आते हैं और साधू महाराज चिल्लाते ही रह जाते हैं।)

बड़े बाबू : महाराज। यह अपराधी टाईगर सज़ा से बच नहीं सकता। इस फाईल में ज़मीन के थानाधिकारी की रिपोर्ट है जिसमें टाईगर के जुर्मों का पूरा चिट्ठा मौजूद है। (फाईल उपकारी को देते हुए) मेरी आपसे दरख़्वास्त है कि इन साक्ष्यों के आधार पर इसको नरक की सज़ा दी जाय।

यमराज : (फाईल पढ़कर सामने देखते हुए) भाई बडे बाबू। इस फाईल में तो थानाधिकारी द्वारा जारी प्रशंसा पत्र लगा हुआ है। (फाईल वापस बड़े बाबू के लिए देते हुए) अब आप स्वयं ही इसे पढ़कर सबको सुनाइये।

बड़े बाबू : (फाईल लेकर पढ़ते हैं पर बोल नहीं पाते कंठ रुक जाता है)

यमराज : रुक क्यों गये बड़े बाबू पढ़िए।

आत्माएँ : हाँ हाँ पढ़िए।

बड़े बाबू : प्रशंसा-पत्र! मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओं और पुलिस प्रशासन को सहयोग देने के एवज में यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ -

टाईगर : इस शहर का एक बहुत ही शरीफ़ और ईमानदार नागरिक है। शहर के जेबकतरों और बदमाशों को पकड़वाने में एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। (बड़े बाबू हक्के-बक्के रह जाते हैं और अपना सिर पकड़ लेते हैं।)

यमराज : अब तो साबित हो गया न बड़े बाबू, कि टाईगर कितनी शरीफ आत्मा है (फिर किस्मती से) हवलदार। इन्हें ससम्मान स्वर्ग में ले जाया जाय।

किस्मती : जी महाराज। (किस्मती टाईगर को स्वर्ग में ले जाता है। टाईगर जाते हुए बड़े बाबू से व्यंग्यात्मक लहजे में नमस्ते करता है।)

यमराज : (आदेशात्मक स्वर में) दूसरा केस हाजिर किया जाय।

बड़े बाबू : (यमराज से) महाराज, मेरी आपसे दरख़्वास्त है कि भोलाराम के केस पर पुनर्विचार किया जाय।

यमराज : ठीक है ठीक है। भोलराम को हाजिर किया जाय। (किस्मती भोलाराम को आगे लाता है।)

यमराज : हूँ....., तो तुम ही भोलाराम हो?

भोलाराम : हाँ हुजूर! मैं ही भोलाराम हूँ।

यमराज : बड़े बाबू इसके जमीन पर किये कर्मों का लेखा-जोखा खोलकर हमें सुनाओ।

किस्मती : (उपकारी को एक ओर ले जाकर धीमी आवाज़ में) अबे इसका इन्तजाम कर दिया या नहीं। भाई स्वर्ग में जगह कम हैं और (भोलाराम की ओर इशारा करते हुए) ये फालतू के आदमी यदि स्वर्ग में पहुँच गये तो इन (सितारा देवी व मूमल देवी की ओर इशारा करते हुए) वी.आई.पी. लोगों को जगह कैसे मिल पायेगी भाई?

उपकारी : (धीमी आवाज में) आप चिन्ता न करें बड़े भाई। मैंने इन वी.आई.पी. लोगों से जितनी भी रिश्वत ली है उसका पचास प्रतिशत हिस्सा यमराज जी को पहुँचा दिया है। अब सब ईमानदार नर्क में जायेंगे।

किस्मती : और सभी बेईमान स्वर्ग में।

(और दोनों वापस अपनी-अपनी जगह पहुँच जाते हैं।)

बड़े बाबू : (फाईल देखते हुए) महाराज। यह व्यक्ति ज़मीन का एक बहुत ही ईमानदार और कर्मठ जीव रहा है। इसने अपना पूरा जीवन गरीबी में काटा, सदा अपनी गृहस्थी को पालने में कोल्हू के बैल की तरह जुटा रहा। इसने साहूकार से कर्ज़ भी लिया पर जीते जी उसका सूद ईमानदारी से चुकाता रहा, पूरे गाँव में इसकी ईमानदारी के आज भी चर्चे हैं महाराज। मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि ऐसे ईमानदार व्यक्ति को स्वर्ग में स्थान दिया जाये।

यमराज : (कमीज़ की जेब में हाथ डालकर नोटों को टटोलते हुए) आप भी कमाल करते हैं बड़े बाबू। आप जानते हैं स्वर्ग में सीटें सीमित हैं और हम अपनी न्याय, नीति एवं बुद्धि से स्वर्ग में स्थान उन्हीं को देते हैं जो इसका हक़दार है। अत: हम भोलाराम को नर्क में भेजने का आदेश देते हैं।

भोलाराम : (गिड़गिड़ाते हुए) दुहाई है महाराज दुहाई है। मैंने धरती पर सदा ही कष्ट उठायें हैं पर अपना ईमान कभी नहीं छोड़ा।

बड़े बाबू : हाँ महाराज। इसने धरती पर कभी सुख नहीं देखा अत: इसे अब तो सुख भोगने का अवसर मिलना चाहिए।

यमराज : अरे भई बड़े बाबू। हमारे रहते हुए यमलोक में किसी के साथ नाइंसाफ़ी नहीं हो सकती। (फिर सबकी ओर समझाने के भाव से हाथों का इशारा करते हुए भोलाराम से) भोलाराम, अब तुम ही मेरी बात का जवाब देना। मैं तुम्हें ही अपने स्थान पर न्याय करने का हक़ देता हूँ, तुम स्वयं ही अपने केस का निर्णय करना।

भोलाराम : (हाथ जोड़ते हुए) जी हुजूर।

यमराज : अब यह बताओ भाई मान लो कि हम तुम्हें स्वर्ग दे देते हैं।

भोलाराम : (खुश होता हुआ) मान लिया हुजूर माना लिया। (फिर दोनों हाथ जोड़कर ज़मीन पर प्रणाम करते हुए।) आप न्याय के पालक हैं।

यमराज : अब सोचो, तुम्हें स्वर्ग में सब सुख-सुविधाएँ मिलती हैं, खाने को मीठे-मीठे व्यंजन और पकवान मिलते हैं तो तुम्हें कैसा लगेगा?

भोलाराम : (खुश होता हुआ) बहुत अच्छा लगेगा हुजूर, आत्मा को बहुत सुकून मिलेगा।

यमराज : अब मान लो कि तुम्हें किसी कारण से (बड़े बाबू की ओर देखते हुए) किसी की ग़लत पैरवी से ऐसा न्याय मिले कि तुम्हें स्वर्ग से निकालकर नर्क में डाल दिया जाय तो तुम्हें कैसा महसूस होगा। क्या तुम स्वर्ग के सुख छोड़कर नर्क में सुखी रह सकोगे ?

भोलाराम : नहीं हुजूर कभी सुखी नहीं रह पाऊंगा। मेरी आत्मा को बहुत पीड़ा पहुँचेगी प्रभु। यह मेरे साथ अन्याय होगा।

यमराज : (बड़े बाबू व सभी आत्माओं की ओर देखते हुए) ये लो भई, भोलाराम ने खुद ने ही न्याय कर दिया। (फिर भोलाराम की ओर मुखातिब होकर) तो भई भोलाराम जिस प्रकार किसी सुख के बाद किसी दु:ख के कारण किसी की आत्मा को पीड़ा पहुँचती है और इस प्रकार का निर्णय करना अन्याय होता है उसी प्रकार यहाँ पर ऐसी बहुत-सी आत्माएँ हैं (बेईमान लोगों की ओर इशारा करते हुए) जिन्होंने धरती पर सदा सुख भोगा है, दु:ख का जिन्हें तनिक भी अनुभव नहीं है। उन्हें यदि हमारे दरबार में तुम्हारे जैसों को स्वर्ग देने के कारण नर्क में भेजना पड़ता है तो उनकी आत्माओं को सुख मिलेगा या दु:ख भोलाराम बोलो।

भोलाराम : (भोलेपन से) बहुत कष्ट पहुँचेगा महाराज।

यमराज : (बड़े बाबू को देखते हुए) तो फिर हमारा निर्णय न्यायसंगत व नीति सम्मत है बड़े बाबू, कि भोलाराम धरती पर से ही कष्ट सहने का आदि है अत: उसे नर्क में कोई तकलीफ नहीं होगी। (फिर किस्मती से) जाओ भोलाराम को बाईज्जत नर्क में पहुँचा आओ।

सभी बेईमान : महाराज की जय हो।

यमराज : आज अदालत का समय समाप्त हो गया अत: कल तक के लिए अदालत मुल्तवी की जाती है।

(दृश्य - समाप्त)

चौथा दृश्य

(अदालत पहले के समान ही लग रही है। भोलाराम व टाईगर इस समय नहीं हैं उन्हें क्रमश: नर्क एवं स्वर्ग में भेज दिया गया है। यमराज का बाहर से आगमन। उनके सम्मान में सभी उपस्थित लोग खड़े हो जाते हैं। यमराज के आसन पर बैठने के साथ लोग भी बैठ जाते हैं और अदालत की कार्यवाही शुरू होती है।)

यमराज : अदालत की कार्यवाही शुरू की जाय।

यमदूत : आत्मा सितारा देवी हाजिर हो.....।

(सितारा देवी मटकते हुए, इठलाते हुए अदालत में आती है। उसकी चाल के साथ यमराज व सभी बेईमान व अपराधियों की हरकतें भी मचलती हैं।)

सितारा देवी : (उपस्थित होते हुए यमराज की ओर तिरछे नैनों से देखते हुए) क्या हुक्म है मेरे प्रभु (आँखें बंद कर विभोर होने का अभिनय करती है)

यमराज : (आशिकाना अन्दाज में झूमते हुए) मेरे प्रभु। (फिर सामान्य होते हुए बड़े बाबू से) बड़े बाबू, इनको क्यों इतनी देर से परेशान कर रखा है। इनका केस पहले क्यों नहीं आया ?

बड़े बाबू : (किस्मती व उपकारी की ओर देखते हुए) मैं क्या करूँ महाराज। इन्होंने पहले उस टाईगर का केस रखवा दिया था।

यमराज : टाईगर ? कौन टाईगर ? (किस्मती की ओर देखते हैं।)

किस्मती : (अंगूठे व तर्जनी उंगली से रुपयों की टनटनाहट का इशारा करते हुए यमराज से) वही टाईगर प्रभु, वही टाईगर।

यमराज : (समझने का अभिनय करते हुए) टाईगर। अच्छा अच्छा वही समाज सेवी टाईगर। (फिर बड़े बाबू से) बड़े बाबू (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) इनका केस जल्दी डिस्कस करो, ये लोग अधिक कष्ट उठाने के आदि नहीं हैं। इससे हमारी न्याय व्यवस्था को धब्बा लगता है।

बड़े बाबू : (फाईल पढ़ते हुए) प्रभु यह इनकी पत्रावली है। (पत्रावली उपकारी के मार्फत यमराज को देता है।) इस फाईल में साफ-साफ लिखा है कि ये सितारा देवी जो शक्ल सूरत से भोली

और मासूम लग रही हैं, धरती पर तस्करों के एक अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह की बहुत बड़ी एजेन्ट थी और देश में विदेशी ताकतों की घुसपैठ में इनका बहुत बड़ा हाथ था।

किस्मती : (बीच में ही) लेकिन महाराज ये धरती पर फ़िल्मों की एक बहुत ही सफल नायिका रही हैं।

बड़े बाबू : (किस्मती की ओर देखते हुए) महाराज इस तरह बीच में हस्तक्षेप करना अदालत की अवमानना है।

यमराज : (बड़े बाबू से क्रोध में) लेकिन बड़े बाबू, किसी मुजरिम को न्याय देने हेतु तथ्यों व सबूतों की नजरअंदाजी करना न्याय का गला घोंटना है। और कुछ कहना है आपको।

बड़े बाबू : महाराज। ये तस्करों की एक बहुत बड़ी एजेन्ट थी अत: एक फ़िल्म निर्माता ने इन्हें अपनी फ़िल्म में तस्करों की प्रमुख एजेन्ट का रोल दिया जिससे इनकी फ़िल्म चल निकली।

सितारा देवी : चल ही नहीं निकली महाराज। वह उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म रही और सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मुझे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी किया गया।

यमराज : बड़े बाबू। यह तो हमारे लिए गौरव की बात है कि हम आज इतनी (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) महान् हस्ती को नजदीक से देख पा रहे हैं।

सितारा देवी : प्रभू धरती पर तो मेरे ऑटोग्राफ लेने वालों की लाईन लगी रहती थी। (वहाँ उपस्थित सभी बेईमान लोग भाग भागकर डायरी देते हुए) मैडम आटोग्राफ प्लीज.. आटोग्राफ मैडम। (सितारा देवी सबको आटोग्राफ देती हैं... यमराज भी डायरी निकालकर उठने को होते हैं।)

सितारा देवी : (उन्हें रोकते हुए) ना ना प्रभु ना। आप क्यों तकलीफ करेंगे आटोग्राफ की। आपको तो (कुटिल दृष्टि से देखते हुए) आटोग्राफ मैं रात को घर पर ही आकर दे दूंगी।

यमराज : (खुश होते हुए) ठीक है। ठीक है। (फिर सहज होकर सबसे) हाँ तो सितारा देवी जी के केस पर सब पक्षों को सुनने व साक्ष्यों को देखने के पश्चात् अदालत इस नतीजे पर पहुँचती है

कि सितारा देवी जी ने देश के विदेशों से सम्बन्ध प्रगाढ़ करने में और विदेशी उद्यमियों को देश में पनपने तथा विदेशी मुद्रा के आंतरिक प्रवाह में जो अहम भूमिका निभाई है एवं जो योगदान दिया है वह काबिले तारीफ है। आप सभी जानते हैं कि सितारा देवी जी चोटी की हीरोइन हैं, नृत्य एवं संगीत में प्रवीण हैं। अत: हम इन्हें स्वर्ग में स्थान देते हैं।

बड़े बाबू : लेकिन प्रभु, इन्हें नृत्य एवं संगीत तो बिल्कुल भी नहीं आता है।

यमराज : बड़े बाबू, लगता है आप भी भ्रष्टाचार में लिप्त होते जा रहे हैं। (फिर फाईल बड़े बाबू को दिखाते हुए) यह देखो इनकी फाईल में संगीत और नृत्य की एम.ए., डबल एम.ए. तक की परीक्षाओं की डिग्रियाँ लगी हुई हैं, क्या ये जाली हैं, क्या ये दुकानों पर बिकते हैं ? बोलो!

यमराज : वाह वाह, वाह वाह। हम आपकी कला से बहुत प्रसन्न हुए। जो मांगना है मांगो देवी।

सितारादेवी : मैं तो आपके चरणों में ही रहना चाहती हूँ महाराज। मैं संगीत, नृत्य और अभिनय में निपुण हूँ और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी से भी अधिक रूपशील, गुणवन्ती एवं अधिक सीनियर हूँ प्रभु।

यमराज : तो क्या चाहिए देवी आपको ?

सितारादेवी : (शर्माते हुए) मुझे आप अपनी सभा में उर्वशी के समान ही रूपसी के रूप में नर्तकी के पद पर नियुक्त कर दें महाराज।

यमराज : (खुश होते हुए) तथास्तु। आज हम आपको इन्द्र की सभा की उर्वशी के समान ही रूपसी की पदवी देकर हमारी रंगशाला में नर्तकी के रूप में नियुक्त करते हैं। आज से आपको केबिनेट स्तर के देवताओं के समान ही सुख सुविधाएँ एवं सम्मान मिलेगा तथा जेड़ श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

बड़े बाबू : (ऐतराज करते हुए) लेकिन प्रभु। इस प्रकार की नियुक्ति का तो कोई प्रावधान है ही नहीं। ऐसा कोई पद तो हमारी सभी में है ही नहीं।

मूमल देवी : (आगे आते हुए) है नहीं तो क्या हुआ जनाब। हर चीज क्या शुरू में होती है? क्या नियम और कानून आदिकाल से ही बनकर अवतरित हुए हैं।

यमराज : (मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह क्या बात है। कैसा विवेचन किया है। आगे जारी रखें देवी। डरें नहीं, हम आपको बोलने का अधिकार देते हैं।

मूमल देवी : प्रभु, यदि पुराने नियम व कानून प्रचलित समाज एवं मौजूदा आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं रहते हैं तो उनमें परिवर्तन किया जाना उचित होता है। नई आवश्यकताओं के अनुसार यदि नये नियम बनाने की एवं वर्तमान नियमों में संशोधन की आवश्यकता की मांग होती है तो ऐसा किया जाना धर्म और नीति के सम्मत होता है और यही सफल राजनीति है प्रभु। दैट्स आल।

(सारी अदालत में वाह-वाह की खुसरा-फुसरी होती है।)

यमराज : ऑर्डर ऑर्डर। (फिर मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह देवी वाह। क्या राजनीतिक दिमाग पाया है आपने। (फिर बड़े बाबू से) बड़े बाबू। क्या इनका भी कोई केस है हमारे यहाँ?

बड़े बाबू : हाँ प्रभु, इनका भी केस है।

यमराज : (क्रोध में) तो इतनी बड़ी विदुषी का केस पहले क्यों नहीं भेजा हमारे पास?

बड़े बाबू : (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) महाराज इनका केस पहले पेश कर दिया था।

यमराज : (सितारा देवी की तरफ देखकर खुश होते हुए) अच्छा-अच्छा। (फिर सहज होते हुए) ख़ैर। अब जल्दी इनका केस डिस्कस करो।

बड़े बाबू : (फाईल देखते हुए) महाराज, ये धरती की एक खौफनाक दस्यु सुन्दरी और खतरनाक किस्म की डकैत थी। इन्होंने सैंकड़ों बेगुनाह लोगों की हत्या की और असंख्य लोगों से लूटपाट की थी। कुछ राजनीतिक दलों ने मौके का फायदा उठाते हुए इन्हें संसद सदस्य का टिकिट दे दिया और ये विजयी होकर संसद में पहुँच गई।

मूमल देवी : (बात काटते हुए) महाराज मेरी चुनावी जीत एक रिकॉर्ड था रिकॉर्ड। मैंने अपने प्रतिद्वन्द्वी को दो लाख वोटों से शिकस्त दी थी महाराज।

यमराज : (आश्चर्य से) अच्छा।

बड़े बाबू : महाराज यह इन्सान नहीं बल्कि एक खूनी भेड़िया है और मेरी अदालत से दरख़्वास्त है कि इसे नर्क में भेजने की आज्ञा दी जाय।

यमराज : (कुछ लिखते हुए) सभी साक्ष्यों को देखने व दलीलें सुनने के पश्चात् अदालत इस निर्णय पर पहुँचती है कि मूमल देवी एक बहुत ही वीर महिला और कुशल राजनीतिज्ञ हैं अत: अदालत इन्हें स्वर्ग में भेजने का हुक्म देती है।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज यह खूनी है, डाकू है और इसने अपनी बंदूक से सैंकड़ों लोगों की जान ली है।

यमराज : बड़े बाबू, मुझे अफसोस है कि आप मेरे साथ इतने वर्षों रहकर भी न्याय करना नहीं सीख पाये। (फिर सबको ऊँची आवाज में) बुराई पर विजय वही पा सकता है जिसने नजदीक से बुराई देखी हो। अपराधियों, बदमाशों व दुश्मनों से देश की रक्षा वही कर सकता है जो कभी अपराधी, बदमाश और किसी का दुश्मन रहा हो।

(अदालत में वाह-वाह, बिल्कुल सही कही, सत्यवचन आदि की आवाजें तेज होती हैं।)

यमराज : (मेज पर हथौड़ा मारते हुए) ऑर्डर ऑर्डर। (अदालत में शांति हो जाती है।) अत: हम यह भी निर्णय लेते हैं कि मूमल देवी जैसी वीर और राजनीतिज्ञ महिला की प्रतिभा एवं गुणों का लाभ उठाया जाय। अत: हम सर्वसम्मति से मूमल देवी का यमलोक की रक्षा मंत्री के पद पर मनोनयन करते हैं।

मूमल देवी : (हाथ की बंदूक ऊपर करते हुए) महाराज, जिन्दाबाद महाराज...

सब : जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।

यमराज : बस बस भाई बस। (फिर किस्मती से)
अरे हवलदार।

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : अरे भई आज न कोई चाय आई न पानी।
भई जब से हमारी कैण्टीन वाली आत्मा यहां की आत्माओं की संयुक्त कमेटी के लीडर का चुनाव जीती है तब से हमारी चाय-पानी की व्यवस्था भी गड़बड़ा गई है।

उपकारी : महाराज आप कहें तो अभी उसे डयूटी पर तलब करते हैं। आखिर है तो यहाँ की आत्मा ही। हमारे कार्यालय की चाय-पानी कैसे बंद कर सकता है।

यमराज : (हँसते हुए किस्मती से) अरे भई हवलदार यह कर्मचारी अभी नया आया है। इसे भी इस रहस्य से, हमारी कार्यशैली एवं सिद्धान्तों से अवगत करा देना तो।

किस्मती : (उपकारी को अलग ले जाते हुए) - भैया, बड़े भोले हो, जरा भी अक्ल का इस्तेमाल नहीं करते।

उपकारी : कैसे ?

किस्मती : भैया..। ये राजनेता किस्म की आत्माएँ बड़ी प्रभावशाली होती हैं। इनमें जन्मजात प्रतिभा होती है।

उपकारी : मैं समझा नहीं।

किस्मती : कई-कई आत्माओं में राजनैतिक पक्ष बड़ा प्रभावशाली होता है। पर अवसर की तलाश में ऐसी प्रतिभाएँ अन्दर ही अन्दर कसमसाती रहती हैं।

यमराज : (सीट से उठकर नीचे आते हुए सबकी ओर देखते हुए किस्मती से) अब देखो तो। क्या नाम था हवलदार, उस कैन्टीन वाली लीडर आत्मा का।

किस्मती : महाराज। घीसू

उपकारी : (हँसते हुए) अरे भैया ये कैसा नाम हुआ।

किस्मती : अरे भाई। धरती पर वह बड़ा गरीब आदमी था। घिसट-घिसटकर जीवन रेंग रहा था, अत: उसका नाम पड़ गया घीसू। (यमराज, के साथ उपकारी, टाईगर व अन्य सभी हँसते हैं)

यमराज : अब भाई उसमें प्रतिभा थी पर धरती पर वह कुछ नहीं कर सका। अपने उसूलों व ईमानदारी में जकड़ा रहा अत: समय से पूर्व ही हमारी सेवा में आ गया। (फिर टाईगर की ओर कुटिलता से मुस्कराकर देखते हुए) यहाँ आकर उसने परिस्थितियों से समझौता कर लिया और (किस्मती की ओर देखते हुए) उसने हमारे हवलदार के मार्फत अपने हृदय परिवर्तन की बात हमें बता दी। बस हमने उसे लीडरी का टिकिट दे दिया।

किस्मती : (सबकी ओर देखते हुए) और वह घीसू निर्विरोध निर्वाचित होकर पी.वाई.एच.डी.ए. बन गये।

सब : पी.वाई.एच.डी.ए., यह क्या हुआ ?

किस्मती : भाई यमलोक में आधुनिक किस्म के कई बड़े बड़े पद हैं।

यमराज : अरे भई इन्हें समझाओ जरा। नई-नई आत्माएँ हैं।

किस्मती : जी महाराज । भइया पी.वाई.एच.डी.ए. का मतलब है - प्रेसीडेंट आफ यमलोक आनेस्ट एण्ड डिसओनेस्ट आत्मा....।

सब : वाह वाह .....

टाईगर : पर वह बेईमान आत्मा बेईमान व ईमानदार दोनों आत्माओं की लीडर कैसे बन गई।

किस्मती : (व्यंग्य से देखते हुए) तो क्या लीड़र ईमानदार आत्माएँ बनती हैं ? (फिर उसे समझाते हुए) भाई यहाँ ईमानदार आत्माओं की लीडर भी बेईमान आत्मा ही होती है।

उपकारी : (किस्मती से) पर भैया। बात तो चाय-पानी की हो रही थी।

यमराज : (कुछ याद करते हुए) ओह हाँ। तो भई अब घीसाराम जी नेता बन गए, अत: हम उनसे कोई काम कैसे करवा सकते हैं। इसलिए बस। यहां की चाय-पानी की व्यवस्थ गड़बड़ा गई।

टाईगर : पर महाराज वह अभी यहाँ की आत्मा है। फिर आप उससे काम क्यों नहीं ले सकते।

यमराज : अरे भैया। दीन-दुनिया के प्रचलित नियमों की ख़बर रखते हो या नहीं (फिर किस्मती की ओर देखकर सबकी ओर मुखातिब होकर) भैया जब कोई व्यक्ति लीडर बन जाता है तो वह अपने मौजूदा कार्यभार से अप्रत्यक्ष में मुक्त हो जाता है।

किस्मती : (उपकारी से) भैया अब यदि घीसूलाल जी जैसे लीडर चाय बनाकर ही पिलाते रहे तो फिर लीड़र बनने का लाभ ही क्या और वे देश की सेवा कैसे करेंगे?

यमराज : (सबसे) अरे भाई। अब धरती पर भी हर सरकारी विभाग में लीड़र होते हैं जो लीडर बनने के बाद भी नियुक्त तो अपने पद पर ही होते हैं। पर तब वो उस काम को करते थोड़े ही हैं।

किस्मती : (शर्माते हुए) हां भाई। लीडरी की मर्यादा का भी तो ध्यान रखना ही पड़ता है।

टाईगर : कैसे?

यमराज : अरे अब ड्राईवरों के लीडर को कभी बस चलाते देखा है?

सब : नहीं ।

यमराज : सरकारी कार्यालयों के लीडरों को कभी काम करते देखा है?

आत्माएँ : नहीं।

किस्मती : शिक्षकों के लीडर के कभी पढ़ाते देखा है?

सब : नहीं।

बड़े बाबू : क्षमा करें महाराज। ये बात सत्य नहीं है कि लीडरों को काम करते नहीं देखा।

यमराज : भई बडे बाबू। आप ठीक कह रहे हैं और ये सब भी ठीक कह रहे हैं।

किस्मती : और महाराज भी ठीक कह रहे हैं।

बड़े बाबू : चुप्प।

यमराज : हाँ बड़े बाबू। लीडर काम करते हैं, परहित का। यदि वे अपनी पूर्व नियुक्ति वाले काम लीड़र बनने के बाद भी करते रहे तो एक लीडर अपने कर्त्तव्य का पालन कैसे कर पायेगा।

बड़े बाबू : पर महाराज, बात कैण्टीन व्यवस्था की हो रही थी।

यमराज : ठीक है, ठीक है। (फिर से किस्मती से) हवलदार।

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : भाई तुम एक यमदूत को लेकर स्वयं धरती पर जाओ और ऐसी आत्मा को पकड़कर लाओ जो यमलोक की कैण्टीन-व्यवस्था संभाल सके।

किस्मती : जी महाराज। अबकी बार किसी हलवाई को पकड़कर लाते हैं जो चाय-काफी, मिठाई आदि सभी तैयार कर खिलायेगा-पिलायेगा।

(सब हँसते हैं।)

(दृश्य - समाप्त)

पाँचवां दृश्य

(कृपया इस पुस्तक में पूर्व में दिये गये नाटक कार्यवाहक हलवाई के तीसरे दृश्य के पृष्ठ संख्या 101 से 104 को समाहित करके यहां पढें)

(सहसा फूड़ इन्स्पेक्टर का प्रवेश)

इन्स्पैक्टर : (प्रवेश करते हुए) नमस्कार सेठजी। कहिए; कैसा चल रहा है?

हलवाई : (चापलूसी के अंदाज में खींसें निपोरते हुए) आइए हुजूर आइए। धन्य भाग हमारे, जो दीपावली के इस अवसर पर आप यहां पधारे। (मिठाई की प्लेट आगे करता है)

इन्स्पैक्टर : (मिठाई का एक टुकड़ा मुँह में ड़ालते हुए) काफी दिन हो गये थे सेठ साहब। सोचा, दीपावली की राम राम भी हो जायेगी और नौकरी का दायित्व भी पूरा हो जायेगा।

हलवाई : (बही-खाते सामने रखते हुए)-हाँ हुजूर क्यों नहीं। कानून की मदद करना व सरकारी काम में सहयोग देना (पाँच सौ का नोट व एक मिठाई का डिब्बा देता है) तो हमारा धर्म है, कर्तव्य है।

इन्स्पैक्टर : (खुशी से डिब्बा लेते हुए बही-खातों पर हस्ताक्षर करता हुआ) अच्छा भाई सेठ साहब अब हम चलते हैं (फिर रुपयों को जेब में रखते हुए खुश होता हुआ) यह दीपावली का पर्व आपके व आपके परिवार के लिए मंगलमय हो।

(बदलू एकटक ठगा-सा यह सब देखता रह जाता है और फिर एकाएक बेहोश होकर गिर पड़ता है)

हलवाई : (उसे घसीटकर अन्दर ले जाते हुए एकाएक रुककर दर्शकों की ओर देखते हुए) - लगता है लड़के ने ग्राहकों वाली मिठाई खा ली है।

(उसे घसीटकर दुकान के अन्दर पटक आता है)

(सहसा यमदूत का प्रवेश)

यमदूत : (प्रवेश करते हुए) मिट्ठन सेठ! तुम्हें यमराज ने तलब किया है, अभी! इसी वक्त।

मिट्ठन : (यमदूत को देखकर डरते हुए) क..... कौन हो तुम?

यमदूत : मैं एक यमदूत हूं।

किस्मती : (प्रवेश करते हुए) डरो नहीं सेठ। तुम्हारा उद्धार हो गया।

मिट्ठन : मैं समझा नहीं।

किस्मती : देखो भाई। तुम्हारे जैसे योग्य, मेहनती एवं अपने फर्ज के प्रति ईमानदार लोगों के लिए यह पृथ्वी उपयुक्त स्थान नहीं है।

मिट्ठन : (हाथ जोड़ते हुए) तो फिर कौन-सी जगह उपयुक्त है अधिकारी जी?

(दूत अदब से सावधान मुद्रा में खड़ा रहता है)

किस्मती : स्वर्गलोक, सेठ स्वर्गलोक। चलोगे?

मिट्ठन : (आश्चर्य एवं खुशी से) हैं। स्वर्गलोक। क्या आप जो कुछ कह रहे हैं सही है, क्या मुझे वास्तव में स्वर्ग मिल जायेगा?

किस्मती : हाँ सेठ। हमारे यमराज तुम्हारी सेवाओं व उसूलों से बहुत प्रसन्न हैं।, अत: तुम्हें अभी यमलोक में बुलाया है।

मिट्ठन : लेकिन अधिकारी जी, मैंने अभी तक जो कुछ कमाया है, मेरा जो धन है, उसका क्या होगा? मेरा तो कोई आज्ञाकारी बेटा-पोता भी नहीं है जो उसको भोग सके।

किस्मती : (खुश होता हुआ) तुम उसकी चिन्ता मत करो सेठ। वह सब भी तुम अपने साथ ले चलो। उसका उपभोग तुम वहां पर कर सकोगे (फिर उसकी ओर मुखातिब होकर नीचे झुकते हुए) जाओ, तुम वह सब ले आओ।

मिट्ठन : (जाते हुए खुश होता हुआ स्वगत) - मैं अपने धन का उपभोग वहाँ पर भी कर सकूँगा। वाह प्रभु वाह। (जाता है और धन की पोटली ले आता है)

किस्मती : (झटके से पोटली लेकर अपने कब्जे में करते हुए) लेकिन सेठ, अब यह पोटली तुम स्वयं लेकर नहीं जा सकते। अब इसे हम ही ले जा सकते हैं। और तुम, तुम एक आत्मा के रूप में हमारे साथ चलोगे।

मिट्ठन : (पोटली की ओर ललचायी निगाहों से देखते हुए) ले लीजिए साहब, ले लीजिए, पर मुझे स्वर्ग तो मिल जायेगा न।

किस्मती : अरे भाई, इसीलिए तो हम स्वयं तुम्हें लेने आये हैं। (फिर यमदूत से) चलो भाई दूत, ले चलो सेठजी को।

यमदूत : (ऊँची आवाज में) आत्मा मिट्ठन सेठ प्रस्थान करो..... (सहसा बदलू आवाज सुनकर होश में आ जाता है और आँखें मलते हुए फटी-फटी आँखों से सबको जाते हुए देखता रह जाता है।

(दृश्य - समाप्त)

छठा दृश्य

(यमराज आसन पर विराजमान हैं एवं कैंची से मूँछ के बाल काट रहे हैं। बड़े बाबू अपनी सीट पर बैठे फाईलों को उलट-पुलट कर देख रहे हैं।)

यमराज : (बड़े बाबू से) बड़े बाबू।

बड़े बाबू : जी महाराज।

यमराज : अरे भाई जबसे हमारा नाई स्वर्ग में उर्वशी के ब्यूटी पार्लर में चला गया है तब से हमारे यहाँ की हजामत व्यवस्था ही गड़बड़ा गई है।

बड़े बाबू : जी महाराज।

यमराज : (कैंची टेबिल पर रखते हुए) क्या जी महाराज, जी महाराज। अरे भाई ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें आप डायराइज कर लिया कीजिए और किस्मती को बताइये ताकि वह धरती से किसी नाई की आत्मा को ला सके।

बड़े बाबू : (डायरी में लिखते हुए) जी महाराज। कर लिया डायरायज।

(सहसा मिट्ठन हलवाई के साथ किस्मती व उपकारी का प्रवेश)

किस्मती : (प्रवेश करते हुए) महाराज की जय हो।

उपकारी : (प्रवेश करते हुए) महाराज की जय हो।

यमराज : (प्रसन्न होते हुए) अरे आओ आओ भाई किस्मती आओ। बहुत लम्बी उम्र है तुम्हारी भाई। (फिर मिट्ठन हलवाई की ओर देखते हुए) यह कौन आत्मा है भाई?

किस्मती : महाराज, यह धरती का एक बहुत ही प्रसिद्ध और ईमानदार हलवाई मिट्ठन सेठ है।

(फिर उसकी पत्रावली उपकारी को देते हुए) और यह इसकी पत्रावली है महाराज।

(उपकारी पत्रावली बड़े बाबू को देता है। जब बड़े बाबू मिट्ठन हलवाई की पत्रावली देख रहे होते हैं तब किस्मती मिट्ठन सेठ से ली गई पोटली चुपके से यमराज के हाथों में थमा देता है।

यमराज : (पोटली पर हाथ रखते हुए खुशी से) अच्छा-अच्छा यही है मिट्ठन सेठ, जिनका तुमने जिक्र किया था।

किस्मती : (चापलूसीपूर्वक) हाँ महाराज।

यमराज : (बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू इनका केस जल्दी पेश करो, बड़े पहुँचे हुए हलवाई बताये जाते हैं ये।

(मिट्ठन हलवाई मुस्कुराते हुए यमराज का मौन अभिवादन करता है।)

बड़े बाबू : (मिट्ठन हलवाई की ओर इशारा करते हुए) महाराज। यह धरती का एक बहुत ही बेईमान हलवाई रहा है। इसने ताजी मिठाइयों में बासी मिठाइयाँ मिलाकर बेची हैं महाराज।

किस्मती : (यमराज को पान पेश करते हुए पोटली की ओर इशारा करते हुए) लीजिए महाराज।

यमराज : (पोटली पर हाथ फेरते हुए) भई बड़े बाबू। आप कह रहे हैं, इसने ताजी मिठाइयों में बासी मिठाइयां मिलाकर बेची हैं और इनकी फाईल में केन्द्र सरकार के उद्योग मन्त्रालय द्वारा जारी प्रशंसा पत्र लगा हुआ है, पढ़ा आपने? (अदालत में प्रशंसा पत्र प्रशंसा पत्र की खुसर फुसर होने लगती है।)

बड़े बाबू : (आश्चर्य से) प्रशंसा पत्र। मुझे तो नजर नहीं आया महाराज। कल तक तो फाईल में नहीं था।

यमराज : बड़े बाबू। लगता है बुढ़ापे के कारण आपकी दृष्टि कमजोर हो गई है। (फिर किस्मती से) हवलदार!

किस्मती : (चापलूसी के अन्दाज में हाथ जोड़कर) जी महाराज।

यमराज : भाई इस बात को डायरी में नोट करो कि बड़े बाबू की देखने व कार्य करने की शक्ति क्षीण हो गई है।

किस्मती : (डायरी में लिखते हुए) लिख दिया महाराज।

यमराज : क्या लिखा?

किस्मती : यही महाराज कि बड़े बाबू की दृष्टि कमजोर हो गई है जिसकी वजह से ये अदालत का कार्य ठीक से नहीं कर पा रहे हैं और इससे अदालत की कार्यवाही के उचित प्रकार से संचालन में शिथिलता आने लगी है।

यमराज : वाह भाई वाह। तुम बड़े काबिल हो (किस्मती बड़े बाबू की ओर देखकर रहस्यमय ढ़ंग से मुस्कराता है)

बड़े बाबू : मुझे क्षमा करें महाराज। हो सकता है मुझे वह प्रमाण पत्र दिखाई नहीं दिया हो।

यमराज : (किस्मती की ओर देखते हुए बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू आपको शरीफ़ और ईमानदार व्यक्तियों में कमियां और दोष जरूर दिखाई दे जाते हैं।

बड़े बाबू : पर महाराज इसकी फाईल में इस प्रकार का पत्र मैंने जरूर पढ़ा था कि इस हलवाई ने ताजी मिठाइयों में बासी मिठाईयां मिलाकर बेची हैं।

यमराज : भई बड़े बाबू! आप अर्थ ग़लत निकाल रहे हैं। (फिर सबकी ओर मुखातिब होकर) अरे मिट्ठन हलवाई बासी मिठाइयों को ताजी करने का एक नायाब तरीका ढूँढ़ निकाला और उन्हें अच्छी तथा उपयोगी बनाकर बेचा।

बड़े बाबू : कैसे महाराज?

यमराज : (सबकी ओर देखते हुए) अब आप लोगों ने बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों के अवशेष पदार्थों के संशोधन से उपयोगी वस्तुएं बनाकर बेचने की बात तो सुनी ही होगी।

सब : हां महाराज।

किस्मती : हां महाराज। वैज्ञानिक लोग इस प्रकार के शोध में लगे हुए हैं जिन्हें इसके लिए डाक्टरेट की मानद उपाधियां भी दी जाती हैं।

यमराज : (बड़े बाबू की ओर देखते हुए) ऐसा प्रमाण पत्र ही तो मिट्ठन हलवाई की फाईल में लगा है कि इन्होंने अपनी विशेष तकनीक से बासी मिठाइयों को अच्छी बनाकर एवं मार्केटिंग को बढ़ावा देकर देश के विकास में योगदान दिया है।

सब बेईमान : हाँ महाराज।

बड़े बाबू : पर महाराज इस हलवाई ने साधारण ग्राहकों को खराब एवं वी.आई.पी. लोगों को अच्छी मिठाइयाँ बेचकर भेदभाव किया है अत: मेरी अदालत से दरख़्वास्त है कि इसे नर्क की सजा दी जाय।

यमराज : बड़े बाबू। आप शायद देश की सरकार की नीतियों से वाकिफ नहीं हैं। जरा अपना नोलेज अपड़ेट कीजिए।

बड़े बाबू : मैं समझा नहीं महाराज।

यमराज : (किस्मती से) अरे हवलदार।

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : अरे भाई इन्हें अवगत कराओ जरा हमारे देश की सरकार की नीतियों से।

किस्मती : (खुश होता हुआ) अभी लीजिए महाराज। (फिर सबकी ओर मुखातिब होकर बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू। देश की सरकार चाहती है कि देश में समानता हो। बोलो चाहती है कि नहीं?

सब बेईमान : हाँ हाँ चाहती है।

किस्मती : (हाथों से शान्त होने का इशारा करते हुए) इसके लिए सरकार ने आरक्षण की व्यवस्था लागू की जो लोग कमजोर हैं एवं आर्थिक रूप से पिछड़े हैं उनके लिए अलग योजनाएँ हैं और उच्च वर्ग के लिए अलग व्यवस्थाएं हैं।

बड़े बाबू : तो इसका मिट्ठन हलवाई वाले केस से क्या लेना देना महाराज।

यमराज : लेना देना है बड़े बाबू, लेना देना है।

बड़े बाबू : कैसे महाराज?

यमराज : भई मिट्ठन हलवाई ने भी देश की नीतियों के अनुसार ही कार्य किया है। इन्होंने (उसकी ओर इशारा करते हुए) अपनी शोध- विधि से तैयार की गई मिठाइयां गरीब लोगों को सस्ती दरों पर एवं सामान्य मिठाईयां उच्च-वर्ग को ऊँची दरों पर बेचकर सरकारी नीतियों को लागू करने में मदद की है।

बड़े बाबू : (आश्चर्यचकित हो अपनी सीट से उठते हुए)-लेकिन महाराज.....

यमराज : (बड़े बाबू की बात को काटते हुए) अत: हम मिट्ठन हलवाई के प्रयासों की सराहना करते हुए एवं बासी मिठाइयों को ताजी बनाने सम्बन्धी उनके द्वारा किये गये अनुकरणीय कार्यों हेतु उन्हें यमलोक की मानद उपाधि 'डॉक्टर आफ फूड़ रिसर्च', यानी डी.एफ.आर. से सम्मानित करते हैं और इन्हें ससम्मान स्वर्ग में भेजने का ऐलान करते हैं।

मिट्ठन : महाराज।

सब : जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज.....

यमराज : बस बड़े बाबू बस। अब आप दूसरा केस हाजिर करें।

यमदूत : आत्मा नाई, हाजिर हो।

नाई : (मालिश के अन्दाज में हाथों को नचाते हुए व प्रवेशता है। बैकग्राउण्ड में गाना बज रहा है–
सर जो तेरा चकराये या दिल डूबा जाये
आजा प्यारे साथ हमारे काहे घबराय)–
करा लो तेल मालिश, मालिश! (बड़े बाबू के सिर पर हाथ मारता है)

यमराज : क्या केस है बड़े बाबू, इनका।

बड़े बाबू : (पत्रावली देखते हुए) महाराज, यह धरती का एक बहुत ही धूर्त और लालची नाई है, बूचाराम। इसने अपना जीवन इधर से उधर करने में बिताया है।

किस्मती : (उपकारी को अलग ले जाकर) अबे! इसकी क्या व्यवस्था करी, तूने।

उपकारी : बड़े भाई। यह यमलोक की सारी ख़बरें महाराज को पहुँचायेगा, यह धरती के उन सभी लोगों की सूचना भी हमें देगा जिनके पास दो नम्बर का माल है। जिन्हें हम याड़ा एक्ट के तहत यहां ले आएंगे।

किस्मती : और।

उपकारी : भैया। यह रोजना महाराज की और उसके बाद हमारी मालिश किया करेगा, जिसके पैसे भी नहीं देने पड़ेंगे।

किस्मती : (खुश होते हुए) वाह भाई, वाह!

यमराज : लेकिन बड़े बाबू इधर की उधर करना, क्या कोई अपराध है?

किस्मती : (आगे आते हुए) नहीं, महाराज। इसने इधर की उधर करके कम्यूनिकेशन के कार्य में योगदान दिया है।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज, इधर की उधर करने को हमारी संस्कृति में एक बुराई माना गया है, यह व्यक्ति का एक अवगुण होता है।

यमराज : बड़े बाबू। कौनसे जमाने की बात कर रहे हैं, आप? भाई, रूढियों और दकियानूसी विचारधारा का संस्कृति के नाम पर अन्धानुकरण और संरक्षण पिछड़ेपन एवं अवरोध का सूचक है। यदि समयानुसार एवं देश के विकासार्थ, सांस्कृतिक मूल्यों

से समझौता करना पड़ा तो यह एक अच्छा कार्य होगा, और कुछ कहना है, आपको?

बड़े बाबू : (आश्चर्य से) मान लिया महाराज कि इसने इधर की उधर करके अच्छा काम किया है, पर इसने अपनी दुकान पर हजामत बनाने आए ग्राहकों की जेबें काटने में जेबकतरों की मदद की है।

यमराज : कैसे? क्या आप इन पर जो लांछन लगा रहे हैं उसका कोई सबूत है आपके पास।

बड़े बाबू : महाराज। इसकी दूकान पर जब कोई ग्राहक हजामत बनवाने आता था तो यह उसके मुँह पर पानी छिड़ककर उसकी जेब की टोह ले लेता था और जेबकतरों को इसकी खबर कर देता था और बेचारे ग्राहक लुट जाते थे।

यमराज : बड़े बाबू आप होश–हवास में है?

बड़े बाबू : हां, महाराज इसका एक सबूत भी है मेरे पास।

सब : सबूत। सबूत। सबूत!

यमराज : कैसा सबूत, कहां है वह? पार्श्व में गायन– ढूंढो ढूंढो रे ढूंढो रे छुपा है सबूत कहाँ? (किस्मती व उपकारी उसे कुर्सी, टेबिल आदि के नीचे ढूंढते हैं)

बड़े बाबू : यहीं है महाराज, वह। (किस्मती व उपकारी बड़े बाबू की टेबिल के नीचे ढूँढ़ते हुए पहुँच जाते हैं) यहीं यमलोक में मौजूद है और उसका नाम है – टाईगर।

यमराज : (आश्चर्य से) टाईगर!

उपकारी : टाईगर!

यमराज : (चिन्तित होकर कुछ सोचते हुए) ठीक है, ठीक है, उसे गवाहों के कटघरे में हाजिर किया जाए।

यमदूत : स्वर्गाधिकारी नेक आत्मा, टाईगर हाजिर हो।
(टाईगर गवाहों के कटघरे में जाकर खड़ा होता है, उपकारी यमग्रन्थ लाकर टाईगर के पास ले जाता है)

टाईगर : मैं इस यमग्रन्थ.....

बड़े बाबू : हां तो टाईगर साहब। क्या आप इस व्यक्ति को जानते हैं ? (नाई की ओर ईशारा करते हुए)

टाईगर : जी हां, यह धरती का एक ईमानदार और कर्मठ नाई बूचाराम है।

बूचाराम : (खुश होते हुए) वाह! टाईगर वाह। तुम यहाँ कैसे, भाई।

यमराज : (हथौड़ा मारते हुए) ऑर्डर ऑर्डर।

बड़े बाबू : हा तो बूचारामजी, क्या आप टाईगर को जानते हैं ?

बूचाराम : हा, महाराज। यह मेरा दोस्त है और मेरी दुकान पर रोज आया करता था।

बड़े बाबू : क्यों आया करता था, तुम्हारे पास ?

(बूचाराम डरकर चुप हो जाता है और टाईगर की ओर देखता है, टाईगर भी डरकर चुप हो जाता है, यमराज किस्मती की ओर देखता है)

किस्मती : (आगे आते हुए) बड़े बाबू। यह टाईगर इनकी दुकान पर हजामत सीखने आया करता था।

बड़े बाबू : (आपत्ति करते हुए) महाराज। इस तरह न्यायालय की कार्यवाही में व्यवधान डालना कानूनी अपराध है।

बूचाराम : (बड़े बाबू से) जी हाँ महाराज। यह टाईगर मुझसे हजामत की ट्रेनिंग लेने के लिए आया करता था।

यमराज : क्या ? क्या आप लोगों को हजामत सिखाते भी थे ?

किस्मती : हाँ महाराज। इन्होंने सामान्य लोगों को हजामत सिखाकर परम्परागत कला के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है।

यमराज : वाह। बूचारामजी, वाह। आपने हजामत बनाने जैसे कठिन और परम्परागत कार्य का जन-सामान्य को प्रशिक्षण देकर इस क्षेत्र में एक नया और आई.टी.आई. जैसी शिक्षा देने का अनुकरणीय कार्य किया है।

बूचाराम : महाराज। यदि आप आज्ञा दे तो मैं यहाँ भी ब्यूटी पार्लर चला सकता हूँ।

यमराज : यह तो हमारे लिए और भी अच्छी बात होगी।

(फिर बड़े बाबू की ओर मुताखिब होकर) भई बड़े बाबू यह तो हमारे लिए एक अच्छा अवसर है कि बूचारामजी जैसे कुशल हज्जाम हमारे लोक में है। अब हम यमलोक में भी प्रशिक्षण शिविर लगायेंगे जिसमें बूचाराम लोगों को हजामत बनाने की परम्परागत कला का प्रशिक्षण देंगे।

किस्मती : और परम्परागत कला के विकास के लिए तो इन्हें सरकारी अनुदान भी मिलेगा।

बूचाराम : और महाराज, इस टाईगर ने मेरे यहाँ से डिप्लोमा कोर्स कर रखा है, अत: यह मेरे सहायक के रूप में कार्य करेगा।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज.....

यमराज : अत: आज से बूचारामजी को स्वर्ग में स्थान देकर प्रशिक्षक के पद पर नियुक्त किया जाता है।

बूचाराम : महाराज।

सब : जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

(बड़े बाबू सिर पकड़ लेते हैं, टाईगर और बूचाराम जी गले मिलते हैं, प्रकाश उन पर मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है)

(दृश्य - समाप्त)

सातवां दृश्य

(स्थान - यमलोक का दृश्य)

(यमराज अपने दोनों सहयोगियों - चौकीदार किस्मती एवं चपरासी उपकारी के साथ चिन्तित मुद्रा में टहल रहे हैं। मंच के बांयी और स्वर्ग में सितारा देवी, मूमल देवी, टाईगर आदि हँसी-ठट्ठों में मशगूल हैं।)

यमराज : (चिन्तित मुद्रा में) अब क्या होगा, किस्मती मुझे बहुत चिन्ता हो रही है।

(चिन्ता शब्द सुनकर सभी स्वर्ग वाले यमराज के पास आ जाते हैं।)

किस्मती : (पास आकर) कैसी चिन्ता प्रभु। मुझे भी तो बताइये।

मूमल देवी : (कंधे पर से बंदूक उतारते हुए) मुझे बताइये प्रभु क्या कोई आक्रमण कर रहा है। मैं आपके लोक की रक्षा मंत्री हूं। (फिर दर्शकों की ओर बन्दूक तानकर) अभी सफाया कर देती हूं सबका।

टाईगर : (उस्तरा निकालते हुए) प्रभु। ये हथियार पहल लोगों की जेबें काटता था अब आप आज्ञा तो करें। ये किसी की गर्दन भी काट सकता है।

यमराज : (आँखें मूदकर प्रसन्नता से) मेरे बहादुर शेरो और (रूपसी की ओर देखते हुए) हितैषियो। आप जैसे वीर-बहादुर, नीतिवान एवं रूपसी के होते हुए चिन्ता किस बात की।

रूपसी : फिर क्या बात है महाराज।

उपकारी : आज भगवान यमलोक का निरीक्षण करने आने वाले हैं।

किस्मती : और महाराज इस चिन्ता में हैं कि कहीं भांडा नहीं फूट जाय।

रूपसी : कैसा भांडा किस्मती?

यमराज : आप तो जानती ही हैं कि हमने अपनी बुद्धि और विवेक से आप सभी को स्वर्ग में स्थान दिया है।

रूपसी : यह तो आपकी मेहरबानी है प्रभु।

यमराज : पर आप जानती ही हैं कि इसके लिए हमें ऐसे लोगों को नर्क में भेजना पड़ा जो वास्तव में स्वर्ग के अधिकारी थे।

मूमल देवी : (कुछ सोचती हुई) हाँ महाराज यह तो चिन्ता की ही बात है। भगवान यदि ईमानदारों को नर्क में और बेईमानों को स्वर्ग में देखेंगे तो अपना भांडा तो फूटना स्वाभाविक ही है।

टाईगर : महाराज मुझे तो उस बड़े बाबू की चिन्ता है। वह ईमानदार का बच्चा जरूर भगवान से हमारी शिकायत करेगा।

किस्मती : अजी उसका तो इन्तजाम कर दिया प्रभु ने।

टाईगर : क्या, क्या इन्तजाम कर दिया उसका?

उपकारी : प्रभु ने ऑफिस आर्डर निकालकर उन्हें एक सरकारी ट्यूर पर भेज दिया।

टाईगर : वाह प्रभु वाह क्या युक्ति ढूँढी है आपने भी।

यमराज : परन्तु अभी चिन्ता खत्म नहीं हुई है।

मूमल देवी : (चौंकते हुए हाथ का इशारा करके) मुझे युक्ति मिल गई इस संकट से छुटकारे की।

यमराज : (झटके से पास जाकर) कैसी युक्ति? जल्दी बताओ।

(अन्य सब भी पास आ सकते हैं)

मूमल देवी : (शून्य में देखते हुए महाराज से) महाराज। आप स्वर्ग एवं नर्क के साईन बोर्डों को बदलवा दें।

यमराज : कैसे?

मूमल देवी : महाराज स्वर्ग का बोर्ड नरक पर लगवा दें, भगवान सोचेंगे कि सभी ईमानदार व्यक्ति जो नर्क भुगत रहे हैं स्वर्ग में हैं.....।

यमराज : (बीच में बात काटते हुए) और नरक का बोर्ड स्वर्ग पर लगवा दें ताकि भगवान समझें कि स्वर्ग भोग रहे आप सब लोग नरक में पड़े हैं।

सब : वाह वाह।

यमराज : (सबसे) भाई वाकई ये राजनीतिज्ञ हैं। हम भी मुख्यमंत्री थे ज़मीन पर एक राज्य के, पर ऐसी युक्ति तो कभी हमें भी नहीं सूझी थी। (फिर किस्मती व उपकारी से) जल्दी करो भगवान आने वाले हैं।

दोनों : जी महाराज। (दोनों जाते हैं और साईन बोर्ड बदल देते हैं।)

(सहसा भगवान का उनके मंत्री के साथ प्रवेश।)

यमराज : (अगवानी करते हुए) पधारिये प्रभु पधारिये।

भगवान : कहो यमराज जी कैसे हो? आपके लोक में न्याय-व्यवस्था कैसे चल रही है।

यमराज : प्रभु सब कुछ आप द्वारा निर्देशित नियमों व उपनियमों के अनुसार हो रहा है। न्याय-व्यवस्था का पालन बड़ी सख्ती से किया जा रहा है। सभी ईमानदार व्यक्तियों को स्वर्ग में एवं सभी अपराधियों को नर्क में स्थान दिया जाता है प्रभु।

(फिर कुछ झिझकते से) - प्रभु निरीक्षण कर लिया जाय।

भगवान : (यमराज से) – हाँ यमराज जी चलो एक बार सब कुछ देख लिया जाय। (यमराज आगे-आगे चलकर पहले भगवान को नरक का दौरा कराते हैं। भगवान नरक लिखी प्लेट देखकर वहां के लोगों पर एक नजर डालते हैं।)

भगवान : (सब पर एक नजर डालते हुए) हूं। टाईगर। माना हुआ जेबकतरा और अपराधी। (फिर आगे बढते हुए) मूमल देवी। मानी हुई डकैत और हत्याओं में लिप्त राजनीति का मोहरा। (फिर आगे बढ़कर) और सितारा देवी। देशद्रोही और विदेशी तस्करों की एजेन्ट। वाह यमराज जी वाह। हम आपकी न्याय व्यवस्था से प्रसन्न हुए। आपने सभी अपराधियों व बदमाशों को नर्क में स्थान देकर हमारी न्याय व्यवस्था की एक मिसाल कायम की है।

यमराज जी : (हाथ जोड़कर) यह तो आपकी कृपा है प्रभु, वर्ना हमने तो न्याय व्यवस्था के अनुरूप सामान्य कार्य ही किया है (फिर भगवान की आगवानी करते हुए) – अब यदि आप उचित समझें तो एक नजर स्वर्ग की ओर भी डाल लें।

भगवान : हाँ हाँ क्यों नहीं। (फिर स्वर्ग लिखी पट्टिका की ओर नजर डालकर अन्दर प्रविष्ट होते हैं। अन्दर भोलाराम अकेला होता है। अत: उसे पहचानते हुए) – कौन भोलाराम!

भोलाराम : (हाथ जोड़कर भगवान के पैरों में गिरता हुआ) – धन्य हो प्रभु आप, जो मुझ गरीब को पहचान लिया।
(यमराज व उनके दोनों सहयोगी इस डर से आशंकित हो जाते हैं कि कहीं भोलाराम भांडा न फोड दे। अत: किस्मती भोलाराम के पास जाकर आँखें दिखाता है।)

भगवान : (यमराज से) – वाह यमराज जी वाह। यह भोलाराम धरती का बहुत ही ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति था। आपने इसे स्वर्ग देकर अपनी न्यायप्रियता का परिचय दिया है।

भोलाराम : भ..... भ..... (कुछ बोलना चाहता है परन्तु किस्मती उसे बीच में ही हाथों से रोककर बैठा देता है।)

किस्मती : बैठो भोलाराम बैठो। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। हम प्रभु से कह देंगे कि तुम्हारे घर-परिवार और बच्चों पर दया-दृष्टि रखेंगे।

भगवान : (यमराज से) क्या इसकी तबियत खराब है?

यमराज : हां प्रभु। कुछ दिनों से घर की, बाल-बच्चों की याद करके बड़बड़ाता रहता है। पर हम इसका इलाज़ करा रहे हैं।

भगवान : किससे इलाज़ करा रहे हैं?

यमराज : प्रभु नरक लोक में एक बहुत बड़े डाक्टर जो बहुत कर्मठ और ईमानदार उनसे इलाज़ करवा रहे हैं।

भगवान : (चौंकते हुए) ईमानदार और नर्क में। यह कैसा न्याय है यमराज जी।

यमराज : (कुछ टालते हुए) अब क्या बतायें प्रभु। छोड़िए इस विषय को।

भगवान : नहीं यमराज जी हमें खुलासा करके बताइये इस रहस्य को।

यमराज : क्षमा करें भगवान। इस आत्मा का निर्णय मेरे से पहले वाले यमराज ने किया था। और बेचारा वह ईमानदार डॉक्टर अभी तक नर्क में पड़ा है।

भगवान : लेकिन यमराज जी आपने क्यों उसे नरक में रख रखा है? क्यों नहीं उसे स्वर्ग में स्थान दिया?

यमराज : परन्तु प्रभु मैं पहले वाले यमराज के आदेशों को कैसे बदल सकता था?

भगवान : तो हमसे कहते। हम तो बदल सकते थे।

यमराज : (किस्मती से) – किस्मती, डॉक्टर की फाईल तो लाओ। (किस्मती दौड़कर फाईल लाता है और यमराज को देता है। यमराज फाईल खोलकर भगवान के समक्ष प्रस्तुत करते हुए) – ये लीजिए प्रभु। सब कागजात तैयार हैं, (लेते हुए)

भगवान : (फाईल पर हस्ताक्षर करते हुए) अच्छा भई यमराज जी अब हम प्रस्थान करेंगे। आप इसी प्रकार न्याय करते रहना।

यमराज : अरे भई अब तो भगवान ने निरीक्षण कर लिया साईन बोर्ड बदल दो।

किस्मती व उपकारी : (खुश होते हुए) अभी लें प्रभु।

(दोनों वापस साईन बोर्ड उतार लाते हैं और स्टेज के मध्य में पहुँचकर एक दूसरे से टकरा जाते हैं। साईन बोर्ड नीचे गिर जाते हैं। सितारा देवी, मूमल देवी, टाईगर आदि उन्हें आकर उठाते हैं।)

यमराज : अरे भाई साईन बोर्ड दिखाओ तो कहीं उल्टे मत लगा देना। दोनों साईन बोर्ड दर्शकों की ओर दिखाते हैं जिसमें से एक पर लिखा है समाप्त और दूसरे पर The End.

नेकीराम : अरे यह क्या हो रहा है भाई। मुझे भी तो बताओ। अरे दी एण्ड हो गये रे।

(नाटक समाप्त)

मोती मैड़ के

पहला दृश्य

मदारी : (दर्शकों से) - हाँ तो मेहरबानो, कद्रदानो, सायबानो। मैं एक मदारी। पहले मेरे पास एक बन्दर हुआ करता था और एक डुगडुगी। पर आज दोनों ही मुझसे काफी दूर चले गये हैं। पूछो क्यों? (चुप्पी)

मदारी : कोई नहीं पूछता क्यों? लो मैं ही बताये देता हूं। मेरा बन्दर कहता है कि तुम्हारे पास मुझे क्या मिलेगा। न खाने को, न पहनने को और न ही आधुनिक सुख सुविधाएं, जैसे सैर सपाटे, गाड़ियों में घूमना, बड़े-बड़े लोगों से मिलने का मौका आदि आदि। छोड भागा मुझे। कहने लगा कि आजकल विदेशी लोग इन्सान के बारे में रिसर्च कर रहे हैं और हम बन्दरों के वारे-न्यारे हो गये। ए.सी. कमरों में रहने को मिलता है, कार और हवाईजहाज में सैर करने और काजू किशमिश खाने को मिलते हैं।

मैंने सोचा कि यह पगला गया क्योंकि वह मुझे भी अपने साथ चलने को कह रहा था। पर मैं न गया। मैंने सोचा कि मैं एक साधारण सा मदारी हूं और ये विलासिता की चीजें मुझे तिल तिल कर मार देंगी। तब से बिना बन्दर के ही तमाशा दिखा रहा हूं। मर्जी का मालिक हूं। जब चाहा, जहां चाहा दिखाना शुरू कर दिया तमाशा।

और डुगडुगी। आजकल मौसम का कोई पता नहीं रहता। ऋतुओं की परिभाषा ही बदल गई है। सर्दी के दिनों में गर्मी,

गर्मी में बरसात और बरसात के मौसम में सूखा। कई बार डुगडुगी का चमडा फट गया जिसकी मरम्मत करने वाले ही न रहे। और जो करने वाले हैं वे कहते हैं कि इन पुरानी चीजों का आज चलन ही कहां रहा। आजकल सब इलेक्ट्रॉनिक हो गया है। तो भाई आज कहां है डुगडुगी।

एक छोटी बच्ची : (प्रवेश करते हुए) – मैं यहां हूं।

मदारी : कौन हो तुम?

बच्ची : अरे कहा न मैं डुगडुगी हूं।

मदारी : छोटी सी बच्ची होकर मजाक करती हो, और वह भी एक मदारी से जो लोगों से मजाक करता है।

बच्ची : अरे मैं मजाक नहीं कर रही। मेरा नाम सचमुच ही में डुगडुगी है।

मदारी : अरे भाई यह भी कोई नाम हुआ, डुगडुगी।

डुगडुगी : मेरे पिताजी ने मरते समय यह नाम दिया था मुझे और कहा था कि इस नाम को दशों दिशाओं में गुञ्जायमान करना।

मदारी : तुम्हारे पिताजी वाकई कोई बड़े आदमी थे। क्या काम करते थे?

डुगडुगी : एक कलाकार थे। परन्तु ज़िन्दगी भर अभावों में ही पिसते रहे।

मदारी : अच्छा।

डुगडुगी : हां। उन्होंने भारतीय कला को विश्व भर में सम्मान दिलाया। बड़े बड़े पुरस्कार और सम्मान मिले उन्हें। पर जीवन के अन्तिम क्षणों में दवा दारू तक के पैसे न थे उनके पास।

मदारी : ऐसी स्थिति?

डुगडुगी : हां, हिन्दुस्तान में कला साधकों की ऐसी ही स्थिति होती है।

मदारी : भाई, तुम्हारी बातों में तो बहुत गहराई है।

डुगडुगी : मेरे पिताजी ने इसी गहराई को जन-जन तक पहुंचाने के लिये मुझे यह नाम दिया था और कहा था कि चाहे जीवन में कितने ही कष्ट आ जायं परन्तु भारतीय कला की गूंज को ऊंचाइयां प्रदान करना।

मदारी : (दर्शकों से) –तो साहब, कोई बात नहीं। चाहे सब कुछ बदल जाय परन्तु संस्कार, संस्कृति, नैतिकता, परम्परा इनमे परिवर्तन नहीं आना चाहिए। पर यह डुगडुगी सही कहती है। हमारे देश में ये सब विलुप्त से होते जा रहे हैं। डुगडुगी की तरह ही मुझसे भी यह देखा नहीं जाता और मैं गाँव गाँव, शहर शहर, गली गली मोहल्ले मोहल्ले जाकर अपने तमाशे के माध्यम से इन सभी को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहा हूं। मेरा और डुगडुगी का मकसद एक ही है। तो मैं चला तमाशा दिखाने और छोड जाता हूं इस डुगडुगी को जो आपको आगे कुछ दिखायेगी।

(मदारी का प्रस्थान)

डुगडुगी : (दर्शकों से) – इस मदारी का और मेरा मकसद एक ही है।

पार्श्व से : मैड़ गाँव महाभारतकालीन स्थान विराटनगर का एक पवित्र गाँव रहा है .....

आज मैड़ गाँव की बाणगंगा नदी का पानी सूख गया है परन्तु उसकी तलहटी में जो मोती बिखरे पड़े हैं उनको समेटना जरूरी है। ये मोती अपनी चमक से हमें हमारे अतीत का दर्शन कराते हैं परन्तु इन मोतियों का तो वहां के वाशिंदों तक को पता नहीं।

डुगडुगी : (दर्शकों से) – सुना आप लोगों ने। तो अब मैं आपको मैड़ गाँव के झरोखे से भारतीय ग्राम्य जीवन का जीता जागता सिनेमा दिखाती हूं और वह भी बिना पैसे का।

तो लीजिए देखिये नाटक 'मोती मैड के'।

दूसरा दृश्य

(गाँव के बाहर नदी-तट पर एक मन्दिर है जिसके मुख्य द्वारा पर परम्परागत रीति के मांडणे मंडे हुए हैं। गाँव से बाहर के मुख्य मार्ग पर दो नचयुवक आपस में बातें करते हुए चले जा रहे हैं। मार्ग के एक ओर जोशी जी की पाठशाला के प्रांगण में विद्यार्थी तरह-तरह के खेल खेलने में मशगूल हैं। आज

बाणगंगा का मेला है जिसे देखने के लिये ग्रामवासी अपने बच्चों एवं मिलने वालों के साथ चले जा रहे हैं। यह मेला हर वर्ष लगता है जिसमें तरह-तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। ये दोनों नवयुवक भी पहेली, बात, कहावतों, किस्से आदि को आपस में कहते-सुनते चले जा रहे हैं)।

पहला युवक : (अपने साथी से) -भाई इस बार तो बाणगंगा के मेले में बड़ा मजा आयेगा।

दूसरा युवक : हां भाई अबकी बार तो वहां पर फाळी, बात, कहावत, किस्सों आदि की प्रतियोगिताएं भी होंगी।

पहला युवक : भाई तैयारी तो हमारी भी पूरी है परन्तु दोहरा लेना ठीक रहेगा। हम चलते-चलते आपस में ही एक दूसरे से कहेंगे-पूछेंगे जिससे प्रतियोगिता की तैयारी हो जायेगी।

दूसरा युवक : अरे आपस में ही क्यों। मेले में कोई जाती हुई मिल जायेगी तो उसे भी सुनायेंगे।

पहला युवक : देख भाई। तेरी यह बात मुझे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती। हर बार औरतों को छेड़ने के चक्कर में रहता है। खुद को तो मार खाने की आदत पड़ गई है पर मेरा तो ध्यान रख।

दूसरा युवक : तू भी पक्का हो जायेगा।

पहला युवक : क्या मतलब?

दूसरा युवक : देख भाई कहीं फँस गये तो मैं तो भागकर अपनी जान बचा लूंगा।

पहला युवक : चल असली बात पर आते हैं।

दूसरा युवक : कौनसी बात?

पहला युवक : अरे वही। प्रतियोगिता की तैयारी।

दूसरा युवक : हां तो हो जा शुरू।

पहला युवक : इसका अर्थ बता- तू भी कमाल करै छै, मैड़ का भाटा बैराठ पोंछावै छै।

दूसरा युवक : भाई जब कोई व्यक्ति सफेद झूंठ बोलते हुए पकड़ा जाता है या हेरा फेरी करता है तो उसके सन्दर्भ में ऐसा कहा जाता है।

दूसरा युवक : अच्छा अब तुम बताओ-
खैड़े मैड़ कांकै भरोसै राण्ड मत व्है जाजे ए

पहला युवक : इसका अर्थ है कि कहीं मैड़ के निवासियों के चक्कर में विधवा मत हो जाना।

दूसरा युवक : किसको कह रहा है कौन कह रहा है। इसकी अन्तर्कथा बता सकता है?

पहला युवक : वह मुझे नहीं मालूम, बस अर्थ बता दिया।

दूसरा युवक : और कहीं प्रतियोगिता में इसकी अन्तर्कथा पूछ ली तो।

पहला युवक : हां सो तो है। चलो तुम बताओ।

दूसरा युवक : तो सुनो
बताता है-
किसी समय की बात है। मैड़ गाँव का एक व्यक्ति पास ही के एक अन्य गाँव की एक सुन्दर महिला पर आसक्त था। वह उससे विवाह करना चाहता था अतः उसे सलाह दी कि वह अपने पति की हत्या कर दे, तब वह उसे अपना लेगा।
उस महिला ने अपने उस प्रेमी के कहे अनुसार अपने पति की जहर देकर हत्या कर दी और फिर अपने प्रेमी के पास मैड़ गाँव आकर उससे शादी करने को कहा। उसके प्रेमी ने उसे यह कहकर ठुकरा दिया कि जब तुम अपने पति को मार सकती हो तो मुझे क्या छोड़ दोगी। और तभी से ऐसी धोखेबाज पत्नियों के लिये उपरोक्त कहावत चल पड़ी।

पहला युवक : तेरे जैसों के लिए है यह कहावत।

दूसरा युवक : देख ले हमारे जैसों की महिमा।

पहला युवक : मेरी कहावत का उत्तर देगा जब जानूंगा तेरी महिमा को।

दूसरा युवक : चल पूछ।

पहला युवक : च्यार लाठी चौधरी अर पाँच लाठी पंच
जींका घर मैं दस लाठी पंच गिणै नै टंच

दूसरा युवक : यहां पर एक लाठी का अर्थ घर के एक पुरुष सदस्य से लिया जाता था। इस प्रकार इस उक्ति में मानवीय बल के महत्व को दर्शाया गया है। अब मैं पूछूं?

पहला युवक : पूछ।

दूसरा युवक : कर ये माली मालपुआ अर बोरो लेगो हुया हुया

पहला युवक : कर्ज़ करके गुलछर्रे उडाना।

दूसरा युवक : बिल्कुल सही ।

पहला युवक : अब मैं पूछूं?

दूसरा युवक : पूछ।

पहला युवक : गोडा टूट्या कड़ नई अर सिर पर पान चर्‌या

दूसरा युवक : बलशाली व्यक्ति की दीन अवस्था में निर्बलों द्वारा उसे प्रताड़ित करना। अन्तकर्था भी है, सुनेगा।

पहला युवक : सुना

दूसरा युवक : जंगल के सभी जानवर अपने राजा शेर से इतने डरते थे कि उसके पास तक आने की उनकी हिम्मत न होती थी परन्तु जब उस शेर का बुढापा आ गया और वह चलने फिरने में असमर्थ हो गया तो छोटे-छोटे जानवर भी उसके सिर के पास आकर चरने लगे।

पहला युवक : वाह वाह मजा आ गया।

दूसरा युवक : (अपने नन्हे नन्हे बच्चों की उंगली पकड़े आती हुई एक औरत को लक्ष्य करके अपने साथी की ओर देखते हुए) - वाह रै मेरी नानगी तरह-तरह की बानगी।

(वह औरत फब्ती कसने वाले उस मनचले को खा जाने वाली नज़रों से देखते हुए तेज-तेज कदमों से आगे निकल जाती है)।

पहला युवक : साले मरवायेगा क्या। आ गया न अपनी औकात पर।

दूसरा युवक : अरे इसमें डरने की क्या बात है। हम तो तैयारी कर रहे हैं।

पहला युवक : मैं जानता हूं तुम्हारी तैयारी को।

दूसरा युवक : अरे भाई नाराज मत हो। पर मान लो कि यदि प्रतियोगिता में यही पूछ लिया तो।

पहला युवक : अच्छा ठीक है अब फाळी पूछते हैं।

दूसरा युवक : मैं पूछूंगा पहले।

पहला युवक : ठीक है पूछ।

दूसरा युवक : ऊभी चालै आडी चालै चालै कमर कस
ईं फाळी को फळ बता नईं रुप्या लेल्यूं दस

पहला युवक : बुहारी।

दूसरा युवक : ठीक है।

पहला युवक : अब मैं पूछता हूं। अन्तर्कथा भी बताना।

दूसरा युवक : ठीक है पूछ।

पहला युवक : घिसै घिसावै घिस घिस गेरै पाणी
तेरी बडद्याऊं रै काळ्या तेरी बात म्हे जाणी

दूसरा युवक : कौव्वा। इसकी अन्तर्कथा इस प्रकार है-....

पहला युवक : बहुत खूब। भाई पुरानी बातें कितनी शिक्षाप्रद हैं। पर आजकल उन्हें कौन जानना चाहता है। विकास के नाम पर सब लोग अपने अतीत को भूलते जा रहे हैं।

दूसरा युवक : अच्छा अब कोई नई बात बता।

एक आदमी : (लट्ठ फिराते हुए प्रवेश करते हुए)- आ जाओ सालों को देख लूंगा एक एक को आ जाओ....

पहला युवक : यह देख सामने नई बात।

दूसरा युवक : यह क्या बबाल है?

पहला युवक : अल्ड-गँवार। चल देखें चलकर पूछते हैं उससे कि क्या हो गया।

दूसरा युवक : चल।

(दोनों उस व्यक्ति के पास जाकर कुछ पूछना चाहते हैं पर वह किसी की नहीं सुनता बस पूर्ववत लट्ठ फिराते हुए हंगामा कर रहा है। दोनों वापस आ जाते हैं)।

पहला युवक : नई बात सुनेगा?

दूसरा युवक : सुना।

पहला युवक : म्हंडासो मारै कांबळ को जोर दिखावै लाठा को
मिनख व्है तो समझाऊं कांईं समझाऊं भाटा को

दूसरा युवक : यह भी कोई कहावत है क्या?

पहला युवक : अरे अभी अभी तो देखा ही है। मतलब जानता है इसका?

दूसरा युवक : नहीं। तुम बताओ ।

पहला युवक : जिसकी शारीरिक या आर्थिक स्थिति खराब हो फिर भी झूठा ही पौरुष दिखाये और किसी का कहना भी न माने ऐसे पत्थर समान व्यक्ति को समझाना कठिन है ।

दूसरा युवक : वाह वाह मजा आ गया।
(सहसा पास में से एक माँ बेटी गुजरती हैं)।

दूसरा युवक : (ऊंचीआवाज़ में)- माँ जिसी बेटी अर आंगी जिसी पेटी
(माँ अपनी बेटी का हाथ पकड़े एवं नवयुवक 2 को क्रोधाग्नि से देखते हुए तेज तेज कदमों से निकल जाती है)।

पहला युवक : फिर?

दूसरा युवक : भाई प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे हैं।

पहला युवक : यह भी कोई प्रतियोगिता की बात है?

दूसरा युवक : हाँ भाई है।

पहला युवक : तो बता फिर इसका अर्थ।

दूसरा युवक : माँ के समान गुणी बेटी और स्त्री की चोली जैसी सुघड़ सन्दूक सुयोग्य एवं सार्थक होते हैं।

पहला युवक : वह भाई वाह, क्या खूब। अब मैं पूछता हूं।

दूसरा युवक : पूछ।

पहला युवक : बेटा हुया स्याणा अर दाळद हुया पुराणा

दूसरा युवक : सन्तान के योग्य हो जाने पर घर का दारिद्र्य स्वत: ही समाप्त हो जाया करता है।

दूसरा युवक : अब मैं पूछूं?

पहला युवक : पूछ।

दूसरा युवक : अजा सहेली तासु रिपु सा जननी भरतार
ता के सुत के मित्र को भजिये बारम्बार
बता इसका अर्थ। बड़ा ही कठिन है।

पहला युवक : नहीं पता। तुम बताओ।

दूसरा युवक : तो फिर सुन।

अजा	-	बकरी		अजा	सहेली	-	भेड
तासु	-	उसकी		रिपु	-		शत्रु
सा	-	उसकी		जननी	-		माता
भरतार	-	पति		ता के	-		उसके

व्याख्या : बकरी की सहेली (भेड) के दुश्मन (भरभूंट) की जननी (पृथ्वी) के पति (इन्द्र) के पुत्र (अर्जुन) के मित्र (श्रीकृष्ण) की बारम्बार वन्दना करनी चाहिए।

पहला युवक : अरे वाह। तू तो बहुत ज्ञानी निकला। अब देखता हूं तेरा ज्ञान।

पहला युवक : कैसे?

दूसरा युवक : एक पहेली पूछकर। बतायेगा?

पहला युवक : पूछ।

दूसरा युवक : दो माँ बेटी दो माँ बेटी चली बाग मैं जायं
तीन नींबू तोड़कर एक-एक खांयं । बता इसका मतलब।

पहला युवक : बेटी, पत्नी और सास।

दूसरा युवक : वाह भाई वाह। अब मैं पूछूं?

पहला युवक : पूछ।

दूसरा युवक : एक स्त्री और एक पुरुष ऊंट पर बैठकर जा रहे थे। पुरुष बूढा था और स्त्री जवान। राहगीर औरतों ने ऊंट पर बैठी स्त्री से पूछा-
ऊंट चढी लजवंती जोय आगडलो थारो कांईं होय?
उस स्त्री ने तो कोई जवाब नहीं दिया परन्तु ऊंट पर बैठे वृद्ध ने उसे ऐसा कहा-

इसकी सासू मेरी सासू की बेटी कहलाये
राहगीर औरतें इसका मतलब समझ ले गई।

क्या समझी ?

पहला युवक : ऊंट पर बैठी स्त्री वृद्ध की पुत्रवधू थी। अब मैं पूछूं ?

दूसरा युवक : पूछ।

पहला युवक : ऐसी ही एक स्थिति में जब राह के किनारे खेत में कपास बीन रही औरतें ऊंट पर बैठे एक पुरुष व स्त्री से उनका सम्बन्ध पूछती हैं तो अबकी बार बूढा उन्हें इस प्रकार उत्तर देता है-

बीणबाळी बीणो कपास, ईं की अर मेरी एक ही सास
कपास बीन रही औरतें इसका मतलब समझ ले गई।
क्या समझी ?

दूसरा युवक : ऊंट पर बैठी स्त्री पुरुष की सहलज (साळाहेली) थी। अब मैं पूछू ?

पहला युवक : पूछ।

दूसरा युवक : किसी गाँव का एक पटैल एक पण्डित के पास गया और पूछा-

महाराज अबकै संवत् कस्योक व्हैगो ?
पण्डित ने कहा- अबकै संवत् अस्यो व्हैगो अक निपजैं सातूं तूंत। अब तुम बताओ कि सातूं तूंत क्या हैं ?

पहला युवक : (काफी देर सोचने के पश्चात्)- नहीं बता पाऊंगा चलो तुम बताओ ।

दूसरा युवक : ध्यान से सुनो सात तूंत ये हैं-

1. सण (जूट) 2. बण (कपास) 3. तृण (घास) 4. कण (दलहन अर्थात् दसों दाल एवं चावल जिनमें बूर नहीं निकलता) 5. रस (गन्ना) 6. कस (तिलहन जिन्हें कसा जाकर उनमें से तेल निकाला जाता है) और 7. तुस (जौ-गेहूं, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि जिनमें से बूर निकलता है)।

पहला युवक : (आसमान की ओर देखते हुए)- भाई भयंकर बारिश होने वाली है कहीं ये तारी सातूं तूंतों की गठरी भीग न जाय।

दूसरा युवक : तुम घबराओ मत। काळा बादळ डरावणा अर धोळा बरसण जोग।

पहला युवक : अरे वाह तुमने तो ऋतु की बात कही है। चल अब ऋतुओं की कहावतें बोलते हैं। अच्छी तैयारी हो जायेगी।

दूसरा युवक : ठीक है। पर बन्दूक की गोली की तरह, कभी तू कभी मैं कभी तू कभी मैं ...

पहला युवक : ठीक है हो जा शुरू।

दूसरा युवक : पून्यू पड़वा गाजै अर बहत्तर दिन की बाजै
(यहां पून्यू पड़वा का आशय आळगसी पून्यू से है)।

पहला युवक : बास्योडा की राबडी अर गणगोर्यां का गुणा
सदा मीठी लापसी अर सावण मीठा चणा

दूसरा युवक : दूबळी अर दो साढ चींचड़ा अर खाज

पहला युवक : पुरवा साढ धड़ूकतां बरसै च्यारूं कूंट

दूसरा युवक : गूगा जांटी पूजकर घरां पधारो इन्द्र
(गूगा जांटी के त्यौंहार के बाद बारिश का समय निकल जाता है)।

पहला युवक : नाडा टाकण बळद बिकावण मत ना चालै आधै सावण

दूसरा युवक : आसोजां का तावड़ा अर जोगी बण गया जाट
(आसोज मास में जब तेज धूप पड़े तो जाट जैसी परिश्रमी जाति तक के लोग खेतों में डटे रहने का साहस नहीं कर पाते जिसके परिणामस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति बिगडने के कारण उन्हें भी किसी से गुजारे के लिये धन मांगना पड़ सकता है)।

पहला युवक : बद्दळ कर गरमी करैं तो बरसण की आस
(जब आसमान में हुए बादलों से गर्मी होती है तो बारिश आने की पूरी-पूरी संभावना होती है)।

* अकाल की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में एक व्यक्ति पुरवाई हवा को याद करते हुए कहता है-

दूसरा युवक : चाल चाल ए पवन पुरवाई कैड्या सूं ल्यायी मेह उडायी
पुरवाई हवा यों उत्तर देती है-
काईं करूं रै सुरज्या भाई परजा मरै तिसाई
(जब प्रजा प्यासी मर रही थी तो उसकी प्राण-रक्षा हेतु मुझे आना ही पड़ा)।

पहला युवक : चैत मास ज्यो गाज गिजोवै भर बैसाखां टेसू धोवै

दूसरा युवक : जेठ मास ज्यो तपै निरंता तो समझो बरखा बलवंता
(फिर पास ही में जा रही एक स्त्री को लक्ष्य करके)- और आज तो मौसम भी अँगड़ाई ले रहा है।

पहला युवक : (आसमान की ओर देखते हुए)- देखो भाई मैं तुम्हारा साथ केवल इस मौसम में ही दे पाऊंगा।

दूसरा युवक : ठीक है। पर भाई एक बात बता।

पहला युवक : क्या?

दूसरा युवक : इसी गाँव में एक विधवा औरत रहती है, दूबळी सी जिसका घर यहीं कहीं है। तुम्हें ठीक से पता है क्या?

पहला युवक : देख भाई, मुझे इन सब बातों का कोई पता नहीं रहता। चल आगे चलते हैं।
(दोनों का प्रस्थान। सामने ही एक स्त्री शीशे में अपना मुँह देखकर आँखो में काजल डाल रही है)।

दूसरा युवक : (सामने वाले घर में काजल डाल रही औरत की ओर देखते हुए)- जरा रुको तो।

पहला युवक : क्यों?

दूसरा युवक : भाई चलते-चलते प्यास लग आयी है। उस सामने के घर में चलते हैं। वहां पानी पीकर फिर आगे के लिये प्रस्थान करेंगे। और एक कहावत भी सुन।

पहला युवक : सुना।

दूसरा युवक : तीतरमासी बादळी विधवा काजळ रेख
वा बरसै वा घर करै ईं मैं मीन न मेख।

पहला युवक : इसका अर्थ भी तो बता।

दूसरा युवक : अरे वो बदली तीतरमासी है जरूर बरसेगी। (फिर स्वगत)- और यह काजल डाल रही विधवा (अपने साथी से प्रकट में)- यह भी जरूर बरसेगी। चल वहाँ सामने के घर में जाकर आश्रय लेते हैं।
(दोनों सामने वाले घर में पहुंच जाते हैं।)

दूसरा युवक : (काजल डाल रही औरत की ओर देखते हुए)-
ओंडी ओंडी रोटी करी घी घालै छै के..?

औरत : (उस युवक के पैरों की जूतियों को लक्ष्य करके)-
चरड़ मरड़ की जूती पैरी गौणै ज्या छै के..?

दूसरा युवक : (पा में ही रखे चूड़े को निहार रही उस औरत की ओर देखते हुए)- लाल गुलाबी चूड़ो देखै खसम करैगी के..?

औरत : मांगा की सी टांट तेरी डण्डो मारूं के..?
(स्थिति को समझकर नवयुवक 2 अपनी जान बचाकर भाग छूटता है और वहां पर अब वह औरत और नवयुवक 2 ही रह जाते हैं)।
या
(स्थिति को समझकर दोनों नवयुवक अपनी जान बचाकर भाग छूटते हैं तभी एक अन्य नवयुवक प्रकट होता है)।

अन्य नवयुवक: (इधर उधर देखते हुए उस औरत से)-
कोई कोनै और आपां दोन्यूं र्‌हैगा ए।

औरत : (इधर उधर देखते हुए नवयुवक से)-
चालूं तेरी साथ मेळो बाणै दिखावै के..?

दूसरा युवक : बाणै की पट्‌टी ठाऊं तू चाल देखै के..?

औरत : पैली ज्यो छो गीत गायो आज गावै के..?

दूसरा युवक : ब्याव सैं पैल्यां की तूनै बात याद के..?

औरत : देख लै तू ही गावै के गीत साथ के..?

गीत

नायिका : राखड़ी दिला दै मूं नै दिला दै रै गूंठी,
राखड़ी दिला दै मूं नै दिला दै रै गूंठी
मैंतो चालूंगी हां मैंतो चालूंगी
हां मैंतो चालूंगी थारी साथ मेळो देख बा टै।

नायक : भैंस मेरी भूखी छै बाछड़ी भी भूखी,
भैस मेरी भूखी छै बाछड़ी भी भूखी
मैं तो जाऊंगो हां मैं तो जाऊंगो
हां रै मैं तो जाऊंगो खेतां मांय चारो ल्या बा नै।

नायिका : मेळो तो आवै रै बाळ्या आगीडा साल मैं,
मेळो तो आवै रै बाळ्या आगीडा साल मैंमैंतो परणूंगी,
हां मैं तो परणूंगी हां मैं तो परणूंगी स्याळा मांय
मेळो दिखला दै।

नायक : भैंस मेरी भूखी छै बाछड़ी भी भूखी,
भैस मेरी भूखी छै बाछड़ी भी भूखीमैंतो जाऊंगो
हां मैं तो जाऊंगो हां रै मैं तो जाऊंगो खेतां मांय
चारो ल्या बा नै।

नायिका : चारो तो ल्यावूं रै मैं मैंरै रै घरां सूं,
चारो तो ल्यावूं रै मैं मैंरै रै घरां सूंमैंतो रंजको
हां मैं तो रंजको हां रै मैं तो
रंजको भी ल्यावूं साथ द्यूंगी केल्डां नै।

नायक : रोटी मैं तो को नै खायो सुबै सूं बावळी,
रोटी मैं तो को न खायो सुबै सूं बावळीकैंयां चालूं मैं,
हां कैंयां चालूं मैं, हां कैंयां चालूं मैं थांवळी साथ
भूख मूं नै लागै छै।

नायिका : मेळा मैं चाल खांवां चाट पकौड़ी,
मेळा मैं चाल खांवां चाट पकौड़ीमज्जो आवैगो,
हां मज्जो आवैगो
हां मज्जो आवैगो दोन्यूं साथ सरकस देखांगा।

नायक : भाभ्यां म्हारी देखै तेरा घर हाळा भी देखै,
भाभ्यां म्हारी देखै तेरा घर हाळा भी देखैकैंयां चालांगा,
हां कैंयां चालांगा, हां कैंयां चालांगा चोरी चोरी साथ
दोन्यूं मेळा मैं।

नायिका : भैंस तेरी ल्याबै रै गाय मेरी ल्याबै,
भैंस तेरी ल्याबै रै गाय मेरी ल्याबैदोन्यूं जावांगा,
हां दोन्यूं जांवांगा, हां रै दोन्यूं जांवांगा काँजी होद
खांगा घरकां नै।

नायक : तू भी सोटो ले लै रै मैं भी सोटो ल्ये ल्यूं,
तू भी सोटो ले लै रै मैं भी सोटो ल्ये ल्यूंदोन्यूं चालारै,
हां दोन्यूं चालारै
हां दोन्यूं चालारै बेगा आज मेळो देखबा नै

नायक : म्हे तो जार्या दोन्यूं आज देखो मेळा मैं,
नायिक : म्हे तो जार्या दोन्यूं आज देखो मेळा मैं,
नायक : म्हे तो जार्या दोन्यूं आज देखो मेळा मैं,
नायिक : म्हे तो जार्या दोन्यूं आज देखो मेळा मैं,

दूसरा दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

बच्चे खेलते हैं

(जोशी गणेश दास जी के गुरुकुल का दृश्य। अभी जोशी जी गुरुकुल से बाहर हैं। एक ओर गुरुमाता बच्चों की लकड़ी की तख़्तियों पर मुल्तानी मिट्टी लीपकर उन्हें सूखने के लिये धूप में रखती जा रही है और दूसरी ओर बच्चे खेल रहे हैं)

मदन : (खेल रहे एक बच्चे से) –
नाई का रै नाई का, तबलो बजायी का
तबला मैं तोतो, नाई मेरो पोतो

नाई का बच्चा : (मदन पर पलटवार करते हुए) –
मदन मदारी, तेल की तगारी
तगारी मैं तोतो मदन मेरो पोतो
(मदन नाई के बच्चे को मारने लगता है)।

सब बच्चे : हो...

मदन : चलो भाई अब चोर ढूंढते हैं। बादशाह के इस दरबार में चोरी हो गई है।
(वह बादशाह बनकर एक स्थान पर बैठ जाता है। उसके पास ही एक बच्चा वजीर बनकर खड़ा हो जाता है)।

माली का बच्चा: मैं ढूंढता हूं मुझे बड़का आता है।

सब बच्चे : हो...

माली का बच्चा : (ज़मीन पर बैठकर अपनी गर्दन को गोल-गोल घुमाते हुए)
– चोर चोरी तो करी, जूती जरी की रह्ई
साफा अड्डेदार है, पजामा पट्टेदार है
पकड़ल्यो ये बादशह का वजीर चोर है

सब बच्चे : हो...

कुम्हार का बच्चा : (अपनी दोनों मुट्ठियों को दिखाते हुए सब बच्चों से)– मैंने अपनी एक मुट्ठी में कोई चीज छुपायी है। बताओ कौनसी मुट्ठी में है?

तेली का बच्चा : (अपने उस साथी की मुट्ठियों पर उंगली से हल्का आघात करते हुए) –
अक्कड़ बक्कड़ लोखी टक्कड़ ठां ठूं
अतूल बतूल गौरीशंकर पान फूल
(वह उसकी बन्द मुट्ठी की चीज बता देता है।) –

सब बच्चे : हो...

एक बच्चा : देखो सामने मियांजी आ रहे हैं, उनसे मजे लेते हैं।

सब बच्चे : हो...

एक बच्चा : (मियां जी के पास जाकर) – मियांजी मियांजी अपनी घोड़ी बेचोगे?

मियांजी : बेचेंगे।

दूसरा बच्चा : आपकी घोड़ी का क्या दाम?

मियांजी : सत्तर।

सब **बच्चे** : तेरी मूंछ कत्तर।
(मियां जी उसे मारने को दौड़ते हैं।)

एक बच्चा : (उस बच्चे को झूठ मूठ में धमकाते हुए मियां जी से)–छोड़ो मियां जी यह तो पागल है।

मियांजी : तो फिर ठीक है।

वही बच्चा : अच्छा मियां जी आपकी घोड़ी का क्या नाम?

मियांजी : कागली।

वही बच्चा : पकड़ मेरी...
(मियांजी झिझकते और नाम पूछने वाला बच्चा उनसे कुछ कहता उससे पूर्व ही ज़मीन से पत्थर उठाकर उसके पीछे दौड़ते हुए चिल्ला पड़ते)–तेरी तो।
(घोड़ी का नाम बताने पर उसके उत्तर में सब बच्चे मियांजी से कुछ अश्लील मजाक करने वाले थे। जब मियांजी को बात समझ में आयी तो वे पत्थर लिये उनके पीछे दौड़ पड़े)

एक बच्चा : चलो अब मुकड़ी चढाने का खेल खेलते हैं।

सब बच्चे : हो...
एक बच्चा अपनी बनियान खोलकर नंगे बदन होकर ज़मीन पर बैठ गया और एक अन्य बच्चा अपनी दोनों मुट्ठियों से उसकी पीठ पर इस प्रकार गाते हुए प्रहार करता–
चढ चढ मुकड़ी दे दे ताण
अळै गळै दो डाकण जायं
बूढा नै बैलाती जायं
लोखा चणा चबाती जायं
बोल काळी छै अक पीळी?

इतना सुनते ही वह बच्चा अपनी गर्दन हिलाता मुँह फाड़े सब बच्चों को काटने को दौड़ता जिसकी पीठ पर प्रहार किये गये थे।

एक ग्रामीण औरत का प्रवेश

भारी भीजणां चटाई ल्हैड़की,
लेल्यो रै लेल्यो मैड़ की.....

सब बच्चे : अये माई गाँव मैं जा म्हांनै खेलबादै।
(औरत उसी प्रवाह में आवाज़ लगाते हुए आगे निकल जाती है)।

बच्चे : (एक स्वर में)-
गैलै-गैलै जाय जींकी डोकरी मर जाय
ऊंका मालपुआ कुण खाय, काळी कुत्ती खाय

एक बच्चा : (जा रही लड़की को लक्ष्य करते हुए)-
छक्की छकड़ी बारा की बकरी
उडती चील बता दै नई तो बारा म्हनां पाप लागैगो

दूसरा बच्चा : (लड़की को लक्ष्य करते हुए)-
काको ल्यायो काकड़ी काकी मांगी बीज
काको दियो लात की अर काकी गावै गीत

लड़की : (वापस आकर उसका कान मरोड़ते हुए)-
कानां बीच कणपटी करद्यूं?

लड़का : (रोते हुए)- मुझे माफ कर दो।

लड़की : मुझे भी अपने साथ खेलने दोगे?

सब बच्चे : हो...

लड़की : चलो सोगन उतारो।

बच्चे : धोळी धोळी बकरी दुध्या धार उत्तर सोगन गंगा पार
बड़ को पाणी बड़ मैं जाय जड़ को पाणी जड़ मैं जाय
(सब मिलकर खेलते हैं।)

लड़की : ल्याये माई भीजणो भीजणा की लम्बी डोर
जींसै पकड्या काळा चोर काळा चोर को बेटो

नांव कढाऊंगी टींटो
आऊंगी खिलाऊंगी घोड़ा पर बैठाऊंगी
घोडो छूट्यो बाग मैं उठा लै तेरी काँख मैं

एक छोटा बच्चा: अब मैं गाऊंगा।

लडकी : आजा तू भी गा।

छोटा बच्चा : ल्याये माई भीजणो भीजणा की लम्बी डोर
जींसै पकड्या काळा चोर काळा चोर को बेटो...

सब बच्चे : बोड्यो बोड्यो जरखां तोड्यो
जरख़ गयो गुसायां कै, बोड्यो नाचै नायां कै
नाई राँधी खीचड़ी, बोड्यो चाबै चींचड़ी
(बच्चा गीत गाने वाले को मारने के लिए दसकी ओर दौड़ता है)।

लड़की : (उसे गुड़ की डली देते हुए)- छोड रे छोड। ले खा।
गाती है- चाँद बाबो चींटो बाण्या को गुड़ मीठो
बाण्यो गयो हाट मैं, दे बटाबट टाँट मैं
(छोटे बच्चे के सिर में हल्का हल्का मारती है। वह रोने लग जाता है)।

लड़की : (उसे दुलारते हुए)- रोना बन्द कर। चलो अब कड़कड़बेल का खेल खेलते हैं।

सब बच्चे : हो...
एक बच्चा माली बनता और बाकी सभी बच्चे एक गोला बनाकर ज़मीन पर बैठ जाते हैं। माली बना हुआ बच्चा उन बैठे हुए बच्चों के चारों ओर चक्कर लगाते हुए कहता है-

माली : कड़कड़बेल कड़ाकड़ बेल, भूरी नागरबेल

अन्य बच्चे : राजाजी का म्हैलां पाछै कुण बोल्यो?

माली : माळी को

अन्य बच्चे : कांई चावै छै?

माली : काकड़ी खरबूजा खाऊंगो

अन्य बच्चे : तोड़ ले जा

माली बना बच्चा किसी अन्य एक बच्चे की टांट में कड़कोल्या मारता। जो जो बच्चा कड़कोल्या मारने के दर्द से आहत होकर पीड़ा दर्शाता है उसके लिये माली कहता– या काचो।

जो बच्चा क़डकोल्ये की मार को सहन कर लेता उसके लिये माली कहता–

या पाको ईंनै तोड़ूंगो। और वह उसे उस घेरे में से खींचकर बाहर कर देता और उसके स्थान पर स्वयं बैठ जाया करता। बाहर निकला बच्चा अब माली बनकर इस खेल को जारी रखता।

एक लड़का : चलो अब दूसरा खेल खेलते हैं।

सब बच्चे : हो...

एक लड़का : कुवा का ढाणा मैं सोवैगो?

दूसरा लड़का : हां।

तीसरा लड़का : काळो कामळो ओढैगो।

दूसरा लड़का : हां।

पहला लड़का : नार आवैगो तो कोनै डरपैगो?

पहला लड़का : हां।

(अब पूछने वाला लडका अपने हां भरने वाले साथी को तरह तरह से डराया करता। यदि वह डरकर आँख झपका लेता तो हार जाता अन्यथा जीत जाता और अबकी बार पोत लेने की बारी उसकी होती।)

एक लड़का : अब खेल खत्म। जोशी जी आने वाले हैं।

दूसरा लड़का : (अपने साथियों से)– देखो भाई इसे बहुत चिन्ता है जोशी जी की।

तीसरा लड़का : चलो गीत गाते हैं।

पहला लड़का : कौनसा?

एक **लड़का** : वही रोज वाला।

पहला लड़का : गुरुमाता हैं यहां अँधे

पहला लड़का : अँधा तो तू है, वो तो अपनी गाय को नदी पर पानी पिलाने चली गयी कभी की।

सब लड़के : हो..... (एक स्वर में गाते हैं)–

पा पा पाटकडी, जोशी माळै खाट पड़ी
जोशी पाड्यो हेलो, निकळ भाग्यो चेलो
चेला नै खागो नार, जोशी घाली बार

लड़की : देखो गाय रंभाने की आवाज़ आ रही है। जोशी जी आ ही गये हैं बेटाओ।

(सामने से जोशी गणेशदास जी का आगमन। सब बच्चे भाग भागकर अपने–अपने स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं)।

जोशी जी : बच्चो, आज हम आपको वर्णमाला और बारहखड़ी का अभ्यास करवायेंगे।

बच्चे : हो....

जोशी जी : पहले मैं बोलूंगा जिसका सब बच्चे अनुसरण करेंगे।

सब बच्चे : हो....

जोशी जी : परन्तु मैं पुराने बच्चों से बीच–बीच में पूछूंगा भी।

बच्चे : हो....

(जोशी जी उच्चस्वर में बोलने लगते हैं)–

पढाई शुरु

क	कक्को केवळियो
ख	खख्खा गूणी चीरियो
ग	गग्गा गौरी गाय
घ	घघ्घो घटूल्यो
ङ	नन्यो बळ दूबळो
च	चडा चडा की चंच्या
छ	छछ्छावट को कोट्याळो
ज	जज्जा जेर बाणियो
झ	झझ्झा झार की आँखडली
ञ	नन्यो खाण्डो चाँदो

ट	टीटा टिपोळी
ठ	ठेस मारी जोड़ी
ड	डड्डा डाँफर गाठोड़ा
ढ	ढड्ढा कै घर पूँछड़ी
ण	राणा ताणा तीन लीखटी
त	तत्तो तमोळी ताँबो
थ	थथ्था थेर थावरियो
द	दद्दो दिवाळ्यां लीकटियां
ध	धध्धो धनुष छुडांयां जाय
न	आगै नन्यो भाग्यो जाय
प	पा पा पाटकड़ी
फ	फफ्फो फलिहार को
ब	बब्बो बाड़ी बैंगणियां
भ	भभ्भो मूँछ कटार को
म	मामा लेकण स्यार को
य	यायो सायो पेटळो
र	रर्रो रावत रींटलो
ल	लल्लो लाव शिंवाळ्यां को
व	वा वा तळै बुखार की
श	शस्सो सोळंकी
ष	खख्खो खळियान को
स	ससो हिंगोटो
ह:	हा हा हिंदोली खिलै फिरावै दो बिंदोली

जोशी जी : अब इन सबका अर्थ समझो। क्या समझो ?

बच्चे : गुरु जी अर्थ।

जोशी जी : तो लो सुनो

सब बच्चे : हो....

वर्णमालाक्षर	बोल	सीख
क	कक्को केवळियो	पहले **क**माना सीखो
ख	खख्खा गूणी चीरियो	बाद में **ख**र्च करो
ग	गग्गा गौरी गाय	सबसे पहले घर में **गौ**री (सुन्दर पत्नी) व **गा**या लाओ
घ	घघ्घो घटूल्यो	अपना **घ**र बनाओ
ङ	नन्यो बळ दूबळो	वंश-वृद्धि हेतु **न**न्हा-दुबला पुत्र पैदा करो।
च	चडा चडा की चंच्या	आपकी इस प्रगति से आपके दुश्मन आपसे ईर्ष्या कर आपको **चि**ढायेंगे एवं आपको तंग करेंगे।
छ	छछ्छावट को कोट्याळो	ऐसी दशा में आप उनकी **कु**टाई-पिटाई कर दो और अपना पुरुषार्थ दिखाओ।
ज	जज्जा जेर बाणियो	यदि आपके दुश्मन बलवान हों तो **ब**निये की तरह नम्र बन जाओ।
ञ	नन्यो खाण्डो चाँदो	इतना होने पर भी उन दुश्मनों पर भरोसा मत करो और घर के **चाँ**दे में हथियार रखो।
ट	टट्टा टिपोळी	
ठ	ठेस मारी जोड़ी	भाइयों से वैर मत रखो और **जो**ड़ी बनाकर चलो।
ड	डड्डा डाँफर गाठोड़ा	ड की पूँछ बायीं ओर मुडी हुई
ढ	ढड्ढा कै घर पूँछड़ी	ढ की पूँछ दायीं ओर मुडी हुई
ण	राणा ताणा तीन लीखटी	रा**णा**जी (महाराणा प्रताप) और तानाजी (छत्रपति शिवाजी के गुरु) की ये तीन प्रतिज्ञाएं याद रखो:- 1. राष्ट्रभक्ति, 2. धर्म की सेवा और 3. नारी की रक्षा

त	तत्तो तमोळी ताँबो	**त**मोळी को ताँबे का एक भी पैसा मत दो, अर्थात् कोई व्यसन मत रखो।
थ	थथ्था थेर थावरियो	दूसरों पर **था**वर धरो।
द	दद्दो दिवाळ्यां लीकटियां	लीकट, अर्थात् लकीर मत पीटो जैसे, दूसरों की देखा देखी सामाजिक प्रथाओं पर अनाप शनाप खर्च आदि, अन्यथा **दी**वाला निकल जायेगा।
ध	धध्धो धनुष छुडांयां जाय	शिकार हेतु **ध**नुष लेकर ही निकलो।
न	आगै नन्यो भाग्यो जाय	कहीं जाओ तो अपने नन्हे बालक को साथ लेकर जाओ जिससे वह जीवन में कुछ सीख सकेगा।
प	पा पा पाटकड़ी	बुढापे में अपनी खाट के नीचे **पा**नी रखकर सोओ।
फ	फफ्फो फलिहार को	बुढापे में **फ**लों का सेवन करो।
ब	बब्बो बाड़ी बैंगणियां	बाडी का **बैं**गन मत खाओ।
भ	भभ्भो मूँछ कटार को	कटार की तरह अपनी मूँछें ऊंची रखो।
म	मामा लेकण स्यार को	सियार की भाँति **मा**मा के आश्रित मत रहो अन्यथा जीवन में कमज़ोर रह जाओगे।
य	यायी श्यायी पेटळो	ऐसा करने से आपका पेट **श्या**यी की भाँति हो जायेगा जो खुशहाली का प्रतीक है।
र	रर्‌रो रावत रींटलो	बुढापे में **रीं**ट भी आये तो शर्मिंदा मत हो।
ल	लल्लो लाव शिंवाळ्यां को	बुढापे में **शिं**वाळी खाओ ये पोसरी होती हैं।

व	वा वा तळै बुखार की	यदि बुढापे में **बु**खार या अन्य बीमारियां आ घेरें तो चिन्ता मत करो।
श	शस्सो सोळंकी	
ष	खख्खो खळियान को	ओढने के लिये रेजी की **खो**ळी साथ में रखो।
ह:	हा हा हिंदोली	अन्त में जब मरोगे तो **हा हा** होगी खिलै फिरावै दो बिंदोली परन्तु पीछे आपके नाम के साथ यश की दो बिंदोली रहेंगी।

जोशी जी : अब हम बारहखडी सिखायेंगे। क्या सिखायेंगे ?

बच्चे : गुरु जी बारहखडी।

जोशी जी : तो लो सुनो

सब बच्चे : हो....

बारहखड़ी

क	बड कै नांव 'क'
का	कन्ने 'का'
कि	पिच्छ्यूं 'कि'
की	अग्यूं 'की'
कु	लोहड़े 'कु'
कू	बड्डे 'कू'
के	इकलक 'के'
कै	दोलक 'कै'
को	कनबत 'को'
कौ	गिलावर 'कौ'
कं	बिस्ते 'कं'
क:	क कै आगै दो बिंदोली

इसी प्रकार उपरोक्त संगीतमय शब्द वर्णमाला के अन्य वर्णों का प्रयोग किया जाता था। जैसे,

ख बड कै नांव 'ख '
खा कन्ने 'खा'
खि पिच्छ्यूं 'खि'
खी अग्यूं 'खी'

.....क्रमश:

जोशी जी : अब इन हम बारहखड़ी सीखने का गीत सिखायेंगे। क्या सिखायेंगे ?

बच्चे : गुरु जी बारहखड़ी।

जोशी जी : तो लो सुनो

सब बच्चे : हो....

बारहखड़ी सीखने का गीत

जोशी की पढाई में छोटे-छोटे बच्चों को बारहखड़ी याद करना सिखाने के लिये इस प्रकार से संगीतमय गान कराया जाता था:-

क का कि की कु कू बढाम
के कै को कौ कं क: राम

इसी प्रकार उपरोक्त संगीतमय शब्द बारहखडी के अन्य अक्षरों हेतु प्रयोग में लाये जाते थे। जैसे,

ख खा खि खी खु खू बढाम
खे खै खो खौ खं ख: राम

.....क्रमश:

जोशी जी : (बच्चों से)-कुछ याद हुआ ?

बच्चे : हो...

(जोशी जी तीन-चार बच्चों से पूछते हैं जो उनकी बात का सही-सही उत्तर दे देते हैं परन्तु एक बच्चा कुछ भी नहीं बता पाता)

(दिनांक 14-7-12 रात्रि 9 बजे से 11 बजे तक संशोध परिवर्धन किया)

जोशी जी : (उस बच्चे पर खीझते हुए सब बच्चों से)- इतना पढ़ाया पर इसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। मैंने आज तक कई निकम्मे गधों को पढ़ा-पढ़ाकर कलैक्टर बना दिया पर इसे देखो। ठूँठ

कहीं का । (चामटी मारते हुए फ्रीज)(राह में एक राहगीर अपना गधा लेकर चला जा रहा है। उसने जैसे ही जोशी जी की यह बात सुनी तो ठिठककर रुक गया)।

राहगीर : (स्वगत)-क्या! जोशी जी गधे को भी पढ़ा सकते हैं ? (फिर उछलते हुए)- वाह जोशी जी वाह। आपने तो निकम्मे गधों को भी पढा लिखाकर कलैक्टर बना दिया। मेरा यह गधा भी तो निकम्मा ही है। जोशी जी इसे भी जरूर कलैक्टर बना देंगे। वाह भगवान वाह। अपरम्पार है तेरी महिमा भी। क्या योग्य गुरु से मिला दिया। जोशी जी की शरण में चलता हूं अपने रामू को लेकर।

राहगीर : (जोशी जी से)-प्रणाम गुरुजी।

जोशी जी : खुश रहो। कौन हो भाई और इस गधे के साथ हमारे विद्यालय में कैसे आना हुआ ?

राहगीर : गुरुजी मैं भीलू धोबी हूँ पास ही के तेवड़ी गाँव का रहने वाला। मेरा यह गधा भी बड़ा ही निकम्मा है।

जोशी जी : (चुपचाप खड़े गधे को निहारते हुए)- भाई हमें तो यह सीधा सादा, समझदार और आज्ञाकारी लगता है।

भीलू : जोशी जी आप इसकी भोली शक्ल-सूरत पर न जाइये। बड़ा कलाकार और नाटककार है यह। आप इसके कारनामों के बारे में सुनेंगे तो दंग रह जायेंगे।

जोशी जी : (चुटकी लेते हुए)- भाई कैसे ?

भीलू : अजी मैं रोजाना बैराठ से इस पर नमक के बोरे लादकर जोधूला के लिये रवाना होता हूँ। खेड़ा की ढ़ाणी पर मैं इसे आता हुआ छोड़कर बाणगँगा नदी पर के एक मन्दिर में जब थोड़ा दम लगाने के लिए साथियों के साथ बैठ जाता हूं तो मेरा बेटा यह हर बार नदी के पानी में बैठकर नमक का वजन हल्का कर लेता है और तौल कम होने पर मालिक की भरपाई मुझे करनी पड़ती है।

जोशी जी : भाई तुम तो समझदार आदमी हो इसे सुधारने की कोई तरकीब़ नहीं लगायी ?

भीलू : अजी तरकीब तो मेरे पास एक से बढकर एक हैं, पर यह बदमाश तो नकटा है।

जोशी जी : भाई तुमने क्या तरकीब लगायी ?

भीलू : अजी एक बार मैंने इस पर रुई लाद दी। यह मेरा बेटा खेड़ा की ढाणी तक कुलांचें मारता हुआ आया। वजन तो था नहीं, पर फिर भी इसने सोचा कि रुई के वजन को थोड़ा और हल्का कर लूं इसलिए बाणगंगा के पानी में बैठ गया।

जोशी जी : जब पानी सोखने से रुई का वजन बढ गया तब तो इसे अक्ल आ गई होगी ?

भीलू : हाँ जी अब इसे अक्ल आ गई है। आपको ज़्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी इसे कलैक्टर बनाने में। (उसकी रस्सी खोलते हुए)- जा बेटा खड़ा हो जा कक्षा में। (फिर खुश होते हुए)- आज तेरे भाग खुल गये। जोशी जी तुझे पढ़ा लिखाकर कलैक्टर बना देंगे।

जोशी जी : (स्वगत)- क्या करूं इस मूर्ख से कैसे छुटकारा पाऊं।

भीलू : क्या सोच रहे हैं जोशी जी ?

जोशी जी : कुछ नहीं। (फिर सोचते हुए)- ऐसा करो, तुम इसे यहीं छोड़ जाओ।

भीलू : इसे कलैक्टर बनने में कितना समय लगेगा गुरुजी ?

जोशी जी : तुम हमसे समय-समय पर पूछते रहना वक्त आने पर हम बता देंगे।

भीलू : जय हो आपकी। आपने मेरी विनती सुन ली। अच्छा प्रणाम, मैं जाता हूं। (प्रस्थान करता है)।

एक विद्यार्थी: गुरुजी आपने इस मूर्ख की बात क्यों मान ली ?

जोशी जी : भाई और कोई चारा भी तो नहीं था हमारे पास (फिर कुछ सोचते हुए)- ऐसा करो इस गधे को चरने के लिये किसी के खेत में छोड आओ। और अब तुम्हारी छुट्टी

(जोशी जी मन्दिर में चले जाते हैं। सब बच्चे अपनी-अपनी पुस्तकें लेकर जाने लगते हैं)।

एक बच्चा गाता है- आप आप कै घरां जाओ, काँदा रोटी खाओ
बावड़ी को पाणी पीवो अर गधा चराबै जाओ

दूसरा बच्चा गाता है- चक्की मैं चक्की चक्की मैं दाणा
कल की छुट्टी परसों आणा

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(जोशी जी की पाठशाला का दृश्य। प्रार्थना हो रही है)

स्थाई
विद्या हमें दो माँ सरस्वती
हम सब बच्चे शरण तुम्हारी

1
शुभारम्भ जीवन का हमारा
संस्कारों से हो माँ सरस्वती
नैतिकता मानवता का उद्‌भव
करो हमारे मन में माँ + स्थाई

2
लोभ मिटे तृष्णा का मर्दन
अहंकार का दमन करो माँ
परहित त्याग भावना मन में
होंय उदित ऐसा वर दो माँ + स्थाई

3
दुखियों का दुख हरने के माँ
उदित भाव कर मन में हमारे
विद्या की लौ जागृत कर दो
हम बच्चों के मन में माँ + स्थाई

4
ऊंच नीच और जात पाँत का
भेद नहीं हो मन में हमारे
ऐसे भाव करो जागृत माँ
दो विद्या हम लाल तुम्हारे + स्थाई

5
मातृभूमि, जननी, गुरु सबका
नाम करें शिक्षा लेकर हम
नेक बनें इन्सान यह वर दो
नमो नमो हे माँ सरस्वती 3

जोशी जी : (विद्यालय के दरवाज़े पर खड़े धोबी को देखते हुए स्वगत)- यह सिरदर्द तो फिर आ गया। पिछले तीन महिनों में इसे कई बार टरका दिया पर आज क्या करूं।

भीलू : (प्रार्थना समाप्ति होते ही अन्दर प्रविष्ट होते हुए)- प्रणाम गुरुजी।

जोशी जी : आओ भाई भीलू आओ। कहो कैसे हो?

भीलू : मैं तो ठीक हूं गुरुजी। पर मेरा रामू कैसा है, दिखलायी नहीं दे रहा आज?

जोशी जी : अरे भाई वह तो पढाई में बहुत ही होशियार निकला। इन सब विद्यार्थियों से आगे निकलकर अपनी पढाई पूरी कर ली उसने तो।

भीलू : मैं कहता नहीं था। बन गया न कलैक्टर?

जोशी जी : हाँ भाई। हमने तो पहले ही कहा था कि कई निकम्मे गधों को पढ़ा लिखाकर बना दिया कलैक्टर।

भीलू : (दण्डवत करते हुए)- सत्य वचन गुरुदेव पर लगाया कहाँ मेरे रामू को?

जोशी जी : (कुछ सोचते हुए)-भाई उसे खान्देश का कलैक्टर लगाया गया है। वह वहाँ पर बहुत खुश है । अब तुम उसकी चिन्ता छोड़ दो।

भीलू : वाह गुरुजी वाह। बड़े ठाठ बाट होंगे उसके तो। कई लोग हाथ बाँधे खड़े रहते होंगे मेरे रामू के सामने?

जोशी जी : हाँ भाई। परन्तु उस पर बहुत जिम्मेदारियां हैं। जब कभी आयेगा तो तुमसे जरूर मिलेगा।

भीलू : तब क्यों गुरुजी, मैं भी चला जाता हूं उससे मिलने।

जोशी जी : पर खान्देश तो बहुत दूर है और तुम उसे ढूँढोगे कैसे?

भीलू : अजी मेरे रामू से मिलने तो मैं सात समंदर पार करके भी चला जाऊं। और फिर कचहरी में तो कलैक्टर एक ही होता है और वह होगा मेरा रामू। अच्छा गुरुजी प्रणाम। मैं चलता हूं।

(प्रस्थान करता है। सब लोग हँसते हैं)।

दृश्य समाप्त

पाँचवां दृश्य

(खान्देश की कचहरी का दृश्य। भीलू अपनी पत्नी के साथ राह में चला जा रहा है)।

धोबन : अजी अपने रामू के लिये हरी घास लाये हो न?

भीलू : अरे भाई वह कैसे भूल सकता हूं। (अपनी काँख में टँगे थैले की ओर इशारा करते हुए)- इसमें रखी है। देखो भाग्यवान कचहरी आ गई है। अपने रामू का राज है यहाँ।

धोबन : हाँ जी, हमें देखते ही खुश हो जायेगा।

भीलू : चलो अन्दर चलते हैं।

चौकीदार : अरे कहाँ घुसे जा रहे हो?

भीलू : (व्यंग्यात्मक लहजे में)-कहाँ घुसे जा रहे हो?

धोबन : अभी पता चल जायेगा।

चौकीदार : क्या मतलब?

भीलू : अरे हमारा गधा रामू कलैक्टर बनकर आया है यहाँ। उससे मिलना है हमें।

धोबन : हाँ।

चौकीदार : पागल तो नहीं हो गये। क्या बकवास कर रहे हो।

धोबन : (चौकीदार की चेतावनी की उपेक्षा के लहजे में अपने पति से)- चलो जी इसकी क्या परवाह करनी, यह तो नौकर है हमारे रामू का।

(कचहरी के एक बड़े से कमरे में कलैक्टर साहब अपनी कुर्सी पर विराजमान हैं। कुछ लोग कुर्सियों पर बैठे हैं, कुछ सामने खड़े हैं और उनके बगल में दो अर्दली हाथ बाँधे खड़े हैं)।

भीलू : (दरवाज़े के पास जाकर प्रसन्नता से)- अरे मेरे रामू!

अर्दली : (उसे धमकाते हुए)- चल बाहर निकल।

धोबन : तुम कौन होते हो हमें बाहर निकालने वाले?

भीलू : तुम क्या जानो हमने अपने गधे इस रामू को कितने कष्टों से पढ़ा-लिखाकर कलैक्टर बनाया है।

कलैक्टर : (क्रोधित स्वर में चौकीदार से)- कौन हैं ये पागल, और यहाँ कैसे घुसे चले आये?

भीलू : बेटे रामू कुर्सी मिलते ही भूल गया हमें । (काँख में टँगे थैले में से हरी-हरी घास निकालकर उसे दिखाते हुए)- इसे तो नहीं भूला न? तेरे पर नमक के बोरे लादकर मैं तुझे प्रेम से खिलाता हुआ लाता था यह घास। ले ले आजा।

कलैक्टर : (आगबबूला होकर कुर्सी से आते हुए)-पागल कहीं के। ये ले। ले ले (लातें मारता है)।

भीलू : (कमर सहलाते हुए उठता हुआ प्रसन्न स्वर में धोबन से)- चाहे हमारा रामू कलैक्टर बनकर हमें भूल गया हो परन्तु यह खुशी की बात है कि वह अभी तक दुलत्ती मारना नहीं भूला। (फिर दर्शकों की ओर मुखातिब होकर)-आप लोग भी अपने संस्कार, संस्कृति और परम्परा को कभी मत भूलना। अच्छा राम राम। (फ्रीज)

नाटक समाप्त

मेरी लाडो पढ़ेगी

(5 फरवरी 2011 को जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम में प्रसारित)

प्रमुख पात्र

1. उस्ताद (सुरजाराम)	: डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा
2. कजरी, मालती	: श्रेष्ठा शर्मा
3. दादी	: रेखा शर्मा
4. बहू	: शिल्पा दिनोदिया
5. छोटी बच्ची	: कोमल शर्मा
6. डॉक्टर	: रामगोपाल दिनोदिया
7. दुकानदारिनें	: विमला एवं आशा शर्मा
8. मुखबिर	: हरीश
9. पुलिस इन्सपैक्टर	: हिमांशु तिवारी
10. पण्डित जी	: बजरंग लाल शास्त्री
11. हटवाड़े एवं भजन मण्डली में	: गरिमा शर्मा, श्रीमती सन्तोष, गुल्ला छापोला,मूला बाबा, साक्षी, खुशी,दीक्षा, तनीष आदि

पहला दृश्य

(उस्ताद व कजरी बस्ती में तमाशा दिखाने के लिए जा रहे हैं। ये लोग गाँव के चौराहे के बीच में बने एक गोल चबूतरे के ऊपर आकर खड़े हो गये हैं।)

उस्ताद : (कजरी से) देखो तो सामने खजूरों के झुरमुटों के बीच में श्री सियावरजी के मन्दिर में हो रहा भजन-कीर्तन कैसे मन को अपनी ओर खींच रहा है।

कजरी : हाँ। बहुत सारे लोग आ-जा रहे हैं। क्या आज कोई विशेष अवसर है जी?

उस्ताद : अरे भाई, पटवारिन माँ ने पोता होने की मन्नत मांगी है हनुमान जी महाराज से और इसीलिए ये भजन-कीर्तन रखवाये हैं उन्होंने।

कजरी : लेकिन उनके तो तीन पोतियों पहले से ही हैं। फिर क्या जरूरत थी और बच्चे की। कैसी सुन्दर-सी, चंचल-सी। बोलती हैं तो ऐसा लगता है जैसे फूल झड़ रहे हों।

उस्ताद : कहीं पटवारिन माँ ने सुन लिया तो चप्पल से पीटेंगी तुम्हें, फिर पता चल जाएगी फूल झड़ने की बात।

कजरी : क्यों मैंने ऐसा क्या कह दिया जो वो मुझे पीटेंगीं?

उस्ताद : अरे एक पटवारिन माँ ही क्या हमारे देश में बहुत सी ऐसी माँ और दादियाँ हैं जो लड़की के जन्म को अभिशाप समझती हैं और बेटे के जन्म को वरदान।

कजरी : हाँ जी बात तो तुम्हारी सही ही है।

उस्ताद : अच्छा, मान गई।

कजरी : मानना ही पड़ेगा। कल ही की तो बात है गाँव की नर्स गुल्ला बाबा को कह रही थी कि अस्पताल के डॉक्टर साहब से कहकर उनके बेटे की बहू की जाँच करा देंगी कम पैसों में।

उस्ताद : कौनसी जाँच भाई?

कजरी : यही कि उसके पेट में बेटा पल रहा है या बेटी?

उस्ताद : अच्छा!

कजरी : और यदि जाँच में बेटी पाई गई तो उसका गर्भपात करवा देने की बात कह रही थी।

उस्ताद : कहीं किसी को पता चल गया तो?

कजरी : नर्स कह रही थी कि यह जाँच अस्पताल में रात के समय में होगी और किसी को पता नहीं चलेगा। बस 15 हजार रुपए देने पड़ेंगे।

(पार्श्व से भजनों की आवाज़ उभर आती है।)

उस्ताद : चलो भाग्यवान, दर्शकों को आगे का तमाशा दिखा देते हैं।

दूसरा दृश्य

(मन्दिर में भजन कीर्तन हो रहे हैं जिनकी पार्श्व से आवाज आ रही है।)

गीत

1. पाँच भैणां कै बीच भाई आयो ए सहेलियाँ
   गांवां बधावा गीत आओ मिल आज

स्थाई - म्हारी सुणली अरज हड़मानजी महाराज 4

2. म्हारी माय सह्या कत्ता दुख ईं कै तांय 2
   सारा घरका सह्या म्हे तीखा बाणां की बौछाड़
   म्हारा अपणा ही, खंजर म्हांकै घुप्या बारम्बार
   सैंका घाव भर्‌या ज्यो भाई जन्म्यो म्हारै आज + स्थाई

3. मैड़ गाँव कै पच्छिम मैं छै सियावर स्थान 2
   जीं मैं पदरायो हड़मान ल्यार म्हंत गणेशदास
   वांका जापता सूं जनम्यो देखो म्हारै भाई आज
   थांनै कइयां म्हे भूलां जी खुशियां का ऽऽ दातार+ स्थाई

4. थांकै रोट छडावां बाबा सुणो जी हड़मान 2
   भूखा कंगलां नै ल्याय जिमावां , हाथां सूं ऽऽ आज,
   कन्या ऽऽ सगळी अंडे ही जीमींगी,
   कऽलक डंडोत देती भैणां म्हे आवींगी+ स्थाई

5. क्यूंऽ तू घबरावै दुख का जंजाळ सूं 2
   चक्कर मैं क्यूं आवै अपणां का जाळ सूं
   पऽऽड़जा जाय शरण मैं सियावर स्थान रै
   पऽगल्या पीजा धोर बाबा गणेशदास कै
   भऽक्तां की क्यूं नै मानै, वांको हड़मान रै 3

(एक औरत अपने बच्चों के साथ घर की ओर जा रही है।)

बच्ची : माँ ये भजन क्यों हो रहे हैं?

माँ : बेटा, पटवारिन माँ के बेटा पैदा हुआ है।

बच्ची : तो क्या बच्चे के पैदा होने पर गीत गाये जाते हैं?

माँ : हाँ बेटी।

बच्ची : तो माँ हमारे घर पर कभी गीत क्यों नहीं गाये गये?

माँ : (उदास होते हुए) बेटी, अब मैं तुझे कैसे समझाऊँ?

बच्ची : माँ, तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया।

माँ : बेटी, लड़के के जन्म पर ही गीत गाये जाने का रिवाज है। हमारे देश में।

बच्ची : माँ, गीत क्यों गाये जाते हैं?

माँ : बेटी, बच्चे के जन्म पर खुशियों को जाहिर किए जाने का एक तरीका है ये गीत।

बच्ची : तो माँ क्या मुन्नी, लक्ष्मी, रानी इन सबके जन्म पर खुशियाँ नहीं हुई किसी को जो हमारे घर में गीत नहीं गाये गये। (सहसा दादी से सामना)

दादी : (बहू को क्रोधाग्नि से देखते हुए) अबे मुँहजली, क्या इन छिपकलियों को चिपेटे मौज मस्ती करके आ रही है। घर में काम सारा बाकी पड़ा है। गोबर से घर लीपना है, भैंस को बांट देना है। कौन करेगा ये सब।

बहू : माँ जी मैं ...

दादी : क्या माँ जी मैं, माँ जी मैं। अरे इन लड़कियों से काम नहीं कराओगी तो शादी-ब्याह कैसे होंगे इनके। कौन ढोएगा इन ठीकरियों को अपने सिर पर।

बच्ची : दादी मैं तो पढ़-लिखकर नौकरी करूँगी, बहुत बड़ी नौकरी।

दादी : (उसके चांटा लगाते हुए) बड़ी आई पढ़ाई करने वाली। अरे जितने रुपये तेरी पढ़ाई में खर्च होंगे उतने में तो तुम तीनों बहनों के हाथ पीले हो जायेंगे।

बहू : माँ घर का काम तो मैं कर ही देती हूँ और सरकारी स्कूलों में तो आजकल लड़कियों की फीस भी नहीं लगती। बहुत सुविधाएँ दी हैं सरकार ने लड़कियों को पढ़ाने के लिए।

दादी : अरे तब फिर अपनी इस बाँझ कोख से बेटा पैदा क्यों नहीं किया तुमने जिसे मैं अपने खर्चे से ऊँची पढ़ाई कराती। बड़ी आई मुझे नसीहत देने वाली। चल और काम संभाल घर का। मैं मन्दिर जा रही हूँ पोते की मन्नत मांगने। (प्रस्थान)

बच्ची : माँ मैं बेटा क्यों नहीं बनी। दादी माँ मुझे भी आगे पढ़ाती।

माँ : (सुबकती हुई) तुम चिन्ता मत करो बेटी। मैंने इस निर्दयी समाज के जो जुर्म सहे हैं उनका साया तुम पर नहीं पड़ने दूंगी और मैं तुम्हें आगे पढ़ने का अवसर दूंगी। (दोनों मुट्ठियाँ बन्द कर कुछ निश्चय करती है।)

बच्ची : कैसे जुर्म माँ? ये कैसी बात कर रही हो तुम जो मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।

माँ : बेटी तुम्हारी दादी ने कोई नई बात नहीं कही है। सदियों से बेटियों को जन्म लेते ही मार देने की प्रथा प्रचलित रही है हमारे देश में कहीं-कहीं तो।

बच्ची : क्या कह रही हो माँ?

माँ : हाँ बेटी। पुराने समय में तो कई-कई परिवारों में बेटियों को जन्मते ही मिट्टी के घड़े में बन्द करके जिन्दा ही मिट्टी में दफन कर दिया जाता था। (बच्ची डरकर सहम जाती है। माँ उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसी प्रवाह में) स्त्री को हमारे समाज में कमजोर माना जाने लगा परन्तु अत्याचार सहकर भी टूटी नहीं स्त्री। वैदिक काल में सावित्री, सीता, अनुसूइया आदि ने साहस का परिचय दिया और हमारे देश की आजादी से पूर्व रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई आदि के कठिन प्रयासों को कौन नहीं जानता।

बच्ची : माँ, तुमने पढ़ाई की है?

माँ : नहीं बेटी। मुझे भी किसी दादी के कोप का भाजन बनना पड़ा और मुझे स्कूल नहीं भेजा गया। दस वर्ष की उम्र में ही मेरा ब्याह कर दिया गया।

बच्ची : तो माँ, फिर तुम्हें आठवीं कक्षा की किताब की ये बातें कैसे याद हैं?

माँ : कौनसी बातें?

बच्ची : यही सभी। सती-सावित्री, सीता, अनुसूइया, झांसी की रानी, जीजाबाई आदि के बारे में लिखी गई बातें।

माँ : बेटी व्यक्ति को जिस बात से वंचित किया जाता है उसके प्रति उसकी एकाग्रता बढ़ जाया करती है। और स्कूल नहीं गई तो क्या हुआ जहाँ भी कहीं स्त्री पर अत्याचार करने, उसकी भावनाओं को दबाने आदि की बातें मैंने सुनी तो वह मेरे मन मस्तिष्क पर अंकित हो गई। (फिर कहीं खो जाती है)

बच्ची : माँ माँ ...

माँ : (हड़बड़ाकर) हाँ।

बच्ची : कहाँ खो गई।

माँ : बेटी चल मेरे साथ (दूसरी ओर ले जाती है।)

बच्ची : कहाँ माँ?

माँ : तू भी बनेगी पढ़ लिखकर रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई जैसी?

बच्ची : हाँ माँ। मैं आकाश में उड़ूंगी कल्पना चावला की तरह। राष्ट्रपति बनूंगी प्रतिभा पाटिल की तरह।

माँ : (रुँधे गले से) हाँ बेटी तू जरूर बनेगी इनकी तरह।

(दोनों का प्रस्थान)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(सरकारी अस्पताल का दृश्य डॉक्टर साहब नर्स के साथ गपशप कर रहे हैं।)

डॉक्टर : मालती आजकल तुम्हारी मार्केटिंग थोड़ी ढीली चल रही है। क्या हो गया है तुम्हें?

मालती : आजकल सरकारी तन्त्र ने नाक में दम कर रखा है।

डॉक्टर : कैसे?

मालती : कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए जागरुकता शिविर लगाए जा रहे हैं, नये-नये क़ानून बनाए जा रहे हैं।

डॉक्टर : अरे यह कौनसी नई बात है। हिन्दुस्तान में कानून तो बनते ही रहते हैं परन्तु उनका तोड़ भी उनके साथ ही बन जाता है।

मालती : जी। मैंने गर्भवती माताओं के नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की आड़ में पोता चाहने वाली दादियों से बात की है।

डॉक्टर : बात ही की है या आएंगी भी वे?

मालती : नहीं, सौदा पक्का करके आई हूँ। परन्तु उनके साथ के कुछ लोगों को अपनी स्टाइल से समझाना पड़ेगा आपको।

डॉक्टर : अरे तुम आने तो दो समझाने का ख़ासा तजुर्बा है मुझे। (सहसा एक औरत के साथ दो-तीन लोगों का प्रवेश)

मालती : (डॉक्टर से) डॉक्टर साहब। ये हैं कमला जी और ये हैं इनकी सास।

डॉक्टर : आइये तशरीफ रखिए। (आगन्तुक पास रखी बैंच पर बैठ जाते हैं।) कहिए कमला जी कैसे आना हुआ?

कमला : जी मेरे पेट में दर्द की शिकायत है।

डॉक्टर : क्या गर्भ से हैं।

सास : हाँ डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : पहले जाँच कराई?

कमला : डॉक्टर साहब हमारे मौहल्ले में एक डॉक्टर हैं उनको बताने गई थी।

डॉक्टर : फिर?

कमला : उन्होंने लेबोरेट्री में सोनोग्राफी के साथ ही अन्य सभी तरह की जाँच कराने की सलाह दी थी।

मालती : फिर कराई आपने?

कमला : नहीं (अपनी सास की ओर देखते हुए) कुछ लोगों की सलाह थी कि पहले से ही तीन बेटियाँ है और यदि इस

बार भी जाँच में बेटा नहीं पाया गया तो गर्भपात कराना ही ठीक रहेगा।

सास : अरे तो इसमें कौनसा ग़लत है। (फिर डॉक्टर की ओर मुखातिब होकर) अब आप ही बताइए डॉक्टर साहब कि क्या इस स्थिति में भी कन्या भ्रूण का समापन करना ग़लत है।

सास : मेरी दृष्टि में इसमें ग़लत कुछ भी नहीं है। यदि कोई समस्या होती है तो उसका समाधान भी निकाला ही जाता है।

कमला : परन्तु डॉक्टर साहब। कन्या होना क्या कोई समस्या है?

सास : (बहू को धमकाते हुए) चुपकर, इतने बड़े डॉक्टर साहब से बहस करती है।

डॉक्टर : कोई बात नहीं माताजी किसी की शंका का समाधान होना तो जरूरी है ही न। मैं समझाये देता हूँ इनको। (फिर कमला जी से) कमला जी, आज हालात यह हैं कि एक लड़की की शादी में अमूमन कम से कम पाँच-छह लाख रुपए का खर्चा आ ही जाता है। बोलो आप मानती हैं कि नहीं?

कमला : हाँ आ जाता है।

डॉक्टर : क्या एक साधारण आदमी इस खर्चे को उठाने की हिम्मत कर सकता है?

सास : आप ठीक कह रहे हैं डॉक्टर साहब। इसका तो अन्दाजा लगाकर ही हम जैसों की हिम्मत टूट जाती है।

मालती : और क्या हम इसीलिए इस दुनिया में आए हैं कि केवल तकलीफें झेलो और मौज-मस्ती के लिए सोचो ही मत।

कमला : करो मौज मस्ती भी कौन मना करता है। पर भाई बच्चों की परवरिश के प्रति भी तो सोचना चाहिए यह भी माता पिता का कर्त्तव्य होता है अपने बच्चों के प्रति।

डॉक्टर : भाई साहब, ऊँची-ऊँची बातें करना अलग बात है और उसे भोगना अलग।

व्यक्ति : अजी पहले कन्या को जन्म दो, फिर उसकी परवरिश करो। पढ़ाई में कितना खर्चा आ जाता है पता है आपको? कमर टूट जाती है लड़कियों को अच्छी शिक्षा दिलवाने में।

कमला : तो क्या हम बच्चों को पढ़ायेंगे नहीं (कुछ सोचते हुए) अच्छा यह बताओ कि लड़का हुआ तो क्या करेंगे, क्या उसे भी नहीं पढ़ायेंगे।

सास : अरी लड़के की बात और है और लड़की की और।

व्यक्ति : वाह माँ जी वाह। यह भी कोई बात हुई।

डॉक्टर : और लड़कियों की सुरक्षा करना भी तो टेढ़ा काम है। पता नहीं कब किसी की बुरी नजर लग जाए, शारीरिक अथवा यौन उत्पीड़न कुछ भी अनहोनी हो सकती है लड़कियों के साथ।

कमला : अजी यों तो जीवन में हजार परेशानियाँ है। ये भी उनमें से एक रही तो क्या उससे नहीं निपटा जा सकेगा?

डॉक्टर : अजी इसके अलावा भी तो कई झंझट हैं लड़कियों के मामले में।

कमला : क्या-क्या झंझट हैं साहब और। जरा हम भी तो सुनें?

डॉक्टर : अजी लड़की जब बड़ी हो जाती है, पढ़-लिख जाती है तो उसके लिए लड़का ढूँढिये और शादी कीजिए। पढ़ाई तक तो आपकी लड़की आपके पास रही, यहाँ तक तो आपका नियन्त्रण रहा पर जब योग्य वर की तलाश में निकलेंगे तो आटे-दाल का भाव पता चल जाएगा।

कमला : साहब आपने तो ये बात मन में बैठा ली कि कन्या को जन्म देने में कठिनाई ही कठिनाई है।

मालती : अजी यह विचार केवल हम लोगों का ही नहीं है। आप चाहे किसी से भी पूछ ले परन्तु ये बात है एकदम सोलह आने सही।

डॉक्टर : आज समाज का कोई भी आदमी इस झंझट को पालना नहीं चाहता। हर माँ-बाप जानता है कि लड़की पैदा करने में सिवाय नुकसान के कोई फायदा नहीं।

कमला : आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि पढ़ी-लिखी लड़की की शादी में भी दहेज देना ही पड़ेगा। डॉक्टर साहब यदि लड़की पढ़ी-लिखी व योग्य हो तो कोई दहेज की मांग नहीं करता।

डॉक्टर : सब कहने की बातें हैं ये, किताबों की। बिना दहेज लिए कोई आपकी लड़की से विवाह नहीं करना चाहेगा।

मालती : और इसीलिए लोगबाग सोनोग्राफी करवाकर लड़की के जन्म पर रोक लगाते हैं।

कमला : लेकिन बहिनजी यह तो गर्भ में ही हत्या है बेटी की, पाप है, महापाप।

मालती : आपके हिसाब से भले ही महापाप हो परन्तु यह एक सामाजिक समस्या है जो पूर्णतया धन से जुड़ी हुई है। असल में जब लोगों के सामने कोई समस्या होगी तो वे उससे छुटकारा पाने हेतु उसका समाधान ढूँढेंगे फिर चाहे वह पुण्य हो या पाप।

कमला : आपके लड़की होती तो समझ में आ जाता कि दुनिया में सब लोग आप जैसी छोटी सोच के नहीं होते।

मालती : छोटी सोच किसकी है यह तो तब पता चलेगा जब दहेज के रुपए न होने के कारण आपकी लड़की अधिक उम्र की हो जाएगी और एक-न-एक दिन किसी के साथ भाग जाएगी। तब किसी के सामने आपकी जुबान न खुल सकेगी। यह सारी की सारी लेक्चरबाजी धरी की धरी रह जाएगी। (डॉक्टर साहब मालती को शांत रहने का इशारा करते हैं। माहौल गर्म है प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(मंच पर उस्ताद व कजरी का प्रवेश)

उस्ताद : अरे भाई यहाँ तो बहस छिड़ गई।

कजरी : ये लोग तो जनता को गुमराह कर रहे हैं।

उस्ताद : इन्हें समझाना पड़ेगा कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए।

कजरी : हाँ हमारी बात जनता जरूर मानेगी।

उस्ताद : (जनता से) आप लोग सतर्क रहिये। इन्सानियत के दुश्मन ऐसे बहुत से डॉक्टर हैं हमारे देश में जो आपको बहकायेंगे।

कजरी : लालच देंगे, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में गिरावट का हवाला देंगे। परन्तु कृपया आप उनके बहकावे में न आयें।

उस्ताद : और लिंग परीक्षण करने वाली ऐसी दुकानों को बन्द करवायें।

कजरी : हाँ, इसके लिए सरकार ने कानून तो बना दिया है पर आप इसे लागू करने में नारी जाति की मदद करें।

उस्ताद : नारी नर की जननी है और जननी की रक्षा करने में ही जीवन की गति है। (पार्श्व से माईक की आवाज)

आवाज : आओ-आओ जल्दी करो पचास प्रतिशत ऑफ सीजन डिस्काउण्ट है डॉक्टर जगमोहन की क्लीनिक पर।

उस्ताद : ऐसे नहीं मानेंगे ये।

कजरी : तो फिर?

उस्ताद : अपने गाँव के इन्स्पैक्टर गोपी को फोन करना पड़ेगा।

कजरी : अरे हाँ याद आया गोपी भैया यहीं पर तो हैं।

उस्ताद : ला तो देना तेरा मोबाइल। (फिर उसे कान से लगाते हुए) हैलो गोपी भैया, मैं सुरजा राम बोल रहा हूँ।

गोपी : कहो भैया कैसे हो और कजरी कहाँ है?

उस्ताद : यहीं है पास में। लो बात करो। (फोन कजरी को देता है)

कजरी : नमस्ते भैया।

गोपी : कहो कजरी क्या बात है?

कजरी : भैया कोई संगठन वाले हैं जो लिंग परीक्षण करते हैं और कन्या भ्रूण गिराने के एवज में पन्द्रह हजार रुपए ले रहे हैं स्पेशल ऑफर डिस्काउण्ट योजना में।

गोपी : ऐसा करो तुम लोग उसकी क्लीनिक पर पहुँच जाओ और फिर मुझे कॉल करना। धर-दबोचेंगे सालों को। अच्छा मैं भी पहुँच रहा हूँ।

उस्ताद-कजरी : वाह-वाह अब मिलेगा उनको पचास प्रतिशत डिस्काउण्ट का मजा। (दोनों का प्रस्थान)

(प्रकाश जाते हुए उस्ताद व कजरी पर पड़ रहा है और मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है)

दृश्य समाप्त

पाँचवाँ दृश्य

(अस्पताल का दृश्य)

मालती : (कमला की सास से) यह तो जनरल डिस्कशन हो रही थी माता जी।

डॉक्टर : (कमला से) बहिन जी आपके विचार बहुत अच्छे हैं। यदि हमारे देश के आम आदमी के विचार आप जैसे रहे तो स्वर्ग बन जाएगा हमारा देश। कहा भी गया है यत्र नारीस्य पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।

सास : (डॉक्टर से) हमारी बहू तो हीरा है हीरा। अब डॉक्टर साहब जरा इसकी जाँच तो कर दीजिए कि पेट में दर्द कैसा है?

डॉक्टर : मालती, ऐसा करो इन्हें अन्दर ले जाकर लिटा दो। मैं अभी आता हूँ। (मालती का कमला के साथ प्रस्थान)

डॉक्टर : (अन्य उपस्थित लोगों से) आप लोग बाहर प्रतीक्षा करें (फिर कमला की सास से) और आप रुकिये थोड़ा। कुछ डिस्कशन करना है पेशेन्ट के बारे में। (सब लोगों का प्रस्थान वहाँ पर केवल डॉक्टर व कमला की सास रह जाती है)

सास : (डॉक्टर से) डॉक्टर साहब आप मेरी बहू की ठीक से जाँच कर लें और यदि गर्भ में लड़की होना पाया जाए तो गर्भपात करा दें।

डॉक्टर : लेकिन माता जी आपकी बहू की इच्छा के विरुद्ध हम ऐसा नहीं कर सकते। बहुत रिस्की है हमारे लिए। कानूनी रूप से तो ग़लत है ही ये।

सास : डॉक्टर साहब कैसे भी कीजिए।

डॉक्टर : कुछ सोचता हुआ। माता जी पाँच हजार रुपए अभी देने होंगे, जाँच के बाद यदि गर्भपात करना पड़ा तो बाकी दस हजार रुपए और देने पड़ेंगे।

सास : ठीक है मुझे मंजूर है। (डॉक्टर मालती को आवाज़ देता है। वह बाहर आती है। सास पाँच हजार रुपए डॉक्टर को देती है। सहसा इन्स्पैक्टर गोपी का प्रवेश)

गोपी : ख़बरदार, कोई अपनी जगह से हिला तो। (फिर डॉक्टर व सास से) आप दोनों हिरासत में लिए जाते हैं।

कमला : (बाहर आते हुए मालती का हाथ पकड़कर) और ये। इसे भी ले जाइए इन्स्पैक्टर साहब, यह एजेण्ट इनके जड़ की मूल है। (सबका प्रस्थान)

(प्रकाश प्रसन्न होती हुई कमला पर पड़ रहा है और फिर मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है)

नाटक समाप्त

और मंज़िल मिल गई

पहला दृश्य

(गाँव के एक कृषक परिवा का दृश्य। प्रात:काल का समय है। पण्डित हरिशंकर भगवान की पूजा करने के लिए जाने को तैयार हैं। पास में उनका बड़ा बेटा कन्हैया मोहल्ले के लड़कों के साथ खेलने जाने की जिद कर रहा है। पण्डित जी की पत्नी सुलक्षणा पड़ौस की बत्तो बुआ के पास जाने की तैयारी कर रही है। गाँव के स्कूल की घंटी बज रही है जिससे चिन्तित हो पण्डितजी के बेटे करण और सोहन स्कूल जाने के लिए ज्ल्दी-ज्ल्दी तैयार हो रहे हैं।)

हरिशंकर : (सुलक्षणा से)— देखो भाग्यवान, मैं ठाकुरजी के भोग लगाने जा रहा हूँ और तुम करण और सोहन को छाछ में ठण्डी रोटियां चूरकर दे देना। (फिर उन दोनों को दुलारते हुए)—पेट में कुछ जायेगा तभी तो पढाई में ध्यान लगेगा मेरे इन होनहार बच्चों का।

सुलक्षणा : (पण्डितजी की बात को अनसुना करके कन्हैया से)— दूध पी लिया बेटे?!

कन्हैया : (दोनों हाथों को ऊंचा करके अँगडाई लेते हुए)- हाँ पी लिया माँ। पेट भर गया अब तो।

सुलक्षणा : अरे बेटा, ले थोडा चबेना और ले जा साथ।

कन्हैया : नहीं माँ जरुरत नहीं इसकी।

सुलक्षणा : अरे बेटा देर हो जायेगी आने में। दो-तीन घण्टे तो लग ही जायेंगे। गाँव के बड़े-बड़े घरों के बच्चे आयेंगे वहाँ पर। वे भी तो अपने-अपने घरों से खाने को लायेंगे कुछ न कुछ तो। (पण्डित जी को सम्बोधित कर रसोई के अन्दर जाते हुए ऊंची आवाज़ में)— और फिर दडी का खेल कोई आसान काम थोड़े ही है।

हरिशंकर : (झुंझलाते हुए कन्हैया से)—जब देखो तब दड़ी खेलना, मटरगश्ती करना और आवारा लड़कों के साथ घूमना। न तेरा पढ़ाई लिखाई में मन है और न ही खेत खलिहान के काम में। नालायक कहीं का।

कन्हैया : (शिकायत -भाव से ऊंची आवाज़ में)- माँ....

सुलक्षणा : (चबेना लेकर बाहर आते हुए पण्डितजी पर झल्लाते हुए)— जब देखो तब चढे रहते हैं इस नन्हीं सी जान पर। अरे यही मेरा नाम रोशन करेगा आगे जाकर। (फिर करण एवं सोहन को धमकाते हुए)- न कि ये दोनों निखट्टू कुछ कर पायेंगे। सुबह दिन उगते ही कामचोर कहीं के स्कूल में पढने का बहाना करके निकल जाते हैं और दिन में तीन-तीन बार ठूंस जाते हैं रोटियां। मैं भी देखूंगी कि कौनसा बी.ए. पास कर जायेंगे ये नाकाबिल कहीं के।

(अपनी माँ की डाँट से करण रोने लगता है परन्तु सोहन अपने को संयत रखते हुए उसका हाथ थाम लेता है। कन्हैया इतराते हुए अपने बाजुओं को निहारता है।)

कन्हैया : (दोनों छोटे भाइयों को मुँह चिढाते हुए माँ से)- ठीक है मैं जा रहा हूँ खेलने। दो-तीन घण्टे में लौटूंगा।

सुलक्षणा : ठीक है बेटा। मैं भी पडौस की बत्तो बुआ के यहां जा रही हूं। तुम खेलकर आ जाओ तब तक मैं तुम्हारे लिए गरम-गरम हलुवा बनाकर तैयार रखूंगी।

हरिशंकर : (करण एवं सोहन से)- जल्दी करो बच्चो,स्कूल की पहली घण्टी बज गई है। तुम्हारी माँ को तो यह भी चिन्ता

नहीं है कि तुम लोग स्कूल भूखे ही पढ़ने जा रहे हो और दोपहर में एक बजे वापस लौटोगे।

कन्हैया : पिताजी पढ़ लिखकर कौनसा तीर मार लेंगे ये? ज़्यादा से ज़्यादा आठवीं क्लास तक पढ़ लेंगे। उसके बाद क्या करेंगे। आपकी तो इतनी क्षमता है नहीं कि आगे पढ़ाई कराने शहर भेज दोगे इन्हें। इनसे ठीक तो मैं ही रहूंगा जो कम से कम खेल कूदकर मजबूत तो हो जाऊंगा। और ये दोनों! सींकिया पहलवान कहीं के। (दोनों को धक्का मारता है।)

हरिशंकर : (कन्हैया से)- मुझे पता है कि तुम इन दोनों बच्चों से दुर्भावना रखते हो। परन्तु ठाकुरजी सबकी पार लगाते हैं। मेरे इन बच्चों पर भी यदि उनकी कृपा रही तो एक न एक दिन ये पढ़ लिखकर जीवन में ऊंचाइयों पर जायेंगे।

सोहन : आप ठीक कहते हैं पिताजी। मैं स्वयं चाहे कितने ही कष्ट उठा लूं परन्तु करण को आगे बढ़ने में मैं हमेशा उसकी सहायता करूंगा।

कन्हैया : अरे तू क्या करेगा इसकी मदद। खुद का तो ख्याल रख नहीं सकता। साला गुलाम कहीं का। चल हट जाने दे मुझे। (उसको धक्का मारकर बाहर निकल जाता है।)

हरिशंकर : (दोनों बच्चों को धैर्य बँधाते हुऐ)-मेरे प्यारे बच्चो। तुम जीवन में हमेशा धैर्य रखना और किसी भी कठिनाई से घबराकर आगे बढ़ने से रुकना मत। भाग्य भी उसी का साथ देता है जो स्वयं अपना साथ देता है।

जाओ बच्चो स्कूल जाओ, दूसरी घण्टी बजने ही वाली है।

(सोहन एवं करण अपने पिताजी के चरण स्पर्श करके स्कूल के लिए प्रस्थान करते हैं और पडित जी ठाकुरजी की सेवा-पूजा में लग जाते हैं। प्रकाश जाते हुए सोहन एवं करण पर गिरता हुआ मन्द-मन्द होते हुए बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(कलकत्ता शहर के सैनिक छावनी में स्थित एक कैण्टीन का दृश्य। कैण्टीन के एक भाग में जनरल स्टोरनुमा एक बड़ा सा स्टोर है जिसके मध्य भाग में एक नवयुवक प्रबन्धक के रूप में बैठा हुआ कैण्टीन में हो रहे कार्यकलापों की निगरानी कर रहा है। उसके सामने मेज पर एक टेलीफोन यन्त्र रखा है तथा बगल वाली सीट पर एक टाईपिस्ट कोई पत्र टाईप कर रहा है। प्रबन्धक की टेबिल स्टोर के मध्यभाग में है और उससे थोड़ा आगे चलकर एक बड़ा सा काउण्टर है जिस पर एक सेल्समैन ग्राहकों को काउण्टर के खानों में से सामान निकालकर दे रहा है।

कैण्टीन के दूसरे भाग में एक रेस्टोरेंट है जिसका नियंत्रण भी मध्य भाग में बैठे इस प्रबन्धक के पास में ही है। रेस्टोरेंट में एक गोल मेज के इर्द गिर्द चार कुर्सियां रखी हुई हैं। यहां पर सोहन एवं करण नौकर के रूप में ग्राहकों को चाय-नाश्ता सप्लाई कर रहे हैं और बीच-बीच में उनके झूठे कप-प्लेट भी धोते जा रहे हैं। रेडियो पर गाना बज रहा है।)

गाना - मुसाफिर हूं यारो ना घर है ना ठिकाना .....

(अब ग्राहक कम हो गये हैं। रेस्टोरेंट के अग्रभाग में सोहन एवं करण का वार्तालाप)-

करण : भैया एक महिना हो गया गाँव से आये हुए। वहां का हर दृश्य दिमाग में घूम सा रहा है। वहाँ के पेड़-पौधे, स्कूल के साथी, माँ-पिताजी और कन्हैया भाई। सभी की याद आ रही है।

सोहन : अधीर मत हो करण। यह सही है कि हमें अपनी पिछली ज़िन्दगी से, अपने पारिवारिक सदस्यों से और अपनी हर परिचित स्थिति से लगाव रहता है परन्तु जीवन में आगे बढने के लिए इन सबको मन मारकर भुलाने का प्रयास करना चाहिए।

करण : भैया, मुझे तुम्हारी ये बड़ी-बड़ी बातें समझ में नहीं आ रही हैं। मुझे तो बस रह रहकर यही पीड़ा सालती है कि वहाँ पर बेचारे पिताजी ही अकेले सारा काम कर रहे होंगे और हम चाहते हुए भी उनकी कोई सहायता नहीं कर पा रहे।

सोहन : (आर्द्र स्वर में)- करण, हम पारिवारिक परिस्थितियों से निपटने के लिए ही तो यहां सैंकड़ों कोस दूर आये हैं जिसका केवल यही मकसद है कि हम जीवन में सफल होकर पिताजी की मदद करें।

करण : कैसे?

सोहन : करण तुम तो जानते ही हो कि बड़े भैया के ग़लत रास्ते पर जाने का मुख्य कारण उनके लिये माँ का अधिक लाड-प्यार ही रहा है। आज भैया ने गाँव के जिन-जिन व्यक्तियों एवं हमारे रिश्तेदारों से पिताजी की बीमारी के झूठे बहाने बना बनाकर जो रूपये उधार लिये थे उन्हें चुकाते-चुकाते तो बेचारे पिताजी की कमर ही टूट गई है।

करण : हाँ भैया जब हम गाँव छोडकर यहाँ आ रहे थे तो कैसी पीड़ा झलक रही थी पिताजी की आँखों में। (फिर एक क्षण रुककर) मुझे लगता है भैया कि पिताजी हमारे द्वारा अपनी पढ़ाई छोड़कर यहां नौकरी करने आने पर खुश नहीं थे।

सोहन : हाँ करण तुम्हारी बात सत्य है। वे हमें आगे पढ़ाना चाहते थे। हमारे भविष्य के निर्माण का उनका एक सुन्दर सपना था जिसे हम पढ़ लिखकर पूरा नहीं कर पाये।

(करण रोने लगता है।)

सोहन : (उसे सांत्वना देते हुए)- चुप हो जाओ भाई। मैं पिताजी की उम्मीदों को यूं टूटने नहीं दूंगा। (फिर शून्य में देखते हुए)- मैं उनकी इच्छाओं को अवश्य पूरा करूंगा भले ही इसके लिये मुझे बड़े से बड़ा त्याग ही क्यों न करना पड़े।

(प्रकाश पूरी कैण्टीन पर उभर आता है।)

प्रबन्धक : (चिल्लाते हुए सोहन एवं करण से)—अबे कम्बख़्तो! वहाँ खड़े-खड़े क्या पंचायत कर रहे हो। यहाँ का काम क्या तुम्हारा बाप करेगा आकर!

सोहन : (आँखों ही आँखों में करण को समझाते हुए हुए)- जी साब !

प्रबन्धक : जी साब के बच्चे। वहाँ रेस्टोरेण्ट में जाकर ग्राहकों को देखो।

(सोहन एवं करण का अन्दर की ओर प्रस्थान। करण जनरल स्टोर के काउण्टर पर आ जाता है तथा सोहन रेस्टोरेण्ट में जाकर ग्राहकों को संभालता है।)

एक ग्राहक : (करण से)— ए लड़के, आटा है क्या?

करण : हाँ साहब है। कितना दूं?

ग्राहक : एक किलो तौल ला जल्दी से।

(करण पास ही के बड़े तराजू पर बोरे में से आटा निकाल-निकालकर डालता जा रहा है। तराजू का पूरा पलड़ा भर जाता है और उसके दोनों हाथ आटे से सफेद हो जाते हैं। फिर वह तुले हुए आटे को पलड़े पर से मुट्ठियां भर भरकर कागज़ की बड़ी सी थैली में भरने लगता है। सहसा प्रबन्धक चिल्लाता है।)

प्रबन्धक : अरे वहीं घुस गया क्या आटे के बोरे में? कितनी देर हो गई एक किलो आटा नहीं तौल पाया अभी तक। सो गया क्या?

करण : (अन्दर से)—आया साब।

(आटे से सने हाथों में कागज़ की थैली पकड़े बाहर आता है।)

प्रबन्धक : (उसे थप्पड़ मारते हुए)—इतनी देर लगती है कहीं एक किलो आटा तौलने में? जाहिल गँवार कहीं का।

(करण रोने लगता है।)

सोहन : (पास में आते हुए)—इसे माफ कर दो साब बच्चा है अभी। (फिर उसे पुचकारते हुए)—काम नहीं किया न कभी। धीरे-धीरे सब सीख जायेगा साब इसे माफ कर दें।

प्रबन्धक : ठीक है ठीक है, समझा दे इसे। ठीक से काम करे नहीं तो नौकरी से हटा दूंगा। यहाँ कोई खैरात थोड़े ही बँट रही है। और फिर एक नहीं पचासों लड़के चक्कर लगा रहे हैं हमारे यहां पर तो नौकरी के लिये।

सोहन : जी साब।

(वह करण के कन्धे पर हाथ रखकर मंच के अग्रभाग में आ जाता है। अब कैण्टीन वाले हिस्से में अँधेरा हो जाता है।)

सोहन : तुम मैनेजर साहब की बातों का बुरा मत मानना करण। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। सब कुछ हमारे दिनों का फेर है।

करण : परन्तु भैया, मुझे तो छोटी-छोटी व्यावहारिक बातों का भी ज्ञान नहीं है। फिर मैं ऐसी परिस्थितियों में कैसे टिक पाऊंगा यहां?

सोहन : एक बात कहूं करण?

करण : हाँ भैया कहो।

सोहन : पहले तुम वादा करो कि मेरी बात को मानोगे और जैसा मैं कहूंगा वैसा ही करोगे।

करण : भैया आप तो मेरे लिए एक आदर्श हैं, भला मैं आपकी बात को कैसे टाल सकता हूं।

सोहन : भाई, बात यह है कि इस महानगर में तुम्हारी ही तरह मैं भी घुटन महसूस कर रहा हूं और अब यहाँ पर नौकरी करने का मेरा भी मन नहीं है।

करण : वाह भैया वाह। तुमने तो मेरे मन की बात कह दी।

सोहन : हाँ करण। हम यह नौकरी छोडकर जल्दी ही अपने गाँव

चले जायेंगे।

करण : लेकिन भैया घर की स्थिति कैसे सुधर पायेगी। पिताजी कर्जे के बोझ से दबे हुए हैं जिसे हम कैसे उतार पायेंगे?

सोहन : करण तुम शहर जाकर पढाई करना और मैं गाँव में ही मेहनत मजदूरी करके पिताजी की सहायता करूंगा।

करण : नहीं भैया। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम अकेले मुसीबतों से जूझते रहो और मैं आराम से जाकर शहर में पढाई करूं। इस संकट से निपटने के लिए मैं भी गाँव चलकर तुम्हारे साथ मेहनत मजदूरी करूंगा।

सोहन : करण ऐसा करके अपना और हमारे परिवार का हित नहीं कर पाओगे। तुम्हारे ऐसा करने से तो पिताजी का स्वप्न भी अधूरा ही रह जायेगा।

करण : कैसे भैया?

सोहन : करण, पिताजी हमें पढा-लिखाकर जीवन स्थापित देखना चाहते थे परन्तु परिस्थितियों से टूटकर बेमन से उन्होंने हमें यहाँ पर नौकरी करने भेज दिया। अब सोचो कि यदि मैं गाँव में रहूं और तुम शहर जाकर अपनी शिक्षा पूरी कर लो तो इससे हम सबकी स्थिति सुधर जायेगी। बोलो सुधरेगी या नहीं?

करण : (शून्य में देखते हुए कुछ निश्चय करके)—आपकी बात तो ठीक ही है भाई।

सोहन : तो आओ चलें इस नर्क की दुनिया से निकलकर जीवन की सच्ची राह पर।

(दोनों का हाथ पकडे हुए प्रस्थान। पार्श्व में रेडियो पर गाना बज रहा है)-

मुसाफिर हूँ यारो ना घर है ना ठिकाना.....

(मंच का प्रकाश धीमे धीमे होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(करण सिंह ने इस वर्ष एम.ए. का इम्तिहान दिया है। आज शहर के एक रंगमंच पर उसके कॉलेज का वार्षिकोत्सव है। उसे बचपन ही से साहित्य एवं संगीत के प्रति लगाव रहा है। अक्सर गाँव में होने वाली रामलीला एवं नाटकों को वह बड़ी तन्मयता से देखा करता था। आस-पास के मेलों एवं हाट-बाज़ारों में बिकने वाली लगभग हर पुस्तक को उसने पढा था। उसके मित्रों ने उसके पीछे पड़कर आज के इस उत्सव की मौलिक चिंतन प्रतियोगिता में उसके भी एक आलेख का प्रस्तुतीकरण रखवाया था। प्रतियोगिता के परिणामों की घोषण आज के इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पिंपलगढ़ की महारानी साहिबा द्वारा शीघ्र ही की जाने वाली है।)

मंच संचालक : आज की इस प्रतियोगिता में जो जो आलेख पढ़े गये वे सभी मौलिक एवं उच्च स्तर के थे। सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने आलेख बड़ी मेहनत से तैयार करके प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया उनका। परन्तु आप सभी जानते हैं कि प्रतियोगिता तो केवल प्रतियोगिता ही होती है अत: इसमें केवल एक ही विजेता होगा जिसके नाम की घोषणा पिंपलगढ़ रियासत की महारानी साहिबा अपने श्रीमुख से शीघ्र ही करने वाली हैं।

अब मैं महारानी साहिबा से अनुरोध करूंगा कि वे प्रतियोगिता के विजेता के नाम की घोषणा करके अपना आशीर्वचन दें।

(तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पाण्डाल गूँज उठता है। महारानी साहिबा खड़ी होकर माईक के सामने आती हैं।)

महारानी : हमें खुशी हुई आज की युवा पीढ़ी के विचार जानकर। हम आश्वस्त हुए इस बात के लिए कि आज की पीढ़ी हमारे देश की संस्कृति,परम्परा, नैतिकता आदि की अमूल्य निधि को सुरक्षित रख पाने में सक्षम है। इस

प्रतियोगिता की सभी प्रस्तुतियों ने हमारी इन उम्मीदों को दृढ़ता प्रदान की है।

(तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पाण्डाल पुन: गूँज उठता है।)

महारानी : अब मैं उस नौजवान को यहां आमंत्रित करती हूं जिसके प्रस्तुतीकरण ने न केवल इस प्रतियोगिता में प्रथम विजयी रहे हैं अपितु हमारे मन के एक कोने में स्थायी जगह भी बना ली है। तो वह भाग्यशाली नौजवान है, एम.ए. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी श्री करण सिंह।

(पुन: तालियों की गड़गड़ाहट। करण सिंह मंच पर आकर महारानी साहिबा के चरण स्पर्श करता है। वे उन्हें प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करती हैं।)

महारानी : (श्रोताओं की ओर उन्मुख होकर करण सिंह से)—

अब मैं करण सिंह से गुजारिश करूंगी कि वे अपने आलेख के कुछ महत्वपूर्ण अंश आप लागों को पढकर सुनायें।

(पुन: तालियों की गडगडाहट। महारानी जी के साथ ही मंचासीन सभी लोग भी खड़े ही रहते हैं। करण सिंह आलेख के अंश पढता है।)

करण सिंह : कौन कहता है कि हमारा देश आधुनिकता की चपेट में आ गया। आज न हमारी संस्कृति कमजोर हुई है, न सिद्धान्त टूटे हैं और न ही नैतिकता का ह्रास हुआ है। हमारा देश आज भी अपने निवासियों की ' स्वजन हिताय' की भावनाओं से ओतप्रोत है। त्याग और बलिदान की अनोखी मिसाल है हमारा देश। जयहिन्द।

(तालियों की गडगडाहट से पूरा पाण्डाल पुन: गूँज उठता है।)

महारानी : (करण सिंह से)—करण सिंह एक बात पूछूं?

करण सिंह : (आशंकित हो)—जी महारानी साहिबा।

महारानी : आपने जो लिखा और पढ़ा उसे केवल एक आलेख समझा जाय या फिर इसे जीवन में अपनाये जाने की एक मिसाल माना जाय?

करण सिंह : जी मैं कुछ समझा नहीं।

महारानी : अच्छा यह बताओ कि एम.ए. की इस डिग्री के बाद आप क्या करोगे?

करण सिंह : महारानी जी, मेरे पिताजी ने बहुत कष्ट सहकर मुझे पढाया है इसलिए अब कोई नौकरी करके अपने परिवार की मदद करना चाहता हूं।

महारानी : (श्रोताओं की ओर उन्मुख होकर करण सिंह से)— करण सिंह हम आपको एक प्रस्ताव देना चाहते हैं। स्वीकार करोगे?

करण सिंह : महारानी जी, आप आदेश करें आपका हर आदेश मेरे लिए शिरोधार्य होगा।

महारानी : सुन लो, सोच लो। फिर उत्तर देना।

करण सिंह : जी।

महारानी : (श्रोताओं की ओर उन्मुख होकर ऊंची आवाज़ में)— आप सभी लोग जानते हैं कि महाराजा साहब के शहीद हो जाने के उपरान्त इस रियासत की बागडोर हम स्वयं संभाले हुए हैं। हमारी एकमात्र संतान राजकुमारी रोहिणी कैन्सर जैसे असाध्य रोग से पीड़ित हैं और हम कई दिनों से राज्य के लिए एक योग्य दीवान की तलाश कर रहे हैं। आज हमें लग रहा है कि हमारी खोज पूरी हुई। (करण सिंह के सिर पर हाथ रखते हुए)—अत: हम करण सिंह को हमारे राज्य के दीवान पद का प्रस्ताव देते हैं। (फिर करण सिंह से)— क्यों करण सिंह, आपको हमारा प्रस्ताव मंजूर है?

करण सिंह : महारानी जी।

(महारानी जी के पैरों में गिर पड़ता है। महारानी उसे उठाकर गले से लगा लेती हैं तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पाण्डाल पुन: गूँज उठता है। प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(राजमहल का दृश्य। महारानी जी सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके पास में राजकुमारी रोहिणी एवं अन्य सभासद विराजमान हैं। दीवान करण सिंह महारानी जी के समक्ष प्रजाजनों की फरियाद प्रस्तुत कर रहे हैं।)

करण सिंह : राजमाता, हमारी सेना के कुछ घुडसवारों ने एक किसान की पकी हुई फसल में से अपने घोड़ों को दौडाया जिससे उस गरीब की फसल को नुकसान हुआ। आप आज्ञा दें तो फरियादी को पेश किया जाय।

महारानी : जरूर।

(इशारा पाते ही दरबान के द्वारा किसान को राजमाता के समक्ष उपस्थित किया जाता है।)

किसान : (उपस्थित होकर राजमाता से)—राजमाता की जय हो।

राजमाता : बाबा, हमने आपकी फरियाद सुनी। बोलो अपनी फसल के नुकसान के बदले क्या मांगते हो और हमारे दोषी घुडसवारों के लिए क्या सज़ा चाहते हो!

किसान : राजमाता, मैं गरीब आदमी क्या कह सकता हूं। आप प्रजा-पालक हैं जो मुनासिब हो करें। मुझे आपका निर्णय मंजूर होगा।

राजमाता : (करण सिंह से)— इस किसान की फसल की क्षतिपूर्ति के नुकसान की एवज में इसे राजकोष से दस हजार रूपये दे दिये जायं और इस गुनाह के लिये उन सभी घुडसवारों को नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाये।

घुडसवार : दुहाई है राजमाता दुहाई है। हमें माफ कर दें। हम ज़िन्दगी में फिर कभी ऐसी ग़लती नहीं करेंगे।

करण सिंह : (विनीत भाव से)—राजमाता, आप दयालु हैं। माँ हैं प्रजा की। परन्तु इन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिये जाने से इनके बेकसूर परिवारों को खाने के भी लाले पड़ जायेंगे।

राजमाता : तो?

करण सिंह : राजमाता, आपकी आज्ञा हो तो इस किसान को दी जाने वाली क्षतिपूर्ति की राशि इन ग्यारह घुडसवारों के ग्यारह महीनों के वेतन से काटकर राजकोष में जमा करा दी जाय और अभी इस किसान को राजकोष से दस हजार की क्षतिपूर्ति राशि दे दी जाय। इस प्रकार इन दोषियों से राजकोष को भी एक हजार रूपये मिल जायेंगे।

राजमाता : करण सिंह आप धन्य हैं। आज हमें विश्वास हो गया कि उस दिन महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में आपका वह आलेख अक्षरशः सत्य था। (फिर आदेशात्मक स्वर में)—अगली फरियाद प्रस्तुत की जाय।

करण सिंह : राजमाता अगली फरियाद एक नवब्याहता की है। वह आगे पढ़ना चाहती है परन्तु उसका पति उसे ऐसा नहीं करने देता। आप कहें तो उसे हाजिर होने हेतु सूचित किया जाय?

राजमाता : करण सिंह, आप स्वयं नीतिवान हैं, संस्कार तथा संस्कृति के ज्ञाता हैं।

करण सिंह : जी मैं कुछ समझा नहीं।

राजमाता : हमारी बहिन-बेटियों और बहुओं को न्याय मांगने हेतु हमारे दरबार में नहीं आना पड़ता। आप उनकी फरियाद पढ़ें हम उन्हें उनके घर रहते हुए ही न्याय दिलाएंगे।

करण सिंह : राजमाता बड़ा ही विचित्र सा मामला है। बताता हूं।

(थोड़ा रुककर)—हमारे ही दरबार के कारिन्दा श्यामलाल जी ने अपनी पुत्री नन्दिनी का विवाह चंबल क्षेत्र के एक ऐसे युवक से कर दिया जो उनकी पुत्री से कम योग्य एवं नशा करने की लत का आदि था।

राजमाता : (कुछ याद करते हुए)—परन्तु कारिन्दा श्यामलाल जी तो हमारे दरबार के बहुत ही समझदार सभासद रहे हैं। स्वर्गीय महाराजा साहब तो उन्हें बहुत आदर दिया करते थे। उन्होंने ऐसा क्यों किया! और महाराजा साहब के बाद तो कभी हमने उन्हें दरबार में आते हुए भी नहीं देखा।

करण सिंह : राजमाता, कारिन्दा जी अब बहुत बूढ़े हो गये हैं। उन्होंने अपने लड़कों को योग्य बनाने का भरसक प्रयास किया परन्तु तीनों के तीनों नशेडी एवं आवारा निकले। उन्होंने अपनी तीन पुत्रियों और पुत्रों का विवाह तो अपनी पत्नी के ज़िन्दा रहते ही कर दिया था परन्तु सबसे छोटी नन्दिनी तब पढ़ाई कर रही थी।

उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात् उसकी भाभियों ने उस पर तरह-तरह के अत्याचार करने शुरू कर दिये और उसकी पढाई भी बन्द करवा दी। उसके आवारा भाइयों ने उसकी कोई मदद न की। जब कारिन्दा जी को अपने ही खाने के लाले पड़ गये तो उन्होंने सोच समझकर अपनी इस होनहार पुत्री का विवाह इस कम पढ़े लिखे एवं बेरोजगार युवक से कर दिया।

राजमाता : अफ़सोस। लेकिन ऐसा क्यों किया उन्होंने। कोई और प्रयास करते। (फिर पीड़ित स्वर में)— हमारे पास क्यों नहीं आये वे।

करण सिंह : राजमाता उनकी इस पुत्री के सास-श्वसुर भले हैं। घर की आर्थिक स्थिति भी ठीक है, परन्तु लड़की का हठ है कि वह आगे पढ़ना चाहती है और पति इसकी अनुमति नहीं देता। यदि उसे आगे पढ़ने नहीं दिया गया तो वह घुट-घुटकर मर जायेगी।

राजमाता : करण सिंह आप ही कोई युक्ति बतलाइये। उसकी शिक्षा का सारा खर्च हम राजकोष से देंगे।

करण सिंह : परन्तु राजमाता बड़ा ही संवेदनशील मामला है यह। ऐसी स्थिति में उसे पढ़ायेगा कौन!

राजमाता : आप उसकी आगे की पढ़ाई के लिये स्वयंपाठी परीक्षार्थिनी के रूप में उसका आवेदन करा दें । समय समय पर वह अपने पिता से मिलने जब हमारे राज्य में आती रहेगी तो आप स्वयं उसके घर जाकर उसे पढ़ाया

करें। यह जिम्मेदारी मैं आप ही को सौंपती हूं। आज दरबार की कार्यवाही का समापन किया जाता है।

(राजमाता सिंहासन से उठ जाती हैं। प्रकाश मंद मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

पाँचवाँ दृश्य

(राजधानी के एक बड़े शहर का दृश्य। नन्दिनी की बी.ए. अन्तिम वर्ष की परीक्षा का केन्द्र यहां के एक स्थानीय महाविद्यालय में निर्धारित हुआ है। करण सिंह नन्दिनी के पिता की आज्ञा से उसे परीक्षा दिलवाने यहां पर लाया है। परीक्षाएं लगभग दो सप्ताह तक चलेंगी। राजकुमारी रोहिणी की कैंसर की बीमारी का इलाज़ भी यहीं के एक स्थानीय अस्पताल में चल रहा है। करण सिंह उनके साथ अस्पताल के प्राईवेट वार्ड में ठहरकर उनकी देखभाल कर रहा है। बीच-बीच में राजमाता भी आती रहती हैं।

करण सिंह ने नन्दिनी को परीक्षा पूर्ण होने तक के लिए अपनी बहिन के यहाँ ठहराया है और बीच-बीच में समय निकालकर उसे परीक्षा की तैयारी कराने जाया करता है। उसकी परीक्षा समाप्त होने में केवल तीन-चार दिन शेष रह गये हैं। अभी वह अस्पताल के वार्ड में है। डॉक्टर साहब राजकुमारी जी की जाँच कर रहे हैं। सहसा फोन की घण्टी बजती है।)

करण सिंह : (फोन का चोंगा उठाते हुए)—हैलो, हाँ मैं करण ही बोल रहा हूँ। बोलो नन्दिनी क्या बात है?

नन्दिनी : (आवाज़)—मुझे यहां रहने में काफी तकलीफ हो रही है। आपकी बहिन की पुत्रवधू मुझ पर तरह-तरह की फब्तियां कसती हैं और आज तो अपने यहाँ रुकने के लिये भी साफ मना कर दिया है। आप तुरन्त चले आओ और मुझे कहीं और ठहराने की व्यवस्था कर जाओ।

करण सिंह : ठीक है। तुम अपना सामान लेकर आ जाओ। कहाँ मिलोगी?

नन्दिनी : आपकी बहिन के घर के पास जो बस स्टॉप है वहीं पर आपकी प्रतीक्षा करूंगी।

करण सिंह : फोन कहाँ से कर रही हो?

नन्दिनी : बस स्टॉप के पास के टेलीफोन बूथ से।

करण सिंह : ठीक है, मैं आधा घण्टे में पहुंचता हूं।

(करण जाने को तैयार होता है। अन्दर वार्ड में बीमार राजकुमारी के पास राजमाता भी खड़ी हैं। डॉक्टर साहब ने जाँच पूरी कर ली है। करण राजमाता से आज्ञा लेने के लिए अन्दर प्रविष्ट होता है।)

डॉक्टर : (राजमाता से)—आज की रात राजकुमारी जी की बीमारी की स्थिति जानने के लिए महत्वपूर्ण है। इन्हें रात में हर आधा आधा घण्टे के अन्तराल के बाद ये दो-दो गोलियां देनी हैं और इनकी हालत से मुझे अवगत कराते रहना है। (फिर कुछ सोचते हुए)—यह काम किसी विश्वस्त आदमी को ही सौंपें आप।

राजमाता : डॉक्टर साहब मैं स्वयं रहूंगी इनके पास। (फिर करण सिंह की ओर देखते हुए)—और ये करण सिंह तो मेरे बेटे जैसे हैं। ये संभालेंगे इस दायित्व को। क्यों करण सिंह?

करण सिंह : (कुछ सकपकाते हुए)—जी राजमाता।

(डॉक्टर साहब चले जाते हैं। राजमाता पास ही में रखे सोफे पर बैठ जाती हैं। करण सिंह का चित्त इस वक़्त स्थिर नहीं है। वह राजकुमारी जी को दवा देकर पास ही में बैठ जाता है। घड़ी की सुई कई चक्कर पूरे कर चुकी है जिसके साथ ही करण सिंह के मस्तिष्क की सुई भी कई आवर्तनों की पूर्ति के साथ लगता है अब स्थिर हो गई है। अब राजकुमारी की ही हालत में सुधार दिखलाई देता है। करण सिंह दूरभाष पर उनकी हालत

की सूचना थोड़ी-थोड़ी देर में डॉक्टर साहब को देता जा रहा है।)

करण सिंह : (राजमाता से)—राजमाता अब आप आराम करें, मैं यहाँ पर हूं।

(वह आग्रह करके यहाँ से राजमाता को भेज देता है। राजकुमारी बिस्तर पर आराम कर रही हैं परन्तु करण सिंह बेचैन है नन्दिनी के बारे में सोच सोचकर। क्या करे अब वह। कैसे सम्पर्क करे उससे। इसी उधेडबुन में पता ही न चला कि कब सुबह हो गई। सहसा डॉक्टर के साथ राजमाता का प्रवेश। करण सिंह खड़ा हो जाता है।)

डॉक्टर : (राजकुमारी जी की जाँच करने के पश्चात् राजमाता से)—राजमाता कैंसर के ऑपरेशन के बाद अब राजकुमारी जी की हालत ठीक है। कुछ ही समय बाद ये पूर्ण रूप से ठीक हो जायेंगी। अब आप इन्हें घर ले जा सकते हैं।

राजमाता : डॉक्टर साहब आपका बहुत बहुत धन्यवाद। (फिर करण सिंह से)—करण सिंह चलो राजकुमारी जी को घर ले चलें।

(करण सिंह राजकुमारी एवं राजमाता के साथ अस्पताल से बाहर जा रहा है परन्तु उसका मन रह रहकर नन्दिनी की ओर पीछे छूटा चला जा रहा है।)

दृश्य समाप्त

छठा दृश्य

(करण सिंह अपने घर के बरामदे में बैठा हुआ पश्चाताप की आग में झुलसा जा रहा है। उस दिन नन्दिनी को लाने हेतु न पहुँच पाने की विवशता उसके दिल पर रह-रहकर नश्तर से चुभो रही है। इस घटना को लगभग चार महिने बीत चुके हैं। इस दौरान न तो वह नन्दिनी के घर जाने का साहस कर पाया और न ही वह उससे मिलने आयी।)

करण सिंह : (स्वगत)—क्या हुआ होगा उस दिन नन्दिनी के साथ। वह अपना सामान लेकर बस स्टॉप पर मेरी प्रतीक्षा करती रही होगी। अन्जान शहर, तरह-तरह के लोग और ऐसे में एक बेसहारा लड़की। क्या हुआ होगा उस दिन उसके साथ! (फिर अपने बाल नोंचता हुआ)—क्यों नहीं चला गया मैं उसे लेने। पर कैसे जाता। राजकुमारी जी को संभालने का दायित्व जो सौंप दिया था राजमाता ने मुझे। (सहसा पास में आवाज़ आती है।)

आवाज़ : अख़बार वाला।

(करण सिंह उठकर बरामदे में पड़े अखबार को खोलकर पढ़ता है। आज बी.ए. अन्तिम वर्ष का परीक्षा परिणाम निकला है। पहले पृष्ठ पर नन्दिनी का फोटो देखकर स्तब्ध रह जाता है। अपने दिल की धड़कन पर काबू रखने का प्रयास करते हुए उसके फोटो के साथ छपे समाचार को पढ़ता है।)

समाचार : विश्वविद्यालय की बी.ए. परीक्षा की योग्यता सूची में प्रथम रही-नन्दिनी।

(करण सिंह सन्न रह जाता है। उसके समझ में नहीं आता कि वह खुश हो नन्दिनी की सफलता पर या पश्चाताप करे उसे बस स्टॉप पर लाने न पहुँचने के लिये।)

करण सिंह : (स्वगत)—आज मुझे नन्दिनी के घर जाना ही चाहिए और अपनी उस दिन की विवशता के बारे में साफ-साफ बता देना चाहिए।

(सहसा राजकर्मचारी का प्रवेश।)

कर्मचारी : (शीश नवाकर करण सिंह से)—अपको राजमाता ने याद फरमाया है।

करण सिंह : (कुछ सोचते हुए कर्मचारी से)—तुम चलो हम अभी आते हैं। (फिर स्वगत)—आज फिर वही राजकार्य का अवरोध। क्या करूं! नन्दिनी के पास जाऊं या राजकार्य का पालन करूं ! ऐसा करता हूं, पहले राजमाता के पास

जाकर उनसे हमेशा हमेशा के लिए राज्य-सेवा से मुक्ति देने की प्रर्थना करता हूँ। उसके बाद निश्चिन्त होकर नन्दिनी के पास जाऊंगा। (प्रस्थान करता है।)

दृश्य समाप्त

सातवाँ दृश्य

(राजमहल का दृश्य। डाक्टरों ने राजकुमारी रोहिणी को कैंसरमुक्त होने की औपचारिक घोषणा कर दी है। इस खुशी में राजमाता ने पूरे राज्य में मिठाई बँटवाने का ऐलान करवाया है। करण सिंह राजमहल पहुँचकर राजमाता एवं राजकुमारी जी को बधाई देता है। वह राजमाता से कुछ कहना चाहता है। वही बात अपनी राजकीय सेवा से मुक्ति देने की।)

करण सिंह : (राजमाता से)—राजमाता, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

राजमाता : (करण सिंह से)—और करण सिंह मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ।

(सहसा दरबान का प्रवेश।)

दरबान : (करण सिंह से)—बाहर द्वार पर आपसे कोई मिलने आया है।

करण सिंह : उनसे कहो हम राजमाता के साथ महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त हैं। कल आयें।

राजमाता : (करण सिंह से)—कल नहीं करण सिंह आप अभी उनसे मिल आयें पता नहीं कौन जरूरी काम से मिलना चाहते हैं। शेष बातें हम बाद में करेंगे।

करण सिंह : (राजमाता से)—जो आज्ञा ।

(शीश झुकाकर मुख्य द्वार की ओर प्रस्थान करता है। द्वार के बाहर नन्दिनी को खड़े पाकर उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक जाती है। वह अपना संतुलन खोकर

जैसे ही गिरने को होता है नन्दिनी उसे अपनी बाँहों में थाम लेती है।)

नन्दिनी : अपने को संभालिए। हमें पता है कि आप किसी न किसी विपदा में फँस गये होंगे तभी तो उस दिन हमें लेने नहीं आ पाये। आज मैं पहले आपके घर गई थी। जब आप वहाँ न मिले तो चली आयी यहां पर, एक बात बताने आपको।

(वह आगे राजमहल के बगीचे की ओर निकल जाती है करण सिंह भी उसके पीछे-पीछे चले जाते हैं और दोनों एक पेड़ के इर्द गिर्द बने एक गोल चबूतरे पर बैठ जाते हैं।)

करण सिंह : समझ में नहीं आता नन्दिनी, कि तुम्हें योग्यता सूची में आने की बधाई दूं या अपनी उस दिन की भूल के लिए तुमसे क्षमा मांगूं।

नन्दिनी : बधाई तो आप मुझे न दें क्योंकि मैं अबला इसके काबिल नहीं। यह तो आप ही की मेहरबानियों का परिणाम है। आप ही ने राजकोष से मुझे आर्थिक सहायता दिलवायी और स्वयं मेरे घर आकर पढ़ाया। इसलिए इस बधाई के सच्चे हक़दार तो आप ही हैं।

करण सिंह : परन्तु परीक्षा के दिनों में तुम्हें बस स्टॉप पर अकेला छोड़ आया था मैं। जानना चाहोगी क्यों?

नन्दिनी : नहीं मैं नहीं जानना चाहती वह सब । अवश्य ही आपकी कोई विवशता रही होगी। उन बातों को याद करने मात्र से ऐसा महसूस होता है मानो मेरे घावों पर किसी ने नमक छिड़क दिया हो।

करण सिंह : परन्तु मैं जानना चाहता हूं तुम्हारे उन घावों के बारे में । और नन्दिनी यदि तुम आज वह सब मुझे न बताओगी तो मैं आजन्म पश्चाताप की आग में झुलसता रहूंगा। और उसके बाद भी तुम्हें मेरी विवशता जाननी होगी। बताओ क्या किया तुमने उस दिन जब मैं तुम्हें लेने बस स्टॉप

पर नहीं आ सका था।

नन्दिनी : (रोती हुई)—मुझे माफ कर दीजिए। उस दिन मैं दो घण्टे तक आपकी प्रतीक्षा करती रही। इस बीच आपकी बहिन का लड़का कई बार आया मेरे पास। उसे पूरे घटनाक्रम के बारे में पता था। कहने लगा कि आपने मुझे धोखा दिया है और यहाँ कभी नहीं आयेंगे। उसने मेरे प्रति सहानुभूति दर्शायी और मैं बेबसी की हालत में उसकी मोटरसाईकिल पर चल दी कहीं उसके साथ।

करण सिंह : (आर्द्र स्वर में)— फिर क्या हुआ?

नन्दिनी : (सुबकती हुई)—वह मुझे एक खाली फ्लेट में ले गया। कहने लगा कि वह फ्लेट उसके किसी दोस्त का था जिसमें वह सपरिवार रहता है और वे लोग अभी बाज़ार गये हैं। उसने यह भी कहा कि तुम दो-तीन दिन उनके साथ यहाँ ठहरकर परीक्षा दे सकती हो। परन्तु यह मेरे साथ धोखा था। उस फ्लेट में केवल उसका दोस्त रहता था। अकेला। रात्रि में वे दोनों आये और तीन दिन तक बारी-बारी से मुझे अपनी हवश का शिकार बनाते रहे। तीन दिन बाद उन्होंने मुझे बस में बैठा दिया और मैं लुटी-पिटी अपने घर आ गई। कौनसा घर? पिता का घर जो मेरा अपना नहीं था। और ससुराल? उन दरिन्दों ने टेलीफोन पर मेरे पति को इस घटना की जानकारी दे दी और मेरे पति ने मुझे झूठी, बदचलन और आवारा करार देते हुए मुझसे कानूनी तौर पर सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। (फिर थोड़ा सहज होते हुए)— अब किसकी बधाई देंगे आप मुझे। योग्यता सूची में प्रथम आने की या अपने पति द्वारा छोड़ दिये जाने की। उसी तरह छोड़ दिया जिस तरह किसी आवारा पशु को निर्जन वन में ले जाकर छोड़ दिया जाता है। किसकी बधाई देंगे आप? (रोने लगती है।)

करण सिंह : (आर्द्र स्वर में)—मुझे माफ कर दो नन्दिनी। उस दिन मैं तुम्हें लेने के लिए रवाना होने ही वाला था कि राजमाता

का संदेशा आया और मुझे राजकुमारी जी को हर आधा-आधा घण्टे में दवा देने व इसकी सूचना डॉक्टर साहब को दिये जाने का राजमाता का आदेश मिला। और मैं कायर अपने मानवता के प्रति कर्तव्य के स्थान पर अपने राजकार्य-दायित्व को निभाने में तुम्हारे दाम्पत्य जीवन की बलि का कारण बन बैठा। धिक्कार है मुझे।

(अपने दोनों हाथों को पत्थर पर मारना चाहता है। सहसा राजमाता का राजकुमारी जी के साथ आगमन।)

राजमाता : (करण सिंह के हाथों को थामते हुए)—यह क्या कर रहे हो करण सिंह? (फिर दोनों के सिर पर हाथ रखते हुए)—तुम दोनों ही निर्दोष हो मेरे बच्चो। तुम दोनों ही प्रारब्ध का शिकार हुए हो। (फिर करण सिंह से)—करण सिंह, हमने अपनी रियासत के अनेक पेचीदे मामलों को सुलझाया है परन्तु आज जैसा यह मामला अपने आप में विचित्र है।

करण सिंह : जी मैं कुछ समझा नहीं।

राजमाता : आप थोड़ी देर पहले हमसे कुछ कहना चाहते थे!

करण सिंह : जी राजमाता।

राजमाता : आप क्या कहना चाहते थे हम जान चुके हैं। नन्दिनी वाली दुर्घटना के लिए आप अपनी राजकीय सेवा को दोषी मानते हो और शायद इसी से मुक्त होने का अनुरोध आप हमसे करना चाहते थे, क्यों?

करण सिंह : परन्तु राजमाता आपको यह सब कैसे मालूम?

राजमाता : (उसी प्रवाह में)—परन्तु हम आपसे क्या कहना चाहते थे यह जानना चाहोगे? (करण सिंह चुप)

राजमाता : आज हम चुप नहीं रहेंगे करण सिंह। इन्सानियत की तुम दोनों मूरतों के समक्ष साफ साफ कह देंगे सब कुछ। (फिर राजकुमारी के सिर पर हाथ रखते हुए उसी प्रवाह में)—आपकी इन्सानियत,कर्मनिष्ठा, सेवा और त्याग-भावना के वशीभूत होकर हम राजकुमारी का विवाह

आपसे करना चाहते थे। (सब लोग अवाक रह जाते हैं।)

राजमाता : बोलो इस सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहते हैं?

करण सिंह : राजमाता आपका सोचना ठीक हो सकता है। परन्तु आज हम कुछ और कहने की आपसे इज़ाजत चाहते हैं।

राजमाता : बोलो करण सिंह जो कहना चाहते हो कहो।

करण सिंह : राजमाता भगवान की कृपा से आज राजकुमारी जी रोगमुक्त हो चुकी हैं। ये सुन्दर हैं, नीतिवान एवं गुणवान तथा राजघराने की सिरमौर हैं। (फिर कुछ रुककर)- उनसे विवाह करने के लिये तो बड़ी-बड़ी रियासतों के राजकुमार तैयार हो जायेंगे। (फिर नन्दिनी का हाथ पकड़ते हुए)- परन्तु इस अबला परित्यक्ता का हाथ कौन थामेगा! (उपस्थित लोगों के मौन को ताडकर)- कोई नहीं। क्षमा करें राजमाता, इस नन्दिनी को मैं पत्नी के रूप में अपनाना चाहता हूं। आशीर्वाद दीजिए।(दोनों राजमाता के पैरों में गिर पड़ते हैं।)

राजमाता : (दोनों को उठाते हुए)—आप महान् हैं करण सिंह। आज हमें आप पर गर्व है। (फिर राजपुरोहित जी से)—पुरोहित जी! नन्दिनी और करण सिंह के विवाह की तैयारियां की जायं। यह शादी एक राजघराने की शादी होगी। (फिर करण सिंह से)—परन्तु करण सिंह, रिश्ता तो हम आपसे बनाना ही चाहेंगे। (फिर राजकुमारी से)—क्यों बेटी? (राजकुमारी की मौन स्वीकृति पाकर राजकुमारी का हाथ करण सिंह एवं नन्दिनी को थमाते हुए)—आज से रोहिणी आपकी बहिन होंगी और आप होंगे इस रियासत के युवराज।

जनता : (ऊंची आवाज़ में)—युवराज की जय हो।

(प्रकाश राजमाता एवं उसके इस परिवार पर गिरते हुए मंद-मंद होते हुए बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

मन चंगा तो कठौती में गंगा

इस नाटक की कथावस्तु भी केवल दो पात्रों के माध्यम से विस्तारित होती है। एक सनकी दिमाग के ठाकुर साहब को गंगा स्नान करने की धुन सवार होती है। वे अपनी परिचारिका छबीली से परामर्श करते हैं । छबीली चापलूस एवं जी-हुजूरी करने वाली सेविका है और ठाकुर साहब की हाँ में हाँ तथा ना में ना मिलाती है। यह नाटक लोक कथाओं से मिली अभिप्रेरणा से लिखा गया है जो हमारे ग्राम्य जीवन, लोक संस्कृति आदि की छवि प्रस्तुत करता है।

'मन चंगा एवं कठौती में गंगा' एवं 'महावत' अब तक की प्रस्तुतियां

निर्देशक, ठाकुर : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा

सहयोगी कलाकार

प्रथम प्रस्तुति : विरेन्द्र मिश्रा, रामबाबू शर्मा (भरतपुर)

द्वितीय-तृतीय प्रस्तुति : माधुरी धाकड (वैर-भरतपुर)

चतुर्थ पंचम प्रस्तुति : ज्योति कटारा (भरतपुर)

षष्ठ प्रस्तुति : महेश चन्द्र सोनी (भरतपुर)

सप्तम प्रस्तुति : सूफिया ईरम सिद्दिकी

* रवीन्द्र मंच, जयपुर : सी.ए. मुरार लाल खण्डेलवाल,लक्ष्मी खण्डेलवाल,श्रेष्ठा शर्मा, आशा शर्मा, कोमल शर्मा, हिमांशु तिवाडी

पूर्व प्रस्तुतीकरण :

* पंजाब नैशनल बैंक अंचल प्रशिक्षण केन्द्र जयपुर।
* बडा नगला (भुसावर) * गार्गी महाविद्यालय, शाहजहाँपुर - भावना यादव
* मदनमोहन जी का मन्दिर कुम्हेर (भरतपुर)
* टैगोर एकेडमी भरतपुर।

प्रमुख पात्र

राजा- ठाकुर : उम्र 60 वर्ष
नाई : उम्र 55 वर्ष
दासी : उम्र 30 वर्ष
चौकीदार, एवं अन्य कर्मचारीगण ।

पहला दृश्य

(प्रात: काल का समय है। महाराज बहादुर सिंह के दरबार का दृश्य । महाराज का सिंहासन खाली पड़ा हुआ है। दरबार में इस समय पडौसी राज्य का सैनिक विक्रम सिंह और महाराज की नौकरानी चुलबुल आपस में बतिया रहे हैं।)

विक्रम सिंह : (चुलबुल की ओर आशिकाना अंदाज में देखते हुए)—क्यों सुन्दरी। कितने महिने हो गये। अपने पीहर तक को भूल गई।

चुलबुल रानी : (अनजान बनती सी) - क्यों क्या हुआ।

विक्रम सिंह : (उसे उसी भाव से पुन: निहारते हुए नि:श्वास छोड़ते हुए) हाय रे क्या हुआ। मुझे खुद को ही नहीं पता , पर हो कुछ जरूर गया है।

चुलबुल रानी : क्या बहकी-बहकी बातें कर रहे हो। आज सुबह- सुबह ही पी ली क्या।

विक्रम सिंह : पी तो नहीं है रे । पर तुम्हें देखकर बिना पिये ही नशा सा हो जाता है। (फिर उसके नजदीक जाकर) - सच कहता हूं चुलबुल, जब तुम नहीं दिखती हो न तो बेचैन हो उठता हूँ। (पास जाकर उसका हाथ थामते हुए)- जब तुम मेरे सामने होती हो तो नशा सा छा जाता है और अपने होश- हवाश खो बैठता हूँ ।

चुलबुल : (इधर-उधर देखते हुए) - ये क्या कर रहे हो सरदार । किसी ने देख लिया तो । सारा नशा उतर जायेगा। (फिर उसके पास जाकर उसे प्रेम से समझाते हुए)- तुम्हें पता नहीं क्या, महाराज के आने का समय हो गया है। और आज तो दरबार में अपने

सलाहकार का चयन भी करेंगे। उसी के लिए तो मैनें यहां बुलाया है तुम्हें।

विक्रम सिंह : यह तो अच्छा ही किया चुलबुल तूने । अब यदि मुझे भी महाराज के यहां नौकरी मिल गई तो जीवन भर साथ-साथ रहेंगे।

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(महाराज बहादुर सिंह के दरबार का दृश्य । महाराज अपने सिंहासन पर विराजमान हैं। इनके चेहरों के हाव-भावों से ऐसा प्रतीत हो रहा है माने वे किसी का इन्तजार करते - करते उकता गये हों।)

महाराज : (दरबान होशियार सिंह से) - होशियार सिंह। आज हमने अपने दरबार में अपने निजी सलाहकार की भर्ती के लिए विज्ञापन दिया था परन्तु अफसोस कि साक्षात्कार के निर्धारित समय पर एक भी उम्मीदवार नहीं पहुंचा है।

होशियार सिंह : (झुककर अभिवादन करते हुए) - क्षमा करें महाराज। निर्धारित समय पर पहुंचने की बात हमारे देश में बहुत पुरानी हो गई और एक बात और महाराज कि हमारे देश में आजकल इन्टरव्यू का तो उद्देश्य ही बदल गया है।

महाराज : (खुश होते हुए) - आज तो तुम बहुत ही गूढ बातें कर रहे हो होशियार सिंह । जरा खुलासा करके बताओ क्या आशय है तुम्हारे इस कथन का ।

होशियार सिंह : महाराज, आजकल सरकारी महकमों में साक्षात्कार लेना तो केवल औपचारिकता बनकर रह गई है।

महाराज : भई कैसे ।

होशियार सिंह : महाराज, आजकल सरकारी विभागों में रिक्त पदों पर बड़े-बड़े अधिकारियों के रिश्तेदारों को पहले से ही रख लिया जाता है और सरकारी नियम की पालना हेतु केवल औपचारिकतावश इन्टरव्यू लिया जाता है।

महाराज : अच्छा। ऐसा चमत्कार ।

होशियार सिंह : हाँ महाराज। एक-एक पद के लिए हजारों की संख्या में उम्मीदवार उपस्थित होते हैं, परन्तु स्थायी चयन तो उन्हीं का होता है जो सैटिंग करके पहले से ही घुसे होते है। महाराज, शायद हमारे राज्य के नौजवान इस बात को समझकर ही इन्टरव्यू देने नहीं पहुंचे हैं अभी तक ।

महाराज : हमारे देश की व्यवस्थाओं में ऐसी धांधली । यह हमने आज पहली बार सुना ।

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(महाराज सिंहासन पर विराजमान हैं । पास में ही चुलबुल झाड़ू-पोंछा कर रही हैं।)

महाराज : (बाहर कान लगाकर सुनते हुए) - सुनो दासी ।

दासी : (पास आकर) - जी महाराज।

महाराज : देखो तो बाहर कैसा शोर मचा हुआ है ?

दासी : महाराज, किसी के लड़ने-झगड़ने की आवाजें आ रही हैं।

महाराज : जाओ और झगड़ा करने वालों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करो।
(दासी का बाहर प्रस्थान और दो व्यक्तियों के साथ पुनः आगमन।)

दासी : महाराज। पड़ौसी राज्य का यह कर्मचारी हमारे राज्य के इस कर्मचारी से झगड़ा कर रहा था।

महाराज : (अपने राज्य के कर्मचारी से) - अच्छा , कहो भोंपू सिंह किस बात पर झगड़ा कर रहा था यह तुमसे।

भोंपू सिंह : (सहमते हुए) - महाराज । यह कह रहा था कि .... (रुक जाता है)

महाराज : रुक क्यों गये भोंपू आगे कहो।

भोंपू सिंह : महाराज, क्षमादान दें तो बताऊं ।

महाराज : बताओ भोंपू, हम तुम्हें क्षमादान देते हैं।

भोंपू सिंह : महाराज यह निर्लज्ज कह रहा था कि इनके महाराज धनुर्विद्या में आपसे भी अधिक निपुण हैं ।

महाराज : (दूसरे राज्य के सैनिक से) - क्यों सैनिक क्या तुम इस बात को सिद्ध कर सकते हो।

सैनिक : हां महाराज । आपकी यह दासी मेरे ही गाँव की बेटी है और इसने भी एक बार मेरे ही साथ-साथ हमारे महाराज की तीरंदाजी का कमाल देखा है।

महाराज : अच्छा। कैसा कमाल जरा हमें भी तो बताओ।

सैनिक : महाराज एक बार हमारे महाराज नदी-किनारे शिकार खेलने गये थे जहाँ पर एक हिरण पानी पी रहा था।

महाराज : फिर।

सैनिक : महाराज। हमारे महाराज ने ऐसा तीर चलाया,ऐसा तीर चलाया, ऐसा तीर चलाया.....

महाराज : अरे भाई कैसा तीर चलाया ?

सैनिक : महाराज ऐसा तीर चलाया कि उनका तीर हिरण के पैर को बेधता हुआ,कान को छेदता हुआ उसकी खोपड़ी में घुस गया।

चुलबुल : और महाराज हिरण वहीं पर ढेर हो गया।

महाराज : असंभव, असंभव, असंभव। यह कैसे हो सकता है।

सैनिक : महाराज। जब हमारे महाराज ने हिरण पर तीर चलाया तो वह अपना कान खुजला रहा था।

महाराज : वाह वाह वाह वाह। आज हम बहुत खुश हुए।

चुलबुल : महाराज यह अपने महाराज की प्रशंसा कर रहा है और आप खुश हो रहे हैं।

महाराज : हाँ दासी हमने अपने सलाहकार के लिए इन्टरव्यू रखा था और आज हमें एक योग्य सलाहकार मिल गया।

सैनिक : कौन मिल गया महाराज ?

महाराज : सैनिक तुम। आज से तुम हमारे सलाहकार होगें और हमें तुम्हारे जैसे जादूगर की ही तलाश थी।

सैनिक : महाराज की .....

सब : जय हो।

दृश्य समाप्त

चौथा दृश्य

(महाराज के दरबार का दृश्य । महाराज इधर-उधर टहल रहे हैं और उनका नवनियुक्त सलाहकार ननुवा चापलूसी- भाव से उनके आगे-पीछे चक्कर काट रहा है।)

महाराज : (अपने सलाहकार ननुवा से) - अरे भाई ननुवा।

ननुवा : (महाराज के चरणों में दण्डवत करता हुआ) - जी हुजूर।

महाराज : भाई कई दिनों से हमारा मन गंगा-स्नान को हो रहा है । तुम कहो तो गंगाजी नहा आयें?

ननुवा : वाह महाराज वाह क्या विचार आया है आपके इस मन मन्दिर में। महाराज आपके खानदान में आज तक कोई गंगाजी नहाने नहीं गया। और महाराज सच कहता हूं यदि आप गंगा-स्नान कर आये तो आप तो आप, आपके पुरखे तक तर जायेंगे। बड़ा ही उत्तम विचार आया है महाराज। अब आप गंगा-स्नान कर ही आवो।

महाराज : पर यह तो बता भाई ननुवा कि गंगा- स्नान के लिए किस साधन से जायें। यह बता कि हाथी पर जाना कैसा रहेगा।

ननुवा : वाह महाराज वाह। क्या शानदार सवारी का विचार आया है आपके मन में। महाराज या तो अकबर बादशाह जैसे सुल्तान ही हाथी की सवारी किया करते थे या फिर आप जैसे राजे-महाराजे ही।

महाराज : पर भाई ननुवा हाथी तो बड़ी ही धीमी चाल से चलता है और पहुंचने में काफी समय लग जायेगा।

ननुवा : यह तो सही बात है महाराज। चींटी की चाल देख लो या हाथी की चाल। महाराज कई महिने लग जायेंगे गंगाजी तक पहुंचने में।

महाराज : भाई ऊँट की सवारी कैसी रहेगी।

ननुवा : वाह महाराज वाह। क्या उम्दा सवारी का सोच आया है आपके दिमाग में। महाराज रेगिस्तानी जहाज है ऊँट। आप उस पर बैठे

नहीं कि लम्बे-लम्बे डग भरते हुए तुरन्त गंगाजी पहुँचा देगा आपको। यह तो बहुत ही बढ़िया सवारी रहेगी महाराज।

महाराज : पर भाई सुना है कि ऊँट की सवारी करने से पीठ में दर्द हो जाता है।

ननुवा : महाराज आप राजा महाराजा हैं और आप कोई ग़लत थोड़े ही सुनते हैं। आपकी बात सही है महाराज। ऊँट की सवारी से पीठ में दर्द ही क्या महाराज, पीठ दुल्हड़ हो जायेगी। और मैं कितने ही महिनों तक आपकी मालिश करता रहूं पर पीठ का दर्द कम न होगा।

महाराज : घोड़े की सवारी कैसी रहेगी?

ननुवा : घोड़े की सवारी वाह महाराज वाह। कितनी बढ़िया सवारी है घोड़े की। महाराज महाराणा प्रताप तो चेतक घोड़े पर ही सवारी किया करते थे और महाराज आप जैसे बहादुर राजाओं ने जितने भी बड़े-बड़े युद्ध जीते हैं वे घोड़े पर ही सवारी करके तो जीते हैं। सच कहता हूं महाराज, बहुत ही शानदार सवारी रहेगी।

महाराज : (ननुवा को पास में बुलाकर धीरे से) - लेकिन ननुवा एक राज की बात बताऊं ? (फिर इधर उधर देखते हुए)वह यह कि मुझे घोड़े पर बैठने का अधिक अनुभव नहीं है और सुनते हैं कि ऐड लगाते ही घोड़ा काफी तेज गति से सरपट दौड़ने लगता है। कहीं गिर तो नहीं जाऊंगा।

ननुवा : सो तो है महाराज। घोड़े पर तो एक बार बैठे नहीं कि तर-बतर हवा से बातें करने लगेगा। और यदि कहीं आप उस पर से गिर गये तो हाथ-पैर की हड्डी टूटे बिना नहीं रहेगी और हाथ पैरों के खपच्चियां बाँधे कम से कम चार-पांच महिने तक खटिया काटनी पड़ेगी महाराज।

महाराज : क्या करें भाई ननुवा? अच्छा यह बता कि पालकी की सवारी कैसी रहेगी।

ननुवा : वाह महाराज वाह इस सवारी का सुविचार आपके मन में खूब आया। उसमें तो महाराज आपको कुछ करना ही नहीं । पालकी में तो आप चाहो तो बैठकर जाओ, चाहो लेटकर अखबार पढ़ते हुए जाओ और चाहे सोते-सोते जाओ। कैसे भी जाओ महाराज, बहुत ही बढ़िया सवारी रहेगी।

महाराज : लेकिन भाई ननुवा पालकी में तो ज्यादातर दुल्हनें ही जाया करती हैं।

ननुवा : सो तो है ही महाराज। इस बात को तो सभी जानते हैं कि पालकी तो केवल दुल्हनों के लिए ही बनायी गई है। और महाराज आप जिस भी गाँव से निकलेंगे तो हल्ला मच जायेगा कि दुल्हन आ गई रे, दुल्हन आ गई रे। महाराज किसको पता होगा कि उसमें तो दुल्हन नहीं आप जैसे पराक्रमी राज बैठे हैं।

महाराज : तो फिर क्या करें भाई। अच्छा एक बात बता कि यदि गंगा-स्नान को जायें ही नहीं तो कैसा रहेगा।

ननुवा : वाह महाराज वाह। इससे अच्छा विचार तो कोई हो ही नहीं सकता। और महाराज कौनसे पुरखे आपको कहकर मरे हैं कि गंगा-स्नान करना जरूरी ही है। मैं सच कहता हूं महाराज कि सब कुछ यही है-

मन चंगा तो कठौती में नंगा

महाराज : अरे नंगा नहीं गंगा।

नाटक समाप्त

महावत

(ठाकुर साहब के दरबार का दृश्य। महाराज इधर उधर घूम रहे हैं और उनकी चापलूस नौकरानी छबीली उनके आगे पीछे चक्कर काट रही है।)

महाराज : (छबीली से) - अरे भाई छबीली!

छबीली : (ठाकुर साहब को दण्डवत करती हुई) - जी हुजूर।

महाराज : भाई कई दिनों से हमारा मन गंगा-स्नान को हो रहा है। तुम कहो तो गंगाजी नहा आयें?

छबीली : वाह महाराज वाह क्या उत्तम विचार आया है आपके मन मन्दिर में। महाराज आपके खानदान में आज तक कोई गंगाजी नहाने नहीं गया। और महाराज सच कहती हूं कि यदि आप गंगा-स्नान कर आये तो आप तो आप,आपके पुरखे तक तर जायेंगे। बड़ा ही उत्तम विचार आया है महाराज। अब आप गंगा-स्नान कर ही आवो।

महाराज : पर यह तो बता भाई छबीली,कि गंगा-स्नान के लिए जायें किस साधन से। (फिर कुछ सोचते हुए)- अच्छा यह बता कि ऊँट की सवारी कैसी रहेगी?

छबीली : वाह महाराज वाह। क्या शानदार सवारी का विचार आया है आपके मन मन्दिर में। महाराज, रेगिस्तान का जहाज है ऊँट। आप उस पर बैठे नहीं कि लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ तुरन्त गंगाजी पहुँचा देगा आपको । बहुत ही बढिया सवारी रहेगी महाराज।

महाराज : छबीली!

छबीली : जी महाराज।

महाराज : सुना है कि सदियों से ऊँट की सवारी को बहुत ही शानदार सवारी माना जाता रहा है। बड़े-बड़े धाडेती डाका डालने में ऊँटों को ही सवारी के रूप में काम में लिया करते थे।

छबीली : हाँ महाराज। ताकि चोरी करके जल्दी से खेत-खलिहान होते हुए रेगिस्तानी इलाके से शीघ्र भाग निकलें।

महाराज : और ऊँट दिखने में भी सुन्दर लगता है। ऐसा सुनते हैं कि पुराने समय में गाँवों में ऊँटों की दौड़ हुआ करती थी।

छबीली : हाँ महाराज। जिसके लिये साल भर पहले से ही तैयारियां की जाती थीं।

महाराज : तैयारियां, कैसी तैयारियां?

छबीली : महाराज, ऊँटों को बहुत अच्छी खुराक दी जाती थी और दौड़ से पहले नाई उनकी इस प्रकार सँवार किया करता था कि उनके पूरे शरीर पर फूल पत्तियां और पूँछ पर बेल के निशान उभर आते थे। और उसके बाद होती थी दौड़।

महाराज : भाई छबीली। हम तो ठिकानेदार ठाकुर रहे हैं। हमें तो उन दिनों बाहर निकलने ही कम दिया जाता था। शिक्षा-दीक्षा सब कोटडी में ही हुआ करती थी हमारी।
(फिर आह भरते हुए) -काश ! यह सब हम भी देख पाते।

छबीली : महाराज, मैंने यह सब अपनी आँखों से देखा है। आप भी मेरी नजरों से देखिए। सब कुछ दिख जायेगा आपको भी।

महाराज : अच्छा ।

छबीली : हाँ महाराज। लीजिए देखिए।
(दोनों सामने की ओर देखते हैं। थोड़ी देर देखने के पश्चात्)

छबीली : हा हा हा हा । गिर गया गिर गया।

महाराज : हाँ छबीली । देखो तो, जैसे ही ऊँट ने बैठने के लिए अपने आगे के पैर मोड़े तो सवार उस पर से धरती पर गिर गया।

छबीली : हां महाराज। आगे नहीं गिरता तो जब ऊँट झटके से पीछे की ओर बैठता तो सवार पीछे की ओर गिर पड़ता।

महाराज : अच्छा !

छबीली : हां महाराज। ऊँट की सवारी में यह आगे-पीछे होने की बात तो चलती ही रहती है।

महाराज : भाई हमने सुना है कि ऊँट की सवारी करने से पीठ में दर्द हो जाता है।

छबीली : महाराज आप राजा महाराजा हैं और आप कोई ग़लत थोड़े ही सुनते हैं। आपकी बात सही है महाराज। ऊँट की सवारी से पीठ में दर्द ही क्या महाराज ,पीठ दुल्लड हो जायेगी। और मैं कितने ही महिनों तक आपकी मालिश करती रहूं, मालिश करती रहूं, मालिश करती रहूं...

महाराज : अरे चल हठ। जब मालिश करने का वक्त आता है तो बहाने बनाकर भाग जाती है...

छबीली : महाराज मैं कह रही थी कि आपकी पीठ का दर्द कम न होगा। और महाराज मुझे भी पसन्द नहीं ऊँट की सवारी तो।

महाराज : अच्छा तुझे भी पसन्द नहीं। तो छोड़ फिर और किसी सवारी के बारे में सोचते हैं।
(दोनों सोचते हैं)

महाराज : छबीली।

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : भाई यह बता कि घोड़े की सवारी कैसी रहेगी।

छबीली : वाह महाराज वाह। क्या शानदार सवारी का विचार आया है आपके मन मन्दिर में। कितनी बढिया सवारी है घोड़े की। महाराज महाराणा प्रताप तो चेतक घोड़े पर ही सवारी किया करते थे। और महाराज आप जैसे बहादुर राजाओं ने जितने भी बड़े-बड़े युद्ध जीते हैं वे घोड़े पर ही सवारी करके तो जीते हैं। सच कहती हूं महाराज, बहुत ही शानदार सवारी रहेगी।

महाराज : (छबीली को पास में बुलाकर धीरे से) - लेकिन छबीली एक राज की बात बताऊं ?

छबीली : (उत्सुकता से) हाँ महाराज बताइये।

महाराज : (इधर उधर देखते हुए) छबीली बताना मत किसी को। मुझे घोड़े पर बैठने का अधिक अनुभव नहीं है और सुनते हैं कि

ऐड़ लगाते ही घोड़ा काफी तेज गति से सरपट दौड़ने लगता है। कहीं गिर तो नहीं जाऊंगा?

छबीली : सो तो है महाराज। घोड़े पर तो एक बार बैठे नहीं कि तर-बतर हवा से बातें करने लगेगा। और आपने अभी अभी मुझे बताया है कि (ऊंची आवाज में) आपको घोड़े पर बैठने ....

महाराज : (उसकी बात काटते हुए)- अरे जोर से क्यों चिल्ला रही है।

छबीली : (महाराज के नजदीक आकर) - महाराज, मैं कह रही थी कि आपको घोड़े पर बैठने का अनुभव है नहीं और आपने उस पर बैठकर ऐड लगायी नहीं कि घोड़ा सरपट भागने लगेगा और आप उस पर से गिरे बिना रहेंगे नहीं और यदि आप गिर गये तो हाथ-पैर की हड्डी टूटे बिना नहीं रहेगी। और यदि आपकी हड्डी पसली टूट गई तो हाथ पैरों के खपच्चियां बाँधे कम से कम चार-पाँच महिने तक खटिया काटनी पड़ेगी महाराज।

महाराज : क्या करें भाई छबीली? जायें किस साधन से।

(दोनों सोचते हैं।)

छबीली : महाराज।

महाराज : हां बोल छबीली।

छबीली : महाराज, मेरे मन में भी एक सवारी का विचार आया है।

महाराज : शाबाश । बता कौनसी सवारी का विचार आया तेरे मन में।

छबीली : महाराज आप निडर हैं, वीर हैं, पराक्रमी योद्धा हैं।

महाराज : (मूंछों पर ताव देकर ऐंठते हुए)- हां सो तो हैं ही। पर तू सवारी की बता।

छबीली : महाराज आपके खानदान में आज तक शेर की सवारी किसी ने नहीं की। आप शेर पर बैठकर जायें, आपको तुरन्त गंगाजी पहुंचा देगा।

महाराज : (डर के मारे अगल-बगल देखते हुए) - क्या शेर पर?

छबीली : हाँ महाराज, और मुझे भी शेर की सवारी बहुत पसन्द है।

महाराज : तो तुम भी चलोगी हमारे साथ?

छबीली : महाराज मैं आपके साथ अगली बार चलूंगी अब तो क्या मुझे अपने भतीजे की जळवा में पीर जाना है।

महाराज : जब तुम ही नहीं जा रही तो मैं ही तेरी पसन्द की सवारी पर मैं अकेला जाकर क्या करूंगा। चल और किसी सवारी के बारे में सोचते हैं।

(दोनों सोचते हैं)

महाराज : छबीली !

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : भाई यह बता कि हाथी पर जाना कैसा रहेगा?

छबीली : वाह महाराज वाह। क्या शानदार सवारी का विचार आया है आपके मन मन्दिर में। महाराज या तो अकबर बादशाह जैसे सुल्तान ही हाथी की सवारी किया करते थे या फिर आप जैसे राजे-महाराजे ही। और एक बात बताऊं महाराज?

महाराज : हाँ छबीली बोल।

छबीली : महाराज, हाथी पर जाना मुझे भी पसन्द है।

महाराज : तो फिर चलें हाथी पर ही?

छबीली : हाँ महाराज। हाथी पर ही चलेंगे। आप आगे बैठेंगे और मैं आपके पीछे बैठे बैठे आपको पँखा झलूंगी।

महाराज : (प्रसन्न होते हुए)- अरे जब तुम हमारे साथ रहती हो तो वैसे ही सुगन्धित बयार चलने लगती है। (फिर संभलते हुए)- दरबान!

छबीली : (महाराज को रोकते हुए)- क्या कर रहे हैं महाराज ?

महाराज : भाई महावत को आदेश भिजवाते हैं कि हमारे गंगा स्नान के लिये अपने सबसे सुन्दर हाथी को सजा धजाकर प्रस्तुत करे। तुरन्त।

छबीली : ना महाराज ना।

महाराज : क्यों छबीली अब ना ना क्यों? तुमने ही तो सलाह दी है हाथी की सवारी की।

छबीली : महाराज सो तो ठीक है।

महाराज : तो फिर गलत क्या है छबीली ?

छबीली : महाराज, हमारे हाथीखाने के हाथी ताकतवर हैं।

महाराज : हाँ हैं।

छबीली : मदमस्त हैं।

महाराज : हाँ हैं।

छबीली : बड़े-बड़े युद्ध जीतने में सक्षम हैं।

महाराज : हाँ हैं।

छबीली : गुस्ताखी माफ करें महाराज। परन्तु हम रणभूमि में नहीं अपितु गंगा स्नान के लिये जा रहे हैं और वह भी इत्मीनान से।

महाराज : तो?

छबीली : महाराज मेरा निवेदन है कि हमें राजभवन के इन हाथियों पर गंगा स्नान के लिये नहीं जाना चाहिए।

महाराज : तो फिर कौनसे हाथी पर जायें छबीली?

छबीली : महाराज ऐसे हाथी पर जो सामान्य लोगों के बीच का हो । गाँव-गाँव, खेत-खेत, शादी ब्याह, नदी तट आदि सब जगहों का जानकार हो। महाराज, तभी तो मजा आयेगा उस पर बैठकर गंगा स्नान के लिये जाने का क्योंकि उन जगहों से गुजरते हुए हमें उन सब जगहों को देखने का आनन्द मिल पायेगा। और हमारे राजभवन के ये हाथी। हमेशा युद्ध की रणभेरी की ध्वनि अपने कानों में संजोये भागने को उतावले रहते हैं।

महाराज : हाँ छबीली। हाथीपने के तो लक्षण ही नहीं हैं हमारे इन कम्बख़्त हाथियों में। (सोच में पड़ जाते हैं।)

छबीली : क्या सोच रहे हैं महाराज?

महाराज : यही छबीली कि तुमने बताया वैसा हाथी हमें कहाँ मिलेगा?

छबीली : महाराज उसे हमें खुद तलाशना पड़ेगा।

महाराज : कहाँ?

छबीली : हमें उसकी तलाश में आस-पास के गाँवों में जाना होगा। वहाँ पर लगने वाले मेलों में जाना होगा। तब जरूर मिलेगा महाराज वैसा हाथी।

महाराज : ठीक कहा छबीली तुमने। चलो चलते हैं। इस बहाने घूमना भी हो जायेगा।

छबीली : और महाराज मैं आपको अपने गाँव की वे सभी जगह दिखलाऊंगी जहाँ पर मेरा छुटपुन बीता है और हँसते खेलते हुए मैं बड़ी हुई हूं।

महाराज : भाई तुम बताती तो रहती हो हमें। चलो आज हम भी देख लेंगे तुम्हारे साथ चलकर उन सब जगहों को।

(दोनों का प्रस्थान)

महाराज : (एकाएक रुकते हुए)- अरे छबीली !

छबीली : जी महाराज।

महाराज : देखो तो। चारों ओर हरियाली ही हरियाली फैली हुई है।

छबीली : हां महाराज। और वह देखो सामने बाणगंगा नदी की पुलिया के बाईं ओर खजूरों का घना जँगल और उसके बीच में स्थित श्री सियावरजी का मन्दिर।

महाराज : वाकई बहुत ही सुरम्य स्थल है यह। कौनसा नगर है यह छबीली?

छबीली : महाराज मैड़ गाँव है यह। महाभारतकाल में राजा विराट का साला कीचक इसी स्थान पर रहता था।

महाराज : अच्छा !

छबीली : हाँ महाराज। इस गाँव की धरती पवित्र है। यहाँ पर कई ऋषि-तपस्वियों के पग पड़े हैं। इधर से होकर श्रीकृष्ण, भीष्म पितामह, कौरव-पाण्डव आदि गुजरे हैं। और मैड़ के पास ही जोधूला में महाभारत का युद्ध टालने के उद्येश्य से भारत देश के राजाओं की एक शान्ति सभा का आयोजन किया गया था जो विफल रहा।

महाराज : अरे वाह। यह गाँव तो ऐतिहासिक स्थल रहा। और बताओ छबीली यहां के बारे में। हमें बहुत उत्सुकता है सब कुछ जानने की।

छबीली : आइये महाराज। सब कुछ दिखा देती हूं आपको।

(गीत बावन कूणा)

छबीली : महाराज वह सामने खजूरों के झुरमुटों के बीच में श्री सियावरजी का मन्दिर है जहां पर महन्त श्री गणेश दास जी महाराज ने हनुमान जी महाराज की मूर्ति स्थापित की। और पहले वहां पर रामनवमी के दिन मेला भी लगा करता था।

महाराज : अच्छा !

छबीली : मेले में तरह तरह की दुकानें लगती थी और दूर-दूर से लोग आया करते थे।

महाराज : काश। हम भी यह सब देख पाते।

छबीली : महाराज आप चिन्ता न करें मैं दिखा देती हूं आपको। आइये मेरी नजरों से देखिये।

(गीत जडूला)

महाराज : छबीली। आज हिन्दुस्तान में गाँव रहे ही नहीं। परन्तु यहाँ आकर हमें लग रहा है कि हमारे अतीत के चिन्ह शेष हैं। देखो तो भोर होने लगी है और हम गाँव की सीमा में पहुँच गये हैं।

छबीली : हाँ महाराज । ग्रामवासियों की दिनचर्या प्रारम्भ हो गई। घरों से छाछ बिलौने और पशुओं के रंभाने की आवाज़ें आने लगी।

महाराज : और किसान हल-बैल और दँताली लेकर अपने-अपने खेतों की ओर जाने लगे।..... और छबीली श्री सियावरजी के मन्दिर के पास में उस ओर देखो तो दो बैल एक लम्बी सी लकड़ी से बँधे कैसे गोल-गोल चक्कर काट रहे हैं। और ये चर्रच्यूं चर्रच्यूं की आवाज कैसी है ?

छबीली : महाराज वे दो बैल उस लकड़ी की पाल से बँधे रहट चला रहे हैं और यह चर्रच्यूं चर्रच्यूं की आवाज रहट चलने की है।

महाराज : और देखो तो चिडिया कैसे बहते पानी में किल्लोलें कर रही हैं।

छबीली : आइये महाराज। नजदीक से चलकर आनन्द लेते हैं इस ग्राम्य जीवन का।

(गीत अरठ)

(गीत के अन्त में छबीली सामने का दृश्य देखने में खो जाती है।)

महाराज : छबीली !

छबीली : (हडबडाकर चेतनावस्था में लौटते हुए)- जी महाराज।

महाराज : कहां खो गई ?

छबीली : महाराज भाई-बहिन के प्यार में खो गई थी।

महाराज : हाँ छबीली। सामने का दृश्य देखकर तो मुझे भी अपनी बहिन की याद आ गई है।

छबीली : महाराज। हमारे गाँवों का जीवन है ही ऐसा कि मानव जीवन के हर पक्ष को उभारकर प्रस्तुत कर देता है।

महाराज : हाँ छबीली। अभी-अभी तो देखा ही है हमने मनुष्य के जीवन में प्रेम का पक्ष।

छबीली : महाराज यह प्रेम का एक पक्ष था। भाई-बहिन का प्यार।

महाराज : तो छबीली और क्या है यहाँ पर जो हमें देखने को मिलेगा ?

छबीली : महाराज। हमारे गाँवों में परम्परा है। सँस्कृति है। और प्रेम की सतरंगी अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है यहाँ पर।

(सहसा पर्श्व में टर्र टर्र की आवाज)

महाराज : भाई छबीली।

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : यह टर्र टर्र की आवाज कहां से आ रही है ?

छबीली : (सामने दृष्टि डालकर कुछ सोचते हुए)- महाराज सामने दो प्रेमियों के विगत की अभिव्यक्ति का स्वर है।

महाराज : छबीली। आज तुम कैसी कवियों की सी भाषा बोल रही हो जो आम आदमी की समझ में आ ही नहीं रही। और तुम कहना क्या चाहती हो ?

छबीली : महाराज गाँव के पास उस पहाड़ी तलहटी पर एक प्रेमी युगल भेड-बकरियों के रेवड़ को हाँके चला जा रहा है।

महाराज : अच्छा।

छबीली : हाँ महाराज। उन दोनों की आत्माएं प्रेम-पाश में बँधी हुई हैं। लड़की अपनी बकरियों को लड़के के हवाले करके भरतरी का मेला देखने जाना चाहती है और उसका प्रेमी भी उसके

साथ जाना चाहता है।

महाराज : अच्छा।

छबीली : हाँ महाराज। और इसी बातचीत में वे अपनी भेड़-बकरियों को हाँके चले जा रहे हैं और यह टर्र टर्र की आवाज रेवड़ को हाँकने की है।

महाराज : (सामने की ओर देखते हुए)- परन्तु मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा।

छबीली : महाराज सैंकड़ों जन्मों की धूल पड़ी है आपकी स्मृति पर। (फिर उनका हाथ पकड़कर सामने की ओर इशारा करते हुए)- आइये मेरी नजरों से देखिए।

(गीत टर्रे)

महाराज : छबीली।

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : हमें कुछ-कुछ याद आ रहा है। हमें लगता है कि इस स्थान पर हम पहले भी किसी के साथ आ चुके हैं।

छबीली : महाराज दिमाग पर और जोर डालिए और सोचिए कि आपको और क्या क्या याद आ रहा है।

महाराज : छबीली वहाँ सामने के रास्ते की डोळियों पर खड़े हुए फल्ड़े हमें धुँधले धुँधले से दिखाई दे रहे हैं और हमारे कानों में चर्रच्यूं चर्रच्यूं की हल्की हल्की सी आवाज उभर रही है।

छबीली : (उस ओर कान लगाकर सामने की ओर देखते हुए)- महाराज मुझे तो कुछ सुनाई नहीं दे रहा और न ही कुछ दिखाई दे रहा है।

महाराज : परन्तु मुझे अब साफ-साफ दिखाई देने लगा है।

छबीली : क्या दिख रहा है महाराज?

महाराज : एक प्रेमी युगल डोळी से फल्डे तोड़कर उनकी टीटोडी बना रहा है। और अब देखो तो कैसे उछलते-कूदते टीटोडी बजाते हुए चले जा रहे हैं। तुम्हें उनकी टीटोड़ी का चर्रच्यूं चर्रच्यूं सुनाई नहीं दे रहा ?

छबीली : नहीं तो।

महाराज : (उसका हाथ पकड़कर सामने की दिखाते हुए)- आओ मेरी नजरों से देखो।

(गीत टीटोडी)

छबीली : महाराज निकले थे हाथी ढूंढने और मिल गई अतीत की पगडडियां।

महाराज : हाँ छबीली सही कहा तुमने। पर हमें हाथी कहाँ मिलेगा?

छबीली : महाराज। इस मैड़ गाँव में महावतों का मोहल्ला भी है जहाँ के हाथियों की दूर-दूर तक माँग है। हम भी वहीं चलकर तलाश करते हैं एक अच्छा सा हाथी।

महाराज : छबीली।

छबीली : जी महाराज।

महाराज : वहां राह में एक आदमी बैठा हुआ सुलपी पी रहा है। उसी से चलकर पूछते हैं हाथी के बारे में।

छबीली : हाँ महाराज। (दोनों का प्रस्थान)

महाराज : (आदमी से)- ए भैया।

आदमी : बोलो भैया।

छबीली : कौन हो भाई?

आदमी : (आपत्ति के साथ ठाकुर साहब की ओर इशारा करते हुए)- तेरा भाई होगा यह।

छबीली : (झेंपते हुए)- मेरा मतलब कौन हो तुम?

आदमी : मैं एक महावत हूं। इसी गाँव का रहने वाला हूं। (फिर उसके पास जाकर उसे निहारते हुए)- पूछो पूछो। जो पूछना है पूछो। सब कुछ बताऊंगा तुम्हें तो। (छबीली को चुप देखकर)- और हाँ। पिछले साल मेरी घरवाली भी मर गई थी पर अभी तक मैंने दूसरा ब्याह नहीं किया है।

छबीली : क्या काम करते हो?

आदमी : अरे महावत हूं तो हाथी ही हाँकता हूँ।

महाराज : भाई।

महावत : (छबीली की ओर देखते हुए प्रसन्नता से)- हाँ। तुम मुझे भाई कह सकते हो पर छोटा। बोलो बोलो।

महाराज : भाई। क्या इन दिनों हाथी हाँकने का काम नहीं मिल रहा जो आराम से बैठे हुए सुलपी पी रहे हो।

महावत : अजी हमारे गाँव के हाथियों की तो बहुत माँग है। खास तौर पर बूढे बडेरे लोग गंगा स्नान के लिये ले जाते हैं उन्हें। हमारे हाथी धीरे धीरे चलते हुए आराम से ले जाते हैं बूढे यात्रियों को। मैं पहले ही आगे जाकर अपने लोगों से मिल-भेंट लेता हूं। पेड़ के नीचे थोड़ा सुस्ता लेता हूं या फिर सुलपी पी लेता हूं। और हमारा समझदार हाथी सवार को लिए धीमे-धीमे चला आता है। फिर मैं आगे.....

महाराज : (उसकी बात काटते हुए)- अरे भाई तुम्हारा हाथी सवार को लेकर कब चला था?

महावत : नौ दिन पहले।

महाराज : कितनी दूर से?

महावत : अढाई कोस दूर से। वह देखो सामने पहुँच ही गया है मेरा हाथी (जाते हुए)- सवार को उतारता हूँ। (फिर मुड़कर छबीली को गौर से देखते हुए)- तुम्हें भी चाहिए तो बताना हाथी।

महाराज : छबीली।

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : नौ दिन चले अढाई कोस।

छबीली : क्या मतलब?

महाराज : मतलब यह कि हम-तुम जवान हैं।

छबीली : (प्रसन्नता से)- बेशक महाराज।

महाराज : पर हाथी तो बहुत ही धीमी चाल से चलता है। कहां हमारी-तुम्हारी जवानी और कहाँ यह धीमी चाल से चलने वाला हाथी।

छबीली : हाँ महाराज। कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली। बहुत ही घटिया सवारी है महाराज हाथी तो।

महाराज : तो आओ फिर किसी और अच्छी सी सवारी के बारे में सोचते हैं।

दोनों : साधन साधन साधन .....(सोचते हैं)

छबीली : महाराज!

महाराज : हाँ बोल छबीली

छबीली : महाराज, मेरे मन में इस बार फिर एक सवारी का विचार आया है।

महाराज : (डरते हुए स्वगत) - इस बार कौनसा विचार आया है इस चुड़ैल के मन में। कहीं जरख- बघेरे का तो नहीं।

छबीली : क्या सोच रहे हैं महाराज।

महाराज : कुछ नहीं छबीली बताओ किस सवारी का विचार आया तुम्हारे मन में।

छबीली : महाराज भैल की सवारी बहुत ही मजेदार रहेगी।

महाराज : अच्छा। भाई मैंने तो कभी भैल ही नहीं देखी।

छबीली : महाराज तो पहले आप भैल देख ही लीजिए। उसके बाद यदि आपको भैल अच्छी लगे तब उसमें बैठकर गंगाजी जाना।

महाराज : भाई तुम्हारी बात तो ठीक है, पर आज के जमाने में भैल कहां मिलेगी।

छबीली : महाराज वह देखो मैड़ गाँव से थोड़ी पहले टीबे के नीचे कोई भैल में बैठी हुई जा रही है।

महाराज : (सामने देखते हुए खुश होकर)- हाँ जा रही है।

छबीली : चलो पास में चलकर देखते हैं।

महाराज : हाँ हाँ चलो।

(गीत भैल)

(गीत के अन्त में छबीली सामने का दृश्य देखने में खो जाती है।)

महाराज : अरी छबीली, कहां खो गई।

छबीली : (हड़बड़ाकर चेतनावस्था में आते हुए)- महाराज मैं तो उस भैल वाले में ही खो गई।

(महाराज भैल की तरफ देखते हुए खो जाते हैं)

छबीली : महाराज, कहां खो गये।

महाराज : (हड़बड़ाकर चेतनावस्था में आते हुए)- मैं उस भैल वाली में खो गया।

छबीली : पर महाराज उस भैल वाली की तो किसी से शादी हो गई।

महाराज : अच्छा। (फिर कुछ सोचकर)– छबीली!

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : छबीली हमने सोचा है कि गंगाजी नहाने भैल में बैठकर ही जायेंगे और वो भी अकेले।

छबीली : महाराज आप अकेले ही जायेंगे।

महाराज : हां भाई तीरथ स्थान पर अकेले ही जाना चाहिए।

छबीली : महाराज ठुकराणी सा से कह दूं कि आप अकेले ही जा रहे हैं और वह भी भैल में बैठकर।

महाराज : अरे नहीं रे ठुकराणी सा न नहीं। मेरा मन अब बदल गया है। भैल में नहीं जायेंगे किसी और सवारी की सोच।
(दोनों सोचते हैं)

महाराज : छबीली!

छबीली : हाँ महाराज।

महाराज : अच्छा यह बता कि पालकी की सवारी कैसी रहेगी।

छबीली : वाह महाराज वाह इस सवारी का सुविचार आपके मन में खूब आया। उसमें तो महाराज आपको कुछ करना ही नहीं । पालकी में तो आप चाहो तो बैठकर जाओ, चाहो लेटकर अखबार पढ़ते हुए जाओ और चाहे सोते–सोते जाओ। कैसे भी जाओ महाराज, बहुत ही बढ़िया सवारी रहेगी।

महाराज : लेकिन भाई छबीली। सुना है कि पालकी में तो ज्यादातर दुल्हनें ही जाया करती हैं।

छबीली : सो तो है ही महाराज। इस बात को तो सभी जानते हैं कि पालकी तो केवल दुल्हनों के लिए ही बनायी गई है। और महाराज आप जिस भी गाँव से निकलेंगे तो हल्ला मच जायेगा कि दुल्हन आ गई रे, दुल्हन आ गई रे। महाराज किसको पता होगा कि उसमें तो दुल्हन नहीं आप जैसे मूंछों वाले पराक्रमी राजा बैठे हैं।

महाराज : तो फिर पालकी में नहीं जायेंगे हम। चलो और किसी सवारी के बारे में सोचते हैं।

छबीली : हां महाराज।
(दोनों सोचते हैं)

महाराज : छबीली !

छबीली : जी महाराज।

महाराज : भाई यह पवित्र स्थान बाणगंगा नदी के किनारे कैसी मारापीटी हो रही है?

छबीली : (सामने की ओर देखते हुए)– महाराज महाभारत की घटनाएं करवट ले रही हैं।

महाराज : क्या मतलब?

छबीली : महाराज यह मैड़ गाँव कीचक के वंशजों का है।

महाराज : वंशज थोडे ही हैं। तुमने तो बताया था कि कीचक यहां का निवासी था।

छबीली : क्षमा करें महाराज जरा जुबान फिसल गई थी। मेरा मतलब है कि मैड़ गाँव, बाणगंगा नदी, इन सब पर महाभारतकालीन घटनाओं का पूरा–पूरा असर है।

महाराज : क्या मतलब?

छबीली : मतलब यह महाराज कि जैसे पहले कौरव–पाण्डव नीति–अनीति के दो पक्ष थे वैसे ही आज भी इस गाँव में नीति–अनीति की भावनाधारी कुछ परिवार हैं और दुष्ट प्रकृति के लोग सज्जन पुरुषों को आज भी प्रताड़ित करते हैं। और सियावरजी के मन्दिर के पास मारा–पीटी का यह दृश्य ऐसी ही एक घटना है।

महाराज : हाँ छबीली। देखो तो एक सीधे सादे से हल चला रहे एक ग्रामीण को कुछ लट्ठधारी लोग कैसे धमका रहे हैं।

छबीली : हाँ महाराज। और अब देखो तो सारे के सारे मिलकर उस खेत के मालिक को पीटने लगे हैं।

महाराज : और इस सारे उपक्रम में देखो तो वह औरत कैसे निर्लज्ज होकर उस बेचारे पर गालियों की बौछार कर रही है। माजरा क्या है यह?

छबीली : महाराज, यह बाणगँगा नदी तट के एक परिवार की कथा है।

महाराज : कथा, कैसी कथा ?

छबीली : महाराज। नदी तट के एक मन्दिर में बहुत ही दयालु एवं ग्रहस्थ सन्त हुए थे जिनका लगभग तीस वर्ष पूर्व देहान्त हो गया।

महाराज : अच्छा !

छबीली : हाँ महाराज। उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने पुत्रों को बराबर-बराबर ज़मीन दे दी । परन्तु उनका एक पुत्र तो अपनी ज़मीन का हिस्सा छोडकर आगे अध्ययन करने शहर चला गया और पढ़-लिखकर वहीं स्थापित हो गया।

महाराज : और उनके बाकी पुत्र ?

छबीली : महाराज उनके शेष पुत्र वहीं रहे और उन पर कीचक के संस्कार पड़ गये शायद। अत: चोरी-बदमाशी, मारापीटी आदि के अभ्यस्त हो गये।

महाराज : और उनका प्रवासी पुत्र ?

छबीली : महाराज वह अपने पिता की तरह ही दयालु एवं परोपकारी निकला।

महाराज : कहां है अब वह ?

छबीली : महाराज वह सामने जो पिट रहा है वही वह योग्य एवं परोपकारी युवक है और जो उसकी पिटाई कर रहे हैं वे महात्मा जी के दुष्ट पुत्र, पौत्र एवं पौत्र-पत्नियां हैं।

महाराज : और जो हल चला रहा वह ?

छबीली : वह महात्मा जी के योग्य पुत्र का किसान है।

महाराज : पर ये उन दोनों बेचारों को पीट क्यों रहे हैं ?

छबीली : महाराज अपने पिता की मृत्यु के बाद उनका यह योग्य पुत्र लगभग तीस वर्ष गाँव से बाहर रहा और इस अवधि में उसकी ज़मीन का उपयोग उसके दुष्ट भाई-भतीजों ने किया। आज जब वह अपनी ज़मीन पर खेती करवाना चाहता है तो वे सभी उसे उसके हक़ से बेदखल करना चाहते हैं।

महाराज : चलो आगे चलकर देखते हैं।

(गीत कोनै चालबाद्यां हळां नै)

महाराज : छबीली ?

छबीली : जी महाराज ।

महाराज : यह सामने का दृश्य देखकर तो हमारा मन मलिन हो गया है।

छबीली : हाँ महाराज मेरी आत्मा भी दुखी है।

महाराज : आज स्वार्थवश नारी भी कितनी बदल गई है। कभी-कभी स्वार्थवश वह अपनी छवि को कैसे धूमिल कर सकती है अभी-अभी सामने देखा है हमने। (छबीली चुप रहती है)

महाराज : छबीली !

छबीली : जी महाराज ।

महाराज : मैड़ की यह बाणगंगा नदी तो एक बहुत ही पवित्र तीर्थस्थल माना जाता रहा है।

छबीली : जी महाराज। सैंकडों कोस दूर-दूर तक के तीर्थ यात्री अपने पाप धोने यहाँ आते हैं और उतरते वैशाख की पूर्णिमा को बाणगंगा का और प्रतिवर्ष रामनवमी के दिन श्री सियावर हनुमान जी का मेला भी लगता है ।

महाराज : छबीली , आज अब जब ऐसे-ऐसे पवित्र स्थानों पर भी अनैतिक कार्य होने लगे हैं तो गंगा स्नान के लिए जाने का औचित्य ही क्या है ?

छबीली : जी मैं कुछ समझी नहीं।

महाराज : अच्छा एक बात बता ?

छबीली : क्या महाराज ?

महाराज : यदि गंगा स्नान करने जायें ही नहीं तो कैसा रहे ?

छबीली : वाह महाराज वाह। इससे अच्छा विचार तो कोई हो ही नहीं सकता। और महाराज कौनसे आपके पुरखे यह कहकर मरे हैं कि आपको गंगा स्नान करना जरूरी ही है। मैं तो सच कहती हूं महाराज सब कुछ यहीं है- मन चंगा तो कठौती में नंगा।

महाराज : अरे नंगा नहीं गंगा।

टिप्पणी : सभी गीत पुस्तक 'मेरे गीत दिखायें गाँव : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, प्रकाशक त्रिवेणी कला संगम, जयपुर से लिए गये हैं। '

नाटक समाप्त

देख जात के ठाठ

(शहर के मध्य में स्थित टाउन हॉल के सामने का दृश्य। आज यहाँ पर किसी नाटक का शो होने वाला है। शो का समय सायंकाल 6.30 बजे का है। अभी शाम के 6 बजकर पन्द्रह मिनट हुए हैं परन्तु दर्शकों के नाम पर शो में काम करने वाले कलाकारों के रिश्तेदारों, मित्रों एवं यहाँ पर काम कर रहे कलाकार, कुल लगभग चालीस से अधिक की संख्या में न होंगे। नाटक के कलाकार स्टेज के पीछे की तरफ अपनी तैयारी में व्यस्त हैं। यह कार्यक्रम शहर की एक नवसृजित संस्था 'प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र' की ओर से आयोजित किया गया है। टाउन हॉल के सामने लम्बा-चौड़ा गोलाकार मैदान है जिसकी हरी-हरी दूब में आठ-दस पत्रकार बैठे हुए आपस में बातें कर रहे हैं। इन सभी पत्रकारों के गले में 'जात' का परिचय पत्र टंगा है । उनके पास में ही कुछ नवयुवक बैठे हैं जो शायद नाटक का शो देखने आये हुए हैं।)

पत्रकार 1 : (अपने साथियों से)-भाई आज शहर में कार्यक्रमों की भरमार है और इनका शो तो अभी शुरू होने वाला नहीं लगता। कैसे कवर करेंगे सबको?

पत्रकार 2 : बस यही तो एक बड़ी कमी है साले इन थियेटर वालों में कि टाईम पर शो शुरू करते ही नहीं।

एक नवयुवक: (आपत्ति करते हुए)- भाई साहब, इसमें थियेटर वाले क्या करेंगे। दर्शक समय पर आते ही नहीं। जनता में थियेटर के प्रति जागरुकता ही नहीं है।

पत्रकार 1 : (अपने साथियों से)-अरे,यह तो हमें ही नसीहत देने लगा।

पत्रकार 2 : शायद यह नहीं जानता कि हम लोग कौन हैं।

पत्रकार 1 : नया-नया आया है शायद।

पत्रकार 2 : (उस नवयुवक से)- क्यों भाई, क्या काम करते हैं आप?

नवयुवक : कुछ नहीं, बेरोजगार हूं।

पत्रकार 1 : इसीलिए नाटक देखने चले आये।

नवयुवक : (आपत्ति करते हुए) - क्या मतलब?

पत्रकार 2 : (उसे प्रेम से समझाते हुए) - मतलब यह भाईसाहब, कि अभी आप ही तो कह रहे थे कि दर्शकों में जागरुकता नहीं है थियेटर के प्रति, इसलिए नाटक देखने नहीं आते।

पत्रकार 1 : कैसे शुरु करें समय पर बेचारे।

नवयुवक : यह तो मैं अब भी कहता हूं।

पत्रकार 2 : बुरा न मानें तो एक बात कहूं।

नवयुवक : कहो।

पत्रकार 1 : भाईसाहब, अब सब लोग आप जैसे बेरोजगार तो हैं नहीं जो चलें आयें यहां पर नाटक देखने। आजकल सरकारी नौकरियां भी नहीं मिलती जो तीन बजे सीट छोड़कर घर चले जायं और घर से पाँच बजे रवाना होकर टहलते- टहलते यहाँ आ जायं नाटक देखने।

पत्रकार 2 : हाँ भाई, बेरोजगारी के इस युग में प्राईवेट नौकरियां ही मिलती हैं या फिर कोई धंधा करना पड़ता है।

पत्रकार 1 : जहाँ पर सुबह नौ बजे से रात के नौ बजे तक कोल्हू के बैल की तरह पिले रहना पड़ता है । ख़ैर, बुरा नहीं मानें तो एक बात पूछूं ।

नवयुवक : हाँ हाँ पूछो।

पत्रकार 2 : कितने पढ़े लिखे हैं आप?

नवयुवक : संस्कृत में एम.ए. किया है फर्स्ट डिवीजन से। फिर भी नौकरी नहीं मिली।

पत्रकार 1 : हमारे यहां संस्कृत, संस्कृति और साहित्य की वैल्यू ही कहाँ है आज के इस प्रगतिशील युग में।

पत्रकार 2 : अजी भाईसाहब भी तो इसीलिए देखने आ गये हैं नाटक।

पत्रकार 1 : हाँ भाई थियेटर वालों में यह तो कौशल है कि बेचारे बेरोजगारों को फँसा लाते हैं अपने जाल में, किसी को कलाकार बनाने का ख़्वाब दिखाकर तो किसी को दर्शक बनाकर।

पत्रकार 2 : पर साहब फिर भी कलाकार तो भूखा ही मरेगा हिन्दुस्तान में। क्या मिलता है थियेटर करने से।

(सब पत्रकार हँसते हैं।)

पत्रकार 1 : (सबको चुप होने का इशारा करते हुए)- भाई साहब!

नवयुवक : हाँ।

पत्रकार 1 : एक बात बोलूं?

नवयुवक : कहो।

पत्रकार 1 : अपना स्वयं का कोई काम क्यों नहीं शुरु कर देते आप?

नवयुवक : काम शुरु करने के लिये पैसे चाहिएं। मेरा मतलब पूँजी, वो कहाँ से लाऊंगा मैं?

पत्रकार 2 : भाई और भी कई ऐसे काम हैं जो पूँजी लगाये बिना भी शुरु किये जा सकते हैं और आप धीरे-धीरे आगे बढ़ सकते हैं।

(उसकी बात सुनकर एक दो और नवयुवक पास में आ जाते हैं।)

नवयुवक : ऐसा कौनसा काम है जो बिना पैसों के शुरु किया जा सकता है?

पत्रकार 1 : (उसे पास आने का संकेत करते हुए)- भैया किसी हल्के-फुल्के और चमत्कारिक नाम से किसी अख़बार का रजिस्ट्रेशन करा लें, जैसे 'सुबह का करन्ट', 'नादान बिजली', ऐसा कोई भी नाम।

नवयुवक : पर साहब, पहले ही इतने अख़बार निकल रहे हैं कि अब आगे कोई गुंजाईश ही नहीं बची। गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले में पान-बीड़ी का सामान तक बेचने वालों ने किसी न किसी अख़बार का रजिस्ट्रेशन करा रखा है।

पत्रकार 2 : भाई, यदि जीवन में निराशावादी रहोगे तो आगे नहीं बढ़ सकोगे।

पत्रकार 1 : मैं 'डवलपमेंट टाईम्स ' अख़बार की संवाददाता हूं।

नवयुवक : अब टाईम्स नाम से इतने अख़बार हो गये हैं कि कन्फ्यूजन सा होने लगा है इस नाम से।

पत्रकार 2 : अरे भाई, 'डवलपमेंट टाईम्स' तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का अख़बार है। और यह तो तुम्हारा सौभग्य है कि इतने बड़े अख़बार की वरिष्ठ संवाददाता से तुम्हे प्रत्यक्ष में मिलने का मौका मिला है।

पत्रकार 1 : भाई, किसी भी क्षेत्र में डवलपमेंट डवलपमेंट के कारण ही होता है।

नवयुवक : बात कुछ समझ में नहीं आई।

पत्रकार 2 : भाई एक बात बताओ।

नवयुवक : क्या?

पत्रकार 2 : कोई यदि किसी नई कॉलोनी में परचून की दुकान खोलता है तो उसे बड़ा संघर्ष करना पड़ता है, बड़ी मुश्किल से बँधते हैं ग्राहक और मुनाफा भी कम रहता है, बोलो है कि नहीं?

नवयुवक : हाँ यह बात तो ठीक है जी आपकी। मैंने भी एक नई कॉलोनी में एक ऐसी ही दुकान खोली थी पर उधारी में पैसा अटक गया और फिर कुछ ही दिनों में बन्द करनी पड़ी वह दुकान।

पत्रकार 1 : पर भाई, यदि यही दुकान किसी कॉमर्शियल कॉम्प्लैक्स में होती तो बिक्री भी अधिक होती और मुनाफा भी बढ़ता।

नवयुवक : कैसे?

पत्रकार 1 : भाई ग्राहक अपने आप खिंचे चले आते हैं बड़ी-बड़ी दुकानों में, और वहां पर लोग बाग भाव ताव भी कम करते हैं। सामान की भी पहले से ही पैकिंग कर ली गई होती है। ग्राहक आया पैसे दिये और पैक किया हुआ सामान ले गया , बस। आज तो मिट्टी भी पहले से ही पैक करके रखी रहती है बड़े-बड़े एयरकन्डीसन्ड शो रूमों में।

नवयुवक : हां जी, अब आयी बात समझ में। अर्थशास्त्र की किताब में भी यही पढ़ा था कि विकास में ही विकास होता है।

पत्रकार 2 : आ गई न बात समझ में?

नवयुवक : चलो अख़बार का रजिस्ट्रेशन कराने की सोच भी लें, परन्तु हम तो बेरोजगार हैं। पूँजी कहां से आयेगी अख़बार चलाने के लिये?

पत्रकार 1 : अरे भाई, पूँजी नहीं है तो क्या हुआ। 'जात' के सदस्य बन जाओ।

नवयुवक : जात की सदस्यता? कैसी बात कर रही हैं बहिन जी? जात की भी कोई सदस्यता होती है। जात विशेष में तो आदमी जन्म लेता है। उसकी सदस्यता कैसी। और फिर जात के बारे में तो केवल बैकवर्ड लोग ही जानते हैं, रही ही कहाँ आज जात। मुझे आपकी जात की सदस्यता वाली बात समझ में नहीं आयी।

पत्रकार 2 : अरे भाई, 'जात' वह नहीं है जो तुम समझ रहे हो। आज पत्रकारिता इतनी बैकवर्ड थोड़े ही रही है।

नवयुवक : तो?

पत्रकार 1 : अरे भाई 'जात' हम पत्रकारों के एक संगठन का संक्षिप्त नाम है जिसका मतलब है जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ थार। JAT . इस संगठन की इतनी प्रतिष्ठा है कि आज हर पत्रकार इसका सदस्य बनना चाहता है।

पत्रकार 2 : (अपना परिचय पत्र दिखाते हुए)- यह देखो हमारी सदस्यता का कार्ड।

नवयुवक : परन्तु अख़बार का रजिस्ट्रेशन कराने के लिये ही तो पूँजी की आवश्यकता होगी और रजिस्ट्रेशन से पहले हम आपकी इस 'जात' के सदस्य कैसे बन सकते हैं?

पत्रकार 1 : अरे भाई, हर चीज का तोड़ है आज की इस चमत्कारी दुनिया में। और इस जोड़-तोड़ में तो भगवान भी चक्कर खा जायं।

नवयुवक : कैसे कैसे, बताओ।

पत्रकार 2 : भाई अख़बार के रजिस्ट्रेशन से पूर्व ही आप 'जात' की सदस्यता का अनडेटेड फार्म भर दें।

पत्रकार 1 : फिर अख़बार के रजिस्ट्रेशन आदि में जो भी खर्चा लगेगा उसकी व्यवस्था 'जात' द्वारा की जायेगी।

(उन्हें चिन्तित मुद्रा में देखकर)- मेरा मतलब है कि एक प्रकार से आपके रजिस्ट्रेशन का 'जात' द्वारा स्पॉन्सर कर दिया जायेगा।

नवयुवक : पर आपकी इस स्पॉन्सरशिप के कर्जे को हम चुकायेंगे कैसे?

पत्रकार 2 : (रहस्यमयी मुस्कान के साथ)- तुम इसकी चिन्ता छोड़ो। फायदे ही फायदे हैं जात की सदस्यता लेने के।

पत्रकार 1 : इतने फायदे कि तुम लोग सोच भी नहीं सकते।

नवयुवक : हमें थोड़ा समझाओ तो। हम 'जात' के सदस्य जो बनने जा रहे हैं।

पत्रकार 2 : देखो, अख़बार निकालना तो तुम्हारा एक दिखावटी काम होगा। तुम क्या समझते हो कि अख़बार बेचकर और उससे मुनाफा कमाकर अख़बार वाले अपने परिवार का पेट पाल सकते हैं?

पत्रकार 1 : अख़बार की आड में अन्य कई प्रकार के कार्यों से तुम्हारी कमाई होगी।

पत्रकार 2 : और तुम्हारी उस कमाई पर तुम्हें 'जात' की ओर से पचास प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

नवयुवक : (आश्चर्य से)- क्या! हमारी कमाई पर हमें ही कमीशन दिया जायेगा?

पत्रकार 1 : भाई, सहकारिता का नया फार्मूला है यह, जो किसी भी किताब में पढ़ने को नहीं मिलेगा।

पत्रकार 2 : व्यावहारिक ज्ञान। थ्योरी कुछ और होती है और प्रैक्टीकल कुछ और। पर आज के युग में विजयश्री व्यावहारिकता से ही मिलती है।

नवयुवक : जी मैं कुछ भी नहीं समझा।

पत्रकार 1 : भाई आज के युग में पत्रकारिता का हर जगह बोलबाला है। राशन की दुकान, गैस एजेन्सी, पैट्रोल एजेन्सी, एज्यूकेशन फील्ड, बैंकिंग फील्ड, थाना, तहसील, कचहरी । अरे भाई कहीं पर भी और किसी भी प्रकार का कार्य हो..

पत्रकार 2 : हम पत्रकारों का काम प्रायरटी पर होता है जिसका लेंगे हम सेवा शुल्क और उसका पचास प्रतिशत मिलेगा तुमको। बोलो आई कि नहीं बात समझ में?

नवयुवक : समझा, समझा। सब कुछ समझा।

पत्रकार 1 : 'जात' की स्पॉन्सरशिप राशि को चुकता कर पाओगे?

नवयुवक : जरूर, जरूर। (फिर खुशी से स्वगत) – तो क्या मेरा भी अख़बार होगा।

सब पत्रकार : हां होगा।

नवयुवक : प्रैस होगी?

सब पत्रकार : हां होगी।

नवयुवक : चेम्बर होगा?

पत्रकार 1 : हां सब कुछ होगा, पर धीरे धीरे।

पत्रकार 2 : पहले तुम त्रैमासिक पत्र निकालना।

पत्रकार 1 : उसकी भी केवल सौ-पचास प्रतियां ही।

पत्रकार 2 : उन्हें केवल सरकारी विभागों को डिस्पेच करना जहां से आगे चलकर आपको विज्ञापन मिलेंगे।

पत्रकार 1 : फिर मासिक और फिर दैनिक। धीरे-धीरे।

पत्रकार 2 : और जोड़-तोड़ से पोस्टल नम्बर भी मिल जायेगा जिससे तुम अख़बार बिना डाक खर्च के भिजवा सकोगे।

पत्रकार 1 : और हां, उसमें लपेटकर तुम अपनी अन्य चिट्ठियां भी बिना डाक खर्च दिये ही भिजवा सकते हो।

पत्रकार 2 : पोस्ट ऑफिस वाले भी चक्कर खा जायेंगे आज की हमारी इस पत्रकारिता के करिश्मे से तो।

पत्रकार 1 : चलो-चलो जल्दी अन्दर चलो कार्यक्रम कवर करना है।

पत्रकार 2 : चलो-चलो।

(सभी का प्रस्थान। दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(टाउन हॉल का मुख्य सभागृह। कुल पाँच सौ कुर्सियों में से लगभग पन्द्रह बीस कुर्सियों पर दर्शकों के नाम पर कुछ नवयुवक बैठे हैं। कुर्सियों की अग्र पंक्ति में एक परिवार के आठ-दस सदस्य बैठे हैं जो शायद नाटक में काम करने वाले किसी कलाकार के पारिवारिक सदस्य हैं। दो तीन बच्चे सभागृह के खालीपन का आनन्द ले रहे हैं। कभी वे एक पंक्ति विशेष की कुर्सियों पर बैठते

हैं तो फिर वहां से उठकर दूसरी पंक्ति की कुर्सियों पर जा बैठते हैं। सामने स्टेज पर पर्दा गिरा हुआ है। उद्घोषिका मंच के बायीं ओर रखे माईक में दर्शकों से कई बार आसन ग्रहण करने का अनुरोध कर चुकी है। पत्रकारों के साथ कुछ दर्शकों के सभागृह में प्रवेश करते ही मंच पर खुसर-फुसर होने लगती है।)

कोमल : (बाहर से भागकर आते हुऐ)- प्रैस वाले आ गये बाहर।

सचिव : (इलेक्ट्रिक बोर्ड कन्ट्रोलर को लक्ष्य करते हुए)- ललित जी पर्दा खोल दें नाटक शुरू करना पड़ेगा।

रूप किशोर : हां, पहले ही काफी विलम्ब हो गया है, कहीं उल्टा-सीधा न छाप दें आपके शो के बारे में।

संस्था सचिव : हां भाई, नई-नई संस्था है हमारी और स्थापना के बाद का पहला ही कार्यक्रम है हमारा यहां पर। (फिर सब कलाकारों से)- दोस्तो, मेरी ओर से शो की सफलता की अग्रिम शुभकामनाएं।

(कलाकारों का एक-एक करके प्रस्थान। मंच का प्रकाश धीमा-धीमा होते हुए बुझ जाता है और पुनः प्रकाश आने से मंच का दृश्य उभर आता है)

(यहां पर किसी नृत्य या नाटक का कोई दृश्य बताना है)

पत्रकार 1 : (दर्शकों की ओर देखते हुए)- दर्शक ही नहीं हैं।

पत्रकार 2 : और देखो कलाकारों का अभिनय, दर्शकों के बिना कैसे बैठा जा रहा है।

पत्रकार 1 : हां भाई, घोड़ी के पैर बाजे पर ही तो उठते हैं।

पत्रकार 2 : अच्छा मौका है यह हमारे लिए।

पत्रकार 1 : कैसे?

पत्रकार 2 : आओ मेरे साथ।

पत्रकार 1 : लेकिन इस्माइल साहब का तो आने देते।

पत्रकार 2 : आ जायेंगे थोड़ी देर में।

पत्रकार 1 : आपको पता है कहां गये हैं?

पत्रकार 2 : अजी किसी वी.आई.पी. से बात करने गये हैं बाहर।

पत्रकार 1 : क्या बात?

पत्रकार 2 : हम सबके फायदे का एक कॉन्ट्रैक्ट हथियाने गये हैं

पत्रकार 1 : चलो चलो।

(सब पत्रकार उसका अनुसरण करते हुए सभागृह के दरवाज़े से बाहर मुख्य गैलरी में निकल जाते हैं और उसमें से स्टेज पर प्रविष्ट हो जाते हैं। नाटक का पहला दृश्य चालू है। पत्रकारों दूरदर्शन एवं निजी चैनलों के कैमरामैनों को देखकर मंच पर अफरातफरी मच जाती है। मंच का एक कर्मचारी पत्रकारों की अगवानी करते हुए)–

रूपकिशोर : आइये साहब लोगो आइये, स्वागत है आपका।

पत्रकार 1 : कहो रूपकिशोर जी, कौन कर रहा है आज का यह शो?

रूपकिशोर : एक नई संस्था है प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र।

पत्रकार 2 : कौन हैं उसके कर्ता धर्ता?

रूपकिशोर : रीना जी हैं। वैसे तो रेलवे में नौकरी करती हैं पर थियेटर का शौक है उन्हें, इसीलिए थोड़े दिन पहले एक नई संस्था बनाई है।

पत्रकार 2 : जरा मिलवाइये तो उनसे। भाई उनकी रेल्वे में नौकरी है और यदि हमसे तालमेल रहा तो पटरी पर ठीक से चलती रहेगी उनके शौक की गाड़ी।

(रूपकिशोर जी भागकर पास ही खड़ी एक महिला के पास जाते हैं।)

रूपकिशोर : रीना जी। पत्रकार आये हैं।

रीना जी : रूप जी, मैं शो की व्यवस्थाओं को देख ही हूं। बाद में मिलूंगी।

रूपकिशोर : (धीमे स्वर में) – क्या कह रही हैं रीना जी। और वह भी पत्रकारों के लिए। जुल्म हो जायेगा।

रीना जी : भाई ऐसी कौनसी ग़लत बात कह दी मैंने जिससे जुल्म हो जायेगा।

रूपकिशोर : आप बड़ी भोली हैं और इस फील्ड में नई हैं अभी, तभी ऐसा कह रही हैं।

रीना जी : भाई कैसे?

रूपकिशोर : देखिये आज के युग में पत्रकारिता का बड़ा महत्व है।

रीना जी : हां भई महत्व है। यह तो हम भी पढ़ते रहे हैं कि आज पत्रकारिता की वजह से पीड़ितों को न्याय मिलने लगा है, लोगबाग अपनी तकलीफें समाचार पत्रों के माध्यम से उजागर कर सकते हैं।

रूपकिशोर : जी जी। किताबों में तो ऐसा ही पढ़ा होगा आपने।

रीना जी : क्या मतलब?

रूपकिशोर : मतलब यह रीना जी कि किताबों में तो बहुत सारी बातें लिखी रहती हैं पर व्यवहार में , मेरा मतलब प्रैक्टीकल में वह सब होता नहीं है।

रीना जी : मैं कुछ समझी नहीं।

रूपकिशोर : अब बताइये कि पुलिस के बारे में आपकी क्या राय है, मेरा मतलब क्या वे लोग ईमानदारी से जनता की हिफाजत करते हैं? क्या वे कानून को लागू करने में मदद करते हैं और क्या खुद कानून की पालना करते हैं?

रीना जी : मेरी पुलिस के बारे में तो अच्छी राय नहीं है रूपकिशोर जी।

रूपकिशोर : क्यों ?

रीना जी : अजी परसों की ही बात है, मैं अपने स्कूटर पर जा रही थी। तभी एक पुलिस वाले ने एकाएक रोक लिया और कहने लगा कि काग़जात निकालो। हमने कहा कि भाई हम सही साईड़ में चल रहे हैं और कोई ग़लती नहीं की, फिर काहे के काग़जात।

रूपकिशोर : फिर ?

रीना जी : भाई हमें ऑफिस के लिये देर हो रही थी पर उस सिपाही ने हमारा स्कूटर एक तरफ खड़ा करवा लिया और कहने लगा कि बहिन जी आपने कोई ग़लती नहीं की और असल में तो ग़लती मेरी ही है।

रूपकिशोर : उसने ऐसा कहा .....

रीना जी : (बीच में बात काटते हुए)– सुनिये तो एक मजेदार बात।

रूपकिशोर : कौनसी बात?

रीना जी : अजी साहब वह कहने लगा कि ग़लती उसी की थी जो पुलिस में भर्ती हुआ।

रूपकिशोर : अजी पुलिस में भर्ती होने में ग़लती काहे की, यह तो बहुत ही समझदारी का काम किया उसने। आज तो पुलिस की नौकरी में नित्य सोना- चाँदी बरसता है। अच्छे-अच्छे थानों में पोस्टिंग के लिये तो ऊंची ऊंची बोलियां लगती हैं और लोगबाग लाखों रूपये तक देने को तैयार रहते हैं।

रीना जी : ऐसा ही कुछ वह पुलिस वाला भी कह रहा था।

रूपकिशोर : क्या कह रहा था?

रीना जी : कहने लगा कि हमारे इंचार्ज साहब को सितम्बर छमाही में टार्गेट मिला है।

रूपकिशोर : काहे का टार्गेट जी?

रीना जी : अजी चालान करने का टार्गेट। और वह कहने लगा कि साहब ग़लती होने पर ही चालान होता है यह आपकी ग़लतफ़हमी है। असल में मुझे तो इंचार्ज साहब द्वारा दिये गये 'सब टार्गेट' के हिसाब से चालान करना ही पड़ता है।

रूपकिशोर : फिर क्या हुआ?

रीना जी : होना क्या था। मुझे ऑफिस पहुंचने की जल्दी थी अत: मैंने उसकी बात मान ली।

रूपकिशोर : पैसे ले लिये उसने आपसे?

रीना जी : उसने नहीं लिये जी। कहने लगा कि बहिन जी सामने जो पान की थड़ी है वहां दे दो सौ रूपये उसके हमारा खाता चलता है। (फिर पीड़ित स्वर में) - बहुत ही खराब होते हैं रूपजी ये पुलिस वाले। बेचारा सामान्य आदमी तो डरता है इन बदमाशों से।

रूपकिशोर : (हँसते हुए व्यंग्य से) - और ये बदमाश किससे डरते हैं, पता है आपको?

रीना जी : ऐसा कौन बलशाली है जी जिससे ये बदमाश भी डरते हैं?

रूपकिशोर : पत्रकार जी, पत्रकार। ये पत्रकार लोग जब पुलिस थानों और उनके मुख्यालयों में जाते हैं तो वहाँ के अधिकारी तक इन्हें देखकर थर-थर काँपने लगते हैं।

रीना जी : मैं समझी नहीं जी कुछ। क्यों काँपने लगेंगे पुलिस वाले उन्हें देखकर?

रूपकिशोर : अजी पुलिस वाले अपने टार्गेट पूरे करने के लिये आप जैसे कई निर्दोष लोगों को लॉकअप में बन्द कर देते हैं। अब यदि ऐसी बातों को पत्रकार लोग अपने-अपने अखबारों में सही-सही छाप देंगे तो एक्शन नहीं होगा बेचारे उन पुलिस वालों के ख़िलाफ़?

(आशीष को चिन्तित मुद्रा में देखकर)- तो आपके ये महाबलशाली पुलिस वाले पत्रकारों की आवभगत करते हैं, उन्हें दान-दक्षिणा देते हैं और आज की पत्रकारिता का करिश्मा तो देखिए ख़बरें यों छपती हैं-'फलां थाने के जवानों ने फलां सिंह साहब के नेतृत्व में फलां शहर में हुए बम विस्फोटों के प्रमुख सरगना फलां शेख मोहम्मद को धर दबोचा।'

रीना जी : अरे रे रे राम राम राम राम।

रूपकिशोर : (उसी प्रवाह में)- और पत्रकार ही वे स्तम्भ हैं जो इस ख़बर को चटनी, अचार और गर्म मसाला मिलाकर इस प्रकार छापते हैं, अपने विशेष कॉलम में पुलिस वालों की बहादुरी का बखान करते हैं कि उन पुलिस वालों को पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को ईनाम मिलते हैं और पदोन्नति हो जाती है उनकी।

रीना जी : यह तो घोर अन्याय है साहब। और मेरे अब भी यह बात समझ में नहीं आयी कि पुलिस वाले बेचारे किसी निर्दोष को किसी और के अपराध में पकड़कर क्यों बन्द कर देते हैं।

रूपकिशोर : अजी पुलिस वाले भी क्या करें बचारे। उन्हें भी अपनी नौकरी बचानी होती है। अपने बाल बच्चों का पेट भरना पड़ता है उन्हें भी।

रीना जी : तो भरें पेट अपने बाल बच्चों का, इससे निर्दोष लोगों को पकड़ने का क्या ताल्लुक ?

रूपकिशोर : अजी वही आ गई न बात थ्योरी और प्रैक्टीकल की।

रीना जी : कैसी थ्योरी और कैसा प्रैक्टिकल साहब ?

रूपकिशोर : तो आप मुझे यह बताइये कि ऐसे बड़े-बड़े अपराधी कोई सीधे सादे शरीफ़ हिन्दुस्तानी हैं जिन्हें किसी भी अपराध में गिरफ़्तार करके लॉकअप में बन्द कर दिया जाय ?

रीना जी : तो क्या शरीफ़ और सीधे सादे लोगों को इसलिए लॉकअप में बन्द कर दिया जाता है ?

रूपकिशोर : हाँ जी, अपने को दिये हुए टारगेट को पूरा करने के लिये, अपनी नौकरी बचाने के लिये करते हैं बेचारे पुलिस वाले ऐसा।

रीना जी : तो उन्हें पुलिस के इन दुष्कर्मों से छुटकारा नहीं मिलता ?

रूपकिशोर : छुटकारा तो मिलता है जी, परन्तु वास्तविक अपराधियों को। ये पत्रकार लोग अपने कवरेज से लॉकअप में बन्द इन शरीफ़ लोगों को अपराधी सिद्ध कर देते हैं और अपराधी साफ़ बच निकलते हैं। यही व्यावहारिकता भी है रीना जी, क्योंकि प्रतिभाओं का जेल में बन्द रहना उचित थोड़े ही है। और ये साधारण से शरीफ़ आदमी जेल के बाहर रहकर भी क्या कर लेंगे। दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करते-करते ही अपना जीवन बर्बाद कर देंगे। फिर समाज और देश के लिये क्या कर पायेंगे, देश का विकास कैसे होगा ?

(फिर उसे समझाते हुए सहानुभूति के स्वर में)-

खैर, आप एक संवेदनशील कलाकार हैं क्यों इस झमेले में पड़ती हैं।

(दोनों पत्रकारों के पास पहुंच जाते हैं। रूपकिशोर रीना जी को पत्रकारों से मिलवाता है)

रूपकिशोर : (रीना जी से)- रीना जी, ये हैं देश के प्रमुख अख़बारों के संवाददाता और टी.वी. रिपोर्टर।

(फिर मीडियाकर्मियों से)- और ये हैं आज के इस शो की कर्ता-धरता प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र की अध्यक्षा, रीना जी (सब मीडियाकर्मी बारी-बारी से आशीष जी से हाथ मिलाते हैं)।

पत्रकार 1 : आपकी संस्था नई है रीना जी ?

रीना जी : जी हां, कुछ कलाप्रेमी साथियों के साथ मिलकर कुछ दिन पहले ही रजिस्ट्रेशन कराया है।

पत्रकार 2 : मैं 'पहला कदम' अख़बार का रिपोर्टर हूं।

पत्रकार 1 : मैं डवलपमेन्ट टाईम्स की संवाददाता हूं।

पत्रकार 2 : रीना जी , आपका इस संस्था को बनाने का उद्येश्य क्या है ?

रीना जी : जी, इतना ही कि मेरे कुछ साथी रंगमंच के अपने शौक को पूरा करना चाहते हैं।

पत्रकार 1 : तो इसके लिये आपको टाउन हॉल की बुकिंग का खर्चा भी वहन करना होगा।

रीना जी : जी हाँ, एक शो के दस हजार रूपये देने पड़ते हैं।

पत्रकार 2 : यों तो बहुत महंगा पड़ेगा, लुट जाओगी आप तो। एक शो के दस हजार रू. और बाकी खर्चे अलग।

रीना जी : और कौनसे खर्चे ? सरकारी है टाउन हॉल तो, और बुकिंग के दस हजार रूपये में सारा खर्चा आ जाता है।

पत्रकार 1 : देखे जाओ बहिन जी टाउन हॉल के इन सरकारी कर्मचारियों के नखरे, अभी शो खत्म थोड़े ही हुआ है। माईक को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखने के सौ रू. माईक वाले को देने होंगे।

रीना जी : (बीच में बात काटते हुए)- लेकिन शो शुरू होने के बाद माईक से छेड़छाड़ करनी ही क्यों पड़ेगी ?

पत्रकार 2 : मान लो आपके नाटक में किसी नेताजी को भाषण देने के लिये माईक की आवश्यकता पड़ी, या फिर नाटक समाप्त होने पर पात्र परिचय कराने या मुख्य अतिथि के उद्‌बोधन के लिये माईक की आवश्यकता पड़ी तो आप खुद थोड़े ही भागकर माईक लगायेंगी या हटायेंगी

रीना जी : हां यह बात तो है।

पत्रकार 1 : और सुनो। कर्टेन गिराने के पचास रूपये पवन जी को देने पड़ेंगे, फ्लेट्स लेने के तीन सौ रू. रामपाल जी लिये बिना आपको ऐसे गले हुए फ्लेट देंगे जिनको मंच पर रखते हुए भी शर्म आयेगी।

पत्रकार 2 : और उस दृश्य की फोटो किसी को दिखाने के काबिल न रहेंगी।

पत्रकार 1 : और वीड़ियोग्राफी करनी होगी तो पता है टाउन हॉल वाले क्या कहेंगे?

रीना जी : क्या कहेंगे?

पत्रकार 2 : यही कि यहां पर वीड़ियोग्राफी करना अलाउ नहीं है।

पत्रकार 1 : (रूपकिशोर जी की ओर देखते हुए)- परन्तु शीशपाल जी को चुपके से एक हजार रू. दे दोगे तो आराम से करो वीड़ियोग्राफी, चाहे चलते शो में मंच पर चढ़ जाओ कोई एतराज नहीं करेगा। क्यों रूपकिशोर जी?

रूपकिशोर : (रीना जी से) कोई बात नहीं रीना जी , नये लोगों को प्रोत्साहित करना हमारा फ़र्ज बनता है । हम शीशपाल जी से आपका जुगाड़ कम में करा दिया करेंगे।

पत्रकार 2 : पर रूपकिशोर जी फिर भी बेचारों को शो करना महंगा तो पड़ेगा ही न। (फिर आशीष की ओर देखते हुए)- कोई स्पॉन्सरशिप मिली है क्या आपको?

रीना जी : नहीं तो।

पत्रकार 1 : अजी नई संस्थाओं को कौन स्पॉन्सर करता है।

पत्रकार 2 : (कुछ सोचते हुए) - रीना जी , ऐसा क्यों नहीं करती कि आप अपनी संस्था के टाउन हॉल समिति से एफीलेशन के लिये अप्लाय कर दें।

रूपकिशोर : पर साहब जब तक किसी संस्था के कार्यक्रमों का बढ़िया सा अख़बारी कवरेज न हो सपोर्टिंग डाकूमेंट्स के रूप में, तब तक एफीलेशन कैसे मिलेगा?

पत्रकार 1 : अजी यह काम तो हमारे हाथ में है। इनके आज के कार्यक्रम से ही अच्छा-खासा कवरेज दिलवा देते हैं सभी अख़बारों में।

पत्रकार 2 : पर दर्शक तो हैं ही नहीं और कलाकारों का अभिनय भी बैठा जा रहा है। क्या झूठ छापेंगे?

पत्रकार 1 : भाई नये लोग हैं, हमें इन कलाप्रेमियों और कलाकारों का साथ देना चाहिये।

पत्रकार 2 : पर अमिता जी, सम्पादक को पता चला तो?

रूपकिशोर : अब कोई तो रास्ता निकालो ही इनके लिये।

पत्रकार 1 : (कुछ सोचते हुए)- डोनेशन दे पायेंगी ये हमारे पत्रकार एसोसिएशन, मेरा मतलब है ' जात ' को?

रूपकिशोर : मैं रीना जी से बात करता हूं। (रीना जी को अलग ले जाते हुए उनससे दबी ज़बान में)- रीना जी, देखिये कितना भी बड़ा कलाकार हो पत्रकारों के बिना वह आगे नहीं बढ़ सकता। वे तिल का ताड़ बना दें और ताड़ का तिल। और फिर आगे चलकर यह सौदा आपके लिये फायदेमंद ही होगा।

रीना जी : कैसे?

रूपकिशोर : देखिये नॉन एफीलेटेड़ संस्थाओं से टाउन हॉल एक शो की बुकिंग के दस हजार रूपये लेता है। बोलो लेता है कि नहीं?

रीना जी : हां लेता है।

रूपकिशोर : और एफीलेटेड़ संस्थाओं से एक हजार पचास रू. लेता है।

रीना जी : (आश्चर्य से)- अच्छा, इतना कम!

रूपकिशोर : हां जी इतना कम। हम तो आपके शुभचिन्तक हैं जो ये गोपनीय बातें बता रहे हैं।

रीना जी : वाकई आप अच्छे आदमी हैं।

रूपकिशोर : और मान लीजिये यदि आपने पत्रकार संघ को इक्कीस हजार का डोनेशन भी दे दिया तो नुकसान कहां है आपको।

रीना जी : (चौंकते हुए)- इक्कीस हजार?

रूपकिशोर : अजी चौंकिए मत। सीधी सी गणित है। अब जब तक आप लगभग दस कार्यक्रम नहीं कर लेते आपकी संस्था का

एफीलेशन हो नहीं सकता। और दस कार्यक्रमों के लगेंगे पूरे एक लाख। बोलो लगेंगे कि नहीं?

रीना जी : लगेंगे।

रूपकिशोर : अब यदि आपने कैसे भी करके पाँच कार्यक्रम भी कर दिये और अख़बारी कवरेज धूम धड़ाके वाला हुआ तो भी आपको एफीलेशन मिल जायेगा और ये पत्रकार आपकी संस्था के एफीलेशन की टाउन हॉल समिति से सिफारिश भी कर देंगे।

रीना जी : पर पाँच कार्यक्रमों के भी पचास हजार रू. हो गये और 'जात' को इक्कीस हजार रू. और देने की कह रहे हैं आप। कहां हुआ फायदा, घाटा ही घाटा है।

रूपकिशोर : सुनिये तो बात।

रीना जी : क्या?

रूपकिशोर : आपको पाँच कार्यक्रमों के पचास हजार रू. नहीं देने पड़ेंगे।

रीना जी : अजी दस हजार रू. एक कार्यक्रम के होते हैं। मैंने इसी कार्यक्रम के दिये हैं।

रूपकिशोर : रीना जी हमारी बात सुनिए। हमारे पास इन पत्रकारों द्वारा ईजाद एक सौ एक ऐसे गुणकारी फार्मूले हैं जिनका प्रयोगकर्ता के कोई साईड़ अफेक्ट भी नहीं होता।

रीना जी : बताइये तो कोई एक-दो।

रूपकिशोर : अजी आपके उन कार्यक्रमों की बुकिंग किसी एफीलेटेड़ संथाओं की ओर से होगी और कार्यक्रम होगा आपका। अख़बारों में छपेगी आपके कार्यक्रमों की वाही-वाही।

रीना जी : यह क्या नया चक्कर है?

रूपकिशोर : रीना जी, हमारे इन पत्रकार भाइयों ने अपनी-अपनी संस्थाएं बनाकर टाउन हॉल समिति से एफीलेट करा रखी हैं। किसी के भी बैनर से करा देंगे आपके कार्यक्रम। पाँच कार्यक्रमों की बुकिंग का कुल खर्चा आयेगा पाँच हजार दौ सौ पचास रूपैया और तब आपकी संस्था के एफीलेशन की फाईल लगा देना। अब तो आपको इक्कीस हजार रूपये ही देने पड़ रहे हैं न। फिर

देखना सुबह के अख़बारों में ही आपकी संस्था का नाम, आपका नाम और फोटो सहित भरपूर कवरेज। (रीना जी सोच में पड़ जाती हैं)।

रूपकिशोर : और यदि आप इन पत्रकारों को रूष्ट कर देंगे तो पता है क्या होगा?

रीना जी : क्या?

रूपकिशोर : कल सब अख़बारों में ख़बर इस प्रकार छपेगी-
'पाँच सौ दर्शकों के हॉल में दस दर्शक' या फिर 'प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र का फूहड़ कार्यक्रम। दर्शकों ने किया बहिष्कार'।

रीना जी : (कुछ सोचते हुए)- चलिये आपकी बात मान लेती हूँ। आप चलिये मैं रूपये लेकर आती हूँ।
(रूप किशोर बाहर टहल रहे पत्रकारों को पुकारता है उनके प्रविष्ट होने पर)

रूपकिशोर : रीना जी मान गई।

सब पत्रकार : कितने में?

रूपकिशोर : इक्कीस हजार की शानदार ऑपनिंग।
(रीना जी का प्रवेश)

रूपकिशोर : (भागकर रीना जी के पास जाते हुए) - रीना जी, ये आपकी प्रेस विज्ञप्तियां हैं जिनमें रखकर देने हैं पैसे।
(रूपकिशोर पैसे लिफाफे में रखता है फिर दोनों पत्रकारों के पास जाते हैं)

रूपकिशोर : (मो. इस्माइल को विज्ञप्ति देते हुए)- ये लीजिये अमिता जी प्रैस नोट। अन्दर फोटोग्राफ्स हैं । (आँखों से मौन संकेत करता है।)

पत्रकार 1 : (लिफाफे लेते हुए अपने साथियों से)- भाई अब जल्दी करो शहर के और कार्यक्रमों को भी कवर करना है।
(फिर पास खड़े अपने एक साथी से)- पंकज जी!

पत्रकार 2 : हां।

पत्रकार 1 : कई अख़बार वाले यहां नहीं आ पाये हैं और कुछ जगह हम नहीं जा पायेंगे इसलिये ख़बरें एक्सचेंज कर लेना।

पत्रकार 2 : रीना जी, इस दृश्य के बाद इण्टरवैल करवाकर कलाकारों के तीन-चार पॉज बनवा दीजिए हम अख़बारों के लिये फोटोग्राफ्स ले लेते हैं ।

पत्रकार 1 : रूपकिशोर जी !

रूपकिशोर : जी।

पत्रकार 1 : भाई आप तो बड़े काम के आदमी हैं। और सुना है कि आप पहले पत्रकारिता भी किया करते थे।

रूपकिशोर : जी। ऑफिस टाईम के बाद में थोड़ा समय निकालकर सांस्कृतिक कार्यक्रम कवर किया करता था।

पत्रकार 1 : फिर छोड क्यों दिया?

रूपकिशोर : अजी मेरे डिपार्टमेंट में ईमानदार का बच्चा एक साला अधिकारी आया था जिससे नहीं पटी मेरी। इसी खींचातानी में उसने मेरा दूसरे शहर में ट्रांसफर करा दिया था। बाद में मेरी टीम बिखर गई और बस केवल यहां नौकरी में ही सिमटकर रह गया।

पत्रकार 1 : पर अब तो हमारी टीम बन गई। आप रोजाना शाम को हमारे साथ काम करें। आपको तो पुराने घाघ और काइयां लोगों से निपटने का तजुर्बा भी है।

रूपकिशोर : आप कह रही हैं?

पत्रकार 1 : हां, और मन से।

रूपकिशोर : अब तो चलना ही पड़ेगा। मना करने की कोई गुंजाईश ही नहीं रही।

(माईक से मध्यान्तर की उद्घोषणा होती है और पत्रकार फोटो लेकर रूपकिशोर जी के साथ प्रस्थान करते हैं। प्रकाश जाते हुए पत्रकारों पर गिर रहा है और मंद-मंद होकर बुझ जाता है।)

(दूसरा दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(हिन्दी-पुस्तकों के एक प्रमुख प्रकाशक की दुकान का दृश्य। दुकान पर 'साहित्य प्रकाशन' का बोर्ड टंगा है। दुकान में घुसते ही बायें हाथ को एक टाईपिस्ट कम्प्यूटर पर टाईप करने में व्यस्त है। उसके ठीक सामने दाहिनी ओर एक कमरा है जिसके बायीं ओर का हिस्सा किताबों से खचाखच भरा है तथा दाहिनी ओर एक काउण्टर पर एक लेखाकार खाते लिखने में व्यस्त है। उसके पास में बैठा हुआ एक दूसरा व्यक्ति टेलीफोन पर बात करने में व्यस्त है। दुकान के प्रवेश द्वार के ठीक सामने अन्त में एक कमरा है जिसमें दो कुर्सियां लगी हैं जिनमें से एक कुर्सी पर ' साहित्य प्रकाशन' के मालिक सतीश वर्मा जी विराजमान हैं तथा दूसरी कुर्सी पर उनका पुत्र देवांशु बैठा है। वर्मा जी उसे व्यापार की कोई ख़ास बात बता रहे हैं। सहसा दो-तीन पत्रकारों का मुख्य भवन में प्रवेश। ये सभी वर्मा जी की दुकान के बाहर बरामदे में खड़े होकर बातें कर रहे हैं।)

पत्रकार 1 : (अपने साथी से)- भाई पंकज जी, बड़े ही घाघ हैं वर्मा जी। अपनी बात से साफ मुकर जाना तो उनकी आदत में है।

पत्रकार 2 : केवल तब जब उनका नुकसान हो रहा हो।

रूपकिशोर : जब कोई नया-नया व्यक्ति उनसे पहली बार मिलता है तब उनकी लच्छेदार बोली में ऐसा उलझता है बेटा, कि लुटकर ही बाहर निकलता है।

पत्रकार 1 : (वर्मा जी की नकल उतारते हुए)- आइये जनाब आइये बहुत दिनों में तशरीफ़ लाये।

पत्रकार 2 : (उसी लहजे में)- क्या पीजिएगा चाय, कॉफी या ठण्ड़ा?

पत्रकार 1 : फिर साले को हलाल करते हैं धीरे धीरे। और वो तो हमें ही हलाल करने के चक्कर में रहते हैं।

रूपकिशोर : (पत्रकार 1 से)- हां अमिता जी। मैंने पिछले सप्ताह दो नये साहित्यकारों को उनकी पुस्तकें छपवाने के लिये वर्मा जी से मिलवाया था।

पत्रकार 1 : फिर?

रूपकिशोर : अजी वर्मा जी ने खुद ने तो पन्द्रह-पन्द्रह हजार रूपये ले लिये उन दोनों से और जब मैंने उसमें से अपने मेहनताने के रूप में

पच्चीस प्रतिशत कमीशन मांगा तो साफ मुकर गये अपनी बात से।

पत्रकार 1 : कौनसी बात से?

रूपकिशोर : अजी मेरे घर पर आये थे दो महिने पहले। कहने लगे कि भाई प्रकाशन का धंधा मंदा चल रहा है इसलिए तुम किताबें छपवाने को लालायित कुछ नये लोगों को लेकर आओ। हम पन्द्रह हजार रूपये लेकर उनकी सौ-सौ किताबें छपवा देंगे और आपको उस राशि का पच्चीस प्रतिशत कमीशन के रूप में देंगे।

पत्रकार 2 : फिर क्यों नहीं दिया उन्होंने आपका कमीशन?

रूपकिशोर : कहने लगे कि साले दोनों के दोनों बेरोजगार थे और फूटी कौड़ी भी नहीं दे सके।

पत्रकार 1 : आपको कैसे पता चला कि उन्होंने वर्मा जी को पन्द्रह-पन्द्रह हजार रूपये दिये?

रूपकिशोर : अजी उनमें से एक व्यक्ति मेरे पड़ौस में ही रहता है, किताबों की जिल्द बाँधने का काम करता है। वह मेरे पास आया और बताया सारा किस्सा।

पत्रकार 1 : कितना पढ़ा लिखा है वह जिल्दसाज?

रूपकिशोर : दसवीं फेल है जी।

पत्रकार 2 : तो आपने इतने कम पढ़े आदमी की किताब छापने की सिफारिश कैसे कर दी वर्मा जी से?

रूपकिशोर : अजी वर्मा जी ने दीपावली के अवसर पर स्पेशल ऑफर दिया था हमें।

पत्रकार 2 : मैं तो एक नेताजी की निजी यात्रा को कवर करने उनके साथ विदेश गया हुआ था दीपावली के दिनों में। ख़ैर, बताइये तो कैसा स्पेशल ऑफर दिया था उस मक्खीचूस वर्मा के बच्चे ने?

रूपकिशोर : अजी आजकल वर्मा जी ने पढ़े-लिखे और योग्य लेखकों की किताबें नहीं छापने का निर्णय लिया है।

पत्रकार 1 : क्यों?

रूपकिशोर : उनका कहना है कि पहली बात तो उन विद्वानों की भाषा इतनी साहित्यिक एवं क्लिष्ट होती है कि उसे आम आदमी समझ ही नहीं पाता।

पत्रकार 2 : और दूसरी बात बात?

रूपकिशोर : वर्मा जी कहते हैं कि योग्य लेखकों की पुस्तके छापने में व्यापारिक लाभ नहीं है।

पत्रकार 1 : कैसे?

रूपकिशोर : उनका कहना है कि आजकल पुस्तकें बिकती ही नहीं हैं। और सरकारी पुस्तकालयों में जो थोड़ी बहुत बिकती हैं उन पर भी अधिक लाभ नहीं है।

पत्रकार 2 : क्यों नहीं है साहब उन पर लाभ?

पत्रकार 1 : ये सही कह रहे हैं साहब। अब सरकारी पुस्तकालयों में पुस्तकों की खरीद में भ्रष्टाचारी बढ़ गई है। प्रिन्सीपल, लाईब्रेरियन, बाबू ये सब कमीशन मांगते हैं।

पत्रकार 2 : अब आई बात समझ में। लेकिन वर्मा जी नये लोगों की किताबें क्यों छापते हैं?

रूपकिशोर : वही तो बता रहा था दीपावली की स्पेशल ऑफर के बारे में।

पत्रकार 2 : हां जी, मैं उसी के बारे में तो जानना चाह रहा था।

रूपकिशोर : भाई वर्मा जी ने तय किया है कि जितना कम पढ़ा लिखा छपास रोग से ग्रसित व्यक्ति होगा, मेरा मतलब लेखक बनने के उन्माद से पीड़ित व्यक्ति, उसकी पुस्तक को प्रकाशित करने में प्राथमिकता दी जायेगी।

पत्रकार 1 : अच्छा?

रूपकिशोर : हां जी। और इसके लिये उन्होंने तय किया है कि उससे ली जाने वाली सहायता राशि की दर इस प्रकार होगी -

बी.ए. पास व्यक्ति से दस हजार रूपये
दसवीं पास व्यक्ति से पन्द्रह हजार रूपये
दसवीं फेल व्यक्ति से बीस हजार रूपये

पाँचवीं पास व्यक्ति से पच्चीस हजार रूपये
अनपढ़ व्यक्ति से चालीस हजार रूपये

पत्रकार 2 : वाह जी वाह। तो क्या अनपढ़ व्यक्ति के भी लेखक बनने के चांस हैं वर्मा जी की कृपा से। वाह दीनबन्धु वाह।

रूपकिशोर : अजी साहब उनका तर्क कमजोर थोड़े ही है।

पत्रकार 1 : क्या है उनका तर्क, जरा हम भी तो सुनें?

रूपकिशोर : कहते हैं कि ज्ञान का पढ़ाई लिखाई और डिग्रियों से क्या लेना देना। कबीर, रहीम आदि के पास कौनसी युनिवर्सिटी की डिग्रियां थीं पर उन पर आज पीएच.डी. और डी.लिट्. कर रहे हैं विद्वान लोग।

पत्रकार 2 : इनकी बात ठीक है जी। ऐसे ही एक दो अनपढ़ व्यक्तियों की किताबों को वर्मा साहब ने अपने प्रभाव से साहित्य अकादमी पुरस्कार तक दिलवाया है।

पत्रकार 1 : पर पुरस्कार में मिली रकम सहायता राशि के नाम पर वर्मा जी की झोली में ही गई है जी।

पत्रकार 2 : और उन अनपढ़ लेखकों से पुरस्कार दिलवाने के लिये जो पैसा ऐंठा है वह अलग।

पत्रकार 1 : तो क्या पुरस्कार भी बिकने लगे आजकल?

रूपकिशोर : अजी सब चलता है आजकल। (फिर कंधे पर टंगे झोले में से एक बुकलेट निकालकर पढ़ते हुए)- यह देखिए एक राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक संस्था है जिसमें लेखकों से अपील की गई है।

पत्रकार 2 : क्या लिखा है जरा पढ़िये तो।

रूपकिशोर : (पढ़ता है)- समग्र भारतीय साहित्य परिषद की अपील
बिन्दु संख्या 23 'यदि आप अपने नाम से या अपने किसी प्रिय दिवंगत की स्मृति में कोई पुरस्कार प्रायोजित करना चाहते हों तो आप प्रदेशाध्यक्ष से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। भविष्य में प्रायोजित पुरस्कारों की राशि पाँच हजार रू. से कम न होगी। परिषद आगामी वर्ष में लगभग दस पुरस्कार घोषित करने के लिये प्रयत्नशील है।'

लेकिन वैसे देखा जाय तो वर्मा जी ने तो हम लोगों की भी कमाई करायी है।

पत्रकार 2 : कैसी कमाई?

रूपकिशोर : अजी गये महिने ही तो एक अनपढ़ लेखक की पुस्तक पर समीक्षा लिखने को दिलाये थे हमें दो-दो हजार रूपये। आप तो यहां थे नहीं पर मेरे पास पत्र के उस अंक की प्रति है (झोले में से अख़बार निकालते हुए) - लीजिए आप भी सुन लीजिए उसकी समीक्षा।

पत्रकार 1 : सुनाइये तो जरा।
(रूपकिशोर पढ़ता है)
.....पुस्तक समीक्षा
पुस्तक का नाम-वर्तमान समय में नैतिक मूल्य और भारतीय संस्कृति।
लेखक : मौजी राम तेली
प्रकाशक : साहित्य प्रकाशन, अहमदाबाद
भारतीय संस्कृति के संवाहक, विख्यात चिन्तक और संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी श्री मौजीराम तेली कहने को तो निरक्षर हैं एवं कोल्हू चलाकर तेल निकालने का काम करते हैं परन्तु उनके अकूत ज्ञान को शहर के प्रमुख प्रकाशक श्री सतीश वर्मा जी ने लिपिबद्ध करवाकर प्रकाशन के क्षेत्र में एक नई मिसाल कायम की है.....

पत्रकार 2 : और इसके लिये आपको मिले हैं पाँच हजार रूपये। पर दुबेजी के साथ वर्मा जी ने चोट कैसे की। (फिर पत्रकार 1 की ओर मुखातिब होकर)-अमिता जी हम वर्मा जी से उनका बकाया कमीशन आज ही दिलवायेंगे। और अब हम उनसे बात ही यह करेंगे कि लेखक से जो भी पैसा लेना तय होगा वह हम खुद उससे लेंगे और उसमें से अपना कमीशन पहले ही काटकर शेष राशि वर्मा जी को देंगे।

पत्रकार 1 : हां जी, यह सही रहेगा। साला ग्राहक हम ले जायं और फिर मेहनत की कमाई की वसूली के लिये इस वर्मा के बच्चे के चक्कर काटते रहो भिखारी की तरह।

एक नवयुवक : (बरामदे में प्रवेश करके पत्रकारों से)– नमस्कार साहब।

रूपकिशोर : नमस्कार।

नवयुवक : जी हमें वर्मा जी से मिलना है।

पत्रकार 1 : (उसके हाथ की पाण्डुलिपि का देखते हुए)– कहिये, क्या काम है उनसे?

नवयुवक : जी एक पुस्तक छपवाने के सिलसिले में मिलना है।

पत्रकार 2 : वर्मा जी से मिलना है?

नवयुवक : हां जी।

रूपकिशोर : जानते हो वर्मा जी को?

नवयुवक : जी नहीं, किसी के रेफरेंश से पहली बार मिलूंगा।

पत्रकार 1 : किसके रेफरेंश से?

नवयुवक : जी ऐलिस ब्रिज पर डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय रहते हैं उनके रेफरेंश से।

पत्रकार 2 : अरे वही पाण्डे जी जो विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष रहे?

नवयुवक : हां जी वही।

रूपकिशोर : भाईसाहब, यदि बुरा न मानें तो एक बात कहूं?

नवयुवक : जी कहिए।

रूपकिशोर : भाई आजकल उन्होंने कई विश्वविद्यालयों में सैटिंग कर रखी है। किसी भी टॉपिक पर कोई भी गाईड उनसे अपने विद्यार्थी की थीसिस असेबम्ल करवा ले, दस हजार रूपये लेते हैं एक थीसिस के।

शोधार्थी : (प्रकट होते हुए)– पर मुझसे तो पन्द्रह हजार रूपये मांगे हैं जी।

पत्रकार 1 : आप कौन?

शोधार्थी : जी मैं उत्तर प्रदेश के एक विश्वविद्यालय की रिसर्च स्कॉलर हूं। हिन्दी में पीएच.ड़ी. कर रही हूं।

पत्रकार 2 : तो डॉ. पाण्डेय जी को कैसे जानती हैं?

शोधार्थी : जी कानपुर में मेरे एक रिश्तेदार रहते हैं उन्होंने रैफर किया था।

रूपकिशोर : तो यहां कैसे आयी?

शोधार्थी : जी वर्मा जी से मिलने आयी हूं। सुना है कि हिन्दी साहित्य की पुस्तकों के बहुत बड़े प्रकाशक हैं और शिक्षा विभाग में स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक उनकी बहुत पहुंच है इसलिए कम रूपयों में सही काम करवा देंगे।

पत्रकार 1 : जानती हो वर्मा जी को?

शोधार्थी : जी नहीं, पहली बार ही मिलूंगी।

रूपकिशोर : (अपने एक साथी के कान में)– दोनों का केस एक जैसा है। (फिर शून्य में देखते हुए दोनों से)– आप दोनों ही इस धूर्त वर्मा जी के चक्कर में फँसने वाले हैं। जितना इन्होंने पुस्तकों का जाल फैला रखा है उतना ही भ्रष्टाचार के पुरोधाओं से सम्पर्क सूत्र जुड़ा है इनका।

पत्रकार 2 : हां साहब, अब देखो तो थीसिस लिखवाने के पाण्डेय जी ने मांगे हैं पन्द्रह हजार रूपये।

पत्रकार 1 : (युवती की ओर देखते हुए)– और अब वर्मा जी मांगेगे आपसे बीस हजार रूपये।

रूपकिशोर : और आपको पता होन चाहिए कि यही थीसिस हम अपने जान–पहचान के एक प्रोफेसर से दस हजार रूपये में लिखवा सकते हैं। और अपने ही लोगों का पैनल में नाम डलवाकर डिग्री भी अवार्ड करवा देंगे।

पत्रकार 1 : (नवयुवक 1 की ओर देखते हुए)– भाईसाहब वर्मा जी पुस्तक छापने के बीस हजार रूपये से कम न लेंगे जबकि हम आपकी वही पुस्तक पन्द्रह हजार रूपये में छपवा देंगे।

शोधार्थी : कहां से?

रूपकिशोर : अजी बहुत सारे प्रकाशक हैं। छोटे-छोटे जनरल स्टोर वाले, जो पहले चौथी-पाँचवी क्लास की किताबें बेचा करते थे आज किताबें छापने भी लगे हैं। और वैसे भी आज तो एक-एक प्रकाशक सरकारी टेण्डर हथियाने के लिए दो-दो तीन-तीन नामों से पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। कोई भी छाप देगा जी आपकी पुस्तक तो।

नवयुवक 1 : पर साहब, नये प्रकाशक से छपवाने पर इतना प्रसार नहीं होगा पुस्तक का।

रूपकिशोर : आपको उससे क्या। पुस्तक का प्रसार हो या न हो आप लेखक तो बन जायेंगे न। और फिर आपको एक बात बताऊं?

नवयुवक 1 : क्या।

रूपकिशोर : आप क्या समझते हैं कि यदि आपकी किताब दूर-दूर तक जायेगी तो उसे अधिक लोग पढ़ेंगे?

नवयुवक 1 : हां जी।

पत्रकार 2 : बड़े भोले हो भाई।

नवयुवक 1 : कैसे?

पत्रकार 1 : भाईसाहब, आजकल स्कूल-कॉलेजों में किताबों की खरीद उन्हें सरकार द्वारा दिये गये टारगेट को पूरा करने के लिये की जाती है और ये किताबें वहां के पुस्तकालयों की अल्मारियों में बन्द कर दी जाती हैं जहां पड़ी-पड़ी को दीमक चाट जाती है।

पत्रकार 2 : हां जी एक बार मेरे मित्र के साथ मैं भी एक पुस्तकालय में गया था। उस विषय पर किसी विश्वविद्यालय की थीसिस थी। ज्यों का त्यों स्केन कराकर प्रस्तुत करना था उस पुस्तक को शोध प्रबन्ध के रूप में। उसके पन्ने जगह-जगह से गल गये थे। हम ही जानते हैं कितनी कठिनाई से हुई थी उसकी स्केनिंग। बड़ी दुर्दशा है आज सरकारी पुस्तकालयों की।

शोधार्थी : अजी तो क्या आप हमारी थीसिस भी लिखवाकर डिग्री अवार्ड करवा देंगे?

रूपकिशोर : हां भाई क्यों नहीं और वह भी सस्ते में। हम टाईप वगैरह का पुराना तरीका काम में नहीं लेते। उसमें एक तो समय बहुत

लगता है, दूसरे प्रूफ रीडिंग का झंझट। आज ग़लत शब्दों ने इतनी जड़ें जमा ली हैं कि सही शब्द क्या हैं पता ही नहीं चलता किसी को।

पत्रकार 1 : भाई, हम सब पत्रकार हैं, हमारा नॉलेज इतना अपडेट है कि हमें यह पता रहता है कि किस विषय की थीसिस किस पुस्तकालय में मिलेगी और वहां का लाईब्रेरियन किस पत्रकार से दबता है। वह हमें थीसिस लाकर दे देता है। हम ऊपर नीचे के पन्ने बदलकर बाईण्डिंग करा देते हैं, बस हो गया सस्ते में काम।

शोधार्थी : (नवयुवक 1 से) - हम दोनों का ही काम इन लोगों से हो जायेगा।

नवयुवक 1 : यह तो हमारी तकदीर अच्छी थी जो इन लोगों से पहले ही मुलाकात हो गई और हम वर्मा जी क चक्कर में फंसने से बच गये।

शोधार्थी : (पत्रकारों से) - पर आप हमें यह बताइये कि हमारा कितना-कितना खर्चा आयेगा और भुगतान कैसे-कैसे करना पड़ेगा।

रूपकिशोर : भाई, पहली बात तो यह कि यह गाड़ी आपस के भरोसे पर चलेगी।

दोनों : जी हमें आप लोगों पर भरोसा है।

पत्रकार 2 : भाई हमारे पास कई विकल्प हैं। (फिर रूपकिशोर जी की ओर उन्मुख होकर)- हमारी कई स्कीम हैं जो पसन्द आये वह चुन लें। रूप जी बताइये तो इन्हें।

रूपकिशोर : देखिये पुस्तक छापने की वैसे तो क्वालिफिकेशन के हिसाब से अलग-अलग रेट है जो दस हजार से लेकर चालीस हजार रूपये तक है और पीएच.ड़ी. कराने की रेट है दस हजार से तीस हजार रूपये के बीच। पर यदि आप हमारा पैकेज लेते हैं तो दोनों कार्यों की एक समान रेट है और वह है पच्चीस हजार रूपये प्रति कार्य।

दोनों : पैकेज, कैसा पैकेज साहब?

रूपकिशोर : पुस्तक छपवाने में टाईपिंग से लेकर पुस्तक छपने , उसका विमोचन कराने और समाचार पत्रों में उसकी समीक्षा छपवाने तक का सारा काम इस पैकेज में हो जायेगा। परन्तु यह रेट एक सौ पृष्ठ की पुस्तक की है। इससे अधिक पृष्ठ होने पर आनुपातिक रूप से खर्चा बढ़ जायेगा।

नवयुवक 1 : ठीक है।

रूपकिशोर : शोध की रूपरेखा अनुमोदित कराने से लेकर पीएच.ड़ी. अवार्ड कराने के पैकेज में कुल पच्चीस हजार रूपये देने होंगे। पचास प्रतिशत अग्रिम अभी और शेष राशि अन्तिम मौखिकी होने से से पूर्व उसी दिन। और मौखिकी के लिये आने वाले बाहरी परीक्षक के आने-जाने का किराया, ठहरने खाने एवं जाते समय पैक की जाने वाली मिठाई आदि का सारा खर्चा आपको देना होगा।

पत्रकार 1 : परीक्षक को हम पैसे पहले ही दे देते हैं और उसके यात्रा बिलों पर हस्ताक्षर कराकर विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

पत्रकार 2 : जब विश्वविद्यालय में कभी फण्ड़ आयेगा तो उस यात्रा बिल की आधी राशि तो विश्वविद्यालय के कार्यालय के स्टाफ द्वारा आपस में बाँट ली जाती है और शेष राशि गाईड की होती है।

रूपकिशोर : सभी विश्वविद्यालयों में यही परम्परा है आप किसी से भी पूछ सकते हैं।

शोधार्थी : ठीक है जी अब आप अनुभवी लोग हैं कोई ग़लत थोड़े ही कह रहे हैं।

नवयुवक 1 : और पुस्तक छपवाने का भुगतान कैसे करना होगा?

पत्रकार 1 : भाई पूरा पैसा पहले देना होगा और पुस्तक पन्द्रह दिन में छप जायेगी।

पत्रकार 2 : और हां, इन दोनों में ही आपके लिये एक विकल्प और है।

दोनों : क्या?

रूपकिशोर : आप 'जात' मेरा मतलब है यदि आप हमारे पत्रकार संघ की सदस्यता लेना चाहें तो आपको ऑफ सीजन डिस्काउंट पर

इक्कीस सौ रूपये में आजीवन सदस्यता मिल सकती है अभी तो।

दोनों : इसके फायदे?

रूपकिशोर : भाई आप पत्रकार बन जायेंगे। आपको 'जात' की ओर से परिचय पत्र मिल जायेगा। यदि आपके घर में गैस खत्म हो जाय तो गैस एजेन्सी में जाओ और बिना बुकिंग कराये ही सिलेण्डर ले आओ।

पत्रकार 1 : अजी हम तो हजारों रूपये महीना कमा लेते हैं इस तरह।

शोधार्थी : और?

पत्रकार 2 : भाई किसी भी बस में यात्रा करो सीट तुरन्त मिलेगी।

पत्रकार 1 : किसी भी सरकारी या गैर सरकारी विभाग में जाओ आपका काम प्राथमिकता से होगा।

रूपकिशोर : भाई 'जात' की सदस्यता का यह फॉर्म लो। अपना नाम-पता लिखकर हस्ताक्षर करो और इक्कीस सौ रूपये की रसीद कटवाओ। बस कल ही आपको परिचय पत्र मिल जायेगा।

पत्रकार 2 : पैकेज की फीस कल हमारे कार्यालय में आकर जमा करा देना, ठीक है?

दोनों : जी। नमस्ते (प्रस्थान)

(दोनों फार्म भरकर फीस के साथ वापस देते हैं और रसीद लेकर अपने घर की ओर प्रस्थान करते हैं।)

पत्रकार 1 : वाह वाह, आज तो मजा आ गया। अब चलो दुबे जी का काम कराना है।

पत्रकार 2 : आपको क्या लगता है, वह आसानी से दे देगा दुबे जी के पैसे?

रूपकिशोर : अजी हम पत्रकारों के पास कई अमोघ अस्त्र हैं। इन वर्मा जी की कई पुरानी नब्ज़ें हैं हमारे हाथ में। चलिये बाहर चलकर बात करते हैं। साला वह खुद दुबे जी के घर पैसे न पहुंचाये तो कहना।

(बरामदे के बाहर निकलकर नीचे सड़क पर उतर आते हैं। इस्माइल अपने मोबाइल पर वर्मा जी का नम्बर मिलाता है। उनसे सम्पर्क होने पर)

रूपकिशोर : नमस्कार वर्मा साहब, कैसे हैं? (उधर से प्रत्युत्तर मिलने पर उसी प्रवाह में।) - अजी याद तो आपको हमेशा ही करते रहते हैं परन्तु आज एक विशेष प्रयोजन से याद किया था (रुकता है, फिर पुन: उसी प्रवाह में)-

अजी कोई खास नहीं। हम तो कार्यक्रम कवर करके आये ही हैं ऑफिस में। जब न्यूज एडिट करने लगे तो चौंक पड़े.....(उधर से वर्मा जी की बात सुनकर) - हां जी, अभी भी वह न्यूज सामने है हमारे। एक संवाददाता ने कम्पोज की है किसी के शिकायती पत्र के आधार पर। (उधर से वर्मा जी की बात सुनकर) - हां हां, जी हां, हम न्यूज ही पढ़ देते हैं आप स्वयं ही सुन लीजिये .....

..... 'हैड्रिंग है, साहित्य के सौदागर। अब न्यूज सुनिए- शहर के एक प्रतिष्ठित प्रकाशक के विरूद्ध बेरोजगार लोगों की पुस्तकें प्रकाशित करने के एवज में पन्द्रह हजार रूपये लेने का मामला सामने आया है। इस बात की शिकायत धनराज नाम के एक बेरोजगार युवक ने एक पत्र के माध्यम से 'क्रान्ति पत्रिका' कार्यालय में प्रेषित की है इस शिकायती पत्र पर दस-बारह लोगों के हस्ताक्षर भी हैं जिन्होंने सहायता राशि के नाम पर पैसे लेकर पुस्तकें छापने, शिक्षा विभाग के कर्मचारियों का उनकी मनचाही जगहों पर स्थानान्तरण करवाने एवं पीएच.ड़ी. की थीसिस लिखवाने के लिये भारी रकम ऐंठने का आरोप भी उक्त प्रकाशक पर लगाया है। ' (इस्माइल की युक्ति की मौन प्रशंसा में अन्य सभी पत्रकार मुस्कुरा रहे हैं। इस्माइल थोड़ा रूकता है, फिर उसी प्रवाह में)-

'अरे नहीं वर्मा साहब नहीं। हां, पत्र में तो आपका नाम भी है। न्यूज में टाईपिस्ट ने छापा भी है पर मैंने सोचा कि पहले आपसे बात कर ली जाय फिर ही फाईनल करूं न्यूज को .... हां हां, आप तो हम लोगों के मार्फत भी करते ही रहे हैं व्यवहार। काम तो साफ-सुथरा है जी आपका। और पहले कभी ऐसा हुआ भी नहीं। अच्छा एक बात बताइये।' दैनिक रश्मियां' अख़बार के

दुबे जी से तो कोई झगड़ा नहीं है न आपका? ..... नहीं नहीं मैंने एक दिन चलते-चलते उनके मुँह से सुना था कि उनका कोई मेहनताना नहीं दे रहे हैं आप ।..... हां जी, वही पुस्तक छापने का मामला शायद। तो वर्मा साहब, आप तो इतने सीनियर हैं क्यों झंझट मोल लिया इतनी छोटी सी बात पर। ..... अजी दे देते उनका कमीशन कौनसा आपको अपनी जेब से देना पड़ रहा था। हां सीधे उनके घर पहुंचा दें, वे शायद रात साढ़े नौ बजे तक घर पहुंच जाते हैं।

..... अजी हमें तो विश्वास ही नहीं हुआ कि आपने कहा होगा ऐसा। पर एक बात आपके उस नौकर को समझा दीजिए कि आगे से ऐसी ग़लती कभी नहीं करे। आप चाहे औरों के साथ कुछ भी करें पर पत्रकारों का ध्यान जरूर रखें हमारी लेखनी तो आप ही की स्याही से चलती है न। नमस्कार। '

(फिर दुबे जी से मोबाईल पर)- दुबे जी, मैं रूपकिशोर बोल रहा हूं। आप अख़बार में न्यूज लगाकर सीधे घर जाइये। हमने वर्मा जी से फोन पर बात करके उसे ऐसा डराया है कि वह आपके पैसे लेकर खुद आयेगा आपके पास।

पत्रकार 1 : वाह रूपकिशोर जी वाह । आप तो नाटक भी अच्छा कर लेते हैं।

रूपकिशोर : अजी पत्रकार को सतरंगी होना चाहिए तभी तो हमारा पत्र कामयाब होगा। वह पत्रकारिता ही क्या जो रंगबिरंगी न हो।

पत्रकार 2 : अजी इसी बात पर मुझे हमारे कानपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में गाये जाने वाले एक गीत का मुखड़ा याद हो आया है।

रूपकिशोर : वाह साहब वाह, जरा सुनाइये तो।

पत्रकार 1 : सुनाइये तो ज़रा

पत्रकार 2 : ना माने छैल छबीली ये दुनिया रंग बिरंगी..... (नृत्य)

पत्रकार 1 : हमारे रंग में दुनिया रंगेगी।

पत्रकार 2 : और हम?

रूपकिशोर : देश के कानून और व्यवस्थाओं को अपने इशारों पर नचायेंगे।

पत्रकार 1 : कैसे ?

रूपकिशोर : ऐसे-

ना माने छैल छबीली, ये जात है रंग रंगीली
तिगदादिगदिग थै तिगदादिगदिग थै
तिगदादिगदिग ता

(सब पत्रकार हँसते हैं प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(नाटक समाप्त)

नामकरण

(नेताजी अँगूठा छाप के घर का दृश्य। साधारण सा कमरा, जिसमें एक ओर चूल्हा रखा है और आस पास जलाने हेतु लकड़ियां एवं गोबर के उपले रखे हुए हैं। सामने की दीवार पर भैंस का चित्र बना हुआ किसी पशु आहार कम्पनी का एक कलेण्डर टंगा हुआ है। बायीं ओर पशुओं का एक बाड़ा है, जिसमें से गाय-भैंसों के रम्भाने की आवाजें आ रही हैं। कमरे में नेताजी की पत्नी झाबली झाड़ू लगा रही है। सहसा बाहर से नेताजी अँगूठा छाप का प्रवेश)

नेताजी : (प्रवेश करते हुए अपनी पत्नी से)- अरै झाबली, तन्नै कित्ती बार खैयो अक अब तू झाड़ू मत लगाया कर।

झाबली : क्यूं ना लगाया करूं झाड़ू अपणे ही घर मैं ?

नेताजी : अरै तन्नै के पत्तो कोनी कि आगै आबाहाळा इलैक्शन मांयनैं मैं चुनाव मैं खड़ो हूंगो।

झाबली : या कोई नई बात थोड्यां ही है। थे तो कई बरसां ते या सुपणो देखर्‌या हो । अर फेर थारा ईं निगोड़ा चुणाव सूं मेरो झाड़ू लगावण को की वास्तो ।

नेताजी : अरै भागवान तन्नै तो पत्तो होणो ही चायजै कि ईं बार मैं चुणाव जीतकर ही रहूंगो।

झाबली : अछ्याजी, मैं भी तो सुणूं अक कुणसी सूंठ खाई है तन्नै इस बार ?

नेताजी : (झल्लाकर)- तन्नै! अरै मैं तन्नै कत्ती बार खयो कि अब तू नेताणी बणणै हाळी है, ईं खातर तू या तन्नै हाळी बोली छोड़ दै।

झाबली : पण थे भी तो मन्नै तन्नै खैवो हो।

नेताजी : म्हारी बात ओर व्हिया करै है, अर थारी बात और।

झाबली : या और और को कांई चक्कर है क्यूं जी ?

नेताजी : अरै एक तो या अक आपणा देश मैं मरद भलां ही औरतां नै तन्नै खै लीं, पण औरत को आपणा मरद नै तन्नै खैणो गँवारपणो मान्यो जावै है।

झाबली : तो आपां कदां सूं फड्योडा व्हैगा जी?

नेताजी : तो कांई वा मास्टर न्यूं ही लगा राख्यो है ? अरै वा मन्नै नेतागिरी सिखावण का हर म्हींना दो हज्जार रूपैया ले जावै है।

झाबली : तो कांई वा नासपीट्यो दो हज्जार रूपैया म्हींना ले ज्या है तन्नै बिगाडण का? (क्रोध से झाडू फेंकती है, फिर बर्तन फेंकती हुई)- मैं सारा दिन पाई - पाई बचावण नै खटती रहूं अर वा करमजळ्यो दो हज्जार रूपैया म्हींना ले जाय।

(फिर नेताजी से)- थांकी बुद्धि तो भिरस्ट नै व्हैगी। (फिर जनता से)- अरै या तो मन्नै ही सोचणो चायजै कि यां मैं बुद्धि होती तो भिरष्ट होती। अब समझ मैं आई या बात। जदां ही अै वीं चापलूस नै दो हज्जार रूपैया म्हींना देवीं हीं। आण द्यो ऊंनै आज बापखणा की टांगड़ी नै तोड़ द्यूं तो मेरो नाम चौधरी दानसिंह की झाबली नांयं।

नेताजी : (हाथ जोड़ते हुए)- अरै म्हारी माँ, मेरा पर म्हेरबानी कर अर मेरो नेतागिरी को कैरर खराब मत कर। बड़ी मुश्किल्यां सूं तो लैण पटरी पर आई है। अर कतरा सारा रूपया खर्च कर दिया ईं कै खातर।

झाबली : फेर्यूं रूपैया खर्च करण की बात। हे भगवान अब यां नै कइंया समझाऊं।

(बाहर से मास्टर चौमुख सिंह की आवाज)

चौ. सिंह : नेताजी घर में हैं क्या?

झाबली : (मूसळ उठाते हुए) - आजा बेटा म्हारै हाथ मैं ही हीं आज नेताजी। तन्नै फैलवान कै न पौंछायो तो.....

नेताजी : (उसके हाथ से मूसळ छीनते हुए) - थारो नाम दानसिंह की झाबली नहीं।

झाबली : हां।

नेताजी : (उसकी खुशामद करते हुए)- देख झबली। यदि तेरो नांव ऊंचो है जाय, तन्नै आसपास का गाँवां मायां, थारा पीहर हाळा, सारा रिश्तेदार मान लै ऊंचा औदा पर देखीं तो तन्नै कस्यो लागैगो?

झाबली : मैं कछु समझी नांय?

(बाहर से मास्टर चौमुख सिंह की आवाज)

चौ. सिंह : नेताजी घर में हैं क्या?

झाबली : अरै नासपीट्या, जद जद मेरो नांव ऊंचो होवण की बात आई तो सुणन ही ना दे गळो फाड़ रि्ह्यो है - (मुंह बनाकर उसकी नकल करती हुई)- नेताजी घर में हैं क्या?

नेताजी : पर झुब्बो, ईं मास्टर सूं ही तो तेरो नांव ऊंचो है सकैगो।

झाबली : कींकर जी।

नेताजी : झुब्बो इब नेतागिरी मैं जावण आतर हमन नै अपणी बोली - भाषा ऊठणो - बैठणो, चाल - ढ़ाल, तौर तरीका, यां सभी मां बदलाव ल्यावण व्हैगो। अर या सब या मास्टर ही तो सिखावैगो भापड़ो हमनै।

झाबली : अजी हमनै ना जच्यो थांको या सब छोडण को तरीको, हम तो जिस्या हां विस्या ही चोखा हां।

नेताजी : (उसे फुसलाते हुए)- देख झुब्बो तन्नै चौधरी दानसिंह को नांव ऊंचो करणो है या ना बोल?

झाबली : नांव तो ऊंचो करणो है जी पण कैंया होसी?

नेताजी : अब या मास्टर जद म्हांनै आजकल का तौर तरीका सिखावैगो तो हम बड़ा - बड़ा नेता लोगन कै पास जाकर पार्टी को टिकट लेवण की जुगाड़ बैठाळ सकांगा, और जद चुनाव जीतकर मंत्री बण जांवांला तो तू भी नेताणी बण ज्यावैली। और फिर न्यूं चौधरी दानसिंह को नांव ऊंचो होसी ही। सोच तो तू या धाबळा की जगां मैक्सी पैर्यां करैगी, म्हारै घर मैं गाड़ी होगी अर तू बैलगाड़ी की जगां कार मैं घूमण नै जाया करैगी।

(बाहर से मास्टर चौमुख सिंह की आवाज)

चौ. सिंह : नेताजी घर में हैं क्या?

झाबली : अरै नासपीट्या हम कार मैं घूमण की सोचर्‌या हां अर तू चिल्लावै है- (नकल करती है)- नेताजी घर में हैं क्या?
(दोनों हँसते हैं)

झाबली : (बाहर पशुओं के बाड़े की ओर इशारा करते हुए)- अजी पण म्हारी या भैंस्यां को के होसी?

नेताजी : अरै तू चिन्ता मत कर आपां बड़ा नेता होबा कै बाद भी यां सबन नै आपणा परिवार की नांईं अपणै साथ घर मैं रख सकांगा।

झाबली : कांईं सांच्यां ही?

नेताजी : तेरी सोगन झुब्बो । आपणै घर मैं भी लालू-राबड़ी की तर्‌यां गाय- भैंस्यां आटै ए.सी. कमरा होया करींगा।

झाबली : पर जी, मैं मेरा पीर हाळा नै कींकर दिखाऊंगी कि म्हारै कन्नै अतरी तगड़ी गाय-भैंस्यां हीं अर ज्यो (कांईं खैवीं हीं ऊं नै)- हां ऐ.....सी... मैं रह्या करी हीं। म्हारी साथण्यां समझींगी अक मैं झूंठ्याही मूट्यांई ही खै री हूं।

नेताजी : अरै सुण, जै मैं रेलमंत्री भी बणग्यो तो सब्बर पैली तेरै पीर तक रेल की पटड्यां बिछवा द्यूंगो, अर जदां तू पीर जावैली तो ए.सी. डब्बा मैं तेरी यै गोरी-चिट्टी गाय-भैंस्यां भी ले ज्याजे अर यां को ई दूध प्यावजे तेरा भाई भतीजां नै भी।

झाबली : कांईं या सब है सकैगो जी?

नेताजी : हां भाई जरूर है सकैगो पर अब तू वीं बिचापड़ा मास्टर नै मांयां आबा दै। देख कैंयां डागळा सैं पड़ी भेड़ की नायां अल्डार्‌यो है।

चौ. सिंह : नेताजी घर में हैं क्या?

झाबली : (दरवाजा खोलते हुए)- हां है सा है, आओ सा आओ।

नेताजी : (आश्चर्य से स्वगत)- हां है सा है, आओ सा आओ। बेटा, आज यह कर्कशा मारवाड़ी में स्वागत कैसे कर रही है ! लगता है कुछ गड़बड़ है। भाग ले बेटा भाग । (वापस मुड़ना चाहता है)

नेताजी : (उठकर आते हुए)- माफ करना मास्टरजी, हम जरा टेलीफून पर बातें करने में बिजी थे। कोई बड़े नेता हमसे मिलणे खातर टेम लेणा चाते थे, इसलिए आपको बेट करणा पड़ा। आओ सा आओ, पधारो।

मास्टर : (स्वगत)- बेटा, मेरा नुस्खा मुझ पर ही!

नेताजी : कांईं सोचर्‌या हो सा?

मास्टर : (चापलूसीपूर्वक)- यही नेताजी सा कि आप मेरा सबक ठीक से सीख रहे हैं और जल्दी ही आप राजनीतिक समाज में घुसपैठ कर लेंगे।

झाबली : (विशेष अन्दाज में इतराते हुए)- अर म्हे सा ?

मास्टर : आपने तो कमाल कर दिया नेताणी जी। आप तो नेताजी से भी फारवर्ड बनती जा रही हैं।

नेताजी : (उसकी बात काटते हुए)-अरै तू जा मांयां। तन्नै ईं सैं के लेणो पैली मन्नै तो नेता बणन दै।

झाबली : (आँखें तरेरते हुए)- फेर्‌यूं तन्नै ?

नेताजी : अरै नेताणी वा तो मैं या देखण चायर्‌यो थो कि देखां तू मेरी गळती नै पकड़ सकै या नांय। (फिर खुशामद करते हुए)- अब अइयां कर, जल्दी सैं मास्टर सा वास्तै एक कप चाय बण्या ला।

मास्टर : अजी, आजकल मेरे को चाय सूट नहीं करती इसलिए मैंने चाय पीना छोड़ दिया है।

झाबली : तो दूध ल्यावूं सा ताजा काढ़कर। धीणा की आपणै कोई कमी नांय है सा।

मास्टर : (ललचायी दृष्टि से झाबली को देखते हुए)- आप पिलाओगी तो जरूर पीएंगे नेताणी सा। (झाबली अन्दर चली जाती है)

नेताजी : हां, तो मास्टर सा। आपनै कल जो पाठ फड़ायो कि जद भी कोई बारै सूं हेलो पाड़ै तो ऊं का दो हेलां तक तो सुणो ही मत जा सूं वाको पतो लागै कि अन्दर हाळो ठालो नाहीं बिजी है।

मास्टरजी : (प्रशंसात्मक भाव से)- अजी आपने तो मेरे पढ़ाये से भी बढ़- चढ़कर काम किया है, और मेरे चार बार पुकारने पर भी

रेस्पांस नहीं दिया। अब मुझे लगने लगा है कि आप नेता बनने की इस ट्रेनिंग में शीघ्र ही सफलता हासिल कर लेंगे।

नेताजी : मास्टरजी, अब आगै को पाठ फडा द्यो।

मास्टरजी : नेताजी, यह जो कल वाला सबक है इसे हमें केवल किसी के बाहर से पुकारने के मामले तक ही सीमित नहीं रखना है।
(नेताजी सिर के ऊपर हाथ लहराने का इशारा करते हैं)

मास्टरजी : (नेताजी से)- जी मैं कुछ समझा नहीं।

नेताजी : नहीं समझे?

मास्टरजी : नहीं

नेताजी : क्या वाकई नहीं समझे?

मास्टरजी : हां सा नहीं-नहीं। नहीं समझा मैं आपके इस इशारे को।
(झाबली अन्दर से एक गिलास दूध और एक कप चाय ले आती है)

झाबली : (प्रवेश करते हुए)- वाकई नहीं समझे मास्टर सा?

मास्टरजी : नहीं सा।

झाबली : मैं समझ गई।

मास्टरजी : क्या?

झाबली : यही कि नेताजी कू आपकी बात समझ में नांय आयी।

मास्टरजी : (अपने सिर पर चपत लगाते हुए) - धत् तेरे की। यह बात मेरे समझ में क्यों नहीं आई।
(फिर नेताजी से)- क्या आपको वाकई मेरी बात समझ में नहीं आयी?

नेताजी : नहीं सा। थांकी सोगन नांय समझ मैं आई।

मास्टरजी : नेताजी, मेरा मतलब यह है कि यही बात टेलीफोन आने पर या रास्ते में चलने पर भी लागू होती है।

नेताजी : मास्टरजी, यह बात भी मेरी समझ में नहीं आई।

मास्टरजी : (कुछ सोचते हुए)- नेताजी, आपको मेरी बात शायद इसलिए समझ में नहीं आ रही है क्योंकि आपने स्मरण शक्ति बढ़ाने वाली एक्सरसाइज नहीं की।

नेताजी : कौणसी एक्सरसाइज सा ?

मास्टरजी : वो ही जो आपको महिने में एक बार करनी होती है।

नेताजी : (कुछ याद करते हुए)- हां सा हां। एक बात तो मैं भूल ही गया।

मास्टरजी : वह क्या सा?

नेताजी : आपकी इस महिने की एडवांस फीस तो मैंने दी ही नहीं।

मास्टरजी : कोई बात नहीं सा कोई बात नहीं।

नेताजी : नहीं सा नहीं (जेब से नोट निकालते हुए) - ये लो सा आपकी फीस।

मास्टरजी : (खुश होते हुए)-हां तो नेताजी, मैं समझाता हूं अब आपको।
(फिर झाबली की ओर देखते हुए)- आप भी बैठो नेताणी सा। नेताजी के साथ आपको भी तो बदलना है। (झाबली भी बैठ जाती है)

मास्टरजी : अब बताइये कि यदि आपके टेलीफोन की घण्टी बजती है तो आप क्या करेंगे?

नेताजी : अजी घण्टी बजण कोई मामूली बात थोड़े ही है। भागकर तुरन्त उठायेंगे टेलीफून।

झाबली : कई बार तो जब ये ब्रुश कर रे होवें हैं और ये निगोड़ी घंटी बज जाय तो मूण्डे के पेस्ट को भी थूंककर भाग पड़े हैं। पतो नांय कित्ते रूपयै न्यूं ही नाळी में बहा दिये। यांकू कोई नफा नुकसाण को तो पतो है ही नांय।

मास्टरजी : हां सही कह रही हैं आप सा। इससे भी अधिक नुकसान है आपकी नेतागिरी कम होने का।

नेताजी : कैसे?

मास्टरजी : देखो, यदि आप घण्टी तुरन्त ही उठा लेंगे तो सामने वाले पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा और वह सोचेगा कि आप फालतू हैं, और आपके पास टेलीफोन सुनने के अलावा कोई काम नहीं है।

झाबली : तो फेर?

मास्टरजी : तो फिर यह सा, कि आप दो-तीन घण्टी बजने तक उसे उठाओ ही मत, थेड़ी देर बाद में उठाओ और सबसे पहले बोलो-हैलो।

उसके बाद बिना उसकी बात सुने बोलो कि अभी आया साहब एक मिनट में।

नेताजी : (बात बीच में काटते हुए)- पर टेलीफून करणे वाळे तैं या बात क्यूं खवें कि अभी आया साहब एक मिनट में? मुझे कोई उसकै घर थोड़े ही जाणा है। मुझे तो उससे बात करनी है फोन पर।

मास्टरजी : नेताजी आप भूल गये। मैंने आपको कुछ दिन पहले यह सबक दिया था कि पहले सामने वाले की पूरी बात सुनो, फिर करो वही जो आपके मन में है।

नेताजी : वो सबक तो मुझे अभी भी याद है आपका।

झाबली : फिर मास्टर साहब की पूरी बात क्यूं नहीं सुण रह्ये?

नेताजी : (अपने सिर पर चपत लगाते हुए)- हां भाई। या बात मेरे भेजे में क्यूं ना आई। हां मास्टरजी अब बताओ कि मैं किसको कहूं ये बात कि अभी आया साब एक मिनट में।

मास्टरजी : अजी साहब, आपको ये किसी से नहीं कहना, बस हैलो बोलने के बाद अपने आप से ही कहना है यह।

नेताजी : इससे फायदा?

मास्टरजी : अजी इससे यह होगा कि टेलीफोन करने वाला यह सोचेगा कि आपके पास कुछ लोग बैठे हैं जिसके कारण आप काफी व्यस्त हैं और इसलिए आप देर से टेलीफोन अटैण्ड कर पाये हैं।

झाबली : अजी ये तो आपकी जोरदार सल्ला है सा।

नेताजी : हां भाई हां।

मास्टरजी : ये छोटी-छोटी बातें ही तो पब्लिक में आपकी इमेज बढ़ायेंगी नेताजी सा।

नेताजी : हां ये बात तो ठीक है सा आपकी।

मास्टरजी : अब मानो आप रास्ते में जा रहे हैं और कोई आपको पुकारता है तो आप क्या करेंगे?

झाबली : अजी एक दो बार तो उसकी बात पर ध्यान ही नहीं देंगे।

नेताजी : जिससूं वा सोचे अक हमारो दिमाग बिजी है।

मास्टरजी : अरे वाह सा वाह। आप लागों को यह बात इतनी जल्दी समझ में कैसे आ गई?

झाबली : मास्टरजी, आपने अपनी फीस रख ली न, कहीं भूल तो नहीं गये?

मास्टरजी : हां जी हां रख ली। अब आई बात समझ में।

नेताजी : क्या?

मास्टरजी : यही कि आप मेरी बातें समझ रहे हैं। इलैक्शन के दिन नजदीक हैं, इसलिए मुझे जल्दी-जल्दी आपको और टिप्स भी देने चाहिएं (फिर कुछ सोचते हुए)-मैं आपको रहन-सहन, आचार-विचार, बोलचाल आदि के बारे में भी बताता हूं। बुरा मत मानना और ध्यान से सुनना हां।

दोनों : हां सा हां।

मास्टरजी : पहली बात तो यह कि आज हमारे देश में अंग्रेजीकरण का दौर चल रहा है। हर जगह अंग्रजी-खान-पान, चाल-ढ़ाल, रहन - सहन, बोली-भाषा , सभी में अंग्रेजी। यदि आज से पचास वर्ष पहले कोई आदमी मर गया हो और आज दूसरा जन्म लेकर फिर से हिन्दुस्तान में आ जाय तो पहचान ही न पायेगा वह अपने देश को।

नेताजी : हां सा तरक्की कर ली है म्हारे देश नै

मास्टरजी : तो अब आप दोनों को भी तरक्की की राह पकड़नी है सा।

झाबली : वो कैसे सा?

मास्टरजी : सबसे पहले तो आपको अपना नाम बदलना होगा। बहुत ही पुराना नाम है सा आपका । बुरा मत मानना सा, पर हमारे गाँवों में छोटे-छोटे बच्चों को जो तनीदार फ्रॉक पहनाते हैं उसे झबला कहते हैं और आप लोगों के कैरियर में यह आड़े जरूर आयेगा ।

झाबली : ना जी ना मैं मेरा नाम कतई ना बदलूं । मेरे बापू चौधरी दानसिंह ने बड़े प्यार से ये नाम दिया है सा।

नेताजी : भाई मास्टरजी तुझे कोई अच्छा सा नाम बता देंगे और जब हम बड़े नेता बणेंगे तो हमारे ससुर जी को नांव भी तो ऊंचो हैगो। लोग कहेंगे कि देखो चौधरी दानसिंह के जवाँई फलां मंत्री हैं। बोल कहेंगे कि नांय?

मास्टरजी : और जब लोग कहेंगे कि चौधराइन झाबली के पति फलां मंत्री हैं तो लोगों को आपका नाम अखरेगा कि नहीं? नेताजी तो नेताजी के रूप में ही जाने जायेंगे उनका नाम कुछ भी रहे परन्तु आपको तो नाम बदलना ही पड़ेगा सा।

झाबली : (निराश होते हुए)- बदलणा ही पड़ेगा, तो फिर मेरा नाम क्या होगा सा?

मास्टरजी : (खुश होते हुए)-आपको पिक्चरें देखने का तो काफी शौक है?

झाबली : हां जी है। धर्मेन्द्र - हेमामालिनी की सीता और गीता, प्रतीज्ञ, राजा जानी, जुगनू, राजेन्द्र कुमार और हेमामालिनी की गोरा और काला, दिलीप कुमार की राम और श्याम, अमिताभ बच्चन की शोले.....

नेताजी : (अपना सिर पकड़ते हुए स्वगत) - बाप रे बाप, शुरू हो गई यह तो। (फिर प्रकट में) - अरी भागवान बस भी करो बस।

झाबली : (नाराज होते हुए) - फिर बीच में बात काटी जी। आज ही तो समझाया था मास्टरजी ने।

नेताजी : (अपने सिर पर चपत लगाते हुए) - अरे हां। तो करदे भाई अपणी बात पूरी।

झाबली : (खुश होते हुए)- हां जी हां, 6-6 बार देखी थी ये पिक्चरें मन्नै।

मास्टरजी : (प्रसन्नता से)- अरे वा, मुझे तो पता ही नहीं था।

झाबली : (इतराते हुए)- और नहीं तो क्या (फिर नेताजी की तरफ देखते हुए) मुझे न्यूं ही समझ राख्या है?

मास्टरजी : वैरी गुड वैरी गुड। तो मैडम, आपने पिक्चरों के सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली होने की बात तो सुनी ही होगी?

झाबली : हां जी इनमें ज्यादातर पिक्चरें तो जुबली पिक्चरें ही थीं।

मास्टरजी : वैरी गुड वैरी गुड। तो मैडम, यह बताइये कि आपका पसंदीदा हीरो कौनसा है?

झाबली : अजी ये पसंदीदा का तो नांव ही पैली बार सुण्या है मन्नै न्ह्यां पर। ये नांव तो मन्नै मेरे पीर मैं सुण्ये थे।

मास्टरजी : मेरा मतलब है आपकी राय में आपका पसंदीदा हीरो कौन सा है इनमें?

झाबली : (मायूस होकर)- है कहां जी, था वो तो। उसकी टक्कर का तो आज कोई हीरो है ही नहीं।

मास्टरजी : अजी कौन था वो?

झाबली : अजी राजेन्दर कुमार। गोरा और काला हाळा। कैसे हेमा मालिनी को घोड़े पर बैठाकर ले जाता था। और गाणा जी गाणा - धीरे धीरे बोल कोई सुण ना ले.... (बैकग्राउण्ड से गाना)

मास्टरजी : आपको पता है जी उसे किस नाम से जाना जाता था?

झाबली : जुबली कुमार के नांव से जी।

मास्टरजी : मिल गया मिल गया मैडम का नाम मिल गया। मिसेज जुबली। जुबली कुमार से नाम मिला जुबली।

झाबली : अरे वाह। कमाल हो गया। मेरे हीरो का नाम मुझे मिल गया।

मास्टरजी : हां नेताजी, नाम भी अंग्रेजी है और मैडम के पुराने नाम में बदलाव भी ज्यादा नहीं है। झाबली से जुबली। ऐसा लगेगा मानो मैडम के पुराने नाम को कोई अंग्रेज अपनी जुबान से बोल रहा है।

नेताजी : चलो भाई भागवान आज तुम्हारा नया नामकरण हो गया।

मास्टरजी : नहीं नेताजी नहीं, अभी मैडम का नामकरण नहीं हुआ है।

झाबली : अजी अभी-अभी तो आपने ही नया नाम बताया है और इब आप ही मना कर रिये हो।

मास्टरजी : मैडम, जब भी किसी के घर में नामकरण होता है तो उत्सव मनाया जाता है। मेहमान आते हैं, दावत खाते हैं और बधाइयां देकर जाते हैं।

नेताजी : अरै मास्टरजी! या थे म्हारी घरहाळी को नामकरण कर रिया हो या म्हारो दिवाळो निकाळन को इन्तजाम ।

मास्टरजी : नेताजी इससे आपका दीवाला नहीं निकलेगा बल्कि इससे तो आपके चुनाव जीतने का आधार मजबूत होगा।

नेताजी : भाई इससे म्हारै चुणाव का के सम्बन्ध ?

मास्टरजी : नेताजी, इस चुनावी लाईन में पार्टी दिये जाने का और किसी की पार्टी अटैण्ड करने का बहुत महत्व होता है और मेरी यह बात बाद में समझेंगे आप।

नेताजी : पर भाई खर्चे का मामला है। थोड़ा तो सोचणा ही पड़ता है नै।

मास्टरजी : नेताजी, यह पार्टी कोई साधारण पार्टी नहीं होगी। इस पार्टी में उन बड़े-बड़े लोगों को बुलाया जायेगा जो आपको किसी चुनाव पार्टी का टिकिट दिलवाने में महत्वपूर्ण साबित होंगे। और नेताजी! इस लाईन में पार्टी देना तो एक बहाना होता है। ऐसी पार्टियों में ही बड़े - बड़े सौदे तय हो जाते हैं, बड़े-बड़े लेन देन भी यहीं निपटा लिए जाते हैं। अब आपको इस लाईन में जाना ही है तो यह सब तो आपको करना ही चाहिए।

नेताजी : तो क्या इस पार्टी में जिलाध्यक्ष भी आ सकते है ?

मास्टरजी : अजी आयेंगे क्यों नहीं, हम मैडम का नामकरण ही उनके श्रीमुख से करायेंगे और एक अच्छा सा तोहफा भी दे देंगे उन्हें। यहां के प्रदेशाध्यक्ष से मेरी पहचान है, वे सब करा देंगे। हां, बस उनकी बेटी की शादी में आपकी ओर से एक अटैची दे दी जाती तो सब ठीक हो जाता।

नेताजी : अजी ऐसी बात है तो मेरी तरफ से दे आणा आप और जो दाम लगें मुझसे ले लेना।

मास्टरजी : अच्छा तो मुझे इजाजत दें, पर नामकरण की तिथि जिलाध्यक्ष महोदय की उपस्थिति के हिसाब से तय की जायेगी।

जुबली : आज का दिन तो बड़ा अच्छा रहा जी। मेरा नामकरण भी हो जायेगा और आपको पार्टी का टिकिट भी मिल जायेगा।

नेताजी : हां भाई इसे कहते हैं आमों के आम।

जुबली : और गुठलियों के दाम।

(दोनों हँसते हैं)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(नेताजी के घर का दृश्य। घर के आँगन को फूलमालाओं एवं गुब्बारों से सजाया गया है। बीचोंबीच एक कुर्सी पर मैडम जुबली गले में फूलों का हार पहने विराजमान हैं। उसके इर्द-गिर्द ख़ास मेहमान हैं जिनमें, नेताजी के कुछ पारिवारिक मित्र भी हैं। इस उत्सव की पूरी व्यवस्था मास्टर चौमुख सिंह देख रहे हैं। पास में ही नेताजी टोपी पहने गर्व से चहलकदमी कर रहे हैं।)

मास्टरजी : (नेताजी से)- प्रदेशाध्यक्ष महोदय शीघ्र ही आने वाले हैं। उनके साथ में जिलाध्यक्ष भी होंगे। जैसे ही वे घर में प्रवेश करें आप भागकर दरवाज़े पर पहुंचें और उनकी अगवानी करें।

नेताजी : पर मास्टरजी आपने तो कल बताया था कि जब कोई आये तो देर में पहुंचणा चाहिए।

मास्टरजी : (झुंझलाते हुए) - नेताजी, यह बात तब लागू होती है जब कोई साधारण आदमी आपसे मिलने आये। परन्तु आज मामला उल्टा है। प्रदेशाध्यक्ष बड़े आदमी हैं और हम और आप साधारण आदमी। काम हमारा है, टिकिट जो लेना है इलिए हमें ऐसा ही करना है।

(फिर जुबली से)- मैडम, प्रदेशाध्यक्ष जी बड़े अतिथि हैं, इसलिए जैसे ही वे आयें तो पहले नेताजी उनके पाँव पखारेंगे और उसके बाद आप उनका आरता उतारेंगी। और आप दोनों को ही ये कार्य मुस्कुराते हुए करने हैं, क्योंकि सभी अख़बारों के फोटोग्राफर आप लोगों की फोटो लेंगे जो नेताजी के कैरियर में आगे काम आयेंगी।

(फिर फोटोग्राफर से)- अरे भाई कैमरे में रील है कि नहीं ?

फोटोग्राफर : नई रील लगाई है साहब। मुझे ऐसी पार्टियों में फोटो खींचने का खासा तजुर्बा है, और बड़े-बड़े अख़बारों का अप्रूव्ड फोटोग्राफर भी हूं मैं।

मास्टरजी : तो भाई इन्हें अख़बारों में भी लगवा दोगे ?

फोटोग्राफर : क्यों नहीं साहब, आज से मैं इन नेताजी से भी जुड़ गया। इनकी तरक्की मेरी तरक्की।

(बाहर सरकारी गाड़ी के सायरन की आवाज़ से सभी चौकस हो जाते हैं। पार्टी का एक कार्यकर्ता भागकर घर के अन्दर प्रविष्ट होते हुए)-

कार्यकर्ता : प्रदेशाध्यक्ष महोदय पधार रहे हैं।

(सभी लोग प्रवेश द्वार की ओर भागते हैं)

नेताजी : (अगवानी करते हुए)- पधारिये सा पधारिये।

जिलाध्यक्ष : (प्रदेशाध्यक्ष से)- सर ये ही हैं नेताजी। बड़े ही समर्पित कार्यकर्ता हैं हमारी पार्टी के।

प्रदेशाध्यक्ष : (नेताजी की आकर देखते हुए)- हां भाई काफी जिक्र सुना है आपका इनसे। (फिर जिलाध्यक्ष से)- ऐसे अच्छे कार्यकर्ता तो हमारी पार्टी को चाहिएं भाई।

(प्रदेशाध्यक्ष आगे बढ़ने को होते हैं पर जिलाध्यक्ष प्रेमपूर्वक उन्हें रुकने का आग्रह करते हैं)

जिलाध्यक्ष : सर, सर, रूकिये सर।

प्रदेशाध्यक्ष : क्यों भाई अब रोक कैसी ?

जिलाध्यक्ष : सर आपका इस घर में पहली बार पदार्पण हुआ है और नेताजी अपनी पारम्परिक रीतियों को निभाना चाहते हैं।

प्रदेशाध्यक्ष : कैसी रीतियां विश्नोई जी ?

जिलाध्यक्ष : सर आपके प्रवेश से पूर्व नेताजी आपके पाँव पखारना चाहते हैं।

प्रदेशाध्यक्ष : (हँसते हुए)- अजी इस औपचारिकता की क्या जरूरत है। और फिर हम तो सामान्य से व्यक्ति ही हैं।

(नेताजी ताँबे के लोटे के जल से प्रदेशाध्यक्ष के पाँव धो रहे हैं और फोटोग्राफर ताबडतोड फोटो खीचे जा रहा है। इसके पश्चात् नेताजी इस जल का चरणामृत लेते हैं और शेष जल को उपस्थित जनसमुदाय के ऊपर छिड१का जाता है।)

(प्रकाश मन्द-मन्द होता हुआ बुझ जाता है।)

नाटक समाप्त

अफ़सर का कुत्ता

यह नाटक दो पात्रों के माध्यम से विस्तारित होता है। जिसमें अवसरवादिता, चापलूसी आदि का व्यंग्यात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

कथावस्तु—एक चापलूस एवं कामचोर बैंक अधिकारी का प्रबन्धक पद हेतु साक्षात्कार होने वाला है। अधिकारी की कार्य निष्पादन रिपोर्ट (□.□) सबसे निम्नकोटि की यानी □ है। वह कुत्ते जाति से सख़्त घृणा करता है, परन्तु अवसर का लाभ उठाते हुए वह अपनी क्षेत्रीय अधिकारी के कुत्ते के लिए काजू लेकर उनके बंगले पर जाता है। कुत्ता खुश होकर पूंछ हिला देता है और अधिकारी महिला उसकी सी.आर. □ करने का आश्वासन देती है।

रास्ते में उसे मोबाईल पर एक अन्य उच्चाधिकारी के कुत्ते के निधन का समाचार मिलता है। इधर घर में कल उसके चाचाजी के तीये की बैठक है और कल ही उच्चाधिकारी महिला के कुत्ते के तीये की बैठक है। उसे पता है कि राँची की ये महिला उच्चाधिकारी उसके इंटरव्यू बोर्ड की चेयरमैन होंगी अत: वह प्राथमिकता निर्धारित कर कुत्ते के तीये की बैठक में शामिल होकर महिला अधिकारी से अभयदान प्राप्त कर अपने मकसद में सफल होता है।

इस प्रकार नाटक वर्तमान व्यवस्थाओं एवं मनुष्य के गिरते हुए नैतिक मूल्यों का सटीक चित्रण प्रस्तुत करता है।

भाषा-शैली—नाटक में हिन्दी के साथ ही साथ ढूंढाड़ी (जयपुर एवं आस-पास के क्षेत्र की भाषा) का प्रयोग किया गया है जिससे न केवल हास्य की उत्पत्ति होती है, अपितु आंचलिकता भी परिलक्षित होती है और हमें क्षेत्रीय रीति-रिवाज आदि पर किये गये कटाक्ष से भी आनंदित होने का अवसर मिलता है।

प्रथम प्रस्तुति : पंजाब नैशनल बैंक की राजस्थान अँचल की अँचल स्तरीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता वर्ष 2001 में अँचल प्रशिक्षण केन्द्र जयपुर में डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा एकाभिनय के रूप में की गई।

अफ़सर का कुत्ता

एक बैंक के चापलूस अधिकारी का कल इन्टरव्यू होने वाला है। उसे कुत्ते जाति से सख्त घृणा है। यदि उससे पूछा जाये कि श्रीमान् इस मनुष्य जीवन में आपका सबसे बड़ा दुश्मन कौन है तो उसका उत्तर होगा– साला गंडकड़ा।

परन्तु साहब एक पुरानी कहावत चली आ रही है कि अपने मतलब के लिए तो आदमी गधे को भी बाप बना लेना है और इन साहब का इन्टरव्यू है अत: ये पहले तो अपनी क्षेत्रीय अधिकारी के घर जा रहे हैं। क्योंकि वे एक सप्ताह बाद आपके प्रोमोशन टैस्ट में बैठेंगी और इन साहब की सी आर की रेटिंग सी (निम्न कोटि) है और इन साहब को पूर्ण विश्वास है कि यदि इन्होंने मेमसाहब के बँगले पर जाकर उनके कुत्ते का मन जीत लिया तो हो सकता है इन्टरव्यू से पहले साहब अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए इनकी सी आर सी से ए कर दें और इन्टरव्यू में भी अच्छे अंक देकर इन्हें मैनेजर बना दें

ये इनके घर जाते हैं और इनके व्यवहार से साहब का डॉगी प्रसन्न होकर पूँछ हिला देता है बस अब क्या था आप उल्लासित मन से मेमसाहब के बंगले से बाहर निकलते हैं। थोड़ी ही दूर चलते हैं कि उनके मोबाईल पर सन्देश आता है कि मण्डल अधिकारी महोदय का कुत्ता मर गया है। ये साहब मन ही मन कुत्ते को गालियां देते हैं कि साले को इन ठण्ड के दिनों में ही मरना था। परन्तु ये यह भी जानते हैं कि उनके इन्टरव्यू बोर्ड हेतु गठित कमेटी के चेयरमेन रांची की ये मण्डल प्रबन्धक ही हैं। अत: वह उनके डॉगी के तीये की बैठक में कैसे नहीं जाये। यह अलग बात है कि कल उसके चाचाजी के तीये की बैठक भी है। पर क्या करें प्राथमिकता तो निर्धारित करनी पड़ेगी ही न । अत: वह सोचता है कि बड़े साहब के डॉगी के तीये की बैठक में राँची के लिए तुरन्त प्रस्थान कर दे परन्तु उसके मन में एकाएक यह चिन्ता उभरती है कि शाखा के मुख्य प्रबन्धक साहब से तो छुट्टी की अनुमति ली ही नहीं। परन्तु दूसरे ही क्षण वह आश्वस्त होता है – ''अरे मैं बड़े अधिकारी के यहां जा रहा हूं और गाता है –

सैयां भये कोतवाल अब डर काहे का ''

मैं – (रास्ते में उल्लासित मन से जा रहा है) – साहब कुत्ते के लिए काजू ले लिए (जेब टटोलता हुआ) – हाँ ले लिए। रास्ते के कुत्तों को मारने के लिए पत्थर ले लिए (हाथ का थैला टटोलता हुआ) – हाँ ले लिए। (जाता है।)

आवारा कुत्ते : भौं भौं भौं भौं ।

मैं : साला गंडक । नीच जा । पशुवां मैं सबसूं नीची कौम, बिना बात ही घुस्यां जार्‌यो छ: । अरै... या भी कोनै देखै... अक कुण जारयो छै अर कुण पर घुसूं अर कुण पर न घुसूं । अरै...देखै.... कोनी साळा काल को मैनेजर जा र्‌यो छूं । (लै लै लै ..... पत्थर मारता है)

फिर जनता से : या आपणी जनता भी भोली छै। पर जनता कांईं करै... टाबरां की बात छै । अै गंडक जद छोटा छोटा पिल्यां व्हीं छीं जद भोत ही चोखा चोखा प्यारा प्यारा लागीं छीं । अर टाबर कदे तो वांनै रोटी खुवावीं छीं, कदे दूध अर म्हाडा कदे कदे तो टॉफी भी (हँसता है)।

फिर आक्रोश से : पण जद वै बड़ा व्है जावीं छीं तो देखो म्हाडा। कुस्योण कर दीं छीं, अईयां चोखा काम पर जार्‌या शरीफ आदम्यां पर बिना बात घुस घुस अ र । अर म्यूनिसिपैलिटी हाळा। बेटी का बाप सारा दिन ताश पत्ती खेलीं छीं। कतरी ही शिकायत करद्‌यो पण वां नै कांई। (कुत्तों की तरफ इशारा करते हुए) – देखो देखो म्हारा बेटा को घुस्यां ही जार्‌यो छै (पत्थर मारता है)

फिर स्वागत : भाग लै... बेटा कदे अईयां न व्है अक इन्टरब्यू और ही कोई दे अर तू चौदा इंजेक्शन खाबै....अस्पताल मैं पड्यो रह। (दबड़क दबड़क भागता है, साहब के बंगले पर पहुंचता है कुत्ता भौंकता है))

स्वगत : साळो वां कूकरां सूं भी बुरो घुसै... छै । देखो साळा मैं न सुर छै: न ताळ (दर्शकों की ओर इशारा करते हुए) बेसुरो छै । ईं सूं..... चोखा तो वै ही घुसर्‌या छा, गळी हाळा भापडा । कम सूं कम ट्रेडीशनल स्टाईल मैं तो घुसर्‌या छा ।
अरै मेमसाहब टैलर्‌या छीं बेटा । पलटी खा .....(प्यार से) अरे अरे टाईगर । कैसे हो । अरे बस बस बस बस । ले बेटा काजू खा। बहुत अच्छे काजू हैं जौहरी बाजार में चुन्नी लाल अत्तार की दुकान से लाया हूं हां । (जोर से कहता है फिर स्वगत) –

अब इसे प्यार से सहलाऊं और गले लगाकर मिल लूं इससे। पर यदि काट खाया तो । तो कोई बात नहीं बेटे। 14 इन्जेक्शन में प्रामोशन तो हो जायेगा न । (पास में जाकर हाथ लगाता है)

टाईगर : व्हा व्हा व्हा व्हा (उस पर टूट पड़ता है । सहसा साहब उपस्थित होते हैं) – साईलेंट टाईगर । बस बस अरे कहो ऑफीसर आज कैसे।

मैं : पायं लागूं सर (पैर छूता है) बहुत दिन हो गये थे न सर आपसे मिले और इस प्यारे से टाईगर को देखे। सर जब भी रास्ते में किसी डॉगी को देखता हूं न तो टाईगर की याद आने लगती है। क्या पर्सनैलिटी है सर। सच कहता हूं सर पूरे शहर में इस जैसा कोई दूसरा नहीं है। इम्पोर्टेड है न सर ?

अफसर : हां भाई इम्पोर्टेड ही है। पिछली बार एक सेमिनार में फॉरेन गये थे तब वहां पर किसी ने प्रजेंट किया था । तुम सही कह रहे हो, इसीलिए इस जैसा दूसरा कहां मिलेगा भाई। तुम कहो नौकरी ठीक चल रही है। कोई उच्चाधिकारी तंग तो नहीं करता न। और कोई काम हो तो बताओ।

मैं : सर आपकी कृपा से सब ठीक है । मेरे पुराने वाला मैनेजर अलग तरह का व्यक्ति था सर और उसने मेरी 'सी' आर सी कर दी थी । परसों मेरा इन्टरव्यू है सर (ले ले टाईगर और ले काजू) सर आपका आशीर्वाद चाहिए (पैरों में गिर पड़ता है)

अफसर : अच्छा तुम भी आ रहे हो इन्टरव्यू में । भई हमने सी आर पर तो अपनी रिपोर्ट फाईनल कर दी । ख़ैर, अब तुम हमारे टाईगर के दोस्त हो तो कुछ तो करना ही पड़ेगा न । मैं कल ही महाजन से कहकर चुपचाप तुम्हारी सी आ 'ए' करा दूंगा। हैड ऑफिस लिस्ट ही तो जायेगी उसे रिवाईज करा देगें। और बाकी मैं सब इन्टरव्यू में देख लूंगा। तुम निश्चिंत होकर जाओ।

मैं : प्रस्थान । (वही हर्षोल्लास) सहसा मोबाईल की घंटी बजती है। क्या....बड़े साहब का कुत्ता मर गया, तीये की बैठक कल ही है। तुमने अच्छा किया पाटिल जो मुझे बता दिया । तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारा ध्यान रखूंगा और तुम जल्दी ही चपरासी

से क्लर्क बन जाओगे। इतनी तो मेरी भी चलती है। बाय। (मोबाईल बन्द करता है)

फिर स्वगत : यार राँची तो ब्होळी दूर छै : काल ही खन्ना साहब का कुत्ता की तीया की बैठक छै अर काल सुबेरे ही चाचाजी का तीया की बैठक भी छै कांई करूं । चाचाजी की बैठक मैं तो ब्होत सारा घर का आदमी व्हींगा संभाळ लींगा। खैद्यूंगो अक सुसराजी कै हार्ट अटैक व्हैगो तो बीनणी नै लेर अबार ही जाबो जरूरी छै। ऊंनै सब समझा द्यूंगो । वा भी आपकै घरां रिह्यावगी दो दिन। अंडे पल्ला लेबा सूं भी बच जावैगी। नहीं तो जद भी कोई फिरबै आवैगो तो झूंठ्याई – मूंठ्यांही ही रोणो पडैगो – अरै ..म्हारा सुसरा जी चोखा छा..रै ...।

अ..रै यार या पल्ला की बात सूं याद आई। मैं भी राँची पोंछ अर पल्ला की स्टाईल मैं ही कोई लटको कर द्यूं तो। पण यार पल्लो तो केवल लुगांयां ही लीं छीं। अ...र... भलांई घूंघटा मैं आंसू आंवीं ही नै, पण जोर जोर सूं धाड़ मार मार अर रोबा को नाटक करलीं छीं। (सोचता है) मैं भी कर ही ल्यूं या नाटिक।

पहुंचता है : (सुबकता है। रूमाल से आंखों को पोंछकर उसे सिर पर डाल लेता है)

साहब से : सर कैसे हुआ ये सब (रोता है) कैसा प्यारा सा था सर हमारा शेरा। ऐसी पर्सनैलिटी थी सर कि भूली नहीं जा सकती । सर पिछली बार मैं जो उसका फोटो ले गया था न वह मेरे घर के ड्रांईंगरूम में लगा रखा है। लगता ही नहीं सर कि हमारा शेरा नहीं रहा। यहीं सर सामने लॉन में साथ साथ खेला करते थे हम (रोने लगता है)

अफसर : धीरज रखो दत्ता। वाकई हमारे शेरा से तुम्हारा आत्मिक लगाव था तभी तो तुम हजारों किलोमीटर दूर चलकर इस दु:ख में हमें धीरज बँधाने आये हो। कहो बाकी सब तो ठीक ठाक है न । दफ्तर कैसा चल रहा है।

मैं : सर परसों मेरा इन्टरव्यू है। एक सप्ताह से तैयारी में जुटा था सर। आज सुबह ही मोबाईल पर इस दुखद घटना की सूचना

मिली तो हवाईजहाज से चला आया सर। प्रोमोशन का क्या है सर। अगले साल दे दूंगा इन्टरव्यू। पर इस दु:ख में मुझसे आये बिना नहीं रहा गया।

अफसर : अरे तुम्हारी बात से याद आया हमें भी तो तुम्हारे वहीं आना है इन्टरव्यू लेने । कैसा संयोग है भाई हमें तो जाना ही पड़ेगा। अब तुम इन्टरव्यू की चिन्ता मत करो हम सब देख लेंगे।

मैं : अच्छा सर (पैरों में गिरकर) आप अपना ख्याल रखियेगा सर।

(फिर बँगले से बाहर आकर उछलते हुए) –

मैं बना .....मैनेजर.....मैनेजर.....

नाटक समाप्त

पेड़ हमारे मित्र

त्रिवेणी कला संगम जयपुर के तृतीय बाल नाट्य एवं संगीत प्रशिक्षण शिविर के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा जयपुर दूरदर्शन के 'नन्हीं दुनिया' कार्यक्रम मे 13 जनवरी, 1997 एवं संस्था के चतुर्थ बाल नाट्य एवं संगीत प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह दि. 1 जनवरी 1997 को महाराष्ट्र मण्डल, जयपुर में की गई प्रस्तुतियों में।

—पात्र परिचय—

भीखू	:	अभिषेक शर्मा
सिमरन	:	काजल शर्मा
रीमा	:	ध्वनि कौशिक
सोनिया	:	सुमन वैष्णव
सहेली	:	शिना अरोड़ा
बुढ़िया माँ	:	नेहा अरोड़ा
डॉक्टर	:	सुहास अरोड़ा
कम्पाउण्डर	:	सुरेश वैष्णव
बहादुर	:	सुभाष वैष्णव
चाची	:	संजना अरोड़ा
फल खरीदने वाली	:	शिरोमी अरोड़ा

निर्देशक—श्री तपन भट्ट एवं डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा

पहला दृश्य

(गाँव के एक खेत का दृश्य। गाँव को जाने वाली सड़क के किनारे एक छोटा सा खेत है जिसमें एक विधवा टूटी

हुई खाट पर बैठी हुक्का पी रही है। पास में ही उसका बेटा भीखू फावड़े से जमीन खोदता हुआ एक कविता गुनगुना रहा है।)

भीखू की गुनगुनाहट : जाग उठ इन्सान पल पल बीतता जाता,
राह है सुनसान इस पर क्यों नहीं आता।
कर इसे आबाद क्यों तू सो रहा पगले,
धैर्य मन में धार राही राह परचल दे।
कंटकों के जाल से क्या मुक्त होना है,
या अभावों में पड़े दम तोड़ देना है।
कर जरा हिम्मत बना तकदीर तू अपना,
चक्रव्यूह से मुक्त हो पूरा करो सपना।
इस पार हैं दुर्दिन गरीबी के थपेड़े भी,
बाट किसी की जोहता चल पड़ अकेले ही।
छोड शीतल छांव तू मरूभूमि को चल दे,
उस पर को भी देख राही क्यों यहाँ बहके।
आराम के ये हेतु सब बाधा बनें तेरी,
लक्ष्य-पथ तुझको बुलाता क्यों करे देरी।
इस कँटीले मार्ग को जो पार तू कर ले,
ज़िन्दगी का ले मजा फिर खूब जी भरके।
आमोद भी दूना वहाँ सुख स्वर्ग के सब भी,
सोच से भी बाहर के रस जा वहाँ पर पी।
कस कमर चल दे अभी क्यों देर करता रे,
बीत जायें छण (क्षण) नहीं कुछ उठ अभी चल दे।

बुढ़िया माँ : (खाँसते हुए)—अरे बेटा भीखू! बहुत हो गई खुदाई आ जा थोड़ी देर सुस्ता ले बेटा।

भीखू : (गाना रोककर ऊँची आवाज में)—अभी आ रहा हूँ अम्मा! बस थोड़ा सा ही तो कोना खुदाई करना रह गया है। तब तक तुम कलेवा परोसो।

(फिर स्वगत)—अब मैं इसमें आम की गुठलियां बोऊँगा। जिनसे छोटे-छोटे पौधे बनेंगे। और फिर उन पौधों को मैं अपने इस सा ..... रे खेत में लगाऊँगा। पिताजी कहा करते थे ..... कि आम फलों का राजा होता है। मेरे खेत में कुछ सालों बाद फलों के खूब सारे राजा होंगे। (खुश होता है, फिर ऊँची आवाज में)—कितने खुश होंगे न अम्मा पिताजी, जब हमारे खेत में आम फलने शुरू होंगे।

माँ : (ललाट पर हाथ मारकर नि:श्वास छोड़ती हुई स्वगत)—कितना भूत सवार है इसे पेड़ लगाने का। बिल्कुल अपने पिता की तरह।
(फिर एकाएक ऊंची आवाज़ में)—
अरे देख तो। धान को चिड़िया खा रही हैं बेटे भीखू!

भीखू : (अपने गोफन में ढ़ेला समेटते हुए भागता है)—
अभी आया अम्मा!
(फिर गोफन फिराकर ढ़ेला फेंकते हुए)—
हुर्रे ..... ।
(सहसा ढेला पास में सड़क पर आ रही किसी अच्छे घर की लड़की, जो दल की नेता जान पड़ती है, के आगे जाकर गिर पड़ता है।)

लड़की : (तेवर बदलते हुए भीखू पर बरस पड़ती है)—
कौन है रे बद्तमीज तू .....?

दूसरी लड़की : तुझे पता नहीं बे गंवार ये कौन है?
(भीखू डरकर सहमा सा खड़ा है)

तीसरी लड़की : (गर्व से)—ये हैं इस हवेली के नये मालिक सेठ चरणदास की शहजादी सिमरन।

सिमरन : (गर्व से गर्दन ऐंठते हुए)—क्यों बे ..... ! अब तो पता चला तुझे कि तूने किसके साथ उद्धण्ढ़ता की जुर्रत की है।

भीखू : (डर के मारे काँपता हुआ)—मुझे माफ कर दो बीबीजी। मैं तो चिड़िया उड़ा रहा था।

सहेलियां : हम तुझे चिड़िया नज़र आती हैं?

सिमरन : (आदेशात्मक स्वर में)—नहीं ऐसे नहीं। ये तेरा जो चमड़े का हवाईजहाज है न, ये मेरे हवाले कर दे। ला जल्दी ला।

भीखू : (गिड़गिड़ाते हुए)—मुझे माफ कर दो बीबीजी। इसके बिना मैं चिड़िया कैसे उड़ाऊँगा। मेरा खेत उजड़ जायेगा। (रोने लगता है।)

सिमरन : (स्वगत)-खेत उजड़ जायेगा .....? (फिर अपने नौकर पीटर से ऊँची आवाज में)—पीटर!

पीटर : (दौड़कर आता है)—जी मालिन (मालकिन)?

सिमरन : (उसका कान ऐंठते हुए)—मैं तुझे मालिन लगती हूँ? (फिर आदेशात्मक स्वर में)—जा, और इसका ये जो हवाईजहाज है न, इससे जबरदस्ती छीन ले। (पीटर भीखू से उसका गोफन जबरदस्ती छीन लेता है।)

भीखू : (गिड़गिड़ाता हुआ सिमरन के पैरों में गिरकर)—बीबीजी, मेरा गोफन मुझे दे दो वर्ना चिड़िया मेरे खेत को खा जायेंगी। मेरा खेत उजड़ जायेगा बीबीजी, मुझ गरीब पर दया करो।

सिमरन : (उसे ठोकर मारते हुए)—अबे गंवार छोकरे। तूने इस खेत में जो घास-फूस और फालतू के पेड़ लगा रखे हैं, उसका महत्त्व ही क्या है? मैं तो अपनी इस हेवली का स्वरूप ही बदल दूंगी। (भीखू की ओर देखकर हवेली के पेड़ों की ओर इशारा करते हुए)—और ये जितने भी बेकार के पेड़ हैं न ये सब कटवा दूंगी और इनकी जगह एक स्वीमिंग पूल बनवाऊँगी।

(फिर खुशनुमा अंदाज में आँखे मींचते हुए)—वाह! कितना मजा आयेगा स्वीमिंग पूल में नहाने का।

भीखू : (सहमे हुए कुछ हिम्मत करके)—पर बीबीजी ..... मेरे पिताजी कहा करते थे कि पेड़ों को काटना पाप है। वे

हमें शुद्ध हवा और खाने को मीठे-मीठे फल देते हैं। (गिड़गिड़ाकर) इसलिए बीबीजी आप इन पेड़ों को मत काटना। मैं जब से पैदा हुआ हूँ, तब से आपकी हवेली वाले इन पेड़ों को देखता रहा हूँ। मेरे पिताजी ने ही आपके बगीचे के ये पेड़ लगाये थे, इनमें मेरी और मेरी बूढ़ी माँ की आत्मा बसती है।

सिमरन : (उपहास करते हुए)—अरे ..... ! तुम दोनों की आत्मा हमारी हवेली के पेड़ों पर बसती है। तुम गंवार लोग इन्हीं बेकार के विचारों के कारण दरिद्रता में दम तोड़ दोगे। जब तुम मर जाओगे तो भूत बनकर जरूर ही हमारी हवेली के इन पेड़ों पर रहोगे। अत: जब तो मुझे पेड़ कटवाने ही पड़ेंगे।

(फिर अपनी सहेलियों से)—चलो री ..... सुबह-सुबह किन भूतों से पाला पड़ा है।

(सबका प्रस्थान। भीखू धीरे-धीरे-सिसकता हुआ-अपनी माँ की ओर जा रहा है। प्रकाश भीखू पर पड़ रहा है जो मन्द होता-होता लुप्त हो जाता है।)

(प्रथम दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(सेठ चरणदास की हवेली का दृश्य। सिमरन अपनी सहेलियों-रीमा व सोनिया के साथ हवेली के दालान में बैठी कॉफी पी रही है। मेज पर केतली व ट्रे में कप-प्लेट रखे हैं। पीटर कॉफी बनाकर सबको दे रहा है।)

सिमरन : (कॉफी का घूंट भरती है, फिर एकाएक गुस्से में)—क्यों बे लीचड़ (पीटर)। कॉफी बनाई है या काढा? (प्लेट मेज पर पटकते हुए) क्या है ये .....?

पीटर : (सहमा सा)—बीबीजी, श-अ अर (शक्कर) और ले आता हूँ।

रीमा : (पीटर की ओर देखकर हँसते हुए)—अबे, शहर से तो पीछा छुड़ाकर यहाँ तक आये हैं। और तू कह रहा है शहर ले आता हूँ।

(सिमरन का क्रोध कुछ कम होता है)

पीटर : बीबीजी, शहर नहीं श-अ अर ले आता हूँ।

रीमा : सिमरन, यह शक्कर के लिये कह रहा है।

सिमरन : (हँसकर)—हाँ जा मेरे तोते उड़कर जा और शक्कर नहीं श-अ अर ही ले आ। (फिर तीनों की ओर मुखातिब होकर) देखो तो कितना अच्छा दालान निकल आया है। हवेली के कम्पाउण्ड में एक भी पेड़ नहीं छोड़ा है। (फिर स्वीमिंग पूल की ओर इशारा करते हुए)—देखो तो क्या खूबसूरत पूल बना है। अच्छा ही हुआ जो पेड़-पौधे कटवा दिये, नहीं तो पूल का पानी पेड़ों के पत्ते गिरने से खराब हो जाता।

सोनिया : और सिम्मू (सिमरन)। एक वो जाहिल-गँवार लड़का था भीखू। जो पेड़ों की तरफदारी कर रहा था।

सिमरन : कितना ढ़ीठ निकला वो गँवार। उस दिन जब मैं नौकरों से पेड़ों को कटवा रही थी तो उस बुढ़िया को लेकर हवेली में घुस आया और मेरे पैरों से लिपटकर कहने लगा (मुँह चिढ़ाकर उसकी नकल करते हुए)—बीबीजी। इन हरे भरे पेड़ों पर दया करो। ये हमें फल देते हैं, ताजी हवा देते हैं और इनको देखने से आँखों की ज्योति बढ़ती है।

रीमा : अच्छा ..... ? फिर तुमने क्या किया?

सिमरन : करना क्या था री। उससे कहा कि भैया अपना ज्ञान अपने पास संभालकर रखो। अपनी और इस बुढ़िया की सेहत बनाने के काम में लेना।

सोनिया : और फिर सिम्मु ने पीटर से धक्के मरवाकर उसे बाहर निकलवा दिया। (हंसती है)

रीमा : (बड़ा अच्छा किया सिम्मू तूने। इन छोटे आदमियों को ज्यादा मुँह लगाना अच्छा नहीं होता है।

सिमरन : (पीटर से)—अरे पीटर। जा तो जनरेटर चला दे। (फिर सबकी ओर मुखातिब होकर)—अरे अब कितनी सुविधा हो गई है। पहले इस हवेली में जंगली लोग रहा करते थे शायद। रोशनी के लिए हवेली में मोमबत्ती व लालटेन (हाथों से लालेन का इशारा करके) जलाते थे। कहीं कहीं तो तेल के दीपक जालकर कम्बख्तों ने हवेली की दीवारें तक काली कर ड़ाली थी। वो तो उन पर दो-दो बार डिस्टेम्बर कराया तब कहीं उनका कालापन खत्म हुआ है।

(पीटर जनरेटर व स्वीमिंग पूल का डीजल इन्जन दोनों चला देता है। सहसा हवेली की ट्यूब लाइटें व बल्ब रोशनी से चमक उठते हैं।)

सभी : (खुश होकर एक साथ)—वाह वाह। मजा आ गया।

(सब फ्रीज, दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(भीखू सिर पर फलों से भरा टोकरा रखे हुए गाँव के रास्ते जा रहा है तथा ऊँचे स्वर में आवाज़ लगा रहा है।)

भीखू : फल ले लो फल। मीठे-मीठे फल। ताजा-ताजा फल।

(एक बालिका का प्रवेश)

अरे भीखू भैया! इस अनाज के बदले फल दे दो (उसे अनाज देती है) मेरी माँ बीमार है। तेरे इन मीठे व ताजा फलों को खाकर बड़ी जल्दी ठीक हो जायेगी।

भीखू : (अनाज झोले में डालकर फल देते हुए)—ये लो बहिन। (एक सेव अलग से देते हुए) ये सेव अम्मा को मेरी तरफ से देना। बड़ी जल्दी ठीक हो जायेंगी।

बूढ़ी माँ : (जाते हुए स्वगत)—कितना नेक और परिश्रमी लड़का है ये। भगवान इसका भला करे।

(प्रकाश भीखू के टोकरे व उस पर स्थिर हो जाता है व फिर धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(हवेली का दृश्य। सिमरन अपनी मित्र-मण्डली के साथ हंसी-मजाक कर रही है। तभी पीटर सिमरन के पास आता है।)

पीटर : बीबीजी। बाज़ार से आकर (जाकर) आ आ लाऊं (क्या-क्या लाऊँ?)

सिमरन : (इशारा करते हुए)—इधर आ।

पीटर : (पास आकर)—जी बीबीजी।

सिमरन : (उसका कान ऐंठते हुए)—जी बीबीजी के बच्चे। बाज़ार से जाकर कुछ लायेगा या आकर।

पीटर : (भोलेपन से)—बीबीजी जाकर आऊँगा (लाऊँगा)।

सिमरन : केवल जाकर आयेगा? अबे अक्ल के दुश्मन। फल लाने हैं वो नहीं लायेगा?

पीटर : आऊंगा (लाऊंगा) बीबीजी। फल भी आऊंगा (लाऊंगा)।

सिमरन : (खीझकर)—अबे क्या आऊंगा-आऊंगा लगा रखी है। जा और बाज़ार से फल ले आ। (तभी बाहर से भीखू की आवाज़ आती है।)

भीखू : फल ले लो फल। मीठे-मीठे फल। ताज़ा ताज़ा फल।

सिमरन : (पीटर से)—अरे। यह तो वही गंवार लड़का है। जा तो, उसे अन्दर बुला ला।

(पीटर जाता है और भीखू के साथ हवेली में प्रवेश करता है। हवेली में रोशनी जगमगा रही है। जनरेटर व डीजल इन्जन की घड़घड़ाहट से भीखू का सिर फटा जा रहा है)

भीखू : (टोकरा ज़मीन पर रखकर बैठते हुए)—बीबीजी। फल दूं थोड़े। बड़े ताज़ा और मीठे फल हैं बीबीजी।

सिमरन : (उलाहना देते हुए कुछ दया भाव दिखाते हुए)—अरे लड़के। तू क्यों ये गलियों में टोकरा उठाये मारा-मारा फिरता रहता है। देख तेरी जो ज़मीन है न, जिस पर

बगीचा जो लगा रखा है तूने। वो हमें दे दे। मैं मेरे पिताजी से तुझे मुहँ माँगी कीमत दिलाऊँगी जिससे तू ऐश करना।

भीखू : (आश्चर्य से)—आप क्या करेंगी बीबीजी उस ज़मीन का? क्या आप उस पर और पेड़ लगवाएंगी?

सिमरन : अरे भई। बगीचा नहीं लगवाऊंगी। उस बगीचे को कटवाकर मेरे पिताजी एक रेसकोर्स का मैदान बनवाना चाहते हैं। बोल बेचेगा तू वह बगीचा हमें?

भीखू : (अपना टोकरा उठाकर जाते हुए स्वगत)—हे भगवान। बीबीजी पेड़ों के फायदे नहीं जानती। इन्हें सद्बुद्धि देना भगवान। (फिर प्रकट में)—बीबीजी, वह बगीचा मेरे पिताजी ने लगाया था। वे पेड़ बेकार के नहीं हैं वे हमारी जान हैं। पेड़ों का हर भाग हमारे जीवन के लिए जरूरी है।

(प्रकाश जाते हुए भीखू पर पड़ रहा है और मन्द-मन्द होकर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

पाँचवाँ दृश्य

(हवेली के अन्दर का दृश्य। एक पलंग पर बीमार सिमरन सो रही है। पास में ही उसकी सहेलियां-सोनिया, रीमा व पीटर खड़े हैं। डॉक्टर साहब ने बीमार सिमनर की जांच कर ली है। भीखू ने डॉक्टर साहब का बैग हाथ में उठा रखा है। और उन्हें बाहर छोड़ आने को उद्यत है। सभी के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं हैं।)

भीखू : (धीमी आवाज में)—डॉक्टर साहब। क्या हुआ है बीबीजी को? वे ठीक तो हो जायेंगी न डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (सबको पलंग से दूर आने का इशारा करते हुए भीखू की ओर मुखातिब होकर)—भीखू बेटे। तुम्हारी बीबीजी को टी.बी. हो गई है।

सब : (चौंकते हुए एक साथ)—टी.बी.!

भीखू : (रोता हुआ)—नहीं डॉक्टर साहब नहीं, मेरी बीबीजी को टी.बी. नहीं हो सकती। मैं उन्हें अपने बगीचे के मीठे-मीठे फल खिलाऊँगा (सिसकियां)। मेरे फलों में जादू है डॉक्टर साहब। मेरे पिताजी कहा करते थे कि ताज़ी हवा और ताज़ा फलों से बड़ी से बड़ी बीमारी भी ठीक हो सकती है।

सोनिया, रीमा और पीटर एक साथः

(भीखू को सान्त्वना देते हुए)—मत रो भीखू, मत रो। तुम्हारे ताज़ा फल और बगीचे की हवा से ये ठीक हो जायेंगी।

डॉक्टर : (सभी से)—भीखू ठीक कहता है बच्चो। यदि सिमरन को पेड़ों की जाती हवा, खाने की ताज़ा फल व सब्जियां मिलें तो यह कुछ ही दिनों में बिल्कुल ठीक हो सकती है।

रीमा : (प्रसन्नता से)—सच डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : हाँ मेरे बच्चो। पेड़ों में बहुत बड़ी शक्ति होती है। परन्तु तुम्हें इस बगीचे में पुनः पेड़ लगाने होंगे। धुआँ और शोर से प्रदूषण फैलाने वाले इन बड़े-बड़े यंत्रों को यहाँ से हटाना होगा।

भीखू : डाक्टर साहब। इस मैदान में मैं दुबारा पेड़ लगाऊँगा।

रीमा, सोनिया व पीटर (एक साथ) :

और हम इन प्रदूषण फैलाने वाले यंत्रों को यहाँ से हटा देंगे।

(भीखू व डाक्टर जाते हैं।)

(दृश्य समाप्त)

छठा दृश्य

(हवेली का दृश्य। वातावरण में कुछ परिवर्तन दिखाई दे रहा है। सिमरन पलंग पर बैठी ताज़े फल खा रही है। पास में ही डॉक्टर बैठे हैं।)

सिमरन : डॉक्टर साहब, क्या मैं अब पूरी तरह से स्वस्थ हूँ।

डॉक्टर : हाँ बिटिया। अब तुम पूर्ण स्वस्थ हो। अब तुम्हें हवेली से बाहर जाकर घूमने-फिरने की इजाज़त भी दी जाती है।

सिमरन : सच डॉक्टर साहब। मैं ठीक हो गई। लेकिन मैं इतनी जल्दी ठीक कैसे हुई डॉक्टर साहब। मुझे तो टी.बी. की शुरुआत हो गई थी।

रीमा : सिम्मु। तुझे पेड़ों की ताज़ी हवा ने, भीखू के द्वारा लाये गये ताज़ा फलों व सब्जियों ने और भीखू की बूढ़ी माँ की दुआओं ने इतना जल्दी ठीक किया है।

सिमरन : (पश्चाताप करते हुए)—मुझसे भूल हुई दोस्तो। मैंने भीखू की सीख नहीं मानी। उससे दुर्व्यवहार किया, (फिर सबको सम्बोधित करते हुए)—हमें भीखू से माफी माँगनी चाहिए।

सब : (एक साथ)—हाँ हाँ माफी माँगनी चाहिए।

सिमरन : (सबसे)—लेकिन भीखू है कहाँ?

सोनिया : वह तो हवेली की क्यारियों में ढ़ेले फेंक-फेंककर चिड़िया उड़ा रहा है।

रीमा : ताकि वे बीजों को खा नहीं जायें।

सिमरन : (सबसे)—चलो-चलो हम उसके पास चलते हैं।

(सब जाते हैं।)

(दृश्य समाप्त)

सातवाँ दृश्य

(हवेली के कम्पाउण्ड का दृश्य। भीखू तालियां बजा-बजाकर व ढ़ेले फेंक-फेंककर चिड़िया उड़ा रहा है।)

भीखू : हुर्रे ..... ! ! हुर्रे ..... ! !

(सहसा एक ढ़ेला तेजी से भीखू के सिर पर से सर्र ..... से निकल जाता है और सिमरन की तेज आवाज

से गोफन के ढ़ेले के साथ जाकर भीखू को चौंका देती है।)

भीखू : (उन सबको देखकर खुशी से)—बीबीजी। बीबीजी। आप ठीक हो गई।

सिमरन : भीखू मैं बहुत शर्मींदा हूँ। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा सलूक किया और तुम्हारे ही कारण आज मैं ठीक हुई। आज से तुम हमारे मित्र हो।

भीखू : (ताली बजाकर उछलते हुए)—मैंने? (सबकी ओर देखते हुए)- लो सुनो। मैंने इन्हें ठीक किया। (फिर सिमरन को ओर मुखातिक होकर)- बीबीजी। मैंने आपको ठीक नहीं किया। आपको ठीक किया है इन पेड़ों ने, यहाँ की ताजी हवा ने, और मेरी बूढ़ी माँ की दुआओं ने। (बूढ़ी माँ भी पास आ जाती है) आपकी रक्षा मैंने नहीं इन पेड़ों ने की है। अत: ये ही आपके मित्र हैं, हम सबके मित्र हैं। (फिर सबकी ओर देखते हुए दायां हाथ ऊँचा करते हुए) बोलो कौन हमारे मित्र?

सब : (एक साथ हाथ ऊँचे करके ऊँची आवाज़में)—पेड़ हमारे मित्र।

(फ्रीज- नाटक समाप्त)

छोटा बेगारी

प्रमुख पात्र

भूरा	—	गाँव का एक गरीब मजदूर एवं बेगारी—आयु 40 वर्ष
रेवती	—	भूरा बेगारी की पत्नी—आयु 35 वर्ष
गोपी	—	भूरा बेगारी का पुत्र—आयु 16 वर्ष
सेठ धनीराम	—	गाँव का साहूकार—आयु 50 वर्ष
चौबेजी	—	स्कूल के अध्यापक—आयु 30 वर्ष
पटवारी	—	गाँव का पटवारी—आयु 32 वर्ष
मुनीम जी	—	सेठ धनीराम के मुनीम—आयु 40 वर्ष
हैड मास्टरनी	—	स्कूल की प्रधानाध्यापिका—आयु 32 वर्ष
बजरंगी	—	गाँव का एक प्रभावशाली व्यक्ति—आयु 30 वर्ष
पुजारी जी	—	गाँव के मन्दिर के पुजारी—आयु 50 वर्ष
पुजारिन माँ	—	पुजारी जी की धर्मपत्नी—आयु 45 वर्ष
अन्य पात्र	—	जिला शिक्षाधिकारी, राहगीर, पुलिसमैन, रामू काका, किसना ताऊ, ठाकुर साहब एवं कुछ स्कूली बच्चे।

टिप्पणी: नाटक की रवीन्द्र मंच, जयपुर एवं अन्य स्थानों पर की गई विभिन्न प्रस्तुतियों में भाग लेने वाले कलाकार- काजल शर्मा, अभिषेक शर्मा, शैलेन्द्र मिश्रा, अनामिक-भूमिका शर्मा , चाँदकरण लोहिया, रवि-मनीष लोहिया,गौरव शर्मा आदि। **संगीत**-डॉ. योजना शर्मा **तबला**- गुलाम गौस खाँ

पहला दृश्य

(गाँव के एक गरीब मजूदर भूरे बेगारी का मकान। एक झोंपड़ी में भूरा अपने बेटे गोपी के साथ कलेवा कर रहा है। दोनों बाप बेटे सेठ धनीराम की हवेली में बेगार करने जाने वाले हैं। भूरे की पत्नी उन्हें कलेवा परोस रही है।)

भूरा : (अपनी पत्नी रेवती को उलाहना देते हुए)—अरी भागवान, फिर आज वही मिर्च की चटनी। सारे दिन सेठ की हवेली

में काम करना है, थोड़ा पालर ही ले आती; तो सब्जी ही बन जाती।

रेवती : पालर कहाँ से ले आती। हमारे पास अपने खेत तो हैं नहीं जो तोड़कर ले आती। और किसी के खेत पर जाओ तो लोग कहने लगते हैं—'बेगारिन! जरा बछड़ों को बाँध देना, गोबर उठा देना।' अब सोचो तो; थोड़े से पालर के पीछे उनका इतना काम करो। (फिर गोपी की ओर देखती हुई) और फिर मेरा यह होनहार बेटा भी तो बेचारा सुबह का निकला शाम को घर लौटा है। इसे भी तो समय पर कुछ रूखा सूखा चाहिए खाने को। (फिर गोपी को एक रोटी और देते हुए)—ले मेरे बेटे। आज चटनी से और खा जा। कल तो मैं तुम्हें सब्जी बना दूँगी, या पुजारिन माँ से ही माँग लाऊंगी।

गोपी : (माँ की ओर स्नेह दृष्टि से देखते हुए)—माँ! वो पुजारिन माँ हैं न; वो कह रही थी (पानी पीकर गिलास रखता है।)

रेवती : हाँ बेटे! क्या कह रही थी पुजारिन माँ?

गोपी : (खुश होता हुआ)—माँ वो कह रहीं थी कि उनकी गाय के दूध का देवताओं के भोग चढ़ा दिया है, अपनी माँ को छाछ लेने भेज दिया कर।

रेवती : (आह भरते हुए)—हाँ रे गोपी। बड़े अच्छे लोगे हैं मंदिर वाले। पुजारी जी देवता हैं, और पुजारिन माँ, वो तो देवी हैं देवी। सबका ख्याल रखती हैं। भगवान उन्हें लम्बी आयु दे।

गोपी : माँ मुझे पुजारी बाबा बहुत अच्छे लगते हैं। पता है जब वो गाँव वालों को प्रवचन सुनाते हैं तो मुझे भी सुनने को कहते हैं, मुझे मन्दिर का प्रसाद भी देते हैं और सत्संग के दिन चाय भी पिलाते हैं सिकोरे में।

भूरा : (खाना खाकर उठते हुए)—अरे बेटा! आज पुजारी जी ने सत्संग रखवाया है मंदिर में। उन्होंने कहा है कि गोपी गाँव में सभी को सूचना दे आवेगा।

गोपी : हाँ बाबा, तुम हवेली चलो। मैं रामू काका, देबू चौधरी, किसना ताऊ, ठाकुर साहब, सबको सूचना देकर पहुँचता हूँ हवेली में।

रेवती : अरे बेटा, तू स्कूल नहीं जायेगा आज?

गोपी : नहीं माँ। आज सेठजी के यहाँ काम ज्यादा है। मैं भी बाबा का हाथ बटाऊँगा और शाम को पुजारी बाबा के यहाँ सत्संग में जाऊँगा। फिर सोमवार से निश्चिन्त होकर स्कूल जाऊँगा।

भूरा : (प्रसन्नता से रेवती की ओर देखते हुए)—पुजारी जी कह रहे थे कि अपना गोपी बड़ा होनहार है। जानती हो सत्संग में जब एक दिन बजरंगी नहीं आये तो क्या हुआ?

रेवती : (आश्चर्य से)—क्या हुआ तब?

भूरा : अरे तब समस्या ये आयी की तबला कौन बजाये। सब साजिन्दे तो आ गये थे। अब रामू काका हरमुनियम बजायें या तबला।

रेवती : फिर क्या हुआ?

भूरा : (गर्व से)—अरे होना क्या था? (गोपी के बालों को सरसराते हुए)—इस पंछी ने ऐसा तबला बजाया, ऐसा तबला बजाया कि सब के सब देखते रह गये। सबने शाबाशी दी तेरे इस छुटके को।

रेवती : (चिन्तित होते हुए)—यह तो अच्छा नहीं हुआ गोपी के बापू।

भूरा : क्यों काहे न अच्छा हुआ?

रेवती : तुम तो जानते ही हो कि बजरंगी हम छोटी जाति वालों से नफरत करता है। हम लोगों की तरक्की से जलता है मुआ। अब जब गोपी बच्चा होकर उसके जैसा बजायेगा तो उसे अपनी इज्ज़त तो कम होती लगेगी ही न।

भूरा : अरे तो इसमें डरने की क्या बात है? क्या कर लेगा वो?

रेवती : और नहीं तो कुछ झंझट तो पैदा कर ही सकता है। तुम्हें क्या पता नहीं, जब हम गोपी को स्कूल में दाखिल कराने गये थे तो कैसा झमेला खड़ा किया था बजरंगी ने। हैडमास्टरनी से कहने लगा था—'मास्टरनी जी! यदि इस अछूत तो हमारे बच्चों के साथ पढ़ने की इजाजत दी तो अच्छा नहीं होगा।' और उसने तो मास्टरनी जी को बदली कराने की धमकी भी दी थी।

भूरा : हाँ, भला हो बेचारी मास्टरनी जी का जो बजरंगी की धमकियों से डरी नहीं और कहने लगी कि भूरा तुम डरो मत। स्कूल किसी एक जाति का नहीं है। यहाँ सब जातियों के बच्चे पढ़ने आ सकते हैं।

रेवती : (गोपी को दुलारते हुए)—उन्हीं की मेहरबानियों की वजह से आज मेरा बेटा अपनी कक्षा में अव्वल आता है।

(गोपी कलेवा करके खड़ा हो जाता है)

गोपी : अच्छा माँ मैं बापू के साथ सेठजी की हवेली जा रहा हूँ। तुम मेरी स्कूल की ड्रेस में पैबन्द लगा देना।

(भूरा व गोपी का प्रस्थान। प्रकाश जाते हुए गोपी पर पड़ रहा है एवं मंद मंद होकर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(सेठ धनीराम की हवेली का दृश्य। हवेली में कोई उत्सव है जिसमें गाँव के पटवारी, स्कूल के मास्टर, पण्डित जी, चौबे जी, सेठ जी के मुंशी जी आदि उपस्थित हैं। पास में ही सेठ जी की बेटी बच्चों से बातें कर रही है।)

सेठ धनीराम : (सबकी ओर मुखातिब होकर)—भई पटवारी जी, चौबे जी! आप लोगों के आ जाने से तो हमारी हवेली की रौनक बढ़ गई है।

चौबे जी : (चापलूसी के अंदाज में)—रौनक तो हमारी बढ़ गई है सेठ साहब आपके यहाँ आने से।

पटवारी : हाँ सेठ साहब। यह तो आपकी मेहरबानी है जो हम जैसे सरकारी मुलाजिमों का आप अपने परिवार के सदस्यों की तरह ध्यान रखते हैं।

(भूरा का गोपी के साथ प्रवेश)

भूरा : जय राम जी की मालिक।

सेठ धनीराम : (गुस्से में)—अरे आज तुमने फिर देर कर दी आने में।

भूरा : मालिक मैं ...

सेठ : (बात काटते हुए)—क्या मालिक मैं, मालिक मैं। अरे आज तो मुझे जल्दी आना चाहिए था। तुझे पता नहीं आज हमारे यहाँ उत्सव है।

पटवारी : सेठ साहब! आजकल इन लोगों ने सिर ऊपर उठा रखा है। कहते हैं सरकार हमारे ऊपर मेहरबान है।

चौबे जी : (गोपी की ओर देखते हुए)—हाँ जी। तभी तो मैं भी कहूँ कि आजकल के विद्यार्थी गुरु को तो कुछ समझते ही नहीं। न नमस्ते, न कोई सम्मान। देखो तो कैसे ढ़ीठ की तरह खड़ा है।

भूरा : (गोपी की ओर झुककर धीरे से)—अरे चल मालिक को, चौबे जी को, पटवारी जी को, सबको नमस्ते कर।

गोपी : (बेमन से)—नमस्ते ... नमस्ते ... नमस्ते ... (सभी को नमस्ते करता है। इसके बाद वह पास में ही खेल रहे अपने सहपाठियों की ओर देखता है।)

सेठ धनीराम : (गुस्से में)—अबे खड़ा-खड़ा इधर-उधर क्या देख रहा है? क्या कभी इतना बड़ा मकान नहीं देखा?

मुनीम जी : या कुछ लेकर भागेगा? घाटा करायेगा भाया!

सेठ : अरे भूरा, तू जा जल्दी से जा मवेशियों को पानी पिला दे। (भूरा जाता है। उसके साथ गोपी भी जाने लगता है।)

मुनीम जी : अबे तू कहाँ जा रहा है भाया? इस चौक की सफाई क्या तेरी अम्मा करेगी घर से आकर।

सेठ : और देख बे पढेसरी की पूँछड़ी। इस सारे चौक में झाड़ू और पोंछा लगाकर जाना, हाँ ...।

(गोपी झाड़ू से पूरा चौक साफ करता है। उसके बाद वह पोंछा लगाने लगता है।)

चौबेजी : (पैरों को ज़मीन से ऊपर करते हुए)—अबे यहाँ क्या गंदा ही छोड़ देगा। चल लगा पोंछा यहाँ भी।

गोपी : जी गुरु जी (और पोंछा लगाने लगता है।)

चौबे जी : (मुँह बनाकर उपहास के अंदाज में)—गुरुजी! अबे तुझे शर्म नहीं आती मुझे गुरुजी कहते हुए। हम संस्कृत के गुरु हैं संस्कृत के। और किसी नीच जात वाले के गुरु कहलाना पसन्द नहीं करते। इसमें हल्की होती है हमारी। और फिर क्या केवल तुम बेगारी लोग ही बचे हो हमारे शिष्य बनने को।

(चौबेजी की इस बात पर सब बच्चे हो हो करके हंसने लगते हैं।)

चौबे जी : (हवेली में खेल रहे बच्चों से)—कहो बच्चो गुरुजी। हमें बड़ा अच्छा लगता है।

सब बच्चे : (गोपी को मुँह चिढ़ाते हुए)—गुरुजी!

चौबे जी : (आनन्द विभोर होकर)—आहा! कितनी मिठास है इनकी वाणी में। गुरुजी! मन मीठा कर दिया तुम लोगों ने।

(गोपी का पोंछा चौबेजी के पैरों में लग जाता है।)

चौबे जी : (कुर्सी पर से पैर ज़मीन पर पटकते हुए चिल्ला पड़ते हैं)—राम राम राम राम! भ्रष्ट कर दिया इस नीच जात ने।

(सेठ जी, मुनीम जी, पटवारी आदि सभी भाग भागकर आ जाते हैं)

सेठ जी : क्या हुआ चौबे जी?

चौबे जी : राम राम राम राम ... हुआ क्या जी? ये पूछो क्या नहीं हुआ। भ्रष्ट कर दिया इस नीच जात ने मुझे छूकर। सुबह-सुबह नहा धोकर पूजा पाठ करके आया था। पूजा भी आज विशेष थी। हवन में एक किलो तो घृत ही लग गया था और सामग्री अलग।

सेठजी : (गुस्से में)—मुनीम जी!

मुनीम जी : हाँ मालिक।

सेठजी : (गोपी को खा जाने वाली दृष्टि से देखते हुए)—इस नीच जात को तो मैं संस्कृत पढ़ाऊँगा अभी। आप चौबेजी को पूजा के लिए एक किलो घी और एक सौ रुपये पूजा सामग्री के लिए दे दीजिए।

(फिर चौबेजी की ओर क्षमायाचना भाव से)—क्षमा करें चौबे जी। आप दुबारा नहा धोकर पूजा कर लें।

चौबे जी : (खुश होते हुए)—वाह सेठ साहब वाह! आप तो बड़े ही धर्मावलम्बी हैं। भगवान आपका भला करे। (फिर मुनीम जी के पास जाकर)—मुनीम जी चलें।

मुनीम जी : (चौबेजी के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से)—पण्डित जी मेरा कमीशन?

चौबे जी : (झिड़कते हुए धीमे से)—अरे मुनीम जी, इसमें कैसी कोताही। हमेशा की तरह इसमें से भी चार आना हिस्सा आपका होगा।

(चौबेजी व मुनीम जी का प्रस्थान)

सेठजी : (बेंत से गोपी को मारते हुए)—कमबख़्त! हमारा ही दिया खाकर पेट पालते हो और काम के वक्त तुमसे ठीक से करते नहीं बन पड़ता।

(सहसा हैडमास्टरनी का प्रवेश। वह सेठजी का बेंत हाथ में पकड़ लेती हैं।)

मास्टरनी : यह क्या कर रहे हैं सेठजी। एक बच्चे को इसलिए मार रहे हैं कि वह गलती से एक पण्डित (चौबे जी की ओर देखती हुई) से छू गया और इस कारण उनका शरीर अपवित्र हो गया।

(सेठजी छड़ी फेंककर हाथ जोड़ने लगते हैं और चौबे जी चुपचाप खिसक लेते हैं।)

मास्टरनी : (गोपी को सहारा देकर उठाते हुए)—सेठजी! तन से कोई आदमी पवित्र नहीं होता। आदमी पवित्र होता है मन से। जाति से कोई आदमी छोटा या बड़ा नहीं होता। वह छोटा या बड़ा होता है अपने कर्मों से। और यह मेरा विश्वास है कि यह गोपी अपनी मेहनत एवं लगन से अपना ही नहीं बल्कि अपने गुरुजनों का, अपने माता-पिता का और अपने गाँव का नाम अवश्य रोशन करेगा। (फिर गोपी से)—जाओ गोपी अब तुम घर जाओ और जाकर पढ़ाई करो।

(गोपी का प्रस्थान। प्रकाश जाते हुए गोपी पर गिरता हुआ मंद मंद होकर बुझ जाता है)

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(स्कूल में प्रार्थना हो रही है। हैडमास्टरनी जी आज छुट्टी पर हैं अत: चौबेजी राउण्ड लगा रहे हैं। गोपी प्रार्थना की लाईन में सबसे पीछे लगा है।)

चौबे जी : (प्रार्थना कर रहे गोपी को बेंत दिखाते हुए)—अबे कहाँ लाईन में आगे घुसे जा रहा है। दिखता नहीं आगे सेठजी की बिटिया खड़ी है। छूयेगा क्या इन्हें।

(गोपी थोड़ा पीछे खिसक जाता है। प्रार्थना समाप्त होते ही सभी बच्चे आकर कक्षा में बैठ जाते हैं और चौबेजी आकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

मुरली : (खड़ा होकर)—गुरुजी! गुरुजी!

चौबेजी : (खुश होते हुए)—हाँ कहो मुरली क्या बात है?

मुरली : गुरुजी! इस गोपी को आपने प्रार्थना में थोड़ा दूर खड़ा होने को कहा था। पर यह तो हमारे बिल्कुल पास में खड़ा होता है।

चौबेजी : अच्छा! ये बात है। (फिर गोपी के पास जाकर बेंत से इशारा करते हुए)—चल बे बेगारी खड़ा हो जा।

गोपी : (सहमते हुए खड़ा होकर)—जी गुरुजी!

चौबेजी : (व्यंग्य से)—गुरुजी! मैंने तुझे कितनी बार कहा कि प्रार्थना की लाईन में बच्चों से दो गज दूर खड़ा रहा कर। (फिर सबकी ओर देखते हुए)—पर इसकी हिमाकत तो देखो। कान पर जूँ ... तक नहीं रेंगती इसके।

गोपी : गुरुजी मैं तो दूर ही खड़ा रहता हूँ सब बच्चों से।

चौबेजी : (गुस्से से झल्लाकर)—दूर ही खड़ा रहता हूँ मैं तो। (फिर पलटकर ऊँची आवाज़ में)—तो प्रार्थना की लाईन में मैं जाकर आगे वाले बच्चों के सिर पर चढ़ता हूँ।

(सब बच्चे मुरली के साथ हो हो करके हंसने लगते हैं।)

चौबेजी : और ये पटेल जी का मुरली कह रहा है वह क्या झूठ बोल रहा है? अरे इसके पिता गाँव के पटेल हैं पटेल।

मुरली : और गुरुजी! आपने यह भी कहा था कि गोपी कक्षा में अपनी दरी पट्टी सबसे आखिर में बिछाकर बैठेगा। पर यह तो हमारे बीच में घुसकर बैठता है।

चौबेजी : (गोपी की ओर आँख निकालते हुए)—अरे मैं सब जानता हूँ इन लोगों को। कहते हैं सरकार ने हमें छूट दे रखी है। हम तो ऊँची जाति वालों के सिर पर बैठेंगे। मंदिरों में जाकर भगवान की आरती उतारेंगे।

(फिर बेंत से उसकी दरी पट्टी को घसीटकर पीछे कर देते हैं और चपरासी को पुकारते हैं)—अरे भगवान! ओ भगवान!

भगवान : (उपस्थित होकर)—जी चौबे जी!

चौबेजी : (झल्लाकर)—अबे तुझे इस दफ्तर के कानून कायदे आते हैं या नहीं।

भगवान : क्यों क्या हुआ चौबे जी!

चौबेजी : अबे चौबे जी के बच्चे! तुझे पता नहीं है आज हैड मास्टरनी जी छुट्टी पर हैं और मैं आज चौबेजी नहीं हैडमास्टर हूँ। चलो कहो हैडमास्टर जी।

भगवान : जी हैडमास्टर जी। (जाने लगता है)

चौबेजी : अबे कहाँ जा रहा है?

भगवान : जी आपकी बकरी के लिए अरडू के पत्ते लेने जा रहा हूँ।

चौबेजी : अरे तू रहने दे। तू तो ये जो बेंत पड़ा है न मेरा, इसे जरा धो ला।

भगवान : यह तो साफ ही है चौबे जी। मेरा मतलब हैड मास्टरजी। (फिर उसे उलट पलटकर देखता हुआ) यह तो कहीं से भी गन्दा नहीं है।

चौबेजी : अरे मूर्ख इस बेगारी की दरी पट्टी से यह अपवित्र हो गया है जा ले जा इसे। (भगवान बेंत ले जाता है।)

चौबेजी : (गोपी से)—चल बे खड़ा हो जा यहाँ से और एक भरोटा अरडू के नरम-नरम पत्तों का मेरे घर डाल देना।

गोपी : (जाते हुए) जी गुरुजी।

चौबेजी : और देख पत्ते पके हुए और पीले न हों कच्चे और नरम नरम हों।

(गोपी का प्रस्थान)

(दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(मन्दिर में भजन कीर्तन हो रहा है। बीचों बीच पुजारी जी बैठे हुए हैं। उनके इर्द गिर्द रामू काका, देबू चौधरी, किसना ताऊ, ठाकुर साहब आदि क्रमशः हारमोनियम, मंजीरे, ढोलक आदि की संगत कर रहे हैं। थोड़ा पीछे हटकर बैठा गोपी तबला बजा रहा है। कोई भक्ति का पद गाया जा रहा है जिससे भाव विह्वल होकर ठाकुर साहब सिर पर अंगोछा ढंके आँखें बन्द किये हुए नृत्य कर रहे हैं। पास में ही पुजारिन माँ चाय की बाल्टी लिये खड़ी हैं। उनकी सहायता के लिए कुछ बच्चे लम्बे हत्थे वाली घण्टी से बाल्टी में से चाय लेकर खाली कपों में उंडेल रहे हैं तो कुछ बच्चे चाय के कप सत्संग में बैठे लोगों को पकड़ाते जा रहे हैं।)

(सहसा बजरंगी का प्रवेश)

बजरंगी : (क्रोध से आगबबूला होते हुए गोपी से)—क्यों बे बेगारी! तू फिर घुस आया मन्दिर के बरामदे में। तुझसे हजार बार कहा है कि मन्दिर में तेरा क्या काम?

पुजारी जी : (उठते हुए)—शान्त रहो बजरंगी शान्त रहो। मन्दिर किसी जाति विशेष का नहीं होता। भगवान किसी एक के नहीं होते। भगवान के दरबार सबके लिए खुले रहते हैं।

बजरंगी : (झेंपते हुए)—लेकिन पुजारी जी आना ही है तो आये, कौन रोकता है इसे। पर सदियों से ऐसा होता आया कि अछूत लोग बरामदे के कोने में बैठते हैं (फिर गोपी को धमकाते हुए)—इस बेशर्म की तरह अन्दर नहीं घुसे आते हैं (फिर उसे झिड़कते हुए)—और मेरे इन तबलों के हाथ कैसे लगाया तूने। तेरे बाप दादा ने कभी तबला बजाया है? चल उठ यहाँ से।

(सहसा हैडमास्टरनी का प्रवेश)

मास्टरनी : (प्रवेश करते हुए)—वाह बजरंगी वाह! क्या खूब कही है तुमने। अरे ये भगवान उसी के होते हैं जो उनकी सच्ची भक्ति करता है। और ये साज बाज उसी के होते हैं जो इन्हें ठीक से बजा सकता है।

रामू काका : हाँ हाँ।

देबू चौधरी : अरे बेटा बजरंगी! मास्टरनी जी ठीक ही कर रही हैं।

किसना ताऊ : बेटा! पुजारी जी ने कहा वो भी ठीक है कि भगवान किसी एक के नहीं सभी के होते हैं।

ठाकुर साहब : देखो बजरंगी! यदि तुम ऐसे पवित्र स्थान को युद्ध का अखाड़ा बनाओगे तो अच्छा नहीं होगा।

मास्टरनी : (पुजारी जी से)—और पुजारी जी! गोपी की तो संगीत में बहुत रुचि है और यह तो बजरंगी से भी अच्छा तबला बजाता है।

बजरंगी : (व्यंग्य से)—मास्टरनी जी, आपको संगीत की समझ है ही कहाँ जो अच्छे बुरे का निर्णय कर सको।

मास्टरनी : (पुजारी की ओर देखते हुए)—ठीक है। इस बात का निर्णय अभी हो जाता है। पुजारी जी! आप एक तबला जोड़ी और मंगवाइये। आज गोपी के साथ बजरंगी भी बजायेंगे।

सब : हाँ हाँ हो जाये ...।

(गोपी के चेहरे पर चमक आ जाती है)

पुजारी जी : (ऊँची आवाज में)—अरे भोलू ...! ओ भोलू!

भोलू : (उपस्थित होकर)—हाँ पुजारी जी!

पुजारी जी : जा तो। एक जोड़ी तबला और ले आ।

(भोलू बाहर प्रस्थान करता है और एक जोड़ी तबला लेकर वापस उपस्थित होता है)

मास्टरनी : (गोपी के सिर पर हाथ फेरते हुए)—शाबाश मेरे बेटे! आज दिखा दे तू अपनी कला। आज मुझे अपनी गुरु दक्षिणा दे दे बेटे।

पुजारिन माँ : (गोपी के सिर पर हाथ फेरते हुए)—हाँ बेटे। मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है।

(बजरंगी एवं गोपी दोनों बारी-बारी से तबला बजाते हैं। गोपी काफी अच्छा तबला बजाता है जिस पर काफी तालियाँ बजती हैं। इससे बजरंगी खिन्न हो जाता है और बीच में ही उठ खड़ा होता है।)

बजरंगी : (गुस्से से गोपी की ओर देखते हुए)—देख लूँगा। बेगारी के बच्चे तुझे देख लूँगा। (बाहर निकल जाता है। प्रकाश बजरंगी पर पड़ता हुआ मंद-मंद होते हुए धीरे-धीरे बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

पाँचवाँ दृश्य

(स्कूल के प्रांगण में एक विशेष उत्सव का आयोजन है। सैकेण्डरी स्कूल की परीक्षा में इस वर्ष गोपी ने सम्पूर्ण बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस उत्सव में जिला शिक्षाधिकारी महोदय गोपी को सम्मानित करने वाले हैं। गाँव के सभी गणमान्य लोग मंच पर बैठे हैं तथा बाकी जनता सामने बैठी हुई है। अन्त में बजरंगी लट्ठ लेकर खड़ा है। उसने गोपी व उसके माता-पिता को सामान्य जनों से दूर बैठा रखा है।)

मास्टरनी : (मंच पर खड़े होते हुए)—आदरणीय जिला शिक्षाधिकारी महोदय एवं उपस्थित सभी ग्रामवासियो! आज मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हमारी स्कूल के छात्र गोपी ने सैकेण्डरी स्कूल की परीक्षा में समूचे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

(तालियों की गड़गड़ाहट)

अब जिला शिक्षाधिकारी महोदय गोपी को सम्मानित करेंगे। (फिर गोपी को इशारा करते हुए)—आओ गोपी! आगे आओ।

(गोपी उठकर भीड़ में से आगे आता है। बजरंगी व उसके साथी गोपी से छू न जाएँ इसलिए सिकुड़कर हटने का उपक्रम करते हैं। गोपी मंच पर जाकर खड़ा हो जाता है।)

जि.शिक्षाधिकारी :(गोपी की पीठ थपथपाते हुए सबकी ओर मुखातिब होकर)—मुझे गर्व है इस बच्चे पर, जिसने इस स्कूल के व इस गाँव के नहीं बल्कि सम्पूर्ण जिले के नाम को ऊँचा किया है। इस खुशी के मौके पर अब मैं आप लोगों को एक खुशखबरी और सुनाना चाहता हूँ। (मुस्कुराकर हैडमास्टरनी की ओर देखते हैं। सभी उपस्थित लोग खुशखबरी जानने को उत्सुक हो उठते हैं।)

हाँ तो वह खुशखबरी है कि अब आगे शहर जाकर पढ़ाई करने का गोपी का सारा खर्चा सरकार उठायेगी।

(खूब जोर से तालियाँ बजती हैं।)

मास्टरनी : क्या कहा सर!

जि.शिक्षाधिकारी : हाँ मैडम। गोपी को सरकार की ओर से वजीफा मिला है। अब गोपी आसानी से शहर जाकर आगे की पढ़ाई कर सकेगा। (कुछ कागज गोपी को देते हुए)—ये लो गोपी! ये तुम्हारे वजीफे के कागजात हैं।

पुजारी जी : (खड़े होते हुए)—शाबाश गोपी शाबाश। (फिर सबकी ओर देखते हुए)—और दूसरी खुशखबरी मैं सुनाता हूँ। गोपी को संगीत में काफी रुचि है। (फिर बजरंगी को व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखते हुए)—और यह बच्चा तबला भी अच्छा बजाता है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि गोपी अपना अभ्यास जारी रखे और पढ़ाई के साथ-साथ संगीत की शिक्षा भी ले। (कुछ रुक जाते हैं फिर सबकी ओर देखते हुए) इस सम्बन्ध में जो भी खर्चा होगा वह मेरी ओर से गोपी को दिया जायेगा।

(जोरों की तालियाँ बजती है। जिनकी गड़गड़ाहट के बीच बजरंगी गुस्से में अपनी लाठी दो तीन बार ज़मीन पर पटकता है और फिर तेजी से बाहर निकल जाता है। तालियाँ बजती रहती हैं फिर मंद होती तालियों के साथ प्रकाश भी मंद होता होता बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

छठा दृश्य

(शहर की मुख्य सड़क पर बजरंगी फटेहाल अवस्था में अपनी तबले की जोड़ी उठाये इधर-उधर भटक रहा है। दाढ़ी बढ़ी हुई है एवं सिर पर लम्बे बालों एवं फटे वस्त्रों से वह भिखारी सा लग रहा है। वह किसी राहगीर से कुछ पूछ रहा है।)

बजरंगी : (गिड़गिड़ाते हुए एक राहगीर से)—हे भैया। तनिक यह तो बताओ यहाँ एक आला अफ़सर है गोपी, वो कहाँ रहते हैं।

राहगीर : (उसे ऊपर से नीचे देखते हुए)—लगता है भैया गाँव में भीख माँगते-माँगते ऊब गये हो और यहाँ चले आये हो। अरे भीख ही माँगनी है तो बड़े अफ़सरों से कुछ नहीं मिलेगा भैया; वहाँ सामने बैठ जाओ। आने जाने वालों से कुछ मिल ही जायेगा। (आगे निकल जाता है।)

बजरंगी : (स्वगत)—हे भगवान! ये कैसी सज़ा दी है तूने मेरे को। मेरा सब कुछ तो उस बेईमान सेठ धनीराम ने लूट लिया। थोड़े से कर्ज़े के बदले उसने मेरी सारी ज़मीन, मकान, मवेशी सब कुछ हड़प लिए। मेरे बच्चे वहाँ गाँव में भूख से तड़प रहे हैं और मैं यहाँ शहर में मेहनत मजदूरी करने आया हूँ तो लोग मुझे भिखारी समझ रहे हैं।

(भावावेश में ऊपर हाथ करते हुए)—हे भगवान तू ही बता मैंने ऐसा कौनसा बुरा काम किया था जो मुझे ऐसे बुरे दिन दिखाये तूने। (फिर सामान्य होता हुआ) यहाँ मेरे गाँव के भूरे बेगारी का बेटा गोपी बड़ा अफ़सर है। पर मैं उसे पहचानूंगा कैसे? मुझे तो उसे देखे एक लम्बा अरसा बीत गया।

पुलिस वाला :(पास में जाकर)—ऐ भैया! क्यों प्रलाप कर रहे हो? (फिर तबले पर डंडा मारते हुए)—कहो कहाँ से मार लाये ये ...। (फिर कुटिल मुस्कान के साथ)—फिर भी रोते हो।

बजरंगी : (हाथ जोड़ते हुए)—नहीं दरोगा साहब मैंने चोरी नहीं की। (फिर तबलों को दोनों हाथों में समेटते हुए)—ये तबले तो

मेरे ही हैं दरोगा साहब। मेरा सब कुछ लुट गया अब तो ये तबले ही मेरी रोजी रोटी का साधन हैं। मैं इन्हें बजाकर ही अपना गुजर बसर करता हूँ।

(दृश्य समाप्त)

सातवाँ दृश्य

(थाने का दृश्य! गोपी थानेदार की कुर्सी पर बैठा कुछ फाइलें देखने में व्यस्त हैं। पास में ही बजरंगी ज़मीन पर अपने तबले रखे बैठा है। पुलिसमैन बाहर से आकर गोपी को सैल्यूट मारता है।)

पुलिसमैन : (सैल्यूट मारते हुए)—सर!

गोपी : (फाईलें देखते हुए)—कहो हवलदार! इस बार ये कौनसा मुजरिम पकड़ लाये। कहीं फिर किसी निर्दोष गरीब को तो पकड़कर नहीं ले आये हमेशा की तरह।

हवलदार : नहीं सर! अबकी बार एक सच्चे मुजरिम को पकड़कर लाया हूँ।

गोपी : क्या जुर्म किया है भई इसने?

हवलदार : सर, ये कोई भिखमंगा है जो किसी के तबले चुराकर भाग रहा था। मैंने इसे रंगे हाथों पकड़ा है और यह कहा रहा है कि तबले इसके हैं।

गोपी : (बजरंगी को सरसरी निगाह से देखते हुए)—हूँ! हवलदार इसका फैसला तो अभी हो जायेगा।

हवलदार : (चौंकते हुए)—कैसे सर?

गोपी : हवलदार, सीधी सी बात है। यदि ये तबले इसके हुए तो इसे बजाना तो आता ही होगा। (फिर दोनों घुटनों को सिर में समेटकर बैठे हुए बजरंगी से)—बाबा! यदि तबले तुम्हारे हैं तो जरा ठेका तो लगाना।

(बजरंगी तबले पर तीन ताल का ठेका लगाता है। जैसे-जैसे गोपी ताल सुनता है तो उसके शरीर में सनसनी दौड़ जाती है और वह अवाक् होकर मुजरिम को देखने लगता है।)

गोपी : (स्वगत)—यह क्या? ऐसा तो बजरंगी काका बजाते थे। (फिर सहज स्वर में उत्सुकता से)—बाबा! जरा दुगुन भी तो बजाओ।

बजरंगी : (सहज होता हुआ)—जी साहेब। (वह जैसे-जैसे दुगुन बजाता है, गोपी को विश्वास हो जाता है कि यह बजरंगी काका ही हैं। वह अपनी कुर्सी से उठकर बजरंगी के पास आ जाता है और उसे पहचानने का प्रयास करता है।)

गोपी : (उसे दोनों हाथों से उठाते हुए)—काका! तुम बजरंगी काका ही हो न।

बजरंगी : (उसे पहचानने का प्रयास करते हुए)—कौन? कौन हैं बाबू आप? (डरता है।)

गोपी : (उत्तेजित होते हुए)—काका मुझे नहीं पहचाना। मैं हूँ तुम्हारा गोपी। भूरा बेगारी का बेटा। छोटा बेगारी काका।

बजरंगी : (उसे हाथों से छूकर देखते हुए)—क्या? क्या? आप ... तुम ... तुम गोपी हो। मुझे माफ कर दो बेटा। मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा सलूक किया था।

गोपी : (उसे गले लगाते हुए)—नहीं काका नहीं। आप लोगों की दुआओं से ही मैं यहाँ तक पहुँच सका हूँ।

(हवलदार धीरे-धीरे उल्टे पैरों खिसक लेता है और गोपी बजरंगी के तबले उठाकर घर की ओर प्रस्थान करता है।)

नाटक समाप्त!

जैसे को तैसा

त्रिवेणी कला संगम जयपुर के पंचम बाल नाट्य एवं संगीत प्रशिक्षण शिविर के समापन समाराहे दिनांक 25 जून, 1997 को रवीन्द्र मंच जयपुर पर की गई प्रस्तुतियों में।

—पत्र परिचय—

मेरी	:	काजल शर्मा
पीटर	:	अभिषेक शर्मा
मेजर हिम्मत सिंह/जॉन्सन	:	मुकेश शर्मा
शान्ति बुआ/श्रीमती जॉन्सन	:	रेखा शर्मा
पंकज	:	सुभाष वैष्णव
श्रीमती सिन्हा	:	खुशबू शर्मा
चनेवाला	:	सुरेश वैष्णव
देबू का साथी	:	सुमन वैष्णव
निर्देशक	:	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
संगीत पक्ष	:	तलबा - श्री गुलाम गौस खाँ
हारमोनियम	:	श्री नसीर खाँ
मेकअप एवं वेशभूषा	:	श्रीमती रेनू रानी शर्मा

(एक मकान के अन्दर हॉल का दृश्य। हॉल के बायीं और एक कमरा है जिस पर पर्दा गिरा हुआ। दाहिनी तरफ मकान का मुख्य दरवाजा है। हॉल में मिसेज मेरी अपने बेटे पीटर के साथ वार्ता कर रही हैं।)

मेरी : (अन्दर कमरे में जाते हुए)—देखो पीटर मैं कुछ देर के लिए अन्दर रसोई में जा रही हूँ यदि बाहर से कोई घंटी बजाये तो दरवाज़ा खोलकर देख लेना कि कौन है।

पीटर : अच्छा मम्मी देख लूंगा।

मेरी : और हाँ इस बात का ध्यान रखना कि कोई पड़ौसी यदि कोई चीज माँगने आये तो उसे देना मत।

पीटर : बिल्कुल नहीं दूंगा मम्मी। ऐसा भगाऊँगा कि वो भी क्या याद रखेंगे।

मेरी : अरे, भई ऐसे भी नहीं भगाना कि वो बुरा ही मान जाएँ। उनके साथ नम्रता से बात करना और तरकीब से ही बिना कोई सामान दिये टाल देना।

पीटर : अच्छा मम्मी।

मेरी : (अन्दर जाते हुए बड़बड़ाती है)—हमारे पड़ौसी भी अजीब है। खुद के पास तो कोई सामान होता नहीं है, और हमारे घर चले आते हैं। मिसेज मेरी एक कटोरी चीनी देना उधार, कुछ देर के लिए प्रेस देना। कोई क्या और कोई क्या।

(अन्दर चली जाती है।)

(सहसा काल बेल बजती है-ट्रिन-ट्रिन)

पीटर : (दरवाज़ा खोलते हुए)—कौन है?

श्रीमती सिन्हा : अरे बेटा पीटर तुम्हारी मम्मी नहीं दिख रही हैं।

पीटर : मम्मी अन्दर गई हैं काम से। आप कहिए?

श्रीमती सिन्हा : (सामने पड़े छाते को उठाते हुए)—बेटे पीटर मैं ये तुम्हारा छाता ले जा रही हूँ। हमारा छाता पड़ौस वाले शर्मा जी माँग कर ले गये हैं। पता नहीं लोग भिगमंगों की तरह चीजें माँगने आ कैसे जाते हैं। (फिर जाते हुए) अपनी मम्मी से कहना जल्दी ही ला दूंगी।

(वह छाता लेकर बाहर चली जाती है और पीटर देखता ही रह जाता है)

मेरी : (बाहर आते हुए)—कौन था बेटा पीटर?

पीटर : मम्मी सिन्हा आंटी थी। आपका छाता ले गई है माँग कर। कह रही थी कि तुम्हारी मम्मी से कहना कि जल्दी ही लौटा जाऊंगी।

मेरी : अरे पीटर अब वो छाता सही सलामत वापस थोड़े ही लौटायेंगी। क्यों दिया तूने। मना कर दिया होता।

पीटर : मना कैसे करता मम्मी। आंटी नाराज हो जाती तो।

मेरी : अरे कोई बहाना ही बना देता।

पीटर : कैसा बहाना मम्मी?

मेरी : अरे कह देता कि कल हम बाज़ार गये थे पता नहीं उसे किसने तोड़ दिया। मेरी मम्मी कह रही थी कि बहुत बड़ा नुकसान हो गया। था भी बड़ा मजबूत। मेरे पापा पिछली बार जब अलीगढ़ गये थे तब लेकर आये थे।

पीटर : ठीक है मम्मी, अगली बार से मैं ध्यान रखूंगा। कोई पड़ौसी कुछ माँगने आया तो बहना बनाकर टाल दूंगा।

मेरी : अच्छा बेटे मैं अन्दर कुछ काम से जा रही हूँ, अबकी बार ध्यान रखना।

पीटर : अच्छा मम्मी।

(मेरी अन्दर चली जाती है।)

पीटर : (मेरी की नसीहत दोहराते हुए)—कल हम बाज़ार गये थे तो पता नहीं उसे तो किसने तोड़ दिया। मेरी मम्मी कह रही थी कि बहुत बड़ा नुकसान हो गया। थ भी बहुत मजबूत। मेरे पापा पिछली बार जब अलीगढ़ गये थे। तब लेकर आये थे। (सहसा काल बेल बजती है)

पीटर : (दरवाज़ा खोलता हुआ)—कौन है?

शान्ति बुआ : (प्रविष्ट होकर)-अरे पीटर बेटे। तुम्हारी मम्मी कहाँ गई?

पीटर : क्यों बुआ?

बुआ : अरे हम लोग बाज़ार जा रहे हैं। हमारा ताला मिल नहीं रहा है। जरा अपना ताला देना तो। बाज़ार से आकर थोड़ी देर में लौटा दूंगी।

पीटर : (कुछ याद सा करते हुए)—बुआ कल हम बाजार गये थे तो पता नहीं उसे कितने तोड़ दिया। मेरी मम्मी कह रही थी कि बहुत बड़ा नुकसान हो गया। था भी बड़ा

मजबूत। मेरे पापा पिछली बार जब अलीगढ़ गये थे तब लेकर आये थे।

बुआ : अरे राम राम राम राम। बेचारों का नुकसान हो गया। (फिर पास में पड़ा ताला उठाते हुए)—अरे बेटा ये शायद कोई बेकार ताला है। ये ही ले जाती हूँ अटकाने के लिए। थोड़ी देर में वापस लौटा जाऊँगी।

(बुआ का प्रस्थान)

मेरी : (बाहर आते हुए)—कौन था बेटे?

पीटर : पड़ौस की शांति बुआ थी मम्मी। अपना ताला माँग रही थी। मैने बहाना तो बनाया था पर जाते-जाते वो ताला तो ले ही गई।

मेरी : तुमने कैसा बहाना बनाया था?

पीटर : मम्मी जैसा आपने कहा था कि कल हम बाज़ार गये थे .....

मेरी : (माथे पर हाथ मारते हुए) अरे बुद्धू वह बहाना तो छाते के लिए था। ताले के लिए यह थोड़े ही कहना था।

पीटर : तो क्या कहना था मम्मी?

मेरी : बेटा हर चीज का अलग-अलग बहाना होता है। तू ताले के लिए कह देता कि हमारे पास पहले तो दो थे पर कुछ समय पहले पता नहीं एक कहाँ चला गया। अब एक ही है हमारे घर में जो भी कभी तो काम करता है और कभी नहीं। काफी पुराना भी हो गया है इसलिए बेकार हो गया है और पता नहीं हमने कहाँ कूड़ा-करकट समझ कर फेंक रखा है।

पीटर : अरे हाँ मम्मी यही कहना चाहिए था मुझे, बड़ा ही अच्छा बहाना है।

मेरी : अच्छा अबकी बार मैं अपना काम करने अन्दर जा रही हूँ। तुम इस बार किसी को कोई चीज मत ले जाने देना।

पीटर : आप फिक्र ना करें मम्मी। मैं अबकी बार चूक नहीं करूंगा।

(मेरी अन्दर चली जाती है और पीटर मेरी के बताए बहाने को दोहराने लगता है।)

पीटर : (स्वगत)—हमारे पास पहले तो दो थे पर कुछ समय पहले पता नहीं एक कहाँ चला गया। अब एक ही बचा है हमारे घर में, जो कभी तो काम करता है और कभी नहीं। काफी पुराना भी हो गया इसलिए बेकार हो गया है। और पता नहीं हमने कहाँ कूड़-करकट समझ कर फेंक रखा है। (सहसा काल बेल बजती है)

पीटर : (दरवाज़ा खोलते हुए)—कौन है?

पंकज : (अन्दर आते हुए)—मैं हूँ पीटर। तुम्हारे पापा कहाँ हैं? उन्हें मेरे पापा ने बुलाया है किसी काम से।

पीटर : (अपनी मम्मी का बताया हुआ बहाना दोहराते हुए)—हमारे पास पहले तो दो थे पर कुछ समय पहले पता नहीं एक कहाँ चला गया अब एक ही बचा है हमारे घर में जो भी कभी तो काम करता है और कभी नहीं। काफी पुराना हो गया है इसलिए बेकार हो गया है और पता नहीं हमने कहाँ कूड़ा-करकट समझकर फेंक रखा है।

पंकज : (कुछ समझ नहीं पाता अत: स्वागत)—लगता है पीटर पागल हो गया है तभी तो ऐसी ऊल-जलूल बातें कर रहा है। ठीक है मैं अपने पापा को जाकर बता दूंगा । (बाहर चला जाता है।)

मेरी : (बारह आते हुए) कौन था बेटे?

पीटर : मम्मी पड़ौस वाला पंकज थ। डैडी को पूछ रहा था।

मेरी : क्यों? क्या काम था।

पीटर : कह रहा था कि काम से उसके पापा ने बुलया था उन्हें।

मेरी : अरे मैं जानती हूँ उसके पापा को। वे तेरे डैडी को चक्कर में लेकर पिक्चर चले जाते हैं और टिकिट के पैसे भी हर बार तेरे डैडी को ही देने पड़ते हैं। कभी तेरे डैडी घर में हो ना तब भी किसी बहाने से मना कर देना उन्हें।

पीटर : (खुश होते हुए)—मुझे क्या मूर्ख समझ रखा है मम्मी। आज पापा घर पर थे ही नहीं, तो भी मैंने बहाना बना दिया।

मेरी : शाबाश बेटे। क्या बहाना बनाया तूने?

पीटर : वही बहाना मम्मी जो आपने बताया था कि हमारे पास पहले तो दो थे ..... ।

मेरी : (बीच में बात काटते हुए) क्या .....? (अपना सिर पीट लेती है।)

पीटर : क्या हुआ मम्मी?

मेरी : अरे मूर्ख यह बहाना तो ताले के लिए था। पापा के लिए तो अलग बहाना बनाना था।

पीटर : (उत्सुकता से)—कौनसा बहाना मम्मी?

मेरी : अरे कह देता कि वो तो कॉलेज में पढ़ाने गये हैं। उनके लेक्चर इतने अच्छे होते हैं कि सुनने वाले छोड़ते ही नहीं उन्हें जल्दी से। इसलिए देर हो गई घर आने में।

पीटर : (खुशी से)—अगली बार से ध्यान रखूंगा मम्मी। आप रसोई में जाकर खाना बना लीजिए। (मेरी अन्दर चली जाती है।)

पीटर : (स्वगत) वो तो कॉलेज में पढ़ाने गये हैं। उनके लेक्चर इतने अच्छे होते हैं कि सुनने वाले छोड़ते ही नहीं उन्हें जल्दी से। इसलिए देर हो गई घर आने में।

(सहसा काल बेल बजती है।)

पीटर : (दरवाज़ा खोलते हुए)—कौन है?

मेजर हिम्मतसिंह : अरे बेटा पीटर मैं शिकार पर जा रहा हूँ मेरा कुत्ता बीमार पड़ गया है। तुम्हारा कुत्ता देना तो कुछ देर के लिए।

पीटर : अंकल वो तो कॉलेज में पढ़ाने गये हैं। उनके लेक्चर इतने अच्छे होते हैं कि सुनने वाले छोड़ते ही नहीं हैं उन्हें जल्दी से। इसलिए देन हो गई घर आने में।

मेजर : (स्वगत)-लगता है लड़का पागल हो गया है। बाहर प्रस्थान करता है।

मेरी : (बाहर आते हुए)-कौन था बेटे पीटर?

पीटर : मम्मी मेजर अंकल थे। अपना कुत्ता माँगने आये थे पर मैंने बहाना बना दिया कि वो तो कॉलेज में पढ़ाने गये हैं।

मेरी : (उसके बेलन मारते हुए)—अरे अक्ल के दुश्मन! ये तो तेरे डैडी के न होने का बहाना था। कुत्ते के लिए तो यह कहता कि वह तो बहुत बीमार है। कल रात उसने किसी कूड़े के ढ़ेर में से हड्डी का टुकड़ा मुँह में रख लिया था जो उसके गले में फंस गया और अब बेहोश पड़ा है।

पीटर : मम्मी ये बहाना तो पहले से ही मेरे दिमाग में था पर मैं भूल गया। अबकी बार ध्यान रखूंगा।

मेरी : ठीक है पीटर, अबकी बार कोई गड़बड़ी मत करना जल्दी ही रेल्वे स्टेशन चलना है। मैं तैयारी कर रही हूँ। (अंदर जाती है सहसा काल बेल बजती है।)

पीटर : (दरवाज़ा खोलते हुए)—कौन है?

श्रीमती जॉन्सन : (प्रविष्ट होते हुए)—पीटर बेटा। आज ही पता चला कि तुम लोग कुछ दिनों के लिए बाहर घूमने जा रहे हो इसलिए मिलने चली आई। तुम्हारी मम्मी कहाँ गई बेटे?

पीटर : (बहाना बनाते हुए)—वह तो बहुत बीमार है। कल रात उसने किसी कूड़े के ढ़ेर में से हड्डी का टुकड़ा मुँह में रख लिया था जो उसके गले में फंस गया और अब बेहोश है।

(श्रीमती जॉन्सन पीटर का उत्तर सुनकर हक्की-बक्की रह गई। सहसा पीटर के पिता श्री जोजफ का प्रवेश।)

पीटर : (प्रवेश करने वाले को देखते हुए स्वगत) अब घर पर सब हैं पर स्टेशन जा रहे हैं और अब मुझे कोई बहाना भी याद नहीं है।

जोजफ : (प्रवेश करते हुए)—अरे मिसेज जॉन्सन आप? बैठिये ना (पीटर से) अरे बेटे क्या तुम्हारी मम्मी अभी तब रसोई में ही है।

श्रीमती जॉनसन: (आश्चर्य से)—क्या मेरी ठीक है?

मेरी : (बाहर आते हुए)—क्यों मिसेज जॉन्सन मुझे क्या हुआ?

मिसेज जॉनसन : यह पीटर तो कह रहा था कि तुम तो बहुत बीमार हो (फिर कुछ सहमते हुए) और कह रहा था कि तुम्हारे गले में हड्डी का टुकड़ा फंस गया है।

मेरी : (सिर पर हाथ मारते हुए)—अरे मिसेज जॉन्सन यह पीटर आजकल नटखट हो गया है। कहिए क्या आपे घर कार्यक्रम शुरू हो गया?

मिसेज जॉन्सन : हाँ मेरी। मैं कहने ही आई थी कि तुम जल्दी आ जाना। मैं अभी जरा जल्दी में हूँ। (बाहर चली जाती है।)

मेरी : (पीटर का कान पकड़ते हुए)—क्यों बे। हमेशा नकल करता रहता है अपना दिमाग इस्तेमाल नहीं करता। पता है तेरी इस नकलबाजी से कितनी परेशानी हो जाती है। (पीटर कान उमेठने से ऊं-ऊं करता है।)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(मोहल्ले की गली का दृश्य।) गली में एक लड़का देबू जा रहा है जिसके पीछे पीछे नटखट पीटर पड़ा है जो हर आने जाने वाले की नकल करता है। वह देबू के चलने की नकल कर रहा है।

देबू : (अचानक रुककर पीछे देखते हुए)—अरे पीटर क्या कर रहे हो?

पीटर : (उसकी नकल करते हुए)—अरे पीटर क्या कर रहे हो?

देबू : (वापस चलते हुए)—देखो किसी की नकल करना अच्छी बात नहीं है।

पीटर : देखो किसी की नकल करना अच्छी बात नहीं है।

देबू : मैं तुमसे माथा नहीं मारना चाहता।

पीटर : मैं तुमसे माथा नहीं मारना चाहता।

देबू : देखो मान जाओ।

पीटर : देखो मान जाओ।

देबू : बहुत हो गया। अब मैं थप्पड़ मार दूंगा।

पीटर : बहुत हो गया। अब मैं थप्पड़ मार दूंगा।

देबू : मार कर दिखाओ।

(पीटर देबू को थप्पड़ मार देता है और देबू रोता हुआ चला जाता है।)

पीटर : (दर्शकों से) देखा आप लोगों ने ! किसी की नकल करने में कितना आनंद है। घर में भी मजे और बाहर भी मजे। घर में फालतू के पड़ौसियों की छुट्टी और गली मोहल्ले में लड़के अपने ही शब्दों के जाल में फंस जाते हैं और मैं उन पर हावी रहता हूँ। दुनिया मे नकल का मुकाबला नहीं (हंसता है।) हा ..... हा ..... हा ..... हा .....।

(सहसा मंच पर चने बेचने वाला लड़के का प्रवेश।)

चने वाला : चना जोर गरम ..... ।

पीटर : चना जोर गरम ..... ।

चने वाला : अभी देता हूँ। बाबू। कितने दूँ।

पीटर : अभी देता हूँ। बाबू कितने दूँ।

चने वाला : पहले चने तो दूं उसके बाद में ही तो पैसे दोगे। (फिर चने तोलते हुए)—कितने अच्छे घर के बच्चे हो चने वाले को बाबू कहते हो।

पीटर : पहले चने तो दूं उसके बाद में ही तो पैसे दोगे। कितने अच्छे घर के बच्चे हो चने वाले को बाबू कहते हो।

(दोनों बात करते-करते पर्दे के पीछे चले जाते हैं। सहसा मंच पर दो लड़कों का प्रवेश।)

लड़का : (दूसरे लड़के से) अरे यह तो वही नकली पीटर है। अब बेचारे चने वाले को परेशान कर रहा है।

दूसरा लड़का : हाँ। यह तो सबको परेशान करता है। इसे तो सबक सिखाना चाहिए।

दोनों : चलो-चलो (प्रस्थान)

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(मंच पर दोनों लड़के व देबू खड़े हैं। सहसा पीटर का प्रवेश।)

पीटर : (प्रवेश करते हुए स्वगत)—इस बार तीन एक साथ हैं। इन तीनों की नकल करने में तो और भी मजा आयेगा।

(देबू व दोनों लड़के पीटर के पास आकर मुस्कुराते हैं।)

पहला लड़का : कहो भई पीटर।

पीटर : कहो भई पीटर।

दूसरा लड़का : वाह वाह।

पीटर : वाह वाह।

देबू : चना जोर गरम।

पीटर : चना जोर गरम।

पहला लड़का : (ऊपर इशारा करके)—वाह वाह।

दूसरा लड़का : वाह वाह।

देबू : वाह वाह।

पीटर : (अचानक नकल भूलकर ऊपर देखते हुए)—ऊपर कुछ है क्या?

तीनों : (एक साथ)—ऊपर कुछ है क्या?

पीटर : अच्छा! तुमने मुझसे चालाकी की ।

तीनों : अच्छा! तुमने मुझसे चालाकी की ।

पीटर : अच्छा। तुम तीनों ने प्लान बनाया है कि मेरी नकल करो।

तीनों : अच्छा। तुम तीनों ने प्लान बनाया है कि मेरी नकल करो।

पीटर : बंद करो बकवास।

तीनों : बंद करो बकवास।

पीटर : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

पहला लड़का : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

दूसरा लड़का : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

देबू : मैं तुम्हें घूंसा मारूंगा।

(तीनों एक साथ घूंसा तानते हुए चलते हैं। पीटर रोने लगता है। सहसा मेरी का प्रवेश)

पीटर : (मेरी को देखते हुए सुबकता हुआ)—मम्मी ये मुझे यह मार रहे हैं।

तीनों : (मेरी से)—आंटी यह हमें नकल उतार कर परेशान कर रहा था। जब हमने इसे सबक सिखने के लिए इसकी नकल उतारी तो रोने लगा।

मेरी : (पीटर से)—हाँ बेटे। अब तुम्हें पता चला कि नकल कितनी दु:खदाई है। अब तुम प्रतिज्ञा करो कि भविष्य में किसी की नकल नहीं करोगे।

तीनों लड़के : बोलो अब मैं भविष्य में किसी की नकल नहीं करूंगा।

पीटर : बोलो अब मैं भविष्य में किसी की नकल नहीं करूंगा।

(मेरी दोनों लड़के व देबू का एक साथ चौंकना)

नाटक समाप्त

तुक्के का बादशाह

त्रिवेणी कला संगम जयपुर कें पंचम बाल नाट्य एवं संगीत प्रशिक्षण-शिविर के समापन समारोह दिनांक 25 जून 1997 को रवीन्द्र मंच जयपुर पर की गई प्रस्तुतियों में।

—पात्र परिचय—

कलुवा	:	अभिषेक शर्मा
खेमा/राजा	:	मुकेश शर्मा
धन्नो	:	रेखा शर्मा
धोंकल (धोबन)	:	काजल शर्मा
रुकमा	:	वैशाली बंसल
रानी	:	सुमन वैष्णव
मंत्री	:	खुशबू शर्मा
नींदड़ली	:	नीलिमा श्रीबाथो
औरत	:	रीतिका परवाल
सैनिक नं 1	:	सुभाष वैष्णव
सैनिक नं 2	:	नेहा मील
फल बेचने वाली	:	तनिषा शर्मा
निर्देशक	:	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
मेकअप एवं वेशभूषा	:	श्रीमती रेनू रानी शर्मा
संगीत पक्ष	:	**तबला—**श्री गुलाम गौस खाँ
		हारमोनियम—श्री नसीर खाँ

×××

पहला दृश्य

कोरस (सभी कलाकारों द्वारा)

एक गाँव में रहता भैया कलुवा चतुर सुजान।
मिट्टी के बर्तन का धन्धा करना उसका काम।
बनठनकर इक दिन वह निकला जाने को ससुराल।
गाँव गौरवे पहुँच सुना उसने गर्दभ का राग।।
सड़क किनारे नाली में गदहा बंधा पड़ा था।
उस अंधियारे भुंभरके में कलुवा डरा खड़ा था।
पाखण्डी चालाक बड़ा था वह कलुवा कुम्हार।
मन में कुछ कुछ निश्चय करके चल दिया ससुराल।।
ब्याळू के अवसर पर कलुवा पहुँच गया ससुराल।
सास-ससुर उसके आने से मन में थे नाराज।।
धोबन अपना गधा ढूँढती जब पहुँची वहाँ आय।
कलुवा ने बड़का आने का नाटक किया रचाय।।
कहने लगा बड़का मुझे आता सब कुछ देऊं बताय।
गधा पड़ा गहरे नाले में जाओ लेओ मंगाय।।
गधा मिला धोबन का होने लगी वहाँ जयकार।
कलुवा को महाराज कहें करते सब जय जयकार।।
रानी का चोरी हुआ एक नौलखा हार।
खोजबीन को जा रहे राजा के दरबान।।
शोर सुना तो आ गये कलुवा के ससुराल।
बड़के वाले महाराज को झुक-झुक करें सलाम।।
राजमहल लेकर चले कलुवा को दरबान।
ढूंढो कल तक हार को राजा फरमान।।
नींद उड़ी कलुवा रहा डर के मारे कांप।
नहीं मिला जो हार तो राजा देगा मार।
नींदड़ली की याद कर करने लगा प्रलाप।

राजमहल को जा रही नींदडली चुपचाप।।

नाम सुना जा कर करी कलुवा से अरदास।

चोरी की है हार की मुझको लेओ बचाय।

कलुवा अगले दिन चला राजमहल सोत्साह।

बता दिया तरकीब से कहाँ नौलखा हार।।

राजा रानी थे सुखी कलुवा सिपहसलार।

बडके वाले देव अब नहीं रहे कुम्हार।।

×××

दूसरा दृश्य

(कलुवा कुम्हार के घर का दृश्य। वह कहीं जाने की तैयार कर रहा है। उसने नये कपड़े पहने हैं, सिर पर पगड़ी बांधी है। अब वह अंगोछा कंधे पर डालते हुए बाहर जाने की तैयारी में है।)

कलुवा : (प्रस्थान करते हुए स्वगत)—अब मैंने नये कपड़े पहन लिए है। (फिर खुश होता हुआ)—छैला बन गया हूँ छैला। (फिर गर्दन ऐंठता हुआ कपड़ों को देखकर गर्व करता हुआ)—जा भी कहाँ रहा हूँ, मैं, ससुराल। अपने ससुराल जा रहा हूँ। ससुराल में सब लोग जब मुझे इस ठाठ बाट में देखेंगे तो रौब पड़ेगा रौब। (राह पर निकल पड़ता है और इधर-उधर देखता जाता है अँधेरा होने को है रास्ते में सड़क के किनारे गधे के रेंकने की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ता है व सोचता है।)

कलुवा : (चौकता हुआ स्वगत)—हैं! यह तो मेरी सवारी का संकेत है। लेकिन मेरा गाँव तो बहुत दूर रह गया है। यह तो ससुराल की सीमा प्रारंभ हो गई, और मेरी सवारी, मेरा प्रिय गधा चेतक तो मैं लाया ही नहीं। भला इस जमाने में गधे पर सवारी करना कहीं अच्छा लगता है और वह भी ससुराल में। ख़ैर मैं क्यों किसी भ्रम में पड़ूं, इन गहरे गड्ढ़ों से पता नहीं कोई शेर ही निकलकर आ जाये।

(दबडक-दबड़क भागता है। गधे के रेंकने की आवाज पुनः आती है। वह चौकन्ना होकर दोनों आँखों पर दाहिने हाथ का छज्जा करके दूर गड्ढ़े में देखता है। फिर कुछ समझता हुआ स्वगत)—अच्छा! प्रजापति की सवारी। पैर बांधकर किसी ने यहाँ पटक दिया। (फिर रवाना होता हुआ।) चलो मुझे क्या लेना-देना। अंधेरा हो गया मैं क्यों देर करूँ। जल्दी ससुराल पहुँचना चाहिए। (फिर रवाना होते हुए ऊँची आवाज में)—क्षमा करना बंधु, आज में जल्दी में हूँ कल लौटते में तुम्हारी सहायता करूंगा क्योंकि अभी तो ससुराल पहुँचने का मामला है।

(प्रस्थान करता है।)

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(कलुवा के ससुराल का दृश्य। घर में कलुवा के सास-श्वसुर हैं जो रात का भोजन किये जाने की तैयारी कर रहे हैं। कलुवा का श्वसुर खेमा अपनी पत्नी धन्नो के साथ चूल्हे के पास बैठा है।)

धन्नो : सुनो जी। घर में केवी तीन ही रोटियाँ हैं। डेढ़ रोटी तुम खा लेना और डेढ़ मैं खा लूंगी। घर में और रोटी बनाने को अब आटा है नहीं।

खेमा : चलो भाई अब तो काम चलाते हैं। सुबह मैं अनाज ला दूंगा तुम चक्की से पीस लेना।

कलुवा : (प्रवेश करते हुए) राम-राम ससुर जी।

खेमा : (बनावटी मुस्कान के साथ)—अरे आओ आओ दामाद जी! बहुत अच्छे वक्त पर आये।

कलुवा : पाय लागूं अम्मा जी (धन्नो के पैर छूता है। जब वह पैरों में झुका होता है तो धन्नो खेमा को आँखों ही आँखों में इशारा करती है।)

धन्नो : जीते रहो बेटा। तुम थके हारे आये हो। अन्दर जाकर आराम करो तब तक मैं तुम्हारे लिए खाना लगाती हूँ।

कलुवा : हाँ अम्माजी ठीक कहा आपने। भूख तो तगड़ी लगी है। (कलुवा का अन्दर प्रस्थान)

खेमा : अरे यह निठल्ला दामाद भी इसी वक्त आना था। अब यह यहाँ पड़ा-पड़ा कई दिन तक मौज मनाता रहेगा और फालतू की डींगे और गप्पें हाँकेगा सो अलग।

धन्नो : अरे यह तो बाद की बात है। अभी तो चिन्ता यह है कि घर में सिर्फ तीन रोटियां हैं और आटा है नहीं। अब तो तीनों के हिस्से की एक-एक ही रोटी रह गई और कहीं दामाद जी ने और रोटी माँग ली तो क्या होगा। (सोच में पड़ जाती है। खेमा भी सोच रहा है।)

खेमा : (एकाएक उछलते हुए) मिल गया। मुसीबत से छुटकारा मिल गया। (खुशी से झूमता है)

धन्नो : (पास आते हुए)-अरे मुझे भी कुछ बताओगे या नहीं।

खेमा : (सामान्य होते हुए) देखो भागवान। तुम पहले हम दोनों को एक-एक रोटी परोसना, जब उसे खा चुकें तो तीसरी रोटी लाकर तुम पहले मुझे पूछना बस सब ठीक हो जायेगा।

धन्नो : (चिन्तित होकर)—और कहीं दामाद जी ने और रोटी माँग ली तो मैं तो रह जाऊँगी न भूखी।

खेमा : (धीमे से) अरे तुम मेरा कहना तो मानो सब ठीक हो जायेगा।

(फिर ऊँची आवाज में)—दामाद जी, अरे ओ दामाद जी। बाहर आ जाओ भोजन परोस दिया है।

कलुवा : (बाहर आते हुए दर्शकों की ओर देखते हुए स्वगत)—आहा बड़ी जोर की भूख लगी है। अब भर पेट भोजन करूंगा। (बाहर आकर खेमा के पास ही आसन पर बैठ जाता है फिर दोनों भोजन करने लग जाते हैं।)

धन्नो : कहो बेटा रोटी कैसी बनी?

कलुवा : (कौर चबाते हुए)—मजा आ गया अम्मा जी। कितनी स्वादिष्ट रोटियां हैं। जी चाहता है एक दो महिने यहीं

रह जाऊँ आपके हाथ की (धन्नो के हाथ के कटोरदान की ओर इशारा करते हुए) ये स्वादिष्ट रोटियां खाने के लिए। (धन्नो डरते हुए कटोरदान को पल्लू में छुपाती है। खेमा के गले में पानी का घूंट अटक जाता है और उसे खांसी आने लगती है।)

धन्नो : (पास में आकर पीठ सहलाते हुए)—क्या हुआ जी?

कलुवा : अम्माजी। सुसर जी की तबियत खराब है। अब आप चिन्ता न करो। मैं अब महिने भर रुककर उनकी सेवा करुंगा।

खेमा : (स्वगत)—अबे सेवा तो तब करेगा जब यहाँ पर टिक पायेगा। (दोनों एक एक रोटी खा लेते हैं फिर धन्नो से)अरी भागवान इतनी सारी रोटियों का वजन लेकर खड़ी क्यों हो।

धन्नो : (खेमा को रोटी देती हुई)—लो जी रोटी और ले लो।

खेमा : (उसे घूरते हुए)—अरे मैं कोई डाकी थोड़े ही हूँ। मैं तो पहली रोटी ही मुश्किल से खा पाया हूँ। (फिर कलुवा से)—अरे भई दामाद जी को दो रोटी।

धन्नो : (हिचकते हुए)—लो दामाद जी और ले लो रोटी।

कलुवा : (झेंपते हुए)—नहीं अम्मा जी मेरा तो पेट भर गया। (फिर अंगडाई लेते हुए)—बहुत थक गया अम्माजी, मैं तो अब सोने जा रहा हूँ (प्रस्थान करता है)।

×××

(दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(प्रात:काल का समय है कलुवा कलेवा कर रहा है धन्नो एवं खेमा उसके पास में ही बैठे हैं। सहसा लाठी टेकते हुए धोंकल का अपनी बेटी रुकमा के साथ प्रवेश)

खेमा : अरे क्या हुआ धोंकल, बड़े निराश मालूम होते हो?

कलुवा : कौन है ससुर जी ये। और क्यों दुखी हैं। (फिर धोंकल से)—आप दुखी न हों। हमारे रहते हुए यहाँ की प्रजा को किसी चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। हमारे पास ऐसी दिव्य शक्ति है जिससे हम हर समस्या का समाधान कर देते हैं।

(रुकमा खेमा के पास सरक आती है और उत्सुकता से सुनती है।)

धोंकल : मैं हूँ धोबी इसी गाँव का मेरा गधा हो गया चोरी।
ढूंढा खूब सभी से पूछा, बता न पाया कोई।

कलुवा : बता न पाया कोई? खोज न पाया कोई?

रुकमा : हाँ हाँ हाँ हाँ बता न पाया कोई (दोनों हाथों से नकारात्मक इशारा करती है।)

कलुवा : बूझा कीनी? बोलो भैया?

रुकमा : हाँ हाँ कीनी।

कलुवा : क्या कुछ जाना? बोलो भैया?

धोंकल : ना ना ना ना कुछ ना जाना।

रुकमा : स्याणा चकमा देने वाला।

धोंकल : झूठे झांसे देने वाला।

रुकमा : सच्चा स्याणा कहाँ मिलेगा।

धोंकल : मिल जाये सम्मान मिलेगा।

कलुवा : (आँखें बंद कर झूमता हुआ)—मिल जाये सम्मान मिलेगा?

धोंकल/रुकमा : (एक साथ)-हाँ हाँ हाँ सम्मान मिलेगा।

कलुवा : (झुमता हुआ)— अरे चुप्प। हमारे ध्यान में बाधा पैदा न की जाय।

धोंकल : यह क्या हो गया दामाद जी आपको।

कलुवा : अरे चुप्प। हमें बड़का आ रहा है।

रुकमा : बड़का। यह बड़का क्या होता है जी?

धोंकल : अरे रुकमा बड़के का मतलब होता है तीनों लोकों की बात जानने वाला। सब कुछ सही-सही बताने वाला।

रुकमा : (आश्चर्य से) ऐं ..... । तो क्या (कलुवा से सटते हुए) ये, सब बातें सही-सही बता सकते हैं।

(खेमा व धन्नो मुँह से उपेक्षा का इशारा करते हैं।)

धोंकल : हाँ बेटी ये। अब हमारा गधा भी देखकर बता देंगे।

रुकमा : हे-हे-हमारा गधा अब मिल जायेगा।

कलुवा : (अन्तर्ध्यान करते हुए—(मुझे तुम्हारा गधा दिखाई दे रहा है। गाँव की दो तीन औरतें प्रवेश करते हुए)—धन्य हो महाराज। बड़के वाले महाराज अब इस गाँव को समस्याओं से छुटकारा मिल गया। (दंडवत करते हैं फिर बैठ जाते हैं।)

कलुवा : (आँखें मूंदते हुए)—हाँ तो धोबी जी।

धांकल : (हाथ बांधकर खड़े होते हुए)—हाँ हाँ महाराज।

कलुवा : तुम्हारा गधा भूरे रंग का है।

सब : (आश्चर्य से)—हाँ महाराज।

कलुवा : तुम्हारे गधे के गले में मोरपंख की बनाई हुई कंठी बंधी है। (खेमा व धन्नों भी आश्चर्य से अवाक् रह जाते हैं व कलुवा के सामने आकर हाथ जोड़कर बैठ जाते हैं।)

रुकमा : हाँ हाँ महाराज। (खुशी से उछलते हुए)—वह कंठी मैंने ही अपने हाथों से गूंथी थी। सब कलुवा को भक्ति भाव से निहारते हैं।

कलुवा : जाओ धोबी जी आपका गधा गाँव के बाहर गहरे नाले में बँधा हुआ पड़ा है। जाओ देखकर आओ और तुरन्त आकर हमें बताओ।

धोबी : (खेमा से)—चलो भाई खेमा मेरे साथ, गधा लाने चलते हैं।

एक औरत : धन्य हैं महाराज आप। आप इस घर के ही नहीं पूरे गाँव के दामाद है।

रुकमा : (इतराते हुए) हाँ।

दूसरी औरत : अब हम आपको इस गाँव से न जाने देंगे। (फिर खेमा से)—और अब ये रहेंगे भी यहीं।

एक आदमी : हम इन्हें अलग मकान बनवा देंगे।

तीसरा आदमी : हम इन्हें राजाजी के पास में ले जायेंगे। वे इन्हें खूब सारा इनाम देंगे।

(सहसा धोंकल का प्रवेश)

धोंकल : (लेटकर दण्टवत करता हुआ)—जय हो आपकी मुझे मेरा गधा मिल गया।

एक औरत : (आश्चर्य से)—मिल गया! कहाँ है?

धोंकल : उसे खेमा लेकर आ रही है।

एक ग्रामवासी : बोलो बड़के वाले महाराज की।

सब एक स्वर में : जय।

दूसरा ग्रामीण : बोले बड़के वाले महाराज की।

सब : जय ..... जय ..... ।

(सहसा राज सैनिकों का प्रवेश)

सैनिक : ये कैसा शोर मचा रखा है?

रुकमा : ये बड़के महाराज है। इन्हें बड़का आता है। (कलुवा डरता है। वह डके मारे थूक निगलने लगता है।)

धोंकल : ये अन्तर्यामी हैं। ये तीनों लोकों की बात बता सकते हैं।

दूसरा सैनिक पहले से : तब तो ये रानी साहिबा के नौलखा हार को भी ढूंढ निकालेंगे।

पहला सैनिक : वाह वाह। ये महाराज खूब मिले। अब हमारी भी तरक्की हो जायेगी। (फिर दोनों सैनिक हाथ जोड़ते हुए)—जय हो महाराज। बड़के वाले महाराज। आपको राजमहल चलना होगा।

कलुवा : (डर के मारे)—राजमहल क्य ..... क्यों?

एक सैनिक : रानी माँ का नौलखा हार चोरी हो गया है। महाराज ने ढिंढोरा पिटवाया है कि जो भी इस हार को ढूंढ निकालेगा उसे खूब सारा इनाम व राज्य सेवा में पद दिया जायेगा।

कलुवा : (डर के मारे)—लेकिन मुझे अपने गाँव जाना है। अभी जाना है।

दूसरा सैनिक : महाराज। जरा हमारी तरक्की का भी तो ध्यान रखो।

खेमा-धन्नो : हाँ अब हम आपको इस गाँव से नहीं जाने देंगें।

सब जतना : हाँ हाँ। महाराज की जय हो।

रुकमा : (उसकी बांह पकड़कर उठाते हुए)—हाँ हाँ बहनोई जी अब हम आपको नहीं जाने देंगें।

एक : बोलो बड़के वाले महाराज की।

सब : जय।

दृश्य समाप्त

पाँचवाँ दृश्य

(गाँव के बाहर राजमहल के रास्ते पर दोनों सैनिक कलुवा को लेकर जा रहे हैं।)

पहला सैनिक : (कलुवा से)—चलिए महाराज!

दूसरा सैनिक : चलिए महाराज!

(राह में एक फल वाली फल बेच रही है।)

फल वाली : फल ले लो फल! मीठे मीठे फल! ताजा ताजा फल!

पहला सैनिक : (दूसरे से)—ऐ सैनिक! महाराज के लिए थोड़े फल लाओ!

दूसरा सैनिक : अभी लाता हूँ। (प्रस्थान करता है।)

दूसरा सैनिक : (फल वाली से)- क्या क्या फल हैं तुम्हारे पास?

फल वाली : भैया अंगूर है, आम हैं, केले हैं। बोलो तुम्हें क्या चाहिए?

दूसरा सैनिक : तीन केले दे दो।

फल वाली : (केले देते हुए)—ये लो भैया ताजा और मीठे हैं।

(सैनिक केले लेकर जाने लगता है।)

फल वाली : ऐ भैया! पैसे तो देते जाओ।

दूसरा सैनिक : अरे काहे के पैसे! हम तो राज सैनिक हैं राज सैनिक।

फल वाली : ऊं ऊं ऊं ऊं (रोने लगती है।)

दूसरा सैनिक : (पहले सैनिक को फल देते हुए)—ये लो भैया।

पहला सैनिक : ठीक है ठीक है। ऐसा करो तुम आगे आगे चलकर महाराज को रास्ता बताओ मैं पीछे पीछे आता हूँ।

(दूसरा सैनिक और कलुवा आगे आगे जाते हैं, पहला सैनिक पीछे पीछे चलता हुआ सारे केले अकेला खा जाता है।)

दृश्य समाप्त

छठा दृश्य

(राजदरबार का दृश्य। राजा एवं रानी राजदरबार में अपने दरबारियों के साथ चिन्तामग्न हैं और नौलखा हार न मिल पाने से रानी अधिक दुखी है।)

रानी : (दुखी स्वर में महाराज से)—महाराज अभी तक मेरे नौलखा हार का पता नहीं लग पाया। वह हार मेरे पिताजी का दिया उपहार था इसलिये अमूल्य है।

राजा : आप चिन्ता न करें रानी जी। उस हार की तलाश में हमने अपने सारे जासूस व सैनिक लगा रखे हैं।

मंत्री : पूरे राज्य में ऐलान करा दिया गया है महाराज कि जो भी कोई इस हार को ढूंढ निकालेगा उसे खूब सारा इनाम व राज्य में अच्छा पद दिया जायेगा।

ज्योतिषी : महाराज मेरी ज्योतिष विद्या के हिसाब से खोया हुआ हार अवश्य मिलेगा।

राजा : लेकिन मंत्री जी अभी तक हार का न मिलना हमारे लिए चिन्ता का विषय बना हुआ है।

एक सैनिक : महाराज की जय हो।

राजा : क्या बात है सैनिको, और ये साथ में कौन है?

दूसरा सैनिक : ये अन्तर्यामी है महाराज। संसार की सब बातें ये यहीं बैठे बता सकते हैं। (कलुवा डरकर सहमता है।)

राजा : (आश्चर्य से) अच्छा। हमारे राज्य में ऐसी-ऐसी महान आत्माएँ निवास करती हैं और हमें खबर तक नहीं।

मंत्री : महाराज मुझे लगता है ये सैनिक कुछ बढ़ा चढ़ाकर कह रहे हैं।

एक सैनिक : क्षमा करें मंत्री जी। पर आज हमने अपनी आँखों से इनकी अन्तर्दृष्टि का कमाल देखा है।

दूसरा सैनिक : हाँ महाराज। धोंकल धोबी का गधा कई दिन से नहीं मिल रहा था। परन्तु महाराज ने अपनी दिव्य दृष्टि से बता दिया कि गधा गाँव के बाहर नाले में बंधा हुआ पड़ा है।

रानी : अच्छा!

राजा : ऐसा चमत्कार!

रुकमा : और महाराज गधा वहीं पर मिला।

रानी : (खुशी से महाराज की ओर देखकर)—तब तो महाराज मेरा नौलखा हार भी मिल जायेगा।

राजा : हाँ महारानी। अब हमारी चिन्ता खत्म हुई। (फिर कलुवा से)—महाराज आपका हमारी राजधानी में स्वागत है। आज हम आपके आगमन से धन्य हुए।

कलुवा : (डरता हुआ)—महाराज मुझे कोई बड़का वड़का नहीं आता है। वो तो मैंने यों ही कह दिया था।

राजा : आप धन्य हैं महाराज। आप में महापुरुषों के गुण हैं जो अपने आपको साधारण आदमी समझते हैं। (फिर मंत्री से) मंत्री जी। बड़के वाले महाराज को आज से राज्य सेवा में अधिकारी स्तर के रुप में नियुक्ति एवं सभी सुविधाएँ दी जाती हैं।

(फिर कलुवा से)—महाराज आप हारे-थके आये हैं अत: आज विश्राम करें। प्रात: काल दरबार में आप हार के बारे में बताये।

सब लोग : बड़के वाले महाराज की जय!

(कलवा डरा हुआ बाहर प्रस्थान करता है। प्रकाश मन्द-मन्द होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

सातवाँ दृश्य

(रात्रि का तीसरा प्रहर चल रहा है। कलुवा को डर के मारे नींद नहीं आ रही है। कल प्रात:काल उसे महाराज के दरबार में नौलखा हार के बारे में बताना है। वह भयभीत है कि कल सुबह नौलखा हार के बारे में न बताये जाने पर महाराज उसे फांसी पर चढ़ा देंगे। वह डर के मारे बड़बड़ा रहा है।)

कलुवा : (स्वगत)

अजा ..... आजा ..... नींदड़ली तू आ ..... जा।
फांसी पर चढ़ायेगा कल तो रा ..... जा।।
सारी रात बी गई चैन नहीं आ ..... या।
काली काली परछाई कैसा यह सा ..... या।।
दूर मुझसे मत भाग मेरे पास आ ..... जा।
फांसी पर चढ़ायेगा कल तो रा ..... जा।।

(कलुवा के घर के पास से राजमहल की नौकरानी नींदड़ली प्रात:काल राजमहल में सफाई करने को जा रही थी। किसी के द्वारा अपना नाम पुकारे जाने पर वह चौंक कर रुक गई और कान लगाकर आवाज सुनने लगी।)

कलुवा : (डर के मारे कांपते हुए) आजा ..... आजा ..... नींदड़ली तू आता। फांसी पर चढ़ायेगा कल तो मुझे राजा।

नींदड़ली : (स्वगत डरती हुई)—लगता है बड़के वाले महाराज को हार के बारे में पता चल गया। (फिर हार को टोकरी से बाहर निकालती हुई) इसी डर के मारे तो वह हार राजमहल में वापस रखने के लिये ले जा रही थी। (फिर

कुछ निश्चय करके) यदि कल बड़के वाले महाराज ने मेरी चोरी के बारे में सबके सामने राजा को मेरा नाम बताया तो महाराज मुझे फांसी पर चढ़ा देंगे। तब क्यों न हार बड़के वाले महाराज को ही दे दूं। जान तो बच जायेगी। (फिर कलुवा के पास जाकर) मुझे माफ कर दो महाराज। मैंने रानी जी का हार चोरी किया है।

कलुवा : (चौंककर उछलता हुआ)—क्या ..... क्या ..... बात है? कौन हो तुम?

नींदड़ली : महाराज मैं राजमहल की नौकरानी नींदड़ली हूँ। कुछ दिन पहले जब मैं सफाई के लिए राजमहल गई थी तो मेरी नीयत डिग गई और मैं (हार कलुवा को देते हुए) यह हार अपने घर ले आई। (फिर गिड़गिड़ाते हुए) मुझे बचा लो महाराज।

कलुवा : (बनते हुए) हूँ ..... । मुझे तो पहले ही पता था। ख़ैर अब तुम दया की भीख माँगती हो तो ये लो (हार उसे वापस देता है) यह हार राजमहल के पिछवाड़े वाले बरामदे के किसी कोने में छिपा देना बाकी मैं सब देख लूंगा। (नींदड़ली हार लेकर दबे पैर जाती है। कलुवा के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है। और गर्दन गर्व से तन जाती है। प्रकाश कलुवा पर आकर स्थिर हो जाता है वह मन्द-मन्द होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

आठवाँ दृश्य

(राजदरबार खचाखच दरबारियों व जनता से भरा हुआ है। आज बड़के वाले महाराज हार के बारे में बतायेंगे अत: लोग उत्सुक हैं। नौकरानी नींदड़ली एक कोने में डर के मारे सहमी हुई खड़ी है। सहसा बड़के वाले महारजा का प्रवेश।)

कलुवा : (प्रवेश करते हुए) महाराज की जय हो।

राजा : आइये बड़के वाले महाराज। अपने आसन पर विराजिए।

(सभासदों के मध्य लगे आसन की ओर इशारा करते हुए।)

(कलुवा आसन पर जाकर बैठ जाता है।)

राजा : बड़के वालो महराज की !

सब : जय हो!

कलुवा : (आँखें बंद कर घूमते हुए) हाँ तो महाराज। महारानी जी का नौलखा हार मुझे दिख रहा है।

रानी : (आश्चर्य से)—दिख रहा है महाराज। (फिर अधीर होते हुए)-जल्दी बताइये महाराज कहाँ है मेरा हार?

कलुवा : (आँखें बंद करते हुए)—महाराज। राजमहल के पिछवाड़े वाले बरामदे में पुराना सामान पड़ा है?

सब : ..... हाँ ..... है।

कलुवा : महारानी जी का नौलखा हार उसी सामान में पड़ा है महाराज। किसी को भेजकर मंगवा लीजिए।

(राजा सैनिक को इशारा करता है। सैनिक हार लेने चले जाते हैं।)

रानी : महाराज आज यदि मेरा हार मिल गया तो मेरी चिन्ता खत्म हो जायेगी।

कलुआ : आप निश्चिंत रहें रानीजी, आपका हार अवश्य मिलेगा।

मंत्री : देखो .....? मिलेगा या नहीं।

(थोड़ी ही देर में सैनिक हार लाकर राजा को दे देते हैं।)

राजा : आज बड़के वाले महाराज के आने से हमारे दरबार के नवरत्न पूरे हुए। अब हम निश्चित हैं। अब राज्य में कोई चोरी नहीं होगी।

मंत्री : (ऊँची आवाज में) बोलो बड़के वाले महाराज की .....।

सब : जय हो!

(इसी जय जयकार के बीच नींदड़ली कलुवा के पास आकर हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है। कलुवा उसे देखकर मुस्कराता है। प्रकाश मंद होता-होता बुझ जाता है।)

(नाटक समाप्त)

जंगल मित्र

—प्रमुख पात्र—

1. **सुक्खा** : चमार जाति का एक गरीब किसान
2. **प्रधानाध्यापिका** : गाँव के स्कूल की एक ईमानदार शिक्षिका। सुक्खा की हितैषी व मुखिया चौकड़ी की विरोधी।
3. **सुखिया** : गाँव का एक भ्रष्टाचारी व्यक्ति व गाँव का मुखिया।
4. **पटवारी जोधराज** : गाँव का रिश्वतखोर पटवारी व मुखिया का साथी।
5. **चौकीदार हरिसिंह** : जंगलात का भ्रष्ट चौकीदार व मुखिया का साथी।
6. **सेठ मोटाराम** : गाँव का सूदरखोर महाजन व मुखिया का साथी।
7. **अब्दुल्ला** : लकड़ियों का दलाल एवं मुखिया का साथी।
8. **पंडित रामभरोसे** : पाखण्डी ब्राह्मण एवं मुखिया का साथी।
9. **किसनू चाचा** : एक अधेड़ उम्र का किसान व सुक्खा का हितैषी।
10. **बिरजू** : गाँव का एक किसान व सुक्खा का साथी।
11. **हल्कू** : सुक्खा का साथी।
12. **थानेदार** : गाँव की पुलिस चौकी का प्रभारी। ईमानदारों का साथी व भ्रष्टाचारियों का शत्रु।
13. **अन्य पात्र** : सुक्खा की माँ, सुक्खा की छोटी बहिन, नन्हा भाई एवं गाँव के कुछ बच्चे।

प्रथम दृश्य

स्थान ..... गाँव की चौपाल।

(गाँव की चौपाल में गाँव के मुखिया, पटवारी, जोधराज जंगलात का चौकीदार हरीसिंह, सेठ मोटाराम, जंगलों से लकड़ियां काटकर शहर भेजने वालो ठेकेदार अब्दुल्ला, पंडित रामभरोसे आदि बैठे हैं। पंचायत के बीच में एक गरीब किसान सुक्खा अपराधी के रूप में हाथ जोड़े खड़ा है। ऐसी पंचायत तभी लगती है जब किसी अपराधी के अपराध का निर्णय करना होता है। आज सुक्खा चमार को अपराधी के रूप में पेश किया गया है।)

मुखिया : (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए पटवारी जोधराज से)—हाँ तो पटवारी जी आप कुछ कह रहे थे।

पटवारी जोधराज : मैं क्या कह रहा था मुखिया जी, सारा गाँव कह रहा था। और कोई झूठ थोड़े ही कह रहे थे। सब जानते हैं इस सुक्खा के कारनामे।

हरिसिंह : (सबकी ओर देखते हुए)—अजी साहब, जिसके बाप दादा ने कभी हम लोगों के सामने जबान खोलने की हिम्मत नहीं की वे ही लोग (सुक्खा की ओर इशारा करते हुए) हमें नसीहत देते हैं।

सेठ मोटाराम : (तोंद पर हाथ फेरते हुए)—कैसी नसीहत फिरवाल जी?

हरिसिंह : अरे भैया ये कल का छोकरा हमें नौकरी करना सिखा रहा था। कह रहा था कि हम जंगलात के कानून का ठीक से पालन नहीं करते।

अब्दूल्ला : और मुखिया जी यह भी कह रहा था कि फिरवाला जी रिश्वत लेकर जंगल से अब्दुल्ला ठेकेदार को लकड़ियां ले जाने देते हैं।

मुखिया : अच्छा! इतने पर निकल आये इन लोगों के आजकल कि सरकारी मुलाजिमों पर लांछन लगाने लगे।

(सुक्खा चुप रहता है)

पंडित रामभरोसे : और मुखिया जी एक और कारनामा इसका शायद आपको पता नहीं है।

मुखिया : वह क्या जोशी जी?

पंडित : अब क्या बताऊँ मुखिया जी। आप कहीं यह न समझें कि मैं किसी की चुगली कर रहा हूँ ..... ।

पटवारी : नहीं, नहीं आप डरें नहीं। साफ साफ कहिए पंचों के सामने। पंच परमेश्वर होते हैं अत: किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है।

पंडित : (सबकी ओर देखते हुए)—वो मंदिर के पास में जो बदबू आ रही है पता है क्यों आ रही है?

मुखिया जी : हाँ भई। बदबू तो बहुत तेज आ रही है कुछ दिनों से।

सेठ मोटाराम : अजी उधर से निकला दूभर हो गया है।

पंडित : (सुक्खा की ओर इशारा करते हुए)—इन ज्ञानी जी ने अपने खेत में शहर से गोबर और गटर लाईन की गन्दगी लाकर ढेर लगा रक्खी है वहाँ पर।

मुखिया : (डाँटते हुए)—क्यों बे। क्या जोशी जी कह रहे हैं वो बात सही हैं?

सुक्खा : हाँ मुखिया जी। वह खाद मैं शहर से लाया हूँ। इस खाद से मेरे खेत की फसल और खेत में लगाये गये पेड़ों को पनपने की शक्ति मिलेगी और पैदावार बढेगी।

पंडित जी : (मुहँ बनाकर हाथ नचाते हुए)—अरे वाह भई वाह। पैदावार बढ़ेगी तेरी। और मंदिर में भगवान जी गन्दी हवा से जो अपवित्र हो गये उसका भी कुछ सोचा तूने। अरे दिन में दो दो बार नहलाना पड़ता है। उन्हें।

मुखिया : अरे उस गन्दगी से गाँव में बीमारी फैलेगी उसका भी ख्याल रखा है तूने।

सेठ मोटाराम : अजी ख्याल तो इसे सारे देख का है। प्रधानमंत्री के जैसी बातें करता है। कहता है इससे शहर की गन्दगी दूर होती है और खेती का विकास होता है।

मुखिया : (जोधमल से)—हाँ भैया। अब तो हम जैसों की जरूरत ही नहीं रही। ये फटीचर लोग रखेंगे देश का ध्यान। (फिर उसे डांटते हुए)—अरे तूने ठेका ले रखा है शहर की गन्दगी हटाने का। यहाँ जो बीमारी फैलेगी इससे जो लोग मरेंगे उसके जिम्मेदार क्या तेरे बाप दादा होंगे।

हरिसिंह : और हमें चोर बताता है। कहता है हम पैसे खाकर अब्दुल्ला के हाथों जंगल से लकड़ियां पार कराते हैं।

पटवारी : अरे सरकार ने हमें क्या यों ही लगा रक्खा है गाँव में। मजाल है जो हमारी इजाजत के बिना एक भी गीली लकड़ी गाँव से बाहर जा सके? हम बड़े सख्त हैं।

सुक्खा : पटवारी जी अभी कल ही तो जंगल से लकड़ियों की एक ऊँटगाड़ी सोमपुर गई थी।

हरिसिंह : (सबकी ओर इशारा करते हुए)—देखो देखो इसकी हिम्मत तो देखो। हमसे जबान लड़ाता है। (फिर मुखिया जी की ओर देखते हुए)—अरे वो लकड़ियां तो मुखिया जी की लड़की के ससुराल भिजवाई थी। अब क्या गाँव के दामाद पर भी कानून लगेगा।

हैडमास्टरनी : (प्रवेश करते हुए)—हाँ फिरवाल जी। कानून सबके लिए बराबर होता है। कानून किसी रिश्तेदार को नहीं पहचानता सबको एक नज़र से देखता है।

मुख्या जी : लेकिन तुम सबको एक नज़र से ना देखो मास्टरनी। हम गाँव के मुखिया हैं। हमें गाँव का राज चलाने के लिए नज़रें बदलनी पड़ती हैं। और हम कोई स्कूल के बच्चे नहीं है जो आप हमें भी उसी नज़र से देख रही हैं।

पटवारी : स्कूल में पढ़ाना ओर बात है मास्टरनी जी। आप केवल आदर्शों का पाठ ही पढ़ा सकती है।

मोटाराम : भाई इस सुक्खा को मास्टरनी जी ने ही आदर्श के पाठ पढ़ा रखे हैं। वह इनके प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर रोज पढ़ने जाता है।

हरिसिंह : इन्होंने ही उसे आदर्शों का पाठ पढ़ाया होगा। तभी तो हम पर रिश्वतखोरी का लांछन लगाता है। यह।

सुक्खा : हाँ मुखिया जी अगर ऐसी कोई बात नहीं है तो क्यों अब्दुल्ला आये दिन पेड़ काटकर ट्रकों में लादकर शहर ले जाता है।

पटवारी जी : अरे तेरे कहने को कौन मानेगा। माना वही जायेगा जो हमारे पटवारघर के रजिस्टर में दर्ज होगा। तू जो कुछ झूठा सच्चा कह देगा क्या वह सही माना जाएगा?

हरिसिंह : (आवेश में आकर)—मुखिया जी इस दो कौड़ी के आदमी ने हमारी तौहीन कर दी।

पटवारी : हाँ।

पंडित जी : इसने शहर की गंदगी से भगवान जी को अपवित्र कर दिया।

मोटाराम : इसने मेरी तो दुकानदारी ही चौपट कर दी रे ..... । यह किसानों को बहकाता है कि शहर से खाद सस्ती मिल जाती है। अब मेरी दुकान से अंग्रेजी खाद कौन खरीदेगा भाई।

मुखिया जी : (सुक्खा से)—गाँव की पंचायत तुम्हें इस गाँव से निकाल जाने का हुक्म देती है। तुम्हारा घर जब्त करके उसमें कांजी हाऊस खोला जायेगा। (फिर मास्टरनी की ओर देखते हुए)—और मास्टरनी आप इस सुक्खा के कन्धे पर बन्दूक रखकर सहकारिता वहकारिता का जो चक्कर चला रही है न, वह हम नहीं चलने देंगे।

रामभरोसे : इससे हमारे गाँव में फूट पड़ रही है।

मोटाराम : हमारा तो धन्धा ही चौपट कर देंगी ये मास्टरनी। भई अब हमसे खाद बीज क्यों खरीदेगा कोई। सहकारी समिति से ले आयेंगे सब।

सुक्खा : मुखिया जी यह आपकी मुझ पर ज्यादती है। मैंने जो बातें कही हैं वे सब सत्य हैं। (फिर मास्टरनी से)—मास्टरनी जी मैंने कोई ग़लत काम नहीं किया। मैंने वही किया जो आपने मुझे सिखाया है और जो अच्छा है।

मास्टरनी : (पटवारी व हरिसिंह की ओर देखते हुए)—आप लोगों को शर्म आनी चाहिए कि इस मेहनती और ईमानदार किसान पर लांछन लगा रहे हो। (मोटाराम व अब्दुल्ला की ओर इशारा करते हुए)—आप लोग इन स्वार्थियों व देशद्रोहियों की चाल में आकर अपने गाँव का अहित कर रहे हैं। इनको तो समय आने पर दण्ड मिलेगा, ही पर मुखिया जी इससे आपके गाँव का भी भला न होगा।

सुक्खा : (मुखिया की ओर देखते हुए)—भले ही आप मुझसे कैसा भी व्यवहार करें पर मैं अपने कर्त्तव्य से नहीं हटूंगा इसके लिए भले ही मुझे कितने ही कष्ट उठाने पड़ें। मैं अब खेत में जाकर रह लूंगा, पर अपने खेतों में पेड़ लगाऊँगा।

(प्रस्थान करता है। उसके साथ-साथ मास्टरनी भी प्रस्थान करती है।)

(दृश्य समाप्त)

दूसरा दृश्य

(सुक्खा के खेत का दृश्य। सुक्खा अपनी झोंपड़ी के आगे बैठा है। उसकी माँ व भाई झोंपड़ी ठीक कर रहे हैं। उसके पास में नर्सरी से लाये हुए कुछ पौधे रखे हैं। वह अपने छोटे भाई के साथ इन पौधों को खेत में ले जाने की तैयारी कर रहा है।)

(सहसा हैडमास्टरनी का कुछ स्कूली विद्यार्थियों के साथ प्रवेश)

हैडमास्टरनी : (प्रवेश करते हुए सुक्खा की अम्मा से)—नमस्ते अम्मा जी।

सुक्खा की माँ : आओ बेटी आओ।

हैडमास्टरनी : (सुक्खा से)—कहो सुक्खा भैया कहाँ की तैयारी है?

(हैडमास्टरनी के साथ आये बच्चे पौधों को देख देखकर आपस में बतिया रहे हैं।)

सुक्खा : (खुश होता हुआ)—आओ आओ बहिन जी आओ। मैं तो आप ही को याद कर रहा था।

हैडमास्टरनी : (व्यंग्य से)—मुझे? (फिर उसकी आवाज़ की नकल करते हुए)—काहे भैया?

(सब हंसते हैं।)

सुक्खा की माँ : (ज़मीन पर आसन बिछाते हुए)—अरे बैठो तो बेटी ..... (हैडमास्टरनी बैठ जाती है।)

सुक्खा : (सब बच्चों से)—अरे बैठो भाई। तुम लोग भी बैठो। (सब बच्चे मास्टरनी को घेरकर बैठ जाते हैं।)

हैडमास्टरनी : हाँ सुक्खा भैया। अब कुछ खिलाओगे पिलाओगे या यों ही बैठाये रखोगे।

सुक्खा का भाई नन्हा :(शर्बत का गिलास देते हुए)—ये लो मास्टरनी जी। (सब बच्चों को भी देता है।)

बच्चे : (घूंट भरते हुए)—वाह वाह मजा आ गया।

हैडमास्टरनी : (गिलास से घूंट भरते हुए)—अरे भाई सुक्खा वाह। वाकई मजा आ गया। मैंने तो आज पहली बार पीया है। क्या है ये?

सुक्खाा की माँ : यह रस एक तरह की दवा है बेटी।

हैडमास्टरनी : हैं .....?

सुक्खा : और पेट के रोगों के लिए बहुत फायदेमेंद है यह। शरीर में ठंडक पहुँचाता है।

हैडमास्टरनी : (गिलास से आखिरी घूंट भरकर ज़मीन पर रखते हुए)—वाह भाई। तबियत खुश हो गई। (फिर सुक्खा की माँ से)—अम्माजी मैं जब भी यहाँ आऊँ तो यही रस पिलाया करो।

सुक्खा की बहिन : (तुतलाते हुए)-जलूल ..... जलूल।

(सब हंसते हैं।)

हैडमास्टरनी : (सुक्खा से)—अरे भाई सुक्खा तुम मुझे क्या किसी खास काम से याद कर रहे थे।

सुक्खा : हाँ बहन जी। पिछली बार आपने यहाँ पर अपनी क्लास में पेड़ों के फायदे बताये थे तो मैं शहर जाकर ये पौधे ले आया हूं।

रामू : (खड़ा होता हुआ)—कौन सी क्लास भैया? मैं तो उस दिन आया ही नहीं था। (फिर उठकर जाता हुआ)—अकेले अकेले क्लास लगा लेते हैं। अरे कोई बीमार हो जाय तो उसका मतलब यह थोड़े ही है कि किसी को तो सब बातें बता दें और कोई रह ही जाये। (जाने लगता है।)

झुल्लू : (कुत्ते की आवाज निकालते हुए)—हू हू ... हू हू ...।

(रामू डर के मारे चिल्लाकर वापस आ जाता है।)

हैडमास्टरनी : अरे भाई तुम उस दिन नहीं आये थे इसका मुझे पता नहीं था। तुम नाराज मत हो। चलो उस दिन की क्लास हम दुबारा ले लेते हैं।

(सुक्खा, उसकी माँ, बहिन व भाई भी आकर बैठ जाते हैं।)

हैडमास्टरनी : आज की कक्षा में आपको पेड़ों के फायदे बताये जायेंगे।

नन्हा : (उठते हुए)—पेड़ लगाने की जानकारी भी देना बहिन जी।

कुछ बच्चे : (उसकी कमीज खींचते हुए)—हाँ हाँ बैठ जा-बैठ जा तू।

हैडमास्टरनी : आप सब तो जानते ही है कि पर्यावरण की शुद्धता हेतु पेड़ों का बहुत महत्त्व है।

एक स्त्री : परायावरण। ये क्या होता है मास्टरनी जी क्या किसी पराये आदमी के लिए कह रही है?

हैडमास्टरनी : परायावरण नहीं चाची। पर्यावरण यानी आबो हावा।

सुक्खा : चाची मास्टरनी जी का कहना है कि आबो हवा को शुद्ध बनाये रखने के लिए पेड़ों का बहुत महत्त्व है।

चाची : हाँ, जे बात तो ठीक कही आपने।

हैडमास्टरनी : (एक व्यक्ति से)—और क्या फायदे हैं पेड़ों के, किसनू चाचा बाताओगे?

किसनू : मास्टरनी जी पेड़ों की पत्तियों में हमें खाद भी मिलती है।

मास्टरनी : कैसे चाचा?

किसनू : जे तो मुझे पता नहीं पर मेरा बेटा हल्कू जोर जोर से किताब पढ़ता रहता है जिसमें लिखा है यह।

मास्टरनी : (सबसे)—हाँ भाई। पेड़ों से पत्तियाँ गिरती हैं वे जब सड़ जाती हैं तो उनसे खाद बनती है। पेड़ों से हमें शुद्ध हवा मिलती है और खाने को मीठे फल मिलते हैं।

बिरजू : और मास्टरनी जी जलाने को लकड़ियां भी मिलती हैं। तभी तो मुखिया जी, पटवारी जी व फिरवाल जी अब्दुल्ला को लकड़ियां काटने देते हैं जो उन्हें शहर ले जाकर बेच देता है।

सुक्खा : अरे बिरजू तुम नहीं समझोगे इसके नुकसान। इस प्रकार हरे पेड़ों की कटाई करना किसी जीव की हत्या करने जैसा होता है।

बिरजू : कैसे भैया?

मास्टरनी : सुक्खा ठीक कह रहा है। पेड़ों को काटने से धरती का कटाव बढ़ता है।

हल्कू : कैसे?

सुक्खा : अरे भैया, पेड़ों की जड़े मिट्टी को एक साथ पकड़े रहती हैं और पानी के बहाव से मिट्टी को बहने नहीं देती।

मास्टरनी : इसीलिए सुक्खा नदी के किनारे वाले अपने खेत में हर बरसात में नये पेड़ लगाता है।

बिरजू : हाँ मास्टरनी जी यह तो पागल हो रहा है पेड़ लगाने को।

हल्कू : लेकिन भैया कैसा बगीचा खड़ा कर दिया है इसने। खेत देखते ही तबियत खुश हो जाती है।

किसनू : और एक यहाँ के सरकारी मुलाजिम हैं जो मुखिया से मिलकर पेड़ काटने में लगे हुए हैं।

मास्टरनी : इन सबका तो मैंने बंदोबस्त कर रखा है अब कुछ ही दिनों में इन्हे अपने किये की सजा मिल जायेगी। परन्तु आप सब लोग सुक्खा की तरह ही पेड़ लगाना शुरू कर दें।

बिरजू : उन लोगों की क्या व्यवस्था कर रखी है आपने।

सुक्खा : भैया मास्टरनी जी ने उनकी ऊपर शिकायत लिख भेजी हैं।

मास्टरनी : परन्तु उससे कुछ नहीं होगा। इस काम में आप सब लोगों का सहयोग चाहिए हमें।

सब : कैसे ?

सुक्खा : अब जब भी अब्दुल्ला लकड़ी काटकर ले जाये तो हम लोग चुपके से मास्टरनी जी को खबर कर दें।

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

(हल्का हल्का अंधेरा होने को है। मंच के बीचोंबीच मुखिया जी के घर में मुखिया जी के साथ गाँव के पटवारी, जंगलात का चौकीदार हरिसिंह आदि बैठे हैं। पास में ही लकड़ियों का ठेकेदार अब्दुल्ला अपने तीन चार मजदूरों के साथ खड़ा है। मजदूरों के सिर पर लकड़ियों के गठ्ठर हैं।)

अब्दुल्ला : मुखिया जी मुझे चुंगी नाके पर नाकेदार रोकेगा तो नहीं लकड़ियां ले जाते हुए ?

मुखिया जी : अरे जंगलात के फिरवाल स्वयं तुम्हें नाका पार कराकर आयेंगे।

पटवारी : और ये लो मेरे हाथ की पर्ची। इससे तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।

अब्दुल्ला : (मजदूरों से)-चलो रे। अब हमें कौन रोकेगा। सारी सरकारी तो हमारी ही है।

(प्रकाश अब्दुल्ला व उसके जाते हुए साथियों पर केन्द्रित हो जाता है तथा मन्द होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

चौथा दृश्य

(अब्दूल्ला अपने मजदूरों के पीछे पीछे चल रहा है। मजदूर सिर पर लकड़ियों का गठ्ठर लिए हुए चल रहे हैं। अब्दुल्ला के साथ साथ जंगलात का चौकीदार हरिसिंह है।)

हरिसिंह : ये लो भाई अब्दुल्ला चुँगी नाका पार हो गया है। अब तुम्हें कोई खतरा नहीं। (फिर ऊँची आवाज में)—अरे मुखिया जी, पटवारी जी, आ आओ।

(बाहर से मुखिया जी व पटवारी जी का प्रवेश)

दोनों : (प्रविष्ट होकर)—हाँ भई फिरवाल जी अब कर लो अब्दुल्ला से बात।

अब्दुल्ला : (सौ-सौ के तीन नोट निकालकर फिरवाल को देते हुए)-बात क्या करनी फिरवाल जी बंधे बंधाये हैं आपके हिस्से।

(तीनों रुपये ले लेते हैं।)

मुखिया : पर भाई जाना होशियारी से अब आगे तुम्हारी अपनी जिम्मेदारी है।

(सहसा सुक्खा, मास्टरनी, थानेदार व तीन पुलिसमैनों के साथ गाँव वालों का प्रवेश।)

सुक्खा : यही है लकड़ियों का दलाल अब्दुल्ला।

मास्टरनी : थानेदार साहब इन्होंने अब्दुल्ला से रिश्वत ली है। गिरफ्तार कर लीजिए इन सबको। (तीनों नोटों को छुपाना चाहते हैं।)

मुखिया : मैं गाँव का मुखिया हूँ। मुझे कौन गिरफ्तार कर सकता है।

सब जनता : हाँ हाँ गिरफ्तार कर लो इसे।

(तीनों पुलिसमैन मुखिया, पटवारी व हरिसिंह को गिरफ्तार कर लेते हैं, पर अब्दुल्ला भाग खड़ा होता है।)

थानेदार : मास्टरनी जी, सुक्खा। आप इनको संभालें, मैं इस चोर को पकड़ता हूँ।

थानेदार : (भागकर अब्दुल्ला को पकड़कर गाँव वालों के पास लाते हुए)—ये सब मुजरिम अब कानून की गिरफ्त में है।

सुक्खा : थानेदार साहब इन्हें सख़्त से सख्त सजा दिलवाना।

एक ग्रामीण : आज से सुक्खा हमारे गाँव का मुखिया है। क्यों भाईयों?

सब : हाँ ..... हाँ। सुक्खा हमारा मुखिया है।

मास्टरनी : बोलो जंगल के दुश्मन?

सब : मुर्दाबाद?

जंगल का मित्र सुक्खा : जिन्दाबाद ..... जिन्दाबाद।

फ्रीज

(नाटक समाप्त)

आज का गुरुकुल

पहला दृश्य

(स्कूल के पिन्सीपल का कमरा। प्रिन्सीपल मैडम कमरे के बींचोंबीच अपनी कुर्सी पर विराजमान हैं। उनके सामने टेबिल पर कुछ फाईलें रखी हैं। टेबिल पर बायें हाथ की ओर टेलीफोन रखा हुआ है तथा पीछे की ओर दीवार पर कुछ देशभक्त राजनेताओं के चित्र टंगे हुए हैं। टेबिल के सामने पाँच-सात कुर्सियां रखी हुई हैं जो इस वक्त खाली हैं। केवल एक कुर्सी पर ग्रामीण सी वेशभूषा पहने एक सज्जन विराजमान हैं जो आज लिए गये साक्षात्कार में हिन्दी-अध्यापक की नौकरी के लिए नियुक्त कर लिए गये हैं।)

प्रिन्सीपल : (घण्टी बजाते हुए)—मास्टरजी! हमारे स्कूल की कमेटी ने आपकी योग्यता को देखते हुए आपको हिन्दी-अध्यापक के लिए चुन लिया है।

(इस बीच चपरासी नन्दू आकर खड़ा हो जाता है। प्रिन्सीपल मैडम अपनी बात जारी रखते हुए चपरासी से)—नन्दू जा तो..

(नन्दू जाने को होता है।)

प्रिन्सीपल : (डांटते हुए)—कहां चले?

नन्दू : (भोलेपन से)—जी आप ही ने तो कहा है जाओ।

प्रिन्सीपल : (झुंझलाते हुए)—पूरी बात तो सुन। जा और आठवीं क्लास के मॉनीटर पीटर को बुला ला।

(नन्दू सिर झुकाकर बाहर की ओर प्रस्थान करता है।)

मास्टर जी : (विनम्रता से)— धन्यवाद मैडम। आप लोगों ने मुझे जो अवसर प्रदान किया है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

प्रिन्सीपल : लेकिन मास्टरजी। यहाँ के विद्यार्थी बड़े नटखट हैं पढ़ा पाओगे उन्हें?

मास्टर जी : मैडम जी मैं अपने दायित्व को निभाने का पूरा प्रयास करूंगा।

(सहसा पीटर का प्रवेश। प्रिन्सीपल मैडम कुछ लिखने में मशगूल हैं और नये मास्टरजी उन्हें निहारने में। पीटर जो स्वभाव से ही नटखट है कभी तो झुककर नये मास्टरजी को देखता है और कभी प्रिन्सीपल मैडम को।)

प्रिन्सीपल : (पीटर को झिड़कते हुए)—आ गए पीटर?

पीटर : (झेंपते हुए)—जी मेम।

प्रिन्सीपल : (मास्टरजी की ओर इशारा करते हुए)—देखो ये तुम्हारे नये सर हैं। आज से ये तुम्हें हिन्दी पढ़ायेंगे।

(दरवाज़े के बाहर कान लगाकर कुछ छात्र इस वार्तालाप को सुनने का प्रयास कर रहे हैं।)

पीटर : (नये मास्टरजी को ऊपर से नीचे देखते हुए व्यंग्यात्मक लहजे में)—जी मेम।

प्रिन्सीपल : देखो इनका कहना मानना और शैतानी मत करना। जाओ इन्हें क्लास में ले जाओ।

पीटर : (नये मास्टरजी से लच्छेदार आवाज़ में)—चल्लिये सर्र जी।

(दोनों का बाहर प्रस्थान। नेपथ्य में कान लगाकर वार्तालाप सुन रहे बच्चों के भागने की आवाज़ें सुनायी देती हैं। प्रकाश जाते हुए मास्टरजी एवं पीटर पर पड़ रहा है और मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

दूसरा दृश्य

(क्लासरूम का दृश्य। कक्षा में दस-बारह बच्चे बैठे हुए हैं। सामने मास्टरजी की टेबिल-कुर्सी लगी है जिसके पीछे दीवार पर ब्लैकबोर्ड टंगा हुआ है। इस समय कक्षा में खूब शोर-शराबा हो रहा है। सहसा नये मास्टरजी के साथ पीटर का प्रवेश।)

पीटर : (सब बच्चों से प्रिन्सीपल मैडम के लहजे में)—देखो बच्चो...

(सब बच्चे उसकी बात पर हो हो करके जोर से हँसते हैं।)

पीटर : (ही ही करके हँसता हुआ)—ये हमारे नये सर हैं। आज से हमें हिन्दी पढ़ायेंगे। (फिर सब बच्चों से)— बोलो ये क्या पढ़ायेंगे?

बच्चे : (एक स्वर में)— ही ही ही ही हिन्दी पढ़ायेंगे।

मास्टरजी : (कुर्सी पर बैठकर मेज थपथपाते हुए)—शान्त रहो। शान्त रहो।

(सहसा मेज के ऊपर का प्लाईवुड़-बोर्ड ज़मीन पर गिर जाता है जिससे असंतुलित होकर मास्टरजी भी कुर्सी से गिर पड़ते हैं। सब बच्चे एक स्वर में हो हो करके हँसने लगते हैं। शोर सुनकर प्रिंसीपल का प्रवेश।)

प्रिन्सीपल : (मास्टरजी को उठाते हुए)—किसने की है ये शैतानी। बोलो? (सब बच्चे चुप रहते हैं।)

मास्टरजी : (बच्चों का बचाव करते हुए)—मैडम इन्होंने शैतानी नहीं की। वह तो मैं ही कुछ गडबडा गया था।

(सब बच्चे खुश होकर उनके समर्थन में गर्दन हिलाते हैं।)

प्रिन्सीपल : (मास्टरजी से)—आप इन्हें थोड़ा खेंचकर रखिए। बड़े ही शैतान हैं ये सब।

(बाहर प्रस्थान करती है।)

मास्टरजी : (सामान्य होते हुए)—देखो बच्चो। अब हम आपको हिन्दी विषय पढ़ायेंगे।

बच्चे : (एक स्वर में)—जी हाँ सर। आप हमें हिन्दी पढ़ायेंगे।

मास्टरजी : मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछ रहा हूँ जिससे मुझे आपके ज्ञान के स्तर का पता लग सकेगा।

बच्चे : (एक स्वर में)—पूछिए सर।

मास्टरजी : (पीटर से)—बताओ संधि किसे कहते हैं?

पीटर : (शर्माने के अंदाज में नीचे देखते हुए)—बता दूं सर?

मास्टरजी : हाँ हाँ बताओ।

पीटर : सर किसी दो के मिलाप को संधि कहा जाता है।

मास्टरजी : (खुश होते हुए)—शाबाश। आप लोग तो बहुत ही समझदार हैं। मैडम नाहक ही आपको नटखट बता रही थी।

बच्चे : जी सर।

मास्टरजी : (पीटर से)—अच्छा इसका कोई उदाहरण दे सकते हो?

पीटर : जी हाँ। आँखों देखा बताऊं सर?

मास्टरजी : (खुश होते हुए)—हाँ भाई बताओ। पढ़े हुए की अपेक्षा आँखों देखे हुए का वर्णन अधिक सरस होता है।

पीटर : (भोलेपन का अभिनय करते हुए)—सर मैं जब प्रिन्सीपल मेम के कमरे में घुसा था तब आप किसी को देख रहे थे जिसे ही संधि कहा जाता है।

(मास्टरजी झेंप जाते हैं और पीटर को डाँटकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (पिंटू से)—तुम खड़े हो।

पिंटू : (खड़े होकर)—जी सर!

मास्टरजी : (खुश होते हुए)—क्या तुम्हें संज्ञा की जानकारी है?

पिंटू : (घबराया सा)—सर आपको कैसे पता कि मेरी संज्ञा से जानकारी है?

मास्टरजी : (हाथ का डण्डा घुमाते हुए)—अरे हम ईश्वरचन्द विद्यासागर के वंशज हैं। हम मन के भाव ताडकर बता सकते हैं कि किसकी किसको जानकारी है।

पिंटू : सर आप मेरे घर पर तो नहीं बतायेंगे न?

मास्टरजी : अरे भाई यह तो सामान्य सी बात है, इसके बारे में घर वालों को क्या बताना। (फिर उसे पुचकारते हुए)—डरो नहीं। चलो हमारे प्रश्न का उत्तर दो कि क्या तुम्हें संज्ञा की जानकारी है?

पिंटू : (भोलेपन से)—सर पडौस वाले पाठक अंकल की लड़की संज्ञा मेरी फ्रैण्ड है और कल हम स्कूल आने की बजाय पिक्चर देखने चले गये थे।

(सब बच्चे हँसते हैं। मास्टरजी पीटर को डांटकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (आगबबूला होते हुए)—लगता है यहां एक नहीं कई नालायक भरे पड़े हैं। (फिर असलम से)—तुम खड़े हो।

असलम : जी सर।

मास्टरजी : क्या नाम है तुम्हारा?

असलम : असलम सर।

एक बच्चा : (खड़ा होकर)—सर, सर तो आप हैं और यह अपने आपको सर कह रहा है।

(सब बच्चे हँसते हैं। मास्टरजी असलम को डांटकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (संजय से)—तुम खड़े हो।

संजय : जी सर।

मास्टरजी : क्या नाम है तुम्हारा?

संजय : जी संजय।

मास्टरजी : देखो मैं एक वाक्य बोल रहा हूं जो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है तुम उसे शुद्ध करके बताना।

संजय : जी सर।

मास्टरजी : मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊंगा।

संजय : (भोलेपन से)—लेकिन सर हम लोग तो आज रात ही कानपुर के लिये रवाना हो जायेंगे।

(सब बच्चे हँसते हैं।)

मास्टरजी : अरे मूर्ख मैं वाक्य पूछ रहा हूं। (उसे डांटकर बैठा देते हैं। फिर संजय को समझाते हुए)-इसका शुद्ध वाक्य होगा-मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊंगा।

पिंकी : (खड़ी होकर भोलेपन से)—लेकिन सर यह तो आज रात ही अपने परिवार के साथ कानपुर के लिये रवाना हो जायेगा। आप हमारे घर आइये न।

(मास्टरजी अपना सिर पीट लेते हैं। नेपथ्य में घण्टी बजती है। सब बच्चे क्लास से बाहर भागते हैं। मास्टरजी पर पड़ रहा प्रकाश मंद मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(क्लासरूम का दृश्य। हिन्दी के अध्यापकजी अपनी टेबिल पर बैठे छात्रों की उत्तरपुस्तिकाएं जाँच चुके हैं और अब बच्चों को आगे का पाठ पढ़ाने वाले हैं।)

मास्टरजी : हाँ तो बच्चो। आज हम आपको लोकोक्तियों और मुहावरों की जानकारी देंगे।

बच्चे : हो.....

मास्टरजी : अब हम आपसे इनके बारे में पूछेंगे।

(बच्चों में लोकोक्ति एवं मुहावरों के बारे में बताने की होड़ मच जाती है और सब अपने-अपने हाथ ऊपर करते हैं।)

मास्टरजी : (सबको गहराई से देखते हुए)—हम जिससे पूछेंगे वही खड़ा होगा। (फिर पीटर से)—बताओ पीटर ' नेकी कर कुए में डाल' का क्या अर्थ होता है?

पिंकी : (खड़े होकर निक्की की ओर इशारा करते हुए)—गुरुजी, यह निक्की के बारे में कहा गया है कि यह घर के काम में अपनी माँ की मदद नहीं करती इसलिए ऐसी लड़कियों को कुए में डाल देना चाहिए।

चुन्नू : सर इसे कौनसे कुए में डालकर आएं?

निक्की : (निक्की चुन्नू के दो हाथ जमा देती है फिर उसकी ओर मुक्का तानते हुए)—बोल, तू डालेगा मुझे कुए में?

(मास्टरजी उन्हें समझा बुझाकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (अमर से)—अमर तुम बताओ ' नेकी कर कुए में डाल' का क्या अर्थ होता है?

अमर : सर इसका मतलब है कि सबसे जबरदस्ती नेकी करवाओ और जो न करे उसे कुए में डाल दो।

मास्टरजी : (चम्पक से)—चलो बताओ कि 'जहां सुमति तहं सम्पति नाना' का क्या अर्थ है।

अमर : सर इसका मतलब है कि जहाँ-जहाँ पडौस की सुमति आण्टी जाती थी वहाँ वहाँ सम्पत नाना भी पहुँच जाया करते थे।

(सब बच्चे हँसते हैं। मास्टरजी उन्हें चुप कराते हुए अमर को डाँटकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (नीलू से)—चलो तुम खड़े हो।

नीलू : (खड़ा होकर)—हो गया सर मैं खड़ा।

मास्टरजी : (झुंझलाते हुए से)—बहुत उपकार किया मुझ पर। अब यह बताओ कि जान के लाले पड़ने का क्या अर्थ है?

नीलू : (खड़े होकर)—सर हमारे पडौस के जानकी लाल जी रोजाना प्रौढ़ शक्षा केन्द्र में पढ़ाने जाते हैं।

(सब बच्चे हँसते हैं। मास्टरजी उन्हें चुप कराते हुए नीलू को डाँटकर बैठा देते हैं।)

मास्टरजी : (ऋतु से)—चलो ऋतु तुम बताओ कि 'जामे से बाहर

होना' का क्या आशय है।

नीलू : सर, इसका मतलब है कि मुसलमान लोग नमाज अदा करने के बाद तुरन्त जामा मस्ज़िद से बाहर आ जाते हैं।

मास्टरजी : (हँसते-रोते से)—शाबाश। बहुत खूब। क्या हीरे हैं मेरी कक्षा में। (क्रोध के मारे बैठ जाते हैं। फिर सहज होते हुए अजय से)-अजय तुम बताओ कि ' गले पड़ना' का क्या अर्थ है।

अजय : सर, जब पेड़ के फल पीले पड़ने लग जाते हैं और फिर भी उन्हें कोई नहीं तोड़ता तो वे गलकर नीचे पड़ जाते हैं।

(मास्टरजी विवेकशून्यता में चक्कर काटने लगते हैं।)

मास्टरजी : (सब बच्चों से)—चलो तुममें से जिसे भी आता हो वह बताये कि ' लोहा लेना' का क्या अर्थ होता है।

एक बच्चा : (खड़ा होकर)—सर, मेरे पापा कहते हैं कि शनिवार के दिन कभी लोहा नहीं खरीदना चाहिए।

(सब बच्चे हँसते हैं।)

मास्टरजी : (उसे डांटकर बैठाते हुए दूसरा प्रश्न पूछते हैं)—बताओ बच्चो ' न ऊधो का लेना न माधो का देना' का क्या तात्पर्य है?

एक बच्चा : (खड़ा होकर)—सर, इसका मतलब है कि उद्धव से कभी उधार मांगना नहीं चाहिए क्योंकि वह तो माधव ही का कर्ज़ नहीं चुका पा रहा।

मास्टरजी : (मेज पर डण्डा मारते हुए)—सब गधे हैं। सबके सब। तुम्हें कुछ भी नहीं आता। मेरी छुट्टी कराओगे तुम लोग। (फिर गिलास का पानी पीकर बच्चों से)-अब मैं तुम्हें अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना सिखाता हूं।

सब बच्चे : जी सर।

मास्टरजी : (एक बच्चे से)—अब मैं एक अशुद्ध वाक्य बोल रहा हूं जिसे तुम शुद्ध करके बताना।

बच्चा : जी सर।

मास्टरजी : मौसम बड़ी सुहावनी है।

बच्चा : (गाता है)—मौसम भी है सुहाना सुहाना....

(सहसा प्रिन्सीपल के साथ इन्स्पैक्टर का प्रवेश)

इन्स्पैक्टर : (बच्चों से)—बताओ बच्चो दुनिया में सबसे पुरानी चीज़ क्या है?

सब बच्चे : (एक साथ)—सर आपकी पतलून।

(इन्स्पैक्टर अपनी पतलून की ओर देखकर लज्जित होता है। प्रिन्सीपल मैडम झेंप जाती है और मास्टरजी के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती हैं।)

इन्स्पैक्टर : (बनावटी हँसी के साथ खी खी करके हँसते हुए धीमे से)—शैतान कहीं के। (फिर एक बच्चे से)—अच्छा पहाड़े कहां तक याद हैं तुम्हें?

बच्चा : जी 13 तक याद हैं।

इन्स्पैक्टर : अच्छा बताओ तेहरा नाम?

बच्चा : सर मेरा नाम अजय है।

(सब बच्चे हँसते हैं। प्रिन्सीपल उन्हें आँखें दिखाती है।)

मास्टरजी : अरे मूर्ख तेरह नाम 117 होते हैं इतना भी नहीं मालूम।

इन्स्पैक्टर : (एक अन्य बच्चे से)— बताओ 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ' का क्या अर्थ है?

बच्चा : (खड़े होकर)—सर इसका अर्थ है कि पराधीन आदमी केवल सपने में ही नहीं बल्कि हर जगह सुखी रहता है।

इन्स्पैक्टर : (उसे डांटकर बैठाते हुए एक अन्य बच्चे से)— बताओ अफ़जल खाँ को किसने मारा?

असलम : (जोर-जोर से रोते हुए)—हाय अल्लाह मेरा भाई अफ़जल मारा गया।

प्रिन्सीपल : (उसे डांटकर बैठाते हुए)—अरे यह तुम्हारे भाई की बात नहीं है। बैठ जा।

इन्स्पैक्टर : (प्रिन्सीपल से)—मैडम कैसे बच्चे हैं आपकी स्कूल के। जरा भी ज्ञान नहीं है।

मास्टरजी : (चापलूसी के अन्दाज में)—नहीं सर, ऐसी बात नहीं है। आप जैसे बड़े अधिकारी को देखकर घबरा गये बेचारे।

प्रिन्सीपल : जी सर।

इन्स्पैक्टर : अच्छा तो आप ही पूछिए।

प्रिन्सीपल : (पीटर से)—देखो पीटर, भगवान ने सभी जीव-जन्तुओं को एक समान जीवन दिया है परन्तु कई जीव-जन्तु मनुष्य से भी अधिक काम करते हैं जैसे चींटी, अत: इनसे हमें शिक्षा लेनी चाहिए इसे साबित कर सकते हो?

पीटर : मेम इस सम्बन्ध में मैं एक बड़े कवि की रचना सुनाना चाहता हूं।

इन्स्पैक्टर : (खुश होता हुआ प्रिन्सीपल से)—आपके बच्चों को तो काव्य का भी ज्ञान है। (फिर खुश होता हुआ पीटर से)—हां हां क्यों नहीं। सुनाओ बेटा।

पीटर : अजगर करै ना चाकरी पँछी करै ना काम
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।
(प्रिन्सीपल क्रोध के साथ मास्टरजी की ओर देखती है।)

मास्टरजी : (इन्स्पैक्टर से)—श्रीमान इन्हें पौराणिक विषयों का भी ज्ञान है।

इन्स्पैक्टर : (खुश होता हुआ एक बच्चे से)—बताओ भगवान शिव का धनुष किसने तोड़ा?

बच्चा : (भोलेपन से)—मुझे नहीं पता सर, उस दिन तो मैं छुट्टी पर था।

इन्स्पैक्टर : (प्रिन्सीपल से)—मैडम इन बच्चों को तो कुछ भी नहीं आता। कौन पढ़ाते हैं इन्हें?

प्रिन्सीपल : सर हमने उन्हें नौकरी से निकाल दिया है(फिर नये मास्टरजी की ओर इशारा करते हुए)—अब ये पढ़ा रहे हैं।

इन्स्पैक्टर : आपने इन्हें क्या-क्या पढ़ाया अब तक?

मास्टरजी : सर मैंने आज ही इन्हें अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना बताया है। पूछ सकते हैं आप इन्हें।

इन्स्पैक्टर : अच्छा! (फिर खुश होता हुआ एक बच्चे से)—देखो मैं एक अशुद्ध वाक्य बोल रहा हूं जिसे शुद्ध करके बताना।

बच्चा : (खुश होकर)—ठीक है सर।

इन्स्पैक्टर : शाम होने को आई। अब तोम घर जा सकते हैं।

(सब बच्चे अपने-अपने बस्ते समेटकर हो हो करते हुए क्लासरूम से बाहर निकल जाते हैं। इन्स्पैक्टर प्रिन्सीपल की ओर तथा मास्टरजी घर की ओर भागते हुए बच्चों को फटी-फटी आँखों से देखते रह जाते हैं।)

नाटक समाप्त